874

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

विजयेश्वर पञ्चाङ्ग

874

ॐ

REGD. NO. 982

सम्पादकः- ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

सम्पादक :—प्रेमनाथ शास्त्री

Price Rs. 6/50

अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि,
यच्चावहासार्थम्--असत्कृतोसि विहार-शयासनभोजनेषु,

1986 (२०४३ वि०)

विजयेश्वर

पंचाङ्ग

सं० ५०६२

असतो मा सद्गमय

तमसो मा ज्योतिर्गमय

सम्पादक :—
ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

गणितकर्ता :—
ज्यो० कण्ठशर्मा (विजबिहारा)

ओ३म् भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

वाल्मीकी रामायण 24 हजार श्लोकों का महान् ग्रन्थ है, उसमें वाल्मीकी जी ने एक-2 हजार श्लोकों में गायत्री मन्त्र के एक एक अक्षर की व्याख्या की है, ऐसे ही भागवत के 12 स्कन्दों में भी हर स्कन्द में गायत्री मन्त्र के दो दो अक्षरों की व्याख्या है, इस से ज्ञात होता है कि गायत्री मन्त्र का अर्थ कितना गम्भीर और विशाल होगा, तो भी मैं यहाँ एक दो पंक्तियों में संक्षेप रूप से अर्थ लिखने का साहस करूँगा।

अर्थ :—मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूं जो शक्ति ओ३म्=ब्रह्मरूप है। भुर्भूवःस्वः =जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है। तत् =जिसको वेद "तत्" नाम से पुकारते हैं। सविता =जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है। वरेण्यम्=जो वरण करने योग्य है। भर्गः=जो तेजो रूप है। देवः=जो द्योतनशील है या जो शक्ति ऐश्वर्य देने वाली है, ऐसी उस महान् शक्ति का धीमहि=चिन्तन करता हूं कि वह शक्ति, धियः=मेरी बुद्धि को प्रचोदयात्=सत् कर्मों में लगाए।

874

ब्राह्मी विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसो भिन्धि, प्राकृतपाशजालंसावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण–पुरुषोत्तमोसि, सोमसूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्मविष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति–संहारकारक, भ्रू-मध्य–निलय, तेजोसि–धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्तरिक्षसत् होता वेदिषद्, अतिथिर्दुरोणसत्, नृषत्-वरसदृतसत्व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा, ऋतं, परंब्रह्मस्वरूप, सर्वगत, सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रियग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु, परमंपदं परामर्शय परमार्गं ब्रह्मद्वारं सर, कुमार्ग–जहि–षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदमास्वादय स्वाहा। अर्थ :

अर्थ :—तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में "ओ३म्" उच्चारण किया गया है, हे शिष्य ! तुम त्रिगुण पुरुष हो यानी तीन गुणों में तेरा ही निवास है. शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, तुम मोहरूपी तथा रजोगुण तमोगुण रूपी ग्रन्थियों को काटो, जो तुम्हारे ऊपर बनावटी बन्धनों का जाल है उसको आवरण सहित फेंक दो, तत्व को जान, तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि यह तेजोमयरूप तुम्हारे ही हैं तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, तुम ही सृष्टि के बनाने वाले हो, पालन करने वाले, नाश करने वाले हो, भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, इसलिए तुम्हें भ्रूमध्य-स्थान वाला कहते हैं, तुम तेजोरूप हो, तुम प्रकाश-रूप हो, तुम अमृतरूप हो, तुम ओ३म्‌रूप हो, तुम तत्‌रूप हो, तुम सत्‌रूप हो, तुम "हंसः" हो यानी स्वयं प्रकाश हो, तुम "शुचिषत्" हो यानी निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, तुम आकाश में रहने वाले वसुनाम के देवता हो, तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, तुम ही "वेदिषत्" यानी यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुए अग्नि हो, तुम ही "अतिथिर्दरोणसत्" हो यानी गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, तुम "नृषत्" मनुष्यों में रहने वाले हो "वरसत्" देवताओं में रहने वाले हो, तुम "ऋतसत्" सत्य में रहने वाले हो, तुम "व्योमसत्" हो आकाश में ओतप्रोत हो, "अब्जः" जल से जो रत्न, शंख आदि उत्पन्न होते हैं वह तुम ही हो, तुम पर्वतों से "गोजा" हो पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो तुम "अद्रिजा" पर्वतों से

प्रकट होने वाले नदी-नाले रूप हो, तुम "ऋतजा" हो सबसे महान् और परम सत्य हो, तुम हो "परम ब्रह्म" स्वरूप हो, तुम "सर्वगत" सबमें गए हो, तुम सर्व शक्तिमान्, हो, तुम सबों के स्वामी हो, सब इन्द्रियों से आसक्ति छोड़ो छोड़ो, उस परमपद का तथा उत्तम मार्ग का विचार कर ब्रह्म द्वार की ओर चल, यानी अपने स्वरूप को जान, अज्ञान के मार्ग को छोड़, इस षट्कोशिक शरीर 'रोम रक्त, माँस, मज्जा,हड्डयों और वीर्य"से बने हुए स्थूल शरीर को छोड़ तुम शुद्ध रूप हो, तुम निर्मल हो इसका जरा विचार कर, अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

कश्मीरी पण्डितों में प्राचीन काल से यह प्रथा चलती आती है कि अन्तिम समय पर पुत्र अपने माता-पिता को ब्राह्मी विद्या कान में सुनाता है, माता पिता अपने पुत्र को बचपन से ही ब्राह्मी विद्या कण्ठस्थ करवाते थे, चूकि पुत्र पिता का ही दूसरा रूप होता है। वह अपने पिता को अन्तिम समय में यह चेतावनी देता है जो ज्ञान आपने मुझे बचपन से दिया है ऐसा न हो कि इस समय आप उसको भूल जायें।

ओ३म् भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

गुरुस्तुति

वन्देहं सच्चिदानन्दं भेदातीतं जगद् गुरुम्
नित्यं पूर्णं निराकारं निर्गुणं सर्वसंस्थितम् ।
परात्परतरं ध्येयं नित्यमानन्दकारणम्
हृदयाकाशमध्यस्थं शुद्धस्फटिकसन्निभम् २ ।
नमामि सद् गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये । ३ ।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन यस्मै श्रीगुरुवे नमः । ४ ।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानञ्जनशलाकया
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः । ५ ।

हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन
सर्वदेवस्वरूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः । ६ ।
चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्
बिन्दुनादकलातीतं तस्मै श्री गुरवे नमः । ७
शिष्यानां मोक्षदानाय लीलयादेहधारिणे
सदेहेपि विदेहाय तस्मै श्री गुरवे नमः । ८ ।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनम्
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ९ ।
पुरस्तात्पार्श्वयोः प्रष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् । १० ।

अष्टादश श्लोकी गीता

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥१॥

केशव ! सभी विपरीत लक्षण दिख रहे मन म्लान है। रण में स्वजन सब मारकर दिखता नहीं कल्याण है ॥
अ० 1 श्लो० 31

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय ।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥२॥

धनंजय ! तज सब सिद्धि और असिद्धि मान समान हो। योगस्थ होकर कर्म कर है योग समता ज्ञान हो ॥
अ० 2 श्लो० 48

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥३॥

कर्मेन्द्रियों को रोक जो मन में विषय-चिन्तन करे। वह मूढ़ पाखण्डी कहाता दम्भ निज मन में भरे ॥
अ० 3 श्लोक 6

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधि-गच्छति ॥४॥

जो कर्म-तत्पर है जितेन्द्रिय और श्रद्धावान है। वह प्राप्त करके ज्ञान पाता शीघ्र शान्ति महान् है ॥
अ० 4 श्लोक 39

यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥५॥

वश में किये मन बुद्धि इन्द्रिय मोक्ष में जो युक्त है। भय क्रोध इच्छा त्याग कर वह मुनि सदा ही मुक्त है॥
अ० 5 श्लोक 28

युक्ताहार-विहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥६॥

जब युक्त सोना—जागना आहार और विहार हो। हो दुःखहारी योग जब परिमित सभी व्यवहार हो॥
अ० 6 श्लोक 17

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥७॥

यह त्रिगुण दैवी घोर माया अगम और अपार है। आता शरण मेरी वही जाता सहज में पार है॥
अ० 7 श्लोक 14

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥८॥

दिन अग्नि ज्वाला, शुक्ल पक्ष उत्तरायण मास में। तन त्याग जाते ब्रह्मवादी, ब्रह्म ही के पास में॥
अ० 8 श्लोक 24

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक् ।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः ॥९॥

यदि दुष्ट भी भजता अनन्य सुभक्ति को मन में लगा। है ठीक निश्चयवान् उसको साधु कहना चाहिये॥

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।

असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१०॥

जो जानता मुझ को महेश्वर अज अनादि सदैव ही। ज्ञानी मनुष्यों में सदा सब पाप से छुटता वही ॥

अ० 10 श्लोक 3

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः ।

निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥११॥

मेरे लिये जो कर्म तत्पर नित्य मत्पर भक्त है। पाता मुझे वह जो सभी से वैरहीन विरक्त है॥

अ० 11 श्लोक 55

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते ।

ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥१२॥

अभ्यास पथ से ज्ञान उत्तम ज्ञान से गुरु ध्यान है। गुरु ध्यान से फल-त्याग करता त्याग शान्ति प्रदान है॥

अ० 12 श्लोक 12

क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत ।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥१३॥

हे पार्थ ! क्षेत्रों में मुझे क्षेत्रज्ञ जान महान् तू। क्षेत्रज्ञ एवं क्षेत्र का सब ज्ञान मेरा जान तू॥

अ० 13 श्लोक 2

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।

स गुणान्समातीत्य तान् ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥१४॥

जो शुद्ध निश्चल भक्ति से भजता मुझे है निरन्तर ही। तीनों गुणों से पार होकर ब्रह्म को पाता वही॥

निर्मानमोहा जितसंगदोषा, अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञैर्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥१५॥
जीता जिन्होंने संग दोष, न मोह जिन में मान है। मन में सदा जिनके जगा अध्यात्म ज्ञान प्रधान है॥
अ० 15 श्लोक 5

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥१६॥
जो शास्त्रविधि को छोड़ करता कर्म मनमाने सभी। वह सिद्धि अथवा परमगति को न पाता है कभी॥
अ० 16 श्लोक 23

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भाव संशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१७॥
सौम्यत्व, मौन, प्रसाद मन का, शुद्ध भाव सदैव ही। करना मनोनिग्रह सदा मन की तपस्या है यही॥
अ० 17 श्लोक 16

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥१८॥
तज धर्म सारे एक मेरी ही शरण को प्राप्त हो। मैं मुक्त पापों से करूँगा तू न चिन्ता व्याप्त हो॥
अ० 18 श्लोक 66

(गीताज्ञान द्वारा उद्धृत)

मुखप्रक्षालणविधिः—शौच आदि से निवृत होकर बायाँ पैर धोते हुए पढ़ें "नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरुबाहवे । सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः"।। दायाँ पैर धोते हुए पढ़ें:— नमः कमल-नाभाय-नमस्ते जलशायिने । नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते ।। मुख धोते हुए पढ़ें:—गङ्गा, प्रयाग, गयनैमिष-पुष्करादि-तीर्थानि यानि भुविसन्ति-हरिप्रसादात्, आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम् । तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते । मुंह धोकर यज्ञोपवीत धोते हुये तीन बार पढ़ें: "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्" यज्ञोपवीत गले में फिर से धारण करते हुये पढ़ें:—यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः । यज्ञोपवीतम्-असि, यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन-उपनह्यामि ।। मुखप्रक्षा-लण करके स्नान कीजिए, हिन्दू जीवन का आरम्भ स्नान से ही होता है और अन्त भी स्नान से ही ।

* नित्यप्रार्थनाविधि *

पूर्व दिशा की ओर मुख करके धूपदीप जला कर शुद्ध आसन पर पद्मासन से बैठ कर आदिदेवभगवान् गणेश का ध्यान करके पढ़ें:—शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् , प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रे-तार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।१। बिभ्रत्-दक्षिणहस्तपद्म-युगले दन्ताक्षसूत्रे शुभे, वामे मोदक-पूर्णपात्र-परशु नागोपवीती-त्रिदृक् , श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शंखौ वहन , मौलिमान दिश्यात्-ईश्वरपुत्र-ईशभगवान लम्बोदर शर्मनः ।२। सिन्दूर-कुंकुम-घृताक्षन-विद्रुमार्क-रक्ताब्ज-दाडिमनिभाय चतुर्भुजाय

हेरम्बाय-गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय गणेश्वराय ।३। मुख्यं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः । यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्सिद्धिम्-उत्तमाम् ।४। प्रथमं वक्रतुण्डं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिङ्ग तु चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पञ्चमं तु षष्ठं विकटम्-एव च सप्तमं विघ्नराजेन्द्र धूम्रवर्णं तथाष्टमम्, नवमं भाल-चन्द्रं तु दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं द्वादशं मन्त्रनायकम्-पठते शृणुते यस्तु गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्यां धनार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते पुत्रं मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम् ।५। सुमुखश्चैक-दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः । धूम्र-केतु-र्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः द्वादशैतानि-नामानि गणेशस्य महात्मनः, यः पठेत्-शृणुयात्-वापि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम् । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा, संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।

हेमजासुतं भजे गणेशं ईशनन्दनम्

श्रीगणेशस्तुतिः—एकदन्त-वक्रतुण्डनागयज्ञ सूत्रकम् । रक्तगात्र-धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र-मण्डितम्-कल्पवृक्ष-भक्तरक्ष ! नमोस्तु ते गजाननम् ।१। पाशपाणि-चक्रपाणि-मूषकादि- रोहिणम् । अग्निकोटि, सूर्य-ज्योति, वज्र-कोटिनिर्मलम् । चित्रमाल, भक्तिजाल, भालचन्द्रशोभितम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।२। भूतभव्य, हव्यकव्य-भृगुभार्गवार्चितम् । विष्णुवह्नि-कालजालोकपाल-वन्दितम् । पूर्णब्रह्म-सूर्यवर्ण पूरपं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।३। विश्ववीर्य, विश्वसूर्य, विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता, विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् । चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्युगम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।४।

(नोट.– यह उपरलिखित गणेशस्तुति व्याकरण के अनुसार यद्यपि अशुद्ध भी है परन्तु काश्मीर में भगतजन प्रायः इस स्तुति

कावणी श्रद्धा से गायन करते हैं, श्रद्धा का शस्त्र विधि अविधि शुद्धि अशुद्धि के लिये रामबाण का काम देता है।

*** विष्णुप्रार्थना ***

सप्तश्लोकीगीता—ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्माम्- अनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्-देहं स याति परमां गतिम् ।१। स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्-प्रहृष्यत्यनुरज्जते च, रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ।२। सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोक्षि-शिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमत्लोके सर्वम्-आवृत्य तिष्ठति ।३। कविं पुराणमनुशासितारम्-अणोरणीयान्समनु-स्मरेत्-यः। सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्-आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।४। ऊर्ध्वमूलम्-अधः शाखम्-अश्वत्थं प्राहुर्-अव्ययम्। छन्दांसि यस्यपर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।५। सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो मतः स्मृतिर्ज्ञानम्-अपोहनं च, वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो, वेदान्तकृत्-वेदवित्-एव चाहम् ।६। मन्मना भव मत्-भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। माम्-एवैष्यसि युक्त्वैम्-आत्मानं मत्परायणः ।७। ओ३म् तत्-सत् इति श्रीमत्-भगवत्-गीता-सूपनिषत्सु-ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन-संवादे सप्तश्लोकी गीतासमाप्ता।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्ठः। केयूरवान्-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी हारी हिरण्मयवपु-धृतशङ्खचक्रः ।१। नमामि नारायणपाद-पंकजं करोमि नारायणपूजनं सदा। वदामि नारायणनाम निर्मलं, स्मरामि नारायण-तत्त्वम्-अव्ययम्। करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्। अश्वत्थपत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।३। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्धयात्मना वा प्रकृतिस्वभावात्, करोमि यत् यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ।४। हा कृष्ण मनसि वासिन् क्वासि यादवनन्दन। इमाम्-अवस्थां संप्राप्तम् अनाथं किं न पश्यसि ।५। या त्वरा द्रौपदीत्राणे या त्वरा गजमोक्षणे। मयि दीने दीनबन्धो सा त्वरा क्व गता हरे।

❁ विष्णुस्तुति ❁

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे उद्धर भामसुरेश्वविनाशिन् पतितोऽहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम् - अनुकम्पय दीनम् - अनाथं कुरु भवसागरपारम् ।१। जय जय देव जयासुर - सूदन जय केशव जय विष्णो । जय लक्ष्मीमुख-कमलमधुव्रत जय दशकन्धरजिष्णो घोरं हर० ।२। यद्यपि सकलम् - अहं कलयामि हरे नहि किम्-अपि स सत्वम् । तद्-अपि न मुञ्चति मामिदम् - अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं घोरं हर० ।३। पुनर् - अपि जननं पुनर् - अपि मरणं पुनर् - अपि गर्भनिवासम् । सोढुम् - अलंपुनर् -अस्मिन्माधव माम्-उद्धर निजदासम् घोरं हर० ।४। त्वं जननी जनकः प्रभुर् -अच्युत त्वं सुहृत् - कुलमित्रम् । त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधि - वहित्रं घोरं हर० ।५। जनक - सुतापति-चरण-परायण शङ्कर-मुनिवरगीतं धारय मनसि कृष्णपुरुषोत्तम् धारय संसृतिभीतिम् घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं-माम्-अनुकम्पय-दीनम्-अनाथं कुरुभव-सागर-पारम् ।६।

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् । श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ।१। छूरजं शैशवं सत्यभामाधवं श्रीधरं श्रीपतिंराधिकाराधितम् । इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं सम्भजे ।२। अङ्गनाम्-अङ्गनाम्-अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरेणाङ्गना इत्थमा - कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ वेणुना देवकीनन्दनः ।३। बालिका - बालिका वाललीला - लयः संगसन्दर्शित-भ्रूलताविभ्रमः । गोपिका गीत-दत्ता-वदानः स्वयं सञ्जगौ वेणुना देवकी - नन्दनः ।४। जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोयं जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः । जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलांगो जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ।५।

* शङ्कर प्रार्थना *

भगवान् शंकर का ध्यान करते हुए पढ़ेंः—प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव निवारय महामृत्युं मृत्युञ्जय नमोस्तुते ।१। मृत्युञ्जय महादेव पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः पीडितं भवबन्धनात् ।२। कर्पूर-गौरं करुणावतारं संसार–सारं भुजगेन्द्रहारम् । सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।३। हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ । शिव शङ्कर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।४। तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।५। आधीनाम्-अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् । उपद्रवाणां दलनं महादेवम्-उपास्महे ।६। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो - पभोगरचना निद्रा समाधि-स्थितिः । सञ्चारोऽपि परिक्रमः पशुपते स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत् यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवारा-धनम् ।७। नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय । देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।८। मातङ्गचरमाम्बर-भूषणाय समस्तगीर्वाण-गणार्चिताय त्रैलोक्य–नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।९। शिवामुखाम्भोजविकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय,चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।१०। वशिष्ठकुम्भोत्-भवगौतमादि-मुनीन्द्रवन्द्याय गिरीश्वराय, श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।११। यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।१२। वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्-इदंजन्मनि पुरा । पुरारे नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान् । नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर्-अहम्-अग्रे-प्यनतिमान्-महेश क्षन्तव्यं तदिदमपराध-द्वयम्-अपि ।१३। करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा श्रवण-नयनजं वा मानसं वा पराधम् । विदितम्-अविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ।

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

सूर्य — ग्रहाणाम्-आदिर-आदित्यो-लोकरक्षणकारकः
विषमस्थान-सम्भूतां-पीडां-हरतु-मे रविः ॥१॥

चन्द्र — रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः
विषम स्थान सम्भूतां पीडां हरतु मे विधुः ॥२॥

भौम — भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा
वृष्टिकृद्-वृष्टि-हर्ता च पीडां हरतु मे कुजः ॥३॥

बुध — उत्पातरूपो जगतां चन्द्र पुत्रो महाद्युतिः ॥
सूर्यप्रिय करो विद्वान् पडां हरतु मे बुधः ।

बृहस्पति — देवमन्त्रो विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः ।

शुक्र — दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः
प्रभुस्तारा ग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः

शनि — सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः

राहु महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबल:
अतुनश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी:

केतु अनेकरूपवर्णश्च शतशोथ सहस्रश:
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तम:

नोट—यदि जन्म पत्री अथवा गोचर से आपका कोई ग्रह अनिष्ट है तो आप नियम से इस स्तोत्र का पाठ कियाकरे निश्चितरूप से अनिष्टकफल का शमन, शुभफल की प्राप्ति होगी।

ब्रह्मा मुरारि:सुरार्चित लिंगं, निर्मल—भासित-शोभित-लिंगम् ।।
जन्मज-दु:ख-विनाशक लिंगं, तत्प्रणमामि सदा शिव-लिंगम् ।।१।।

देव मुनि-प्रवरार्चितलिंगं, कामदहं करुणाकर-लिंगम् ।।
रावणदर्प विनाशित-लिंगं, तत्पणमामि सदाशिवलिंगम् ।।२।।

सर्व—सुगन्धि सुलेपित-लिंगं, बुद्धि-विवर्धन-कारण-लिंगम् ।।
सिद्ध—सुरासर-वंदित-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ।।३।।

कनक-महामणि-भूषित-लिंगं, फणिपति वेष्टित शोभित लिंगम् ।।

दक्ष-सुयज्ञ-विनाशक-लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव-लिंगम् ॥४॥

कुंकुम-चंदन-लेपितलिंगं, पंकज — हार-सुशोभित-लिंगम् ॥
संचित-पाप-बिनाशन-लिंगं, तत्प्रणमामि-सदाशिव-लिंगम् ॥५॥

देव-गणार्चित सेवित लिंगम् भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम् ॥
दिन-कर-कोटि-प्रभा-कर लिंगम् तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥६॥

अष्ट दलोपरि वेष्टित लिंगं, सर्व — समुद्भव कारण लिंगम् ॥
अष्ट दरिद्र विनाशित लिंगं, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥७॥

सुरगुरु सुरवर पूजित लिंगम् सुरवन पुष्प सदा चित लिंगम् ॥
परात्पर परमात्मक लिंगम्, तत्प्रणमामि सदाशिव लिंगम् ॥८॥

लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिव सन्निधौ ॥
शिव लोकं मवाप्नोति शिवेन सह मोदते ॥९॥

नोट—'लयनात् लिंगमुच्यते' शिव में चराचर सृष्टि लय हो जाती है। इसीलिए लिंग कहलाता है। लिंग चिन्ह को भी कहते हैं गोलाकार शंकर की मूर्ति को अखिल ब्रह्माण्ड (जो अण्डाकार का है) का पूजन करते समय यह लिंगाष्टक अवश्य पढ़ा करें. आप की सभी कामनायें सिद्ध होंगी

शंकर पूजन

(संक्षेप में)

आप प्रायः मन्दिर में जाकर भगवान शंकर पर जल चढ़ाते हैं और चन्द मिनटों में ही अपनी श्रद्धा की लहर भगवान् शिव को भेंट करते हैं, श्रद्धा को उत्पन्न करने का साधन विधयनुसार पूजा करना है। शंकर पूजा का विधान बहुत लम्बा चौड़ा है परन्तु यह पूजन उनके लिये लिखता हूँ जो शिव पूजन से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं :—

भगवान् शंकर पर जल चढ़ाते हुये पढ़ें :—असंख्याता: सहस्राणि ये रुद्रा अधि-भूम्याम्। तेषां सहस्र-योजनेव धन्वानि तन्मसि ।1। यो रुद्रो अग्नौ य अप्सु य औषधीषु यो वनस्पतिषु। यो रुद्रो विश्वा भुवना विवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु देवा: ।2। भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय महादेवाय भीमायदेवाय ईशानायदेवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय जलं समर्पयामि नमः।

नेत्र स्पर्श करते हुये पढ़ें :—तेजोरूप ! महेशान ! सोमसूर्याग्निलोचन प्रकाशय परंतेजो नेत्रस्पर्शेन शंकर ! भवायदेवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय नेत्रस्पर्शं परिगृह्णामि नमः।

(गन्ध) तिलक लगाते हुये पढ़ें :—सर्वेश्वर जगद्वन्द्य दिव्यासनसुसंस्थित। गन्धं गृहाण देवेश दिव्यगन्धोपशोभितम्। भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय समालभनं गन्धो नमः।

फूल चढ़ाते हुये पढ़ें :—सदाशिव शिवानन्द प्रधान करणेश्वर। पुष्पाणि बिल्वपत्राणि विचित्राणि गृहाण मे। भवाय देवाय उमा सहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय पुष्पं समर्पयामि नमः।

रत्नदीप कर्पूर चढ़ाते हुये पढ़ें :—हिरण्यबाहो सेनानी-रोषधीनां पते शिव । दीपं गृहाण कर्पूर कपिलाज्य त्रिर्वर्तिकम् । भवाय देवाय उमा-सहिताय शिवाय पार्वती-सहिताय परमेश्वराय रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः ।

दोनों हाथों में पुष्पांजलि पकड़ते हुये निम्नलिखित तीन श्लोक पढ़कर फूल चढ़ावें—

आत्मा त्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधि स्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यत् यत् कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥१॥

अर्थ—इस श्लोक में भक्त स्थूल पूजा के माध्यम से उत्तम पूजा पर पहुँचना चाहता है। ज्ञानियों के समाज में उत्तम पूजा का लक्षण क्या है इस स्तुति में उसका वर्णन किया है :—

हे शम्भो ! मेरी आत्मा तुम ही हो, मेरी बुद्धि तुम्हारी शक्तिरूपिणी पार्वती है, मेरे प्राण (अपान समान आदि) तुम्हारे साथी हैं, मेरा शरीर तुम्हारा घर या मन्दिर है, विषय भोग के लिये जो मेरे व्यापार होते हैं वही तुम्हारी पूजा है, मेरी जो निद्रा है वही तुम्हारी समाधि की स्थिति है, मेरे पाँवों का चलना तुम्हारी प्रदक्षिणा है, मैं जो कुछ बोलता हूँ सब तुम्हारा स्तोत्र है, सारांश यह है कि मैं जो कोई कर्म करता हूँ सभी तुम्हारी आराधना है ।

पुष्पाणि सन्तु तव देव ममेन्द्रियाणि
धूपोऽगुरुर्वपुरिदं हृदयं प्रदीपः ।

प्राणान् हविषि करणानि नवाक्षतानि

पूजाफलं व्रजतु साम्प्रतमेव जीवः ॥२॥

अर्थ—हे शम्भो ! मेरे सभी ज्ञानेन्द्रिय आपके पूजा के फूल बन, यह मेरा शरीर धूप का काम दे, मेरा हृदय तुम्हारी पूजा में दीप का स्थान ले, मेरे प्राण तुम्हारे पूजारूपी यज्ञ में आहुति का काम दे, मेरे कर्मेन्द्रिय अक्षत (पूजा के लिये बिना किसी ज़ख्म के चावल) का काम दें, हे भगवन् ! मेरा यह जीवात्मा अभी उत्तम पूजा के फल को प्राप्त हो।

जन्मानि सन्तु मम देव शताधिकानि

माया च मे विशतु चित्तमऽबोध हेतुः।

किन्तु क्षणार्धमपि त्वच्चरणारबिन्दात्

मा पैतु मे हृदयमीश नमो नमस्ते ॥३॥

इस स्तुति में भक्त भगवान् शंकर से पूजा का फल यह नहीं मांगता है कि मेरा आवागमन छूट जाये, अपितु बार-बार जन्म लेने की मुझे परवाह नहीं, मेरे सैकड़ों जन्म होने दीजिये, मैं यह नहीं मांगता हूँ मेरे चित्त से अज्ञान के कारण बना हुआ माया का पर्दा छिन्न-भिन्न हो जाये, बल्कि वह माया बिना किसी रोक-टोक के मेरे चित्त में प्रवेश करे, केवल आपसे प्रार्थना है आपके चरण कमल आधे क्षण के लिये भी मेरे चित्त से न निकले, हे भगवान् शंकर ! आपको बार-बार नमस्कार हो।

उपरिलिखित इन तीन श्लोकों से फूल अर्पण करके नतमस्तक होकर पढ़ें—"**उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा मनसा वचसा नमस्कारं करोमि नमः।**

* देवी प्रार्थना *

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि। दारिद्र्यदुःखभय-हारिणि का त्वद्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्र चित्ता ।१। देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य, प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वम्-ईश्वरी देवि चराचरस्य ।२। पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरतरलोहं तव सुतः। मदीयोयं त्यागः समुचितम्-इदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति ।३। जगत्-मातर्-माताः तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्-उपमं यत्-प्रकुरुषे: कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति ।४। शरणागत-दीनार्त-परित्राणपरायणि। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।१। या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।२। या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता॰ नमस्तस्यै ।३। या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।४। या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।५। या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।६। या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।७। या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।८। या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।९। या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।१०। या देवी॰ लज्जारूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।११। या देवी॰ शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।१२। या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता नमस्त॰ ।१३। या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता

नमस्त० या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१५। या देवी...स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१६। या देवी...दयारूपेण संस्थिता नमस्त० ।१७। या देवीसर्वभूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता नमस्त० ।१८। या देवीसर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१९। या देवीसर्वभूतेषु भ्रांतिरूपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै ।२०। आनन्दसुन्दर पुरन्द्रमुक्तमाल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मन्जु, मन्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ।२१। उत्तप्तहेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेत्तश्चिरन्तनमघौघवनं लुनीहि: कारागृहे निगडबन्धनपीडितस्य त्वत्संस्मृतौ झडिति मे निगडास्त्रुटयन्तु ।२२। माया कुण्डलिनी, क्रियामधुमती, कालीकला मालिनी। मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी। शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी॰ ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माताकुमारीत्यसि ।२४। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि। त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।२५। सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

* इन्द्राक्षी * भवानी रुद्राणी शङ्करार्धशरीरिणी ॥

इन्द्र उवाच—इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता, कात्यायनी महादेवी चन्द्रघंटा महातपा, गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी, नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला अग्नि ज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी। मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला आनन्दा भद्रजा नन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कराली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी, इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्रशक्तिपरायणा, महिषासुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता, वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी, श्रुतिःस्मृति-धृतिर्मेधा विद्यालक्ष्मी सरस्वती, आनन्दा विजयापूर्णा मानस्तोका पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा, शिवा

गौरीस्तुति

ॐ लीलारब्धस्थापित-लुप्ताखिल-लोकां, लोकातीतैर्योगिभिरन्तर्हृदि-मृग्याम्। बालादित्य-श्रेणि-समानद्युति-पुञ्जां गौरीमम्बामम्बुरुहाक्षीमहमीडे।१। आशापाशक्लेशविनाशं विदधानां पादम्भोज-ध्यान-पराणां पुरुषाणाम्। ईशीमीशार्द्धार्धे हरां तां तनुमध्यां गौरीमम्बा०। प्रत्याहारध्यान-समाधिस्थितिभाजां नित्यं चित्ते निर्वृत्तिकाष्ठां कलयन्तीम्। सत्यज्ञानानन्दमयीं तां तडिदाभां गौरी० ।३। चन्द्रापीडानन्दितमन्द-स्मितवक्त्रां, चन्द्रापीडालंकृतलोलालकभाराम्। इन्द्रोपेन्द्राद्यर्चितपादाम्बुजयुग्मां गौरी० ।४। नानाकारैः शक्तिकदम्बैर्भुवनानि व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका। कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां गौरी० ।५। मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधि रंध्रं सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्। स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां तामभिवन्द्यां गौरी० ।६। आदिक्षान्तामक्षरमूर्त्या विलसन्तीं भूते भूते भूत-कदम्बं प्रसवित्रीम्। शब्दब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां गौरी० ।७। यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं, भूयो भूयः प्रादुरभूदुत्थितमेव। भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरंतीं गौरी० ।८। यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला, सूत्रे यद्वत्क्वापि चरं चाप्यचरं च। तामध्यात्मज्ञानपदव्या गमनीयां गौरी०।९ नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीशः साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च। विश्वत्राणक्रीडन शीलां शिवपत्नीं गौ १० पूजाकाले भावविशुद्धिं विदधानो भक्त्या नित्यं जल्पति गौरीदशकं यः। वाचां सिद्धिं सम्पत्तिमुच्चैः शिवभक्तिं तस्या वश्यं पर्वतपुत्री विदधाति।

ज़मीदारी वेदान्त के ढांचे में (लीला)

श्री परमानन्द जी (मार्तण्ड निवासी)

कर्म भूमिकाय दिज़िधर्मुक बल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।
(१) दुयि प्राण दांद ज़ूरि ध्यन त राथ वाय, कुम्भ के कुरह ज़ोर तिमनय लाय ।
हल कर युथ न रोज़ि बीठ कांह रेल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ॥
(२) लोल के आल फाल तुल नविथ, वैर यट फुरि दत फुट रविथ ।
वह रुक सेह युथ न रोज्यस तल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ॥
(३) विचार बठि त बेरह लदिथ क्यथ, श्रुव यन द्यव शुजरविथ वथ ।
सम दृष्ट पात जन अद फेरि ज़ल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ॥
(४) सोन्थ दोह तारह मुत यावुन, लज़ि पज़ि साथा राव रावुन ।
वब ब्योल मवप्रार करु मंगल, सन्तोष ब्यालि बुलि आनंद फल ॥
(५) अपुरिथ फुरनायि नोम वुधुर, सुर के रबि चक सूतिन भर ।
इद्रिय गगरन करु वठल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(६) भखति हँज़ि न्यन्दि फेरि साधनायि खेत, ह्यलि नेरिह तप के पप सग सूत ।
सम भाव नायि फुलि पम्पोश डल, संतोष ब्यालि बुवि आननंद फल ॥
(७) इन्द्रिय पशि वारह रछनावुक. तिमनय अथि यथ न खेत ख्यावक
वावच रावच नेर निष्कल, संतोष ब्यालि बुवि अनंद फल ॥
(८) ह्यलि यलि नेरिह त्यलि सॅप्यस क्राव, वैराग द्राति सूति लून्य लून्य वाथ ।

राशि चक्र

मेष	च, चे, चो, ला, लि, लू, ले, लो, ।
वृष	इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो ।
मिथुन	क, कि, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह ।
कर्क	ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो ।
सिंह	म, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे ।
कन्या	टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो ।
तुला	रा, रि, रु, रे, रो ता, ती, तू, ते ।
वृश्चिक	तो, न, नी, नू, ने, या, यी, यू ।
धन	ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, ढा, भे ।
मकर	भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, ग, गी ।
कुम्भ	गु, गे, गो, सा, सि, सु, से सो, द ।
मीन	दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची ।

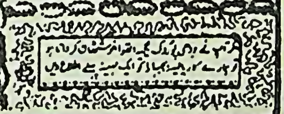

समवंध संस्त मवि लाव्यन वल, संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।
(९) मठि खस नचि रज़ि मठि मठि सार, साधनि अनंत भंड्बंध ते यार
नित्य नियम सुमरन अद समि खल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(१०) त्रिगुन त्यागं नोम अख गुन लद, निर्मान पावख निर्मान पद ।
शमिथ तम दिथ करु कुशल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(११) ध्यानधारणायि धान्य मुंड विस्तार, ज्ञान धान्य खास खास गाश शाश चार
मन के अनुभव वार दिस छल । संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(१२) त्याग के अथ मूत वार छुन नाव, प्रोन तं ज़ग फुटजन ब्योनब्योनथाव ।
ज़ागि रोज़ लेगिथ त्रविथ जुल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(१३) तुलिथ अद थव अंबरन माल, सो-हं हायिक सति नख अदंवाल ।
लुति बार वात नविथ खनवल, संतोष ब्यालि बुवि अनंद फल ॥
(१४) शमदम यम नियम घाठ वात नाव, शान्त श्रद्धायि जल पकनाव नाव ।
शिहलिथ पानस मानस बल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(१५) लाग नखवाल माल आगस तार, खलि यथ न रोजिय जंगिरदार ।
वाकय त फज़िल रोज़ि कस तल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥
(१६) चरिथ व्यय ब्योल संच्यथ थव, सोन्त यलि यिय त्यलि फलि फलि वव
उपकार उपनय न-व्य न-व्य फल, संतोष ब्यालि बुवि आनन्द फल ।
(१७) योग मायायि हुन्द भूगी आस, इय छय दुय तिय पानस कास
साधनाव व्ययि तय अद साध मोडल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल ॥

(१८) कर्मफल सोरनय गुर शब्दय, संच्यथ कर्ममान प्रारब्धय ।
कर्मकाण्ड ग्यान नेरि नार बुज़मल, संतोष ब्यालि बुवि
आनन्द फल ॥
(१९) स्वयं प्रकाश के विज्ञानय, अविथ मान व्ययि अभिमानय,
अविथ रोज़ि द्वादशांत-मण्डल, संतोष ब्यालि बुवि आनंद फल।
(२०) परमानंद अोस जमींदार, हुरिथ माल तस रोज्यस न लार ।
वोंगव वारिव च्वजिश गांगल, सन्तोष ब्यालि बुवि आनंद फल।

गायत्री मन्त्र :—ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।१०।

गायत्री चालीसा

भूर्भुवः स्वः ॐ युतजननी गायत्री नितकलिमल दहनी ।
अक्षर चौबीस परम पुनिता : इनमें बसें शास्त्र श्रुति गीता ।
शाश्वत सतोगुणी सत् रूपा : सत्य सनातन सुधा अनूपा ।
हंसारूढ सितम्बर धारी : स्वर्णकान्ति शुचि गगन विहारी ।
पुस्तक पुष्प कमण्डलु माला : शुभ्र वर्ण तनु नयन विशाला ।
ध्यान धरत पुलकित हियहोई । सुख उपजत दुख दुरमति खोई ।
कामधेनु तुम सुर तरु छाया : निराकार की अद्भुत माया ।
तुम्हरी शरण गहै जो कोई : तरैसकल सङ्कट सों सोई ।
सरस्वती लक्ष्मी तुम काली : दिपै तुम्हारी ज्योति निराली ।
तुम्हरी महिमा पार न पावै : जो शारद शत मुख गुन गावैं ।
चार वेद की मातु पुनीता : तुम ब्रह्माणी गौरी सीता ।

گائیتری منتر:۔ اوم بھور بھواہ۔ سواہ تت سوتور ورنیم
بھرگو دیوسے۔ دھی مہیے۔ دھیو۔ یوناہ۔ پرچودیات (۱۰)

گائیتری چالیسا

اوم بھور بھواہ۔ سواہ۔ اوم یت جننی ؛ گائیتری نت کلہ ملہ دہنی
اکھشر چوبیس پرمہ۔ پونی تا ؛ ان میں بسے شاستر شرتی گیتا
شاشوت ستوگنی۔ ست روپا ؛ ستیہ سناتن۔ سودھا۔ انوپا
ہنسارودھ۔ ستمبر دھاری ؛ سورن کانتی۔ شوچی۔ گگنہ بہاری
پستک پشپ کمنڈلو مالا ؛ شوبھر ورن۔ تنو نینہ وشالا
دھیان دھرت پلکت۔ ہیہ ہوئی ؛ سکھ اپجت دکھ درمتی کھوئی
کام دھینو۔ تم سر ترو چھایا ؛ نراکار کی ات بھوت مایا
تمہری شرن گہیہ جو کوئی ؛ ترے سکل سنکٹ سوں سوئی
سرسوتی لکشمی تم کالی ؛ دیپے تمہاری جیوتی نرالی
تمہری مہما پار نہ پاوے ؛ جو شارد شت مکھ گن گاوے
چار وید کی ماتہ پونی تا ؛ تم برھمانی گوری سیتا

महा मन्त्र जितने जग माहीं : कोउ गायत्री सम नाहीं ।
सुमरत हिय में ज्ञान प्रकासै : आलस्य पाप अविद्या नासै ।
सृष्टि बीज जग जननि भवानी : कालरात्रि वरदा कल्याणी ।
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुर जेते : तुमसों पावें सुरता तेते ।
तुम भक्तन की भक्त तुम्हारे : जननि हिं पुत्र प्राण ते प्यारे ।
महिमा अपरम्पार तुम्हारी : जै जै जै त्रिपदा भय हारी ।
पूरित सकल ज्ञान-विज्ञाना : तुम सम अधिक न जग में आना ।
तुमहिं जानि कछु रहे न शेषा : तुमहिं पाय कछू रहे न कलेशा ।
जानत तुमहिं तुमहिं ह्वै जाई : पारस परसि कुधातु सुहाई ।
तुम्हरी शक्ति दिपै सब ठाईं : माता तुम सब ठौर समाई ।
ग्रह नक्षत्र ब्रह्माण्ड घनेरे : सब गतिवान् तुम्हारे प्रेरे ।
सकल सृष्टि की प्राण विधाता : पालक पोषक नाशक त्राता ।
मातेश्वरी दया व्रतधारी : तुम सम तरे पातकी भारी ।
जा पर कृपा तुम्हारी होई : ता पर कृपा करे सब कोई ।
मन्द बुद्धि ते बुधि बल पावें : रोगी रोग रहित ह्वै जावें ।

مہا منتر جتنے جگ ماہیں : کوؤ، گایتری، سم ناہیں
سمرت ہیئے میں گیان پرکاسے : آلسیہ، پاپ، اودیا ناسے
سرشٹی بیج، جگ جننی بھوانی : کالراتری، وردا، کلیانی
برہما، وشنو، رودر، سر جیتے : تم سوں پاویں، سرتا تے تے
تم بھکتن کی بھکت تمہارے : جننی ہیں پتر، پران تے پیارے
مہما، اپرم پار تمہاری : جے جے جے تریپدا بھیہاری
پورت، سکل، گیان، وگیانا : تم سم ادھک نہ جگ میں آنا
تمہیں جانی، کچھو رہے نہ شیشا : تمہیں پایہ کچھو رہے نہ کلیشا
جانت تم ہی تم ہی ہوئے جائی : پارس پرس کدھاتو سوہائی
تمہری شکتی دپے سب ٹھائیں : ماتا، تم سب ٹھور سمائی
گرہ، نچھتر، برہمانڈ، گھنیرے : سب گتی دان، تمہارے پریرے
سکل، سرشٹی کی پران ودھاتا : پالک، پوشک، ناشک ترا تا
ماتیشوری دیا ورت دھاری : تم سم ترے پاتکی بھاری
جا پر کرپا تمہاری ہوئی : تا پر کرپا کرے سب کوئی
مند، بدھی تے بدھی بل پاویں : روگی روگ رہت ہو جاویں

दारिद्र मिटै कटै सब पीरा : नासै दुख हरै भव भीरा ।
गृह क्लेश चित चिन्ता भारी : नासै गायत्री भय हारी ।
सन्तति हीन सुसन्तति पावें : सुख सम्पत्ति युत मोद मनावें ।
भूत पिशाच सबै भय खावें : यम के दूत निकट नहीं आवें ।
जो सधवा सुमिरें चितलाई : अछत सुहाग सदा सुखदाई ।
घर वर सुख प्रद लहें कुमारी : विधवा रहें सत्य व्रत धारी ।
जयति जयति जगदम्ब भवानी : तुम सम और दयालु न दानी ।
जो सद्गुरु से दीक्षा पावें : सो साधन को सफल बनावें ।
सुमिरन करें सुरुचि बडभागी : लहें मनोरथ गृही विरागी ।
अष्ट सिधि नव निधि की दाता : सब समर्थ गायत्री माता ।
ऋषि मुनि तपस्वी योगी : आरत अर्थी चिन्तित भोगी ।
जो जो शरण तुम्हारी आवें : सोसो मन वांछित फल पावें ।
बल विद्या शील सुभाऊ : धन वैभव यश तेज उछाऊ ।
सकल बढ़ें सुख नाना : जो यह पाठ करें धर ध्याना ।

दोहा– यह चालीसा भक्तियुत, पाठ करै जो कोय
तापर कृपा प्रसन्नता, गायत्री की होय ।

دارِدر مٹے کٹے سب پیرا : ناسے دُکھ ہرے بھو بھیرا
گرہ کلیش چت چنتا بھاری : ناسے گائتری بھے ہاری
سنتت ہین سُوسنتتی پاویں : سُکھ سمپتی یُت مود مناویں
بھوت پشاچ سبھے بھے کھاویں : یم کے دوت نکٹ نہیں آویں
جو سدھوا سُمریں چِت لائی : اچھت سُہاگ سدا سُکھدائی
گھر ور سُکھ پرد لہیں کماری : ودھوا رہیں ستیہ ورت دھاری
جیتی جیتی جگدمب بھوانی : تم سم اور دیالو نہ دانی
جو ستگرو سے دیکھشا پاویں : سو سادھن کو سپھل بناویں
سُمرن کریں سُرُچی بڑبھاگی : لہیں منورتھ گرہی ویراگی
اشٹ سدھی نودھی کی داتا : سب سمرتھ گائتری ماتا
رِشی مُنی تپسوی یوگی : آرت ارتھی چنتت بھوگی
جو جو شرن تمہاری آویں : سو سو من وانچھت پھل پاویں
بل ودیا شیل سُبھاؤ : دھن ویبھو یش تیج اُچھاؤ
سکل بڑھے سُکھ نانا : جو یہ پاٹھ کرے دھر دھیانا

دوہا : یہ چالیسا بھکتی یُت پاٹھ کریے جو کوئے
تا پر کرپا پرسنتا گائتری کی ہوئے

शांतिपाठ

भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवाः, भद्रं पश्येनाक्षिभिर्यजत्राः। स्थिरैरंगैस्तष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवाहितं यदायुः, स्वस्ति न इन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमीः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥१॥

स्वस्तिप्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्यायेन मार्गेण महीं महीपाः। गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥२॥

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी। देशोयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ॥३॥

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्। शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत् ॥४॥

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥५॥

राजस्वस्ति प्रजास्वस्ति देशस्वस्ति तथैव च। यजमान गृहे स्वस्ति, स्वस्ति गोब्राह्मणेषु च ॥६॥

विधेहि देवि कल्याण विधेहि परमां श्रियं रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥७॥

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्यमा शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः नमो ब्रह्मणे नमो वायवे नमस्ते वायो, त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि, तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतु मामवतु वक्तारं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥८॥

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु, सहवीर्यं करवावहै, तेजस्विना वधीतमस्तु माविद्विषावहै शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥९॥

काश्मीर के महात्माओं के श्राद्ध यज्ञ तथा जयन्तियाँ

चण्डीगाम महात्मा यज्ञ चैत्र शुक्लपक्ष षष्ठी 15 अप्रैल
श्री बोनकाकश्राद्ध वैशाख कृष्णपक्ष चतुर्थी 28 अप्रैल
शकर साहब यज्ञ (बटगुण्ड) वैशाख शुक्लपक्ष प्रतिपद् 9 मई
योगीराज धर्मदत्त यज्ञ वैशाख शुक्लपक्ष तृतीया 12 मई
भगवान् गोपीनाथ दिवस ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष द्वितीया 9 जून
रुपभवानी जयंती ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा 22 जून
स्वामी विद्याधर जी यज्ञ आषाढ़ शुक्लपक्ष त्रयोदशी 19 जुलाई
स्वामी लाल जी जयन्ती श्रावण कृष्णपक्ष तृतीया 24 जुलाई
प्रट बब दिवस श्रावण कृष्णपक्ष द्वादशी 2 अगस्त
स्वामी गणकाक यज्ञ श्रावण शुक्लपक्ष पूर्णिमा 19 अगस्त
स्वामी गोविन्द कौल यज्ञ भाद्र कृष्णपक्ष चतुर्दशी 3 सितम्बर
माता रुप देद जयन्ती भाद्र शुक्लपक्ष पंचमी 8 सितम्बर
शकर साहब यज्ञ भट्टगुण्ड अश्विनी कृष्णपक्ष प्रतिपद् 19 सितम्बर
ज्योतिषाचार्य केशव भट्ट दिवस अश्विन कृष्णपक्ष द्वितीया 20 सितम्बर
स्वामी हरकाक यज्ञ कुपवारा आश्विन कृष्ण पक्ष त्रयोदशी 1 अक्टूबर
स्वामी हरिकृष्ण यज्ञ आश्विन शुक्लपक्ष द्वितीया 5 अक्टूबर
माता सती देवी दिवस आश्विन शुक्लपक्ष द्वादशी 14 अक्टूबर
स्वामी नन्दलाल साहब श्राद्ध आश्विन शुक्लपक्ष त्रयोदशी 15 अक्टूबर
स्वामी महादेव काक यज्ञ (रत्नपोरा) कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी 9 नंवबर
स्वामी हरिकृष्ण जयन्त कार्तिक शुक्लपक्ष एकादशी 12 नंवबर
स्वामी आत्माराम जी यज्ञ कार्तिक शुक्लपक्ष एकादशी 12 नंवबर
स्वामी सर्वानन्द जी यज्ञ मार्ग कृष्णपक्ष त्रयोदशी 14 नंवबर
स्वामी विद्याधर जी जयंती मार्ग शुक्लपक्ष तृतीया 4 दिसम्बर
स्वामी नन्द लाल साहिब जयन्ती पोष कृष्णपक्ष दशमी 26 दिसम्बर
स्वामी कैलाश कौल यज्ञ पोष कृष्णपक्ष अमावसी 31 दिसम्बर
स्वामी अशोकानन्द जी यज्ञ पोष कृष्णपक्ष अमावसी 31 दिसम्बर
स्वामी शिवाराम जी यज्ञ पोष शुक्लपक्ष प्रतिपद् 1 जनवरी
श्री बोनकाक जयन्ती पोष शुक्लपक्ष दशमी 9 जनवरी
स्वामी आफ्ताब राम यज्ञ माघ कृष्णपक्ष चतुर्थी 19 जनवरी
स्वामी रामयज्ञ (फतेह कदल) माघ कृष्ण पक्ष चतुर्थी 19 जनवरी
महात्मा मनस राजदान जयन्ती माघशुक्लपक्ष पंचमी 3 फरवरी
स्वामी नन्दलाल साहब यज्ञ फाल्गुण शुक्लपक्ष अष्टमी 7 मार्च
कशकाक जी यज्ञ (बड़ीपोर) चैत्र कृष्णपक्ष नवमी 23 मार्च
ब्रह्मचारी अर्जुनदेव यज्ञ चैत्र कृष्णपक्ष दशमी 24 मार्च
स्वामी ग्वाश काक जी यज्ञ चैत्र कृष्णपक्ष अमावसी 29 मार्च

नोट :—उपरलिखित श्राद्ध की तिथियों में 'देवा' के विचार से एक दिन का फर्क निकालें।

ग्रहण विवरण

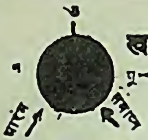

खग्रास चन्द्र ग्रहण

'ख' ग्रास चन्द्र ग्रहण :—24 अप्रैल 1986 गुरुवार चत्र शुक्लपक्ष पूर्णिमा विक्रमी 2043।

यह ग्रहण दिन से आरम्भ होगा, इसलिए ग्रस्त उदय होगा। ग्रहण आरम्भ होने का समय--4 बजकर 33 मिन्ट दिन, समाप्त होने का समय 7 बजकर 52 मिन्ट सायं।

यह ग्रहण तुला राशि पर होगा, इसलिए तुलाराशि वाले यह ग्रहण न देखें, बल्कि यथाशक्ति दान धर्म करें।

यह ग्रहण मेष, मिथुन, कर्क कन्या, तुला कुम्भ तथ मीन के लिये हानिकारक है।

इस ग्रहण का सूतक 7 बजे 45 प्रातः से आरम्भ होगा।

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय से मिलने वाली पुस्तकें

(1) कर्मकाण्ड दीपक।	(4) महिम्नस्तोत्र अर्थ सहित।
(2) शिवरात्रि पूजा।	(5) बहुरूपगर्भ।
(3) भवानी नाम सहस्र	(6) पञ्चस्तवी

खग्रास चन्द्र ग्रहण

'ख' ग्रास चन्द्र ग्रहण :—असूज शुक्लपक्ष पूर्णिमा शुक्रवार 17/18 अक्टूबर को होगा, पूर्णिमा शुक्रवार 11 बजे रात को आरम्भ होकर 3 बजे से 37 मि० समाप्त होगा। इस ग्रहण का सूतक 2 बजे दिन से आरम्भ होगा। यह ग्रहण मीन तथा मेष राशि पर होगा। इसलिये दोनों राशि वाले यह ग्रहण न देखें बल्कि यथा शक्ति दान-धर्म करें।

यह ग्रहण मेष कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मीन के लिये हानिकारक है।

इस वर्ष दो सूर्य ग्रहण और दो चन्द्र ग्रहण होंगे :—

(1) **सूर्य ग्रहण** :—2043 असूज कृष्णपक्ष अमावसी शुक्रवार तदानुसार 3 अक्टूबर 1986 को होगा।

(2) **सूर्य ग्रहण** :—चैत्र कृष्णपक्ष अमावसी रविवार तदानुसार 29 मार्च 1987 को होगा।

नोट :—यह दोनों सूर्य ग्रहण भारत में नहीं दिखाई देंगे, इसलिये भारत पर इनका कोई शुभ अशुभ प्रभाव नहीं होगा।

गौरी स्तुतिः

पृष्ट 21 पर "गौरी स्तुति" लोला रब्ध के दस श्लोक सम्पूर्ण रूप से लिखे हुये हैं, यहां केवल उन दस श्लोकों का अर्थ लिखा गया है=

(1) लोलारब्ध......................

जो जगत् अम्बा बिना किसी परिश्रम के सृष्टि को बनाती है, पालना करती है और नाश करती है, योग को अन्तिम भूमिका पर पहुंचे हुये योगी जिस शक्ति रूपी माँ को हृदय में ढूंढते हैं, चढ़ते हुये असंख्य सूर्यों को जैसी प्रकाश वाली, कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूं ॥1॥

(2) आशापाश:...................

जो भक्त उस शक्ति रूपी माता के चरण कमलों के ध्यान में लेगे हुये हैं उन को आशा के बन्धनों से उत्पन्न हुये कष्टों को नाश करने वाली, शक्ति शाली, शंकर के अर्ध शरीर पर अधिकार वाली, सूक्ष्म कमर वाली कमल जैसे नेत्रों वाली माता गौरी की मैं स्तुति करता हूं।

(3) प्रत्याहार..................

प्रत्याहार, ध्यान, तथा समाधि की साधना में लगे हुये भक्तों के चित्त में आनन्द उत्पन्न करने वाली सत्-चित् तथा आनन्द स्वरूप वाली, बिजली की जैसी प्रकाश वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की में स्तुति करता हूं।

(4) "प्रत्याहार..................

इन्द्रियों का अपने-अपने विषयों के संग से मुंहमोडना अथवा इन्द्रियों का चित्त के के नियन्त्रण में रहना "प्रत्याहार" कहलाता है, प्रत्याहार के सिद्ध होने पर प्रत्याहार के समय योगी को बाहिर का ज्ञान नहीं होता है, अपितु व्यवहार के समय पर होता है।

"ध्यान तेल की धारा की भान्ति लगातार "ध्येय" यानी जिस का ध्यान किया जाये में लगा रहना "ध्यान" कहलाता है अथवा चित्तवृत्ति की एकतानता को "ध्यान" कहते हैं।

"समाधि ध्यान का एक दूसरा रूप ही "समाधि" है, ध्यान करते समय योगी का चित्त जब ध्येया-कार हो जाना "ध्येय" के बिना जब योगी को अपना आप बिल्कुल भूल जाना है "समाधि" कहलाती है।

ध्यान और समाधि में अन्तर

ध्यान में ध्यान करने वाले को (1) ध्याता (2) ध्यान (3) ध्येय इन तीनों का भान रहता है, परन्तु समाधि में केवल ध्येयाकार वृत्ति ही रहती है।

(5) चन्द्रापीडा ....

भगवान् शंकर को आनन्दित करने वाले मुस्कराहट से युक्त मुखवाली, भगवान् शंकर के निमित्त सजाये हुये घूँघर वाले बालों की भारवाली, इन्द्र तथा नारायण जिस के चरणों की पूजा करते हैं, उस कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूं।

(6) नानाकारै........................

भिन्न-भिन्न शक्तियों से भूर्भवः स्वः आदि लोकों में व्याप्त होकर जो माँ अकेली स्वतन्त्र रूप से खेलती रहती है, जो कल्याण रूपा है, शरण में आये हुओं के लिये कल्पलता है, यानो हर कामना को पूर्ण करने वाली है, ऐसे ही कमलनेत्रों वाली माँ की मैं स्तुति करता हूं।

(7) मूलाधारात् ....

मूलाधार से उठी हुई सूर्यलोक और चन्द्रलोक को छोड़ कर अथवा लांघ कर ब्रह्म रन्ध्र तक पहुंची हुई, प्रकाश रूप, स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीर में व्याप्त उस प्रणाम के योग्य कमल जैसे नेत्रोंवाला गौरी माता की मैं स्तुति करता हूं।

इस श्लोक में "मूलाधार" तथा "ब्रह्मरन्ध" का संकेत है, इसलिये मूलधार आदि षड्चक्रों के विषय में पाठकों की जानकारी के लिये इस विषय पर थोड़ा सा प्रकाश डालना आवश्यक है।

मनुष्य शरीर शक्ति का केन्द्र है, योगियों का कहना है कि मूलाधार में कुण्डलिनी सोई हुई होती है, कुण्डलिनी सर्प के आकार की होती है इसलिए कुण्डलिनी कहलाती है, योगियों के शरीर में इस कुण्डलिनी के जाग्रत होने पर यह चक्र की भांति अधिक तेज रफ्तार से चलती है, इसके चलने की शक्ति प्रकाश की गति से अधिक है प्रकाश 185000 मील प्रति सैकण्ड की गति से चलता है और कुण्डलिनी 35000 मील प्रति सैकण्ड की गति से चलती है, कुण्डलिनी जाग्रत होकर इडा पिंगला नाड़ी को लांघकर अथवा इसी सूर्यनाड़ी चन्द्रनाड़ी की सहायता से षड्चक्रों को अथवा षड्कमलों को प्रफुल्लित

करके ब्रह्मरन्ध अथवा सहस्त्रार में पहुंचकर सदाशिव से मिलजातो है, सहस्त्र दल को प्रज्वलित करना ही कुण्डलिनी साधना का अन्तिम लक्ष्य है।

षड्चक्र अथवा
(षड् दल)

मूलाधारचक्र : जोगुदा के समीप है, इसके 4 दल हैं।
स्वाधिष्ठानचक्र : जो लिंग के सामने है इसके 6 दल हैं।
मणिपूरचक्र : नाभि के सामने है जिस के दस दल हैं।
अनाहत चक्र : हृदय के सामने है जिसके 12 दल हैं।
विशुद्धिचक्र : कण्ठ के सामने है जिसके 16 दल हैं।
आज्ञाचक्र : भ्रुवों के मध्य में है जिसके दो दल हैं।

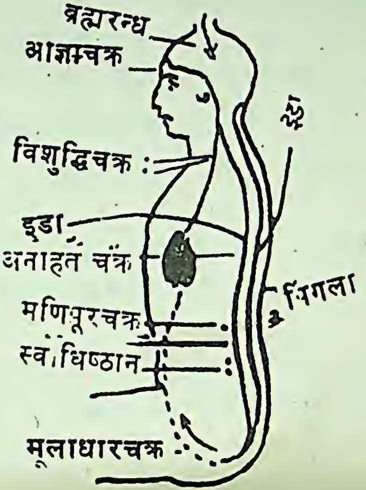

(7) आदिक्षान्ता..........................

"अ" से लेकर "क्ष" तक अक्षर रूप में विलास करने वाली युग युग में प्राणियों को उत्पन्न करने वाली, शब्द ब्रह्म स्वरूप आनन्दमयी उस सुन्दर मां का जिसके नेत्र कमल के समान हैं मैं स्तुति करता हूं।

उपरलिखित षड्दलो में "अ" से "क्ष" तक अक्षर अंकित है जिनको मातृकाएं कहते हैं, योगियों के मत से षड्दलों में अन्तिम मात्रा "क्ष" है जो आज्ञा चक्र में अंकित है, इसी कारण इस श्लोक में "क्ष" तक का वर्णन है, जबकि वर्णमाला में पहला अक्षर "अ" है और अन्तिम अक्षर "ह" है। "शब्द ब्रह्म" योगी को जब कुण्डलिनी जाग्रत होती है तो उससे स्फोट यानी शब्द होता है जो नाद कहलाता है, इसी प्रकार सृष्टि में पहला उत्पन्न होने वाला शब्द "शब्द ब्रह्म" कहलाता है।

(8) "यस्याः कुक्षौ"..........................

जिस जगत् अम्बा की गोद में यह सृष्टि लय हो जाती हैं बार बार किसी खण्डन के बिना फिर से उत्पन्न होती है, प्रकाश के केन्द्र ब्रह्मरन्ध्र में सदाशिव के साथ विहार करती हुई अथवा बर्फ से ढके हुए सफेद हिमालय पर्वत पर विहार करने वाली कमल जैसे नेत्रों वाली गौरी मां की मैं स्तुति करता हूं।

(9) "यस्यामेतत्"..........................

जिस शक्ति में यह सारी चराचर सृष्टि ऐसे पिरोई हुई है जैसे सूत्र में रत्न गुन्थे हुए होते हैं, उसी शक्ति रूपी मां का जो ज्ञान से जानी जाती है. जिसके नेत्र कमलों के समान हैं मैं स्तुति करता हूं।

(10) "नित्य: सत्यो".........................

जिस महामाया के सृष्टि बनाते समय अथवा संहार करते समय जो शिव नित्य सत्य सजातीय आदि तीनों भेदों से रहित है, जो आपके सृष्टि बनाने के काम में केवल साक्षी रूप में रहते हैं, जगत की रक्षा करना जिस माँ का एक खेल है उसी कमल जैसी नेत्रों वाली गौरी माता की मैं स्तुति करता हूं।

(11) 'पूजा काले" ....

जो पूजा के समय शुद्ध हृदय से युक्त, संकल्प विकल्प से रहित होकर भक्ति से नित्य इन दस गौरी के श्लोकों का उच्चारण करता है उस भक्त को वाक्सिद्धि ऐश्वर्य भगवान् शंकर की भक्ति हिमालय पुत्री अवश्य देती है।

शंकरस्तुति:

अतिभीषण कटुभाषण यमकिंकर पटली कृत ताडन-परिपीडन-मरणागमसमये।
उमया सहमम चेतसि यमशासन निवसन् शिवशंकर शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।1।

अर्थ : हे भगवान् शंकर ! जब भयंकर कठोर भाषण करते हुये यम किंकरों का गरोह अन्तिम समय पर मुझे डंडे मारते हुये पीडित करते होंगे, उस समय मेरे चित में पार्वती सहित प्रवेश करते हुये मेरे पाप अथवा कष्ट का नाश कर।

अतिदुर्नयचटुलेन्द्रिय, रिपुसञ्चय, दलिते, पविकर्कश—कटुजल्पित-खलगर्हण- चलिते ।
शिवयासह मम चेतसि शिशिपोखर निवसन्,शिव शंकर, शिवशंकर हर में हर दुवितम्, 2

हे भगवान् शंकर बहुत ही हठी, चंचल इन्द्रियरूपी शत्रुओं से रोन्दे हुये, वज्र के समान कठोर शब्दों के उच्चारण से तथा दुर्जनों की निन्दा से विचलित हुये मेरे चित्त में पार्वती सहित रहते हुए मेरे कष्ट अथवा पाप का नाश कर ।

भवभञ्जन सुररञ्जन खलवञ्चन पुरहन्, दनुजान्तक मदनान्तक रविजान्तक भगवन् ।
गिरिजावर करुणाकर परमेश्वर भयहन्, शिवशंकर शिवशंकर हर में हर दुरतम् ।3।

संसार के आवागमन से छुटकारा देने वाले, देवताओं को सन्तुष्ट करने वाले, दुष्टों को ठगने वाले, त्रिपुरासुर को मारने वाले, राक्षसों को नाश करने वाले, कामदेव को भस्म करने वाले, यमराज के भी यमराज, ऐश्वर्यवाले, पार्वती के पति, दयानिधि, परमेश्वर, हे भय को नाश करने वाले भगवान् शंकर! मेरे कष्ट अथवा पाप का नाश कर ।

शक्रशासन कृतशासन-चतुराश्रमविषये, कलिविग्रह-भवदुर्ग्रह-रिपुदुर्बल-समये ।
द्विजक्षत्रिय-वनिता-शिशुदर-कम्पित हृदये, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।4।

अर्थ : हे इन्द्र पर शासन करने वाले, चारों आश्रमों को अपने अपने धर्म पर चलाने वाले, कलिकाल के झगड़ों ग्रहों तथा शत्रुओं से पराजित होने के समय, ब्राह्मणों, क्षत्रियों, स्त्रियों, तथा बच्चों के अपने अपने कर्तव्य से गिरने के कारण मे भयभीत हुये हृदय वाले, हे भगवान् शंकर, हे भगवान्

शंकर मेरे पापों का नाशक ।

भवसम्भव-विविधा-भयपरिपीडित-वपुषं. दयितात्मज-ममता-भर-कलुषी-कृतहृदयम् ।
करु मां निजचरणार्चन-निरतंभव सततं, शिवशंकर शिवशंकर हर मे हर दुरितम् ।

अर्थ : वार वार जन्म लेने से नाना प्रकार की पीड़ाओं से पीड़ित स्त्री पुत्र तथा संसार के ममता के भार से मलिन हुये मेरे हृदय को अपने चरणों की पूजा में लगातार लगाये रखना—
हे भगवान् शंकर! हे भगवान् शंकर! मेरे पापों अथवा कष्टों का नाश कर ।

नारायणस्तुति:

जयनारायण, जयपुरुषोत्तम, जयवामन, कंसारे, उद्धर माम्-असुरेशविनाशन्-पतितोहं, संसारे ।
घोरं हर मम नरकरिपोकेशव कल्मषभारं माम्-अनुकम्पय-दीनम्-अनाथंकु-रुभव सागर-पारम् ।1।

अर्थ : हे नारायण, हे पुरुषोत्तम, हे वामन, हे कंसारि आप को बार बार जय जयकार हो, हे असुरेश-विनाशी मैं संसार में गिरा हूं मेरा उद्धार कीजिये, हे नरकरिपु, हे केशव मेरा भयंकर पापों का बोझ हटाइये । मुझ दीन अनाथ पर दया कीजिये, मुझे संसार सागर से पार कीजिये ।

जय जय देव, जयासुरसूदन, जय केशव, जय विष्णो
जय लक्ष्मी मुखकमल मधुव्रत, जयदशकन्धरजिष्णो ।
घोरं हर............... ...... ।2।

अर्थ : हे देव, हे अघासुरसूदन, हे केशव, हे विष्णो हे। लक्ष्मीमुखकमलमधुव्रत हे दशकन्धर जिष्णु-आप को बार बार जय जयकार हो,

हे नारायण मेरा भयंकर पापों का बोझ हटाइये। मुझ दीन अनाथ पर दया कीजिए मुझे संसार सागर से पार कीजिये।

त्वं जननी जनकः प्रभुर् अच्युत त्वं सुहृत्-कुलमित्रम्,
त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधि-वहित्रं, घोरं हर०..........

अर्थ—हे अच्युत ! तुम ही मेरी मां हो, तुम हो पिता, तुम ही मेरे स्वामी पुत्र, सुहृत् धन तथा मित्र हो, हे शरणागत वत्सल, तुम ही मेरे रक्षक तथा संसार सागर से पार करने वाले जहाज हो, हे नारायण ! मेरा भयंकर पापों का बोझ हटाइये, मुझ दीन अनाथ पर दया कीजिये, मुझे संसार सागर से पार कीजिये।

पुनर्-अपिजननं पुनर्-अपिमरणं पुनर्-अपि गर्भनिवासं
सोढुम्-अलं पुनर्-अस्मिन् माधव माम्-उद्धर निजदासम्

अर्थ : घोरं.......................

हे माधव बार-बार जन्म लेने, बार बार गर्भ में आने से बस मैं थक गया हूं अब अपने दास को संसार सागर से निकालो। हे नारायण मेरा भयंकर पापों का बोझ हटाइये। मुज दीन अनाथ पर दया कीजिए मुझे संसार सागर से पार कीजिये। 4

जनकसुतापतिचरणपरायण शंकर मुनिबरगीतं
धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृतिभितिम् ।5।

घोरं.....................

अर्थ : भगवान् राम के चरणों की सेवा में लगे हुये शंकर मुनि से गाये हुये इस स्त्रोत को मन में धारण कीजिए, हे कृष्ण हे पुरुषोत्तम मेरा संसार का भय दूर कीजिए। मेरा भयंकर पापों का बोझ हटाइये मुझ दीन अनाथ पर दया कीजिए मुझे संसार सागर से पार कीजिए।

यद्यपि सकलम्-अहं कलयामि हरे नहि किमपि सत्त्वं तदपि न मुंचतिमाम्-इदम्-अच्युत-पुत्र कलत्र-ममत्वम् 6

घोरं..................................

अर्थ : नारायण! जब मैं संसार के सभी वस्तुओं को गिनता हूँ तो कोई भी वस्तु दृढ़ अथवा सत्य नहीं है, ऐसा जानने पर भी हे अच्युत पुत्र, स्त्री का ममत्व मुझे छोड़ता नहीं है।

हे नारायण! मेरे भयंकर पापों के बोझ हटाइये।

उपरलिखित नारायण स्तुति में आये हुये नारायण के नामों की व्युत्पत्ति क्रमशः निम्नांङ्कित है

1 नारायण—नरों का अयन-आश्रय होने से "नारायण"

अथवा नार=प्राणी जिस से आयन निकले हैं "नारायण"

अथवा—नार=प्राणी जिस में अयन=लय होते हैं "नारायण"

2 पुरुषोत्तम—जो सब का आश्रय हो पुरुष कहलाता है उस पुरुष का भी श्रेष्ठ होने से "पुरुषोत्तम"

3 वामन—छोटा कद, ह्रस्वरूप में अवतरित होने से "वामन"
4 कंसारि—कंसासुर का अरि=शत्रु होने से "कंसारि"
5 असुरेशबिनाशी—राक्षसों के अधिपति को नाश करने से 'असुरेशविनाशी"
6 नरक रिपु—नरक का शत्रु होने से "नरकरिपु"
7 केशव—क—जल पर योगनिद्रा में=शव—सोने से "केशव"
8 देव—द्योतनशील होने से अथवा सब कुछ देने से "देव"
9 असुरसूदन—राक्षसों को मारने से "असुरसूदन"
10 विष्णु—व्यापक तथा महान् होने से "विष्णु"
11 लक्ष्मीमुखकमलमधुव्रत—लक्ष्मी के मुख रूपी कमल का भौंरा होने से "लक्ष्मीमुखकमलमधुव्रत"
12 दशकन्धर जिष्णु—दशकन्धर=रावण को जीतने के कारण "दशकन्धर जिष्णु"
13 अच्युत - अपने स्थान से विचलित न होने से "अच्युत"
14 शरणागतवत्सल—शरण आये हुओं का प्यारा होने से "शरणागतवत्सल"
15 माधव—मा=लक्ष्मी, धव=पति, लक्ष्मीपति होने से "माधव"
16 कृष्ण—कृष्=सत्ता, ण=आनन्द, आनन्द की सत्ता यानी कारण होने से "कृष्ण"

श्राद्ध क्यों ?

जीवित माता - पिता, बुजर्गों की सेवा करना तथा उनके शरीर त्यागने पर जब वे 'पित्र' कहलाते हैं श्राद्ध आदि करना हमारा कर्तव्य है, जब जीवात्मा स्थूल शरीर को छोड़ता है तो उसी क्षण उसे कर्मों के अनुसार देव–शरीर, यातना शरीर, तैजस शरीर, वायव्य शरीर (जो देखने में नहीं आते) मनुष्य शरीर अथवा पशु शरीर आदि अवश्य मिलते हैं जैसा कि श्रीमत् भवद्‌गीता का प्रमाण है "वासांसि जीर्णानि" जीव चाहे किसी भी लोक में जन्म ले, हमारे किये श्राद्ध का फल उसे अवश्य मिलता है, परन्तु श्राद्ध के लिये श्रद्धा की आवश्यकता है।

पित्र के निमित्त जो कुछ भी दिया जाता है, श्राद्ध कहलाता है, यहां यह प्रश्न होता है कि पित्रों के निमित्त दिया हुआ अन्न - धन आदि हमारे पित्रों को मिल सकता है।

इसके उत्तर में विश्वास से कह सकते हैं, कि हां अवश्य मिलता है, जैसे कि पृथ्वी पर भिन्न २ देश हैं और हर देश के भिन्न "सिक्के" हैं जैसे कि भारत में रुपया इंगलैंड में पौंड, अमरीका में डालर, मुस्लिम देशों में दीनार के सिक्के होते हैं।

यदि हम भारत से इंगलैंड को कोई रकम भेजना चाहते हैं, तो हम यहां से "नोट" भेजते हैं और वह इंगलैंड वाले अवस्चेंज आफिस के द्वारा उन नोटों की अदाइगी पौंडों में करते हैं, ऐसे ही मित्रों के निमित्त जो कुछ भी हम यहां श्रद्धा से देते हैं, हमारी श्रद्धा की लहरें उन दिये हुये पदार्थों के सूक्ष्म संस्कारों को लेकर उसी क्षण उस लोक में पहुँचकर जहां जिस योनि में हमारे पित्र होंगे उन को तृप्ति देते हैं।

एक प्रश्न और भी है यदि हम भी किसी के पित्र रह चुके होंगे तो हमारे लिए किया हुआ श्राद्ध हमें कुछ फल क्यों नहीं देता, इस के विषय में हम कहेंगे कि संसार

बिगड़ता है वहां भगवत् - भक्ति, अर्थ साम्य, ब्रह्मचर्य जैसे साधनों में भी विघ्न पड़ता है इसलिए भोजन खाने से पहले और अन्त में आचमन करने का नियम हमारी संस्कृति है, जैसे यज्ञ में मन्त्रों से अग्नि को प्रज्वलित करके आहुति डाली जाती है, और समाप्ति पर मन्त्रों से विसर्जन करने पर आहुति डालना निषेध है, वैसे ही आचमन के मन्त्र से वैश्वानररूपी अग्नि को प्रज्वलित करके उस में अन्नरूपी आहुति डाली जाती है, अन्त में फिर से उस वैश्वानररूपी अग्नि का आचमन के मन्त्र से विसर्जन किया जाता है, इसलिए भोजन के पश्चात् बार बार पूरी कचोरी आदि से पेट भरना निषेध है।

आरम्भ के आचमन का मन्त्रः—

अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः
त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योतिः रसोमृतं
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा

भोजन के पश्चात् फिर से यही मन्त्र पढ़कर अन्त में अमृतापिधानमसि बोलें।

"अमृतोपस्तरणमसि" का अर्थ है जलरूपी अमृत से ढकन खोलता हूं और "अमृतोपिधानमसि" का अर्थ है इस जलरूपी अमृत से ढकन बन्द करता हूं।

"प्रेप्युन"

'प्रेप्युन' काश्मीरी पण्डितों की संस्कृति का एक अंग बना हुआ है, हमारे घरों में प्रायः बड़े से बड़े छोटे से छोटे उत्सवों व्रत, पर्व, इत्यादि दिनों पर "तहर" अथवा खीर आदि स्वादिष्ट पदार्थ बना कर एक थाल में परोस कर घर के सभी सदस्य उस थाली को श्रद्धा से पकड़ते हैं और पण्डित जी अथवा कोई सदस्य प्रेप्युन के मन्त्रों का उच्चारण करता है।

इस प्रेप्युन का रहस्य क्या है? प्रेप्युन से मतलब है "परार्पण" पर अर्पण (पर = दूसरों को, अर्पण = श्रद्धा से देना) परार्पण से ही बिगड़ कर प्रेप्युन बना है, प्रेप्युन हमें चेतावनी देता है कि हे गृहस्थी, तुमने

घो यह स्वादिष्ट पदार्थ बनाये है ये केवल घर के सदस्यों को ही खाने का अधिकार नहीं अपितु दूसरों को अर्पण करके ही यह अन्न यज्ञशेष बनेगा, नहीं तो **'केवलाघो भवति केवलादी'** यानी जो परार्पण किये विना स्वयं खाता है वह पाप खाता है जिन जिन पदार्थों को हम प्रयोग में लाते हैं उनको उत्पन्न करने में देवताओं का विशेष सहयोग है इसलिये देवताओं को अर्पण करना आवश्यक है, नहीं तो भगवद्गीता के अनुसार **'चोर'** कहलायेंगे **'यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः'** इस कारण प्रेप्युन करते समय हम आदिदेव गणेश से लेकर देवताओं, दिक्पालों, मातृकाओं, भैरवों, क्षेत्रपालों के नाम उच्चारण करते हुये श्रद्धा से खाद्यपदार्थादि अर्पण करते हैं, प्रेप्युन के अन्त में पढते हैं **'आफक्षीरोदधि-मन्थानात् अन्नममृतरुपेण नैवद्यं प्रतिगृह्यताम्'**

अर्थ

हे देवताओ जैसे समुद्र के मन्थन से आप ने परिश्रम करके अमृत प्राप्त किया था वैसे ही हम ने यह अन्न परिश्रम से प्राप्त किया है जो आप को श्रद्धा से अर्पण करते हैं, आप इस अमृतरूपी अन्न को ग्रहण कीजिये ।

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो
मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः ।
भुञ्जते ते त्वघं पापा
ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

(भगवद्गीता अ० ३ श्लो० १३)

अर्थ :- यज्ञ करके शेष बचे हुए भाग को खाने वाले सज्जन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं, परन्तु जो अपने लिये ही अन्न पकाते हैं, वे पापी लोग पाप ही खाते हैं ।

ओ३म्

गायत्री महामन्त्र गुरुमन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

प्रेद्युन(नैवद्यमन्त्र)

(नैवेद्य को दोनों हाथों से पकडते हुये पढ़ें)

अमृतेशमुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यम् । सावित्राणि सावित्रस्य देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यांपूष्णो हस्ताभ्यामाददे ।। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णु महेश्वरदेवताभ्यः चतुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय दुर्गायै ऽयम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्ताविभ्यः पितृगणदेवताभ्यः । भगवते वासुदेवाय सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्यायपुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दायसहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय भवायदेवाय शर्वायदेवायरुद्रायदेवाय पशुपतये देवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहिताय शिवाय पार्वती सहिताय परमेश्वराय विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिंगलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्षाय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय । ह्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये

कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधि-
पतये कुमाराय । भगवते ह्रां ह्रीं सः सूर्याय
सप्ताश्वाय धनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय
प्रत्यक्षदेवाय परमार्थ-साराय तेजोरूपाय
प्रभासहिताय आदित्याय । भगवत्यै श्यामायै
कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पा-
र्वत्यै यक्षिण्यै श्री शारिकाभगवत्यै श्री शा-
रदाभगवत्यै श्री महाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वा-
लाभगवत्यै श्रीडाभगवत्यै वैष्णवीभगवत्यै
वितस्ताभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै
कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै
महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै ।
अन्त किया
अभयंकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रु-
[illegible]

ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय
नैर्ऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय
वायवे ध्वजहस्ताय कुबेराय गदहस्ताय
ईशानाय त्रिशूलहस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय
विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः
कुलनागदेवताभ्यः आदित्यादिभ्याभ्यां वरुणचन्द्र-
सोमाभ्यां कुमारभौमाभ्यां विष्णुबुधाभ्यां इन्द्रा-
बृहस्पतिभ्यां सरस्वतीशुक्राभ्यां प्रजापति-
शनैश्चराभ्यां गणपतिराहुभ्यां रुद्रकेतुभ्यां
ब्रह्मणेध्रुवाभ्यां अनन्तनागरुद्राभ्यां ब्रह्मणे
कूर्माय ध्रुवाय अनन्तनाय हरये लक्ष्म्यै
कमलायै शिवपदिभ्यः पञ्चचत्वारिंशद्वास्तो-
ष्पतिवास्तुदेवताभ्यः ब्रह्माद्यादिभ्यो मातृभ्यः
[illegible] मातृभ्यः नन्दिनादिभ्यो [illegible]

दुर्गाक्ष्ग्रगणेश्वदेवताभ्यः राका-देवताभ्यः श्रिकादेवताभ्यः सिनीवालीदेवताभ्यः कुहूदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्यः एन्द्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः बार्हस्पतिदेवताभ्यः ॐ भूर्देवताभ्यः ॐ स्वर्देवताभ्यः ओं भूर्भुवः स्वर्देवताभ्यः श्रखण्डब्रह्माण्ड-यागदेवताभ्यः धूम्र्यैः उपधूम्र्यैः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः उत्पन्नमन्तम्- दिव्यं प्राक्क्षीरोदधिमन्थनात्-अन्नमअमृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।

इष्ट देवता का ध्यान करते हुये पढें:—

ओं तत्सत् - ब्रह्म - अद्य - तावत् तिथौ अद्य - मासस्य —— पक्षस्य —— तिथौ — आत्मनो वाङ्मनः कार्योपार्जितपापनि - वारणार्थं ओं नमो नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

"चुद्द" को स्पर्श करते हुये पढ़ें :--

या काचित्—योगिनी — रौद्रा—सौम्या घोरतरा परा । खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा ।

चुद्द को अंगूठे से तिलक लगाकर अर्घफूल डालते हुये पढें:—

आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः, आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः, अर्घो नमः पुष्पं नमः

अेप्पुन की थाली में चुद्द के साथ सात(७) म्यचियां अथवा सात छोटे प्रसाद के भाग रखे हुये होते है — पहली म्यची को स्पर्श करते हुये पढ़ें—

भगवते वासुदेवाय अन्नं क्षीरं मोदकादीन् समर्पयामि नमः । (२) दूसरी को स्पर्श करते

हुए पढ़ें— भगवते भवाय अन्नं समर्पयामि नमः (३) भगवते विनायकाय अन्नं समर्पयामि (४) ह्रां ह्रीं सः सूर्याय अन्नं समर्पयामि (५) इष्टदेवी भगवत्यै अन्नं मोदकान् –मिष्ठान्नं - क्षीरं समर्पयामि नमः।

अन्तिम दो भागों या दो म्यचियों पर अर्घ पानी डालते हुये पढ़ें__ यस्मिन्निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपाला सकिंकरः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय संयुतम्, क्षां क्षेत्राधिपतये अन्नं नमः, रां राष्ट्राधिपतये अन्नं नमः सर्वाभय–वरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु।

दोनों हाथों में फूल लेते हुये प्रणाम करते हुये पढ़ें प्रापन्नोऽस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवन् - त्वां - प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।

तर्पण: — सीधा हाथ रखते हुये पढ़ें —

नमो ब्रह्मणे, नमो अस्त्वग्नये, नमः पृथिव्यै, नमः ओषधिभ्यः, नमो वाचे नमो वाचस्पतये, नमो विष्णवे, बृहते कृणोमि, इत्येतासाम् - एव-देवतानां-सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यम् – आप्नोति – य एवं विद्वान्– स्वाध्यायमधीते।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

जन्म दिन पूजा

पूजा आरम्भ करने से पहले यज्ञोपवीत धारण करें और थाल में नारीबण को रखकर नमस्कार करते हुये पढ़ें।

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभिप्रीतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि ।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।।

हृदय और मुख को जल छिड़कते हुए पढ़ें।

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति ।
मा नः शंसो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य
रक्षा णो ब्रह्मणस्पते ।।

अनामिका उंगली में पवित्र धारण करके अपने आप को तिलक, अर्घ, फूल लगाते हुये पढ़ें :

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाया· धारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः ।।

रत्नदीप धूप को तिलक, अर्घ, पुष्प अर्पण करके सूर्य भगवान् को थाली में तिलक तथा अर्घ, पुष्प अर्पण करते हुये पढ़ें :--

नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे ।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः ।।

खोसू से थाली में नारीवण के ऊपर अर्घ सहित जल की धारा डालते हुये पढ़े :--

यत्रास्तिमाता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नो यत्र सुहृज्जनश्च न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये । आत्मने नारायणायाधारशक्त्यै धूपदीपसङ्कल्पात्सिद्धिरस्तु धूपो नमः दीपो नमः ॥

जलसहित खोसू में थोडा सा तिलक और तीन पुष्प डालते हुये पढ़ें :-

सँ वः सृजामि हृदयं सँसृष्टं मनो अस्तु वः ।
सँसृष्टास्तन्वः सन्तु वः सँसृष्टः प्राणो अस्तु वः
सं यावः प्रियास्तन्वः सं प्रिया हृदयानि वः ।
आत्मा वो अस्तु सं प्रियः सं प्रियस्तन्वो मम ।

इसी जल की धारा को नारीवण पर डालतेप ढें

अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव । मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणं दत्तां तेन जीव ।
बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणं ददातु तेन जीव

जन्मोत्सवदेवताभ्यो जीवादानं परिकल्पयामि नमः ।

चावल सहित दो दर्भ सीधे हाथ में लेकर तीन बार गायत्री मन्त्र पढ़ें :—

ॐ भूर्भुवस्स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् '३'

जन्मोत्सवदेवतानां अर्चामहं करिष्ये ओं कुरुष्व ॥

इसी मंत्र से हाथ में पकडे हुये दो दर्भ निर्माल में डालकर फिर से दो दर्भ आसन के रूप में नारीवण के सामने डालते हुये पढ़ें :—

सप्त जन्मोत्सव देवतानां आसनं नमः ।

चावल सहित दो दर्भ हाथ में पकड कर केवल चावल को कन्धों से फेंकते हुये पढ़ें :—

सप्त जन्मोत्सवदेवताभ्यः युष्मान्पूजयामि। ओं पूजय ॥

दो दर्भ इसी तरह पकड़ते हुये पढें :—

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। जन्मोत्सवदेवता आवाहयिष्यामि।

ओं आवाहय ॥

पहले पकडे हुए दो दर्भ निर्माल में डाल कर तीन बार फूल नारीवण पर डालते हुए तीन बार पढें :—

भगवन्! पुण्डरीकाक्ष! भक्तानुग्रहकारक अस्मद्दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो ३ ॥

दोनों कन्धों के ऊपर चावल फेंक कर प्राणायाम करके खोसू में जल डालते हुये पढें :—

पाद्यार्थमुदकं नमः। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँ योरभिस्रवन्तु नः ॥

लाय, केसर, सर्वौषधि, दर्भ, जल, सब चीजें खोसू में डाल कर नारीवण पर जल छोडते हुए पढें

अश्व—त्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय, मार्काण्डेयाय, परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः ॥

पाद्य का बचा हुआ पानी निर्माल में डालकर फिर से खोसू में पानी डालते हुये पढें :—

शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शँ योरभिस्रवन्तु नः।

जल, दर्भ, घी, दही, चावल, जौ, सर्वौषधि, दूध, ये आठ चीजें खोसू में डालकर नारीवण पर डालते हुये पढें :—

अश्वत्थामन्, बल, व्यास, हनुमन्, कृपाचार्य, मार्कण्डेय, परशुराम, सप्तचिर जीव इदं वोऽर्घ्यं नमः।

शुद्ध जल डालते हुये पढ़ें :—

प्रजापति-जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः।

दूध वगैरह जल डालते हुये पढ़ें :—

तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततं तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः स्नानं नमः ॥

किसी कटोरी में फूलों का आसन बनाते हुए पढ़ें

आसनाय नमः गरुडाय नमः पद्मासनाय

पद्मासनाय नमः ॥

किमासनं ते गरुडासनाय किं भूषणं कौस्तुभभूषणाय लक्ष्मीकलाय किमस्ति देयं वागीश किं ते वचनीयमस्ति ॥

नारीवण को आसन पर बिठाते हुये पढ़ें :—

उत्तिष्ठ भगन्विष्णो ! उत्तिष्ठ कमलापते ! उत्तिष्ठ त्रिजगन्नाथ ! त्रैलोकी मंगलं कुरु ॥

नारीवण को सात तिलक लगाते हुये पढ़ें :—

अश्वत्थामने, बलये, व्यासाय, हनुमते, कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तचिरजीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

इन्हीं सात नामों का उच्चारण करते हुये नारीवण पर अर्घं और पुष्प चढाते हुये पढें :—

नमः पुष्प नमः ॥

धूप, रत्नदीप, कपूर उठकर घुमायें। घण्टा और शख भी भजावें।

यह मंत्र भी पढ़े :—

तेजसो शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि प्रियं देवानामऽनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञियेभ्यो गृह्णामि जन्मोत्सवदेवताभ्यः धूपं रत्नदीपं कर्पूरं च परिकल्पयामि नमः।

चामर करते हुये पढ़ें :—

जय नारायण, जय पुरुषोत्तम, जय वामन कंसारे ! उद्धर मामऽसुरेशविनाशन् ,पतितोऽहं संसारे ! घोरं हर मम नरकरिपो, केशव कल्मषभारं। मामनुकम्पय दीनमनाथं कुरु भवसागरपारम्। भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय। सप्त जन्मोत्सवदेवताभ्यः चामरं छत्रं परिकल्पयामि नमः।

फूल चढ़ाते हुये पढ़े :—

ध्येयं सदा परिभवघ्नमऽभीष्टदोहं तीर्थस्पदं शिवविरिञ्चिनुतं शरण्यं। भृत्यार्तिहं प्रणतपाल भवाब्धिपोतं वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम् ॥

नमस्कार करते हुये पढ़ें ;—

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा च अष्टांगनमस्कारं करोमि नमः।

कटोरो में थोड़ा दूध, शहद या क्षीर रख कर अर्पण करते हुये पढ़ें :—

वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय प्रजापति जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्क नमो

नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।

दक्षिणा डालते हुये पढें :—

जन्मोत्सवदेवताभ्यः दक्षिणायै तिल हिरण्य रजत निष्कर्णं ददानि ।

फिर से दक्षिणा अर्पण करते हुये पढें :—

एता देवताः सदक्षिणाम्नेनप्रीयन्तां प्रीताः सन्तु ।।

फूल चढाते हुये पढे :—

ओं तद्विष्णोः परम पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपण्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ।

अब नैवेद्य तहर या क्षीर थाली में लाकर एक पात्र में अलग चट्टू और पांच मिचियां रखें, नैवेद्य के साथ दही और मिसरी भी रखें । नैवेद्य की थाली को दोनों हाथों से पकडकर सारा प्रोप्युन पढें । "प्रोप्युन" पेज न० ४५ पर दर्ज है ।

आज्ञा मांगते हुये पढें :—

आज्ञो मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे ।
शरीरयात्रा सिद्ध्यर्थं भगवन्क्षन्तुमर्हसि ।।

पुष्प चढाते हुये पढें :—

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा ।
भगवंस्त्वां प्रपन्नोऽस्मि रक्ष मां शरणागतम् ।

पवित्र निकाल कर, हाथ में नारीवण बांधकर, चट्टू कहीं बाहर रखकर, निर्माल नदी में डालकर नैवेद्य के साथ दही शक्कर दायें हथेली में रख कर मुंह में डालते हुये पढें :—

मार्काण्डेय नमस्तुभ्यं सप्तकल्पान्त जीवन आयुरारोग्यं सिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने ।। मार्काण्डेय महाभाग सप्तकल्पान्त जीवन, आयुरारोग्य सिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव ।। मार्काण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन, आयुरारोग्य चिरञ्जीवी यथा त्वं तु मुनीनां प्रवरद्विज कुरुष्व मुनिशार्दूल तथा मां चिर-जीविनम् ।।

ब्राह्मी विद्या

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर, मोहं भिन्धि, रजस्तमसी भिन्धि, प्राकृतपाशजालंसावरणं परिहर, सत्वं ग्रहाण-पुरुषोत्तमोसि, सोमसूर्यानल, प्रवर, परमधामन् ब्रह्मविष्णुमहेश्वरस्वरूप, सृष्टिस्थिति-संहारकारक, भ्रू-मध्य-निलय, तेजोसि-धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हँसः, शुचिषत्, वसुरन्तरिक्षसत् होता वेदिषद्, अतिथिर्दुरोणसत्, नृषत्-वरसदृतसत्व्योमसत्, अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा, ऋतं, परंब्रह्मस्वरूप, सर्वगत, सर्वशक्ते, सर्वेश्वर, सर्वेन्द्रियग्रन्थि भेदं कुरु, कुरु, परमंपदं परामर्शय परमार्गं ब्रह्मद्वारं सर, कुमार्ग-जहि-षट्-कोशिकं शरीरं-त्यज, शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदमास्वादय स्वाहा। अर्थ : ☛

अर्थ :—तीन प्रकार के दुःखों का निवारण करने के लिए मंगलरूप में तीन बार आरम्भ में "ओ३म्" उच्चारण किया गया है, हे शिष्य ! तुम त्रिगुण पुरुष हो यानी तीन गुणों में तेरा ही निवास है. शरीर रूपी क्षेत्र में फिरने से तुम ही क्षेत्रचर हो, तुम मोहरूपी तथा रजोगुण तमोगुण रूपी ग्रन्थियों को काटो; जो तुम्हारे ऊपर बनावटी बन्धनों का जाल है उसको आवरण सहित फेंक दो. तत्व को जान, तुम स्वयं ही पुरुषोत्तम हो, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि यह तेजोमयरूप तुम्हारे ही हैं तुम ही ब्रह्मा, विष्णु, महेश रूप हो, तुम ही सृष्टि के बनाने वाले हो, पालन करने वाले, नाश करने वाले हो, भ्रुवों के मध्य में ध्यान टिकाने से तुम जाने जाते हो, इसलिए तुम्हें भ्रूमध्य-स्थान वाला कहते हैं, तुम तेजोरूप हो, तुम प्रकाश-रूप हो, तुम अमृतरूप हो, तुम ओ३म्‌रूप हो, तुम तत्‌रूप हो, तुम सत्‌रूप हो, तुम "हंसः" हो यानी स्वयं प्रकाश हो, तुम "शुचिषत्" हो यानी निर्मल स्थान पर रहने वाले हो, तुम आकाश में रहने वाले वसुनाम के देवता हो, तुम ही अग्नि में आहुति डालने वाले हो, तुम ही "वेदिषत्" यानी यज्ञ की वेदी पर ठहरे हुए अग्नि हो. तुम ही "अतिथिर्दरोणसत्" हो यानी गृहस्थों में अतिथि रूप देवता हो, तुम "नृषत् " मनुष्यों में रहने वाले हो "वरसत्" देवताओं में रहने वाले हो, तुम "ऋतसत्" सत्य में रहने वाले हो, तुम "व्योमसत्" हो आकाश में ओतप्रोत हो, "अब्जः" जल से जो रत्न, शंख आदि उत्पन्न होते हैं वह तुम ही हो, तुम पर्वतों से "गोजा" हो पृथ्वी से प्रकट होने वाले अन्न औषधि रूप हो तुम "अद्रिजा" पर्वतों से

प्रकट होने वाले नदी-नाले रूप हो, तुम "ऋतजा" हो सबसे महान् और परम सत्य हो, तुम हो "परम ब्रह्म" स्वरूप हो, तुम "सर्वगत" सबमें गए हो, तुम सर्व शक्तिमान्, हो, तुम सबों के स्वामी हो, सब इन्द्रियों से आसक्ति छोड़ो छोड़ो, उस परमपद का तथा उत्तम मार्ग का विचार कर ब्रह्म द्वार की ओर चल, यानी अपने स्वरूप को जान, अज्ञान के मार्ग को छोड़, इस षट्कोशिक शरीर 'रोम रक्त, माँस, मज्जा,हड्डयों और वीर्य"से बने हुए स्थूल शरीर को छोड़ तुम शुद्ध रूप हो, तुम निर्मल हो इसका जरा विचार कर, अपने स्वरूप का अनुभव कर इस ज्ञान को तू अच्छी प्रकार स्वीकार कर।

कश्मीरी पण्डितों में प्राचीन काल से यह प्रथा चलती आती हे कि अन्तिम समय पर पुत्र अपने माता-पिता को ब्राह्मी विद्या कान में सुनाता हैं, माता पिता अपने पुत्र को बचपन से ही ब्राह्मी विद्या कण्ठस्थ करवाते थे, चूकि पुत्र पिता का ही दूसरा रूप होता है । वह अपने पिता को अन्तिम समय में यह चेतावनी देता है जो ज्ञान आपने मुझे बचपन से दिया है ऐसा न हो कि इस समय आप उसको भूल जायें।

* ओ३म् भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् *

(एकश्लोकीनवग्रहस्त्रोत्रम्)

ब्रह्मा मुरारिः—त्रिपुरान्तकारी
भानुः शिशी भूमिसुतो बुधश्च ।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

नित्य प्रातः काल इस श्लोक का उच्चारण करने स नवग्रहों की शान्ति होती है ।

प्रातर्बन्दनीय स्तुतिः

प्रातःकाले पिता माता ज्येष्ठो भ्राता तथैव च ।
आचार्याः स्थाविराश्चैव वन्दनीया दिने दिने ॥

प्रातः काल पिता माता ज्येष्ठभाई गुरु और बुजर्गों को नित्य प्रणाम करना चाहिए। ऐसा करते हुए इस स्तुति का उच्चारण भी किया करें ।

प्रभाते कर दर्शनम्

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती ।
करमूले तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम् ॥

प्रातः काल जागते ही हाथ का दर्शन कीजिए, हाथ देखते समय ध्यान रखिए लक्ष्मी का निवास हमारे हाथ के अग्रभाग में है, मध्य में सरस्वती और हाथ के मूल में विष्णु भगवान ठहरे हैं, ऐसा करने से आप पर लक्ष्मी सरस्वती और विष्णु भगवान का अनुग्रह होगा ।

पञ्चकन्यास्तुतिः

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा ।
पञ्चकन्या स्मरेत्-नित्यं महापातक नाशनम् ॥

सोते समय तथा जागते समय इस श्लोक का उच्चा-

लेखनीस्तुतिः

कृष्णानने द्विजिह्वे च चित्रगुप्तकरस्थिते,
सत्-अक्षराणां पत्रे च लेख्यं कुरु सदा मम ।

जिस विद्यार्थी की लिखाई सुन्दर न हो उसकी विद्या अधूरी मानी जाती है, यदि आप अपनी लिखाई को सुन्दर बनाना चाहते हैं तो आप लेखनी (कलम) हाथ में उठाते हुए उच्चारण किया करें—

अन्नपूर्णास्तुतिः

अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे,
ज्ञानवैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति ।

ज्योंही अन्न की थाली आपके सामने आए तो इस श्लोक का हाथ जोड़कर उच्चारण करें—इस श्लोक का अर्थ है जो सदा पूर्ण शंकर की प्राणप्रिया पार्वती है वही अन्नपूर्णा है उससे मैं ज्ञान वैराग्य और शुभकामनाओं के सिद्धि के लिए अन्नरूपी भिक्षा मांगता हूं ।

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

बिजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय गोलगुजराल जम्मू

करमाला के विषय में मतभेद

जप प्रकरण में हम ने करमाला जप की प्रक्रिया लिखी है उस विषय में हमें कई पत्र मिले जिनके उत्तर में यह लेख लिखना आवश्यक है :—

करमाला के जप करने की विधि ३ प्रकार की है (१) पहले अनामिका के मध्यपर्व से नीचे की ओर चलें, फिर कनिष्ठा के मूल से सिरे तक तदनन्तर अनामिका और मध्यमा के अग्रभाग से हो कर तर्जनी के मूल तक जैसा कि हमने जन्त्री में दर्ज किया है।

(२) अग्रभाग छोड़कर अनामिका के दो पर्व कनिष्ठा के तीन— अनामिका का अग्रभाग मध्यमा के अग्रभाग से नीचे तीनों पर्व और तर्जनी का मूल कुल दस हुए।

(३) मध्यमा का मूल, अनामिका का मूल कनिष्ठा के मूल से तीनों पर्व, अनामिका और मध्यमा का अग्रभाग तर्जनी के अग्र से नीचे की

अध्यात्म लाभ के लिये पहली विधि का ही विधान मान्य है, शक्ति प्राप्ति के लिये दूसरी विधि, धन लाभ के लिये तीसरी विधि प्रमाणित है।

करमाला जप के कुछ नियम

(१) जप के समय उँगलियों को अलग अलग न रखिये बल्कि परस्पर जुड़ी हुई रखें।

(२) जप करते समय पर्व को अंगूठे से न छुयें अंगूठा जरा नीचे रखा करें।

(३) 'जप' वस्त्र से हाथ को ढक कर करना चाहिए।

जप के लिए आसन

जप आरम्भ करने से पूर्व आसन बिछाना आवश्यक है, "शुश्चौ देशे प्रतिष्ठाप्य" आसन सैंकड़ों

बिछाया करें, ऊन का आसन अध्यात्म पाठ पूजन जप के लिये शुभ माना गया है—

१—हर प्रकार की सिद्धि के लिये ऊनो कपड़ा।
२—धन प्राप्ति के लिये रेशमी वस्त्र।
३ - आरोग्य के लिये दर्भ का आसन।
४—कार्य सिद्धि के लिये हिरण का।
५—संप्पत्ति तथा ऐश्वर्य के लिए सिह का।
३ - घास के आसन पर लक्ष्मी का नाश।
७—पत्थर के आसन पर बिमारीं।
८—लकड़ी के तख्ते पर दुर्भाग्य।

जप के लिये दिशा

भिन्न भिन्न साधनाओं के लिये भिन्न भिन्न दिशाओं की ओर बैठने का विधान है।

(१) देवताओं की दिशा पूर्व दिशा है, इस लिये प्रातःकाल की सन्ध्या उपासना पाठ पूजा आदि पूर्व दिशा की ओर मुंह करके किया करें।

(२) सन्ध्याकाल में सन्ध्या जप आदि पश्चिमाभिमुखी होकर किया करें।

(३) तप स्वाध्याय इत्यादि उत्तर की ओर मुंह करके करें।

जप से पूर्व प्राणायाम

यद्यपि हर एक मन्त्र के जप के लिये अपनी अपनी प्रक्रिया है, परन्तु यह विधान उनके लिये है जो मन्त्र की कोई प्रक्रिया करने में अनभिज्ञ हैं—जप से पूर्व शुद्धि के लिये आप प्राणायाम अवश्य कीजिये।

जिस मन्त्र का आपने जप करना हो उसी मन्त्र से प्राणायाम करें—

प्राणायाम—श्वास प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम कहलाता है।

प्राणायाम के तीन भाग हैं।

(१) रेचक (२) पूरक (३) कुम्भक

पूरक शुद्ध वायु को नासिका छिद्रों से धीरे धीरे अन्दर लेने की क्रिया "पूरक' कहलाती है।

कुम्भक—अन्दर लिये हुये वायु को अन्दर ही रोके रखना 'कुम्भक' कहलाता है।

रेचक—अन्दर से बाहर श्वास निकालने की प्रक्रिया को 'रेचक' कहते हैं।

पूरक करते समय यदि आप अपने इष्ट मन्त्र का एक बार अन्दर से उच्चारण करेंगे, तो कुम्भक में दो बार और रेचक में तीन बार उच्चारण करें।

विध्यनुसार गुरु से प्राणायाम सीखने का अभ्यास करें।

आसन

यौगिक साधना में चौरासी लाख आसन माने गये हैं जिनमें चार आसन प्रधान माने जाते हैं (१) स्वस्तिकासन (२) पद्मासन (३) सिद्धासन

इन चार आसनों में से जप पाठपूजा के लिये पद्मासन अनुकूल तथा सुखदायक आसन है।

पद्मासन—बायें पैर को दाहिनी जांघ पर तथा दाहिने को बांयीं जांघ पर रखने से पद्मासन बनता है—रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना आवश्यक होता है।

शुद्ध भोजन

जपसिद्धि के लिये शुद्ध भोजन की आवश्यकता होती है, भोजन के तीन दोष हैं—

(१) जाति दोष (२) आश्रय दोष (३) निमित्त दोष।

जातिदोष—प्याज लहसन आदि का भोजन में होना जातिदोष से युक्त अन्न माना जाता है।

आश्रयदोष—यदि खाने की वस्तु स्वच्छ स्थान पर न रखी जाये तो आश्रय दोष माना जाता है,

जहां मांस आदि रखा गया हो; तो वह भोजन आश्रय दोष से दूषित माना जायेगा।

निमित्त दोष—शुद्ध स्थान पर रखकर भी यदि कुत्ता आदि स्पर्श करे तो उस भोजन में निमित्त दोष होता है।

जप का समय

जप तीन प्रकार से किया जाता है। (१) मानसिक (२) वाचिक (३) उपांशु।

यदि आप किसी भी मन्त्र का **मानसिक जप** करते हैं तो ऐसे जप के लिये कोई नियम लागू नहीं वह जप आप हर समय कर सकते हैं (न दोषो मानसे जापे)।

वाचिका जप— मन्त्र का स्पष्ट उच्चारण होनें पर वाचिक जप कहलाता है।

उपांशु—जिस जप में जीभ तथा होंट हिलते हैं, मन्त्र की आवाज साधक के कानों तक ही पहुँचती है दूसरा नही सुन सकता।

प्रत्येक साधक के लिये आवश्यक है जप रात्रि के अन्तिम चौथे भाग में करे वह समय अमृतमय होता है। वही ब्रह्ममुहूर्त कहलाता है। सूर्योदय से ५८ घड़ी पूर्व उषाकाल, ५६ घड़ी अरुणोदय, ५५ घड़ी पूर्व प्रातःकाल, फिर सूर्योदय होता है। ये सभी काल जप पाठ पूजा के लिये उत्तम है।

स्तोत्र पाठ—स्तोत्र पाठ मानसिक न करे अपितु मधुर स्वर में शुद्ध उच्चारण करें।

गृहस्थी साधक अपने इष्ट देवता के अतिरिक्त प्रत्येक देवता की पूजा कर सकता है।

जप माला

जप के लिये माला की आवश्यकता होती है, माला 108 मनको की होनी चाहियें और मनका बड़ा होना आवश्यक है, जिसे सुमेरु कहते हैं, माला के मनकों के बीच में गाँठ लगी हुई होनी चाहिये, दाहने हाथ को वस्त्र से ढक कर जप करना चाहिये; प्रात: जप करत समय माला को नाभि के पास रखे, मध्याह्न में हृदय के पास रखें और सायं-काल को नाक के पास रखें जब आप माला से जप करेंगे तो मन से जप करने का अधिक फल होता है यहां तक कि होंठ को हिलाना भी बन्द करना चाहिये।

अंगलियों के नाम का परिचय

है। सबसे छोटी अंगुली 4. कनिष्ठा कहलाती है, कनिष्ठा की साथ वाली अंगुली 5. अनामिका कहलाती है। अंगुलियों के गांठों को पर्व कहते हैं, हर एक अंगुली में तीन पर्व होते हैं।

माला जपने की विधि

माला को मध्यमा अंगुली के मध्यपर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखें, अंगूठे के सिरे से एक-एक माला के दाने को मन्त्र बोलते हुए घुमाते जायें, तर्जनी को इस ढंग से सीधी रखें कि वह माला का स्पर्श न करे, माला फेरते समय 'सुमेरू' को ऊपर से लांघना नहीं चाहिये, जप करते-करते सुमेरू के पास पहुंचने पर उसी मनके से वापस घुमा कर फिर से जप करना आरम्भ करें, माला को खटखटाना नहीं चाहिये और बार-बार सुमेरू कब आवेगा ऐसा देखना हाथ सिर घुमाना, सिर या शरीर हिलाना, जमाई लेना और हाथ से माला का गिर जाना निषेध है।

जप की प्रक्रिया :—

जप आहिस्ता-आहिस्ता करना चाहिये, मन्त्र के अर्थ पर भी ध्यान रख कर षट्चक्रों में किसी एक चक्र में अन्तर्दृष्टि रखते हुए जप करने से जल्दी सिद्धि मिलती है।

षट्चक्र 1. मूलाधार—गुह्यस्थान और लिंग के मध्य में, 2. स्वाधिष्ठान लिंग के ऊपर का भाग। . मणिपूरक नाभिस्थान ; अनाहत—हृदय : बिशुद्ध—तालु का मूल, आज्ञा चक्र—भौंहों का मध्यभाग।

दशांश जप अथवा करमाला जप

अंगलियों के पर्वों (गांठों) पर भी जप किया जाता है जिसे करमाला जप अथवा दशांश जप कहते हैं। हाथ के चित्र से आपको ज्ञात होगा। 'दो पर्व' मध्यमा और अनामिका के जप में छोड़े गए हैं यह करमाला के 'सुमेरू' माने गए हैं, जैसे जप की माला में बड़ा दाना 'सुमेरू' होता है ऐसे ही हाथ में यह दो पर्व हैं, जैसे सुमेरू को छोड़ कर जप किया जाता है उसी प्रकार हाथ में यह दो पर्व छोड़े जाते हैं।

मन्त्र प्रकरण

(मन्त्र—तन्त्र—यन्त्र)

आज विज्ञान का युग है कोई भी बात विज्ञान की कसोटी पर जब खरी उतरे तो स्वीकार की जाती है, भारतीय ऋषियों ने मन्त्रों की रचना में जिस वैज्ञानिक दृष्टि को सामने रख कर कार्य किया है वह बहुत ही आश्चर्यजनक है।

आज के साईनसी दौड़ में ऐसे तजरुबे हो रहे हैं जिसमें यह धारणा दृढ़ होती जाती है कि ओषधि तथा बिजली से बढ़ कर "ध्वनि" से रोगी स्वस्थ हो जाते हैं, मन्त्रों में ऋषियों ने अक्षर ऐसे जोड़े हुए हैं जिस प्रकार धातु और रसायनिक पदार्थों को विध्यनुसार मिलाने से बिजली प्रकट होती है उसी प्रकार मन्त्रों के अक्षर जोड़े गये हैं जिनसे उनमें आश्चर्यजनक शक्ति उत्पन्न होती है।

मन्त्रों के जप का फल है मनुष्य में छुपी हुई शक्तियों को जगा कर अपने तथा दूसरों के उपकार के लिए प्रयोग में लाना।

मन्त्रमार्ग की तीन धारणायें हैं। मन्त्र =एक सूक्ष्म तत्व है जिसके द्वारा प्रकृति को वश में किया जाता है।

तन्त्र—आज के समाज में तन्त्र शब्द से जादू टोना समझते हैं, परन्तु ऐसे रूप में प्रयोग करना अथवा ऐसा समझना गलत है।

तन्त्र—जिस ग्रन्थ में देवताओं के गुण कर्म तथा पूजन का विधान हो वह तन्त्र ग्रन्थ कहलाता है, आत्म साक्षात्कार जिस साधना से शीघ्र होता है तन्त्र कहलाता है, जिस साधना से मनुष्य के भय की रक्षा की जाती है तन्त्र कहलाता है।

यन्त्र—इष्ट देवता की रेखाओं वर्णों तथा संख्या के रूप में बनाई गई साकार मूर्ति यन्त्र कहलाता है, यन्त्र की मूर्ति प्रायः धातु की अथवा भोजपत्र पर बनाई जाती है, पूजा यन्त्र अथवा धारण यन्त्र के रूप में यन्त्र की पूजा की जाती है।

बीज अक्षर

जिस प्रकार बीज में सूक्ष्मरूप से वृक्ष छुपा रहता है परन्तु वह देखने में नहीं आता है, फिर भी अच्छी जमीन, वायु, जल खाद मिलने पर उस बीज में से पुष्प, पत्तं फल निकल पड़ते हैं, उसी प्रकार 'बीज अक्षरों में गुप्त रूप में शक्ति छुपी हुई होती है, बीज अक्षर हैं जैसे :–ह्रीं श्रीं क्रीं आदि।

वेदमाता गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्।

शताक्षरी गायत्री

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियायोनः प्रचोदयात्। ॐ जातवेदसे सुनवाम सोमम्‌रातो यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदृति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः। ॐ त्र्यम्बकं यजमहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

अजपा गायत्री "सोहम्"

हमारे श्वास उश्वास में रात दिन एक महामंत्र 'सोहं' मंत्र का जप चलता रहता है, उसी को शास्त्रों में 'हंस मंत्र' अथवा 'हंस गायत्री' कहते हैं, इस सोहं जप को ही अजपा गायत्री कहते हैं, सोहं से जब 'स' और 'ह' का लोप होता है तो 'ओ३म्' मंत्र बाकी रहता है, इसी ॐ स्वयं सिद्ध का लगातार जप करने से भी सभी सिद्धियाँ प्राप्त होती है।

एकाक्षरी गणपति मंत्र

"ॐ गं ॐ"

मृतसंजीवनी मंत्र (शुक्राचार्य द्वारा उपसित)

इस मन्त्र के जप से असाध्य रोगों की भी निवृत्ति होती है :–

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं, ॐ सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्— ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बन्धनाद्, ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्, ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ ।

उपरिलिखित मन्त्र से शिवलिंग पर दूध सहित जल चढ़ाने से रोगी को शीघ्र आराम मिलता है ।

सूर्य उपासना

शास्त्रों में दर्ज है सूर्य से आरोग्य की कामना करें । प्रातः नहाने तथा मुख प्रक्षालन के पश्चात् सूर्य की ओर मुख करके प्रणाम करते हुये पढ़ें :–

ॐ मित्राय नमः । ॐ रवये नमः । ॐ सूर्याय नमः ॐ भानवे नमः ।
ॐ खगाय नमः । ॐ पूष्णे नमः । ॐ हिरण्यगर्भाय नमः । ॐ मरीचयेनमः
ॐ आदित्याय नमः ॐ सवित्रे नमः । ॐ अर्काय नमः । ॐ भास्कराय नमः ।

"असाध्य रोग निवृंति मंत्र"

रोगान्-अशेषान्-अपहंसि-तुष्टा रुष्टा तु कामान्-सकलान्-अभीष्टान् ।
त्वाम्-आश्रितानां न विपत्-नराणाम् त्वाम्-आश्रिता ह्याश्रियतां प्रयान्ति ।।

"दुर्गा सप्तशती का सारभूत मंत्र"

हर गृहस्थ में इस इस मन्त्र की गूंज होनी चाहिये इस मन्त्र के बार बार — उच्चारंण करने से लक्ष्मी, सत्बुद्धि श्रद्धा, लज्जा, सत् गुणों की प्राप्ति होती है :—

"या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा, तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि ! विश्वम्"

नवग्रह मन्त्र

"सूर्य" ओ३म् स्रां स्रीं स्रौं सः सूर्याय नमः । "चन्द्र" ओ३म् श्रीं श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः ।
"भौम" ओ३म् क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः । "बुध" ओ३म ब्रां ब्रीं ब्रौ सः बुधाय नमः ।
"बृहस्पति" ओ३म ह्रां ह्रीं ह्रौं सः गुरवे नमः । "शुक्र" ओ३म द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।
शनि" ओ३म प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः । "राहु" ओ३म भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।
— केतु" ओ३म प्रां प्रीं प्रौं सः केतवे नमः ।

नवग्रहों के लघुमन्त्र (छोटे तथा आसान मन्त्र)"

"सूर्य" ओ३म् रं रवये नमः ।"चन्द्र" ओ३म् सों सोमाय नमः ।"भौम" ओ३म् भौम भौय नमः ।"बुध" ओ३म् वं बुधाय नमः ।"गुरु" ओ३मं गुं गुरवे नमः ।"शुक्र" ओ३म् शुं शुक्राय नमः ।"शनि" ओ३म् शं शनैश्चराय नमः ।"राहु" ओ३म् राम् राहवे नमः ।"केतु" ओ३म् कें केतवे नमः ।

बारह राशियों के मन्त्र

"मेष" ओ३म् ह्रीं श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः ।"वृष" ओ३म् गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः ।

"मिथुन" ओ३म् क्लीं कृष्णाय नमः ।"कर्क" ओ३म् हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरूपिणे नमः ।

"सिंह" ओ३म् क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः ।"कन्या" ओ३म् . पीं पीताम्बराय नमः ।

"तुला" ओ३म् तत्त्वनिरञ्जनाय तारक रामाय नमः ।"वृश्चिक" ओ३म् नारायणाय सुरसिंहाय नमः ।

"धनु" ओ३म् श्रीं देवकृष्णाय ऊर्ध्व. य नमः ।"मकर" ओ३म श्रीवत्सलाय नमः ।

"कुम्भ" ओ३म् श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः ।"मीन" ओ३म् क्लीं उद्धृताय उद्धारिणे नमः ।

नोट :—जिस राशि के ग्रह अनिष्ट हू उस उस ग्रह के मंत्र हमने दर्ज किये हैं उसके अतिरिक्त अपनी राशि कि मन्त्र का जाप करने से शुभ फल प्राप्ति में अधिक समय नहीं लगता है ।

सर्वकामनासिद्ध मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये मम वरद सर्वजनं मे वशं-आनय स्वाहा ।

हर प्रकार के मंगल प्राप्ति का मंत्र

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके, शरण्ये त्र्यम्बके, गौरि नारायणि नमोस्तुते

विपत्ति नाश का मंत्र

शरणागत दीनर्त-परित्राण परायणे, सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोस्तुते ।

(सभी उलझनों से छुटकारा पाने का मंत्र)

सर्वाबाधा-विनिर्मुक्तो, धनधान्य समन्वितः, मनुष्यो मत्प्रसादेन, भविष्यति न संशयः ।

भय नाश का मंत्र

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते, भयेभ्यत्राहि नो देवि ! दुर्गे देवि नमोस्तुते ।

आरोग्य तथा सौभाग्य मंत्र

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्, रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ।

विद्या प्राप्ति का मन्त्र

कृष्ण कृष्ण महाकृष्ण सर्वज्ञ त्व प्रसीद मे रमारमण विश्वेश, विद्यामाशु प्रयच्छ मे ॥

हर प्रकार के उलझनों से मुक्त होने के लिए शीघ्र सिद्धि देने वाला शिव मंत्र

भगवान् शंकर के डमरू से प्राप्त 14 सूत्रों का एक ही श्वास में बोलने का अभ्यास करें—शरीर की स्वस्थ रखने के लिये इस मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, बुखार मृगी आदि जैसे बेहोशी के रोग के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये छींटें दिये जाने से रोग की निवृत्ति होती है :–

मन्त्र—अ इ उण् । ऋ लृक् । ए ओङ् । ऐ, औच् । हयवरट् । लण् । ञ, म, ङ ण नम् । झ भ ञ् । घ ढ धष् । ज ब ग ड, दश् । ख फ छठ थ च ट, तव् । क, प य् । शष सर् । हल् ।

संतान प्राप्ति का मंत्र

देवकी सुत गोविन्द ! वासुदेव जगत्पते
देहि मे तनयं कृष्ण ! त्वामहं शरणं गतः ।

उदर रोग निवारण मंत्र (पेट दर्द)

अहं वैश्वानरो भूत्वा, प्राणिनां देहमाश्रितः

धर्मशास्त्र

दत्तक गोद लेना—अपने वंश का दत्तक लाना धर्मशास्त्र के अनुसार उत्तम माना गया है; दूसरे वंश का भी दत्तक लाया जाता है यदि तब तक उसका यज्ञोपवीत संस्कार न किया गया हो, परन्तु अपने गोत्र का यज्ञोपवीत के पश्चात् भी दत्तक लाया जा सकता है।

मुण्डन—माता अथवा पिता के मृत्यु पर मुण्डन करना आवश्यक है। तीर्थ पर जाकर एक दिन पहले मुण्डन करने की विधि है क्योंकि श्राद्ध के दिन मुण्डन करना निषेध है, परन्तु काश्मीर में मार्तण्ड तीर्थ पर एक ही दिन मुण्डन करने की प्रथा है जो धर्म शास्त्र सम्मत है।

अशोच—होंछ दो प्रकार का होता है जन्म का जिसे 'सूतक' कहते हैं और दूसरा मरने का अशोच जिसे 'मृतक' कहते हैं, ब्राह्मण को दस दिन का, क्षत्रिय को बारह दिन का और शूद्र को तीस दिन का सूतक या मृतक होता है, यह सूतक या मृतक सात पीढ़ी तक दस दिन के लिये होता है। यदि बालक दांत निकलने से पहले मर जाये तो उसे जलाना नहीं चाहिये उसका अशोच मां-बाप को तीन दिन के लिये होता है।

सगोत्रीय—जिनका आपस में एक ही गोत्र हो सगोत्रीय कहलाते हैं, सातवीं पीढ़ी तक सपिण्डीय कहलाते हैं, सगोत्रीयों का आपस में विवाह करना निषेध है। मातृपक्ष से पांच पीढ़ी तक और पितृपक्ष से 7 पीढ़ी तक विवाह नहीं कर सकते हैं।

पिता अथवा माता के मृत्यु के वर्ष में किसी उत्तम तीर्थ पर न जायें उपवास और व्रतों का नया आरम्भ न करें, यज्ञ अथवा पित्रों का श्राद्ध आदि भी न करें।

जन्म दिन और श्राद्ध यदि एक ही दिन हैं तो श्राद्ध अवश्य करें। मृत्यु के पश्चात दस दिन के अन्दर ही गंगा में अस्थियां प्रवाहित करें, नहीं तो एक वर्ष के पश्चात् गंगा में प्रवाहित करें, परन्तु काश्मीर में पहले वर्ष में भी अस्थियां गंगा में प्रवाहित करने की प्रथा है।

दो अशौच एक साथ होने का निर्णय—मरने के अशौच के दिनों में ही यदि दूसरा मरने का अशौच पड़े अथवा जन्म के अशौच में ही दूसरा जन्म का अशौच पड़े तो पहले अशौच के समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसे ही यदि मरने के अशौच पर यदि जन्म का अशौच पड़े तो ऐसी स्थिति में मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, ऐसे ही यदि जन्म के अशौच पर मरने का अशौच पड़े तो मरने का अशौच समाप्त होने पर ही शुद्धि होती है, यदि दसवें दिन पर फिर से मरने का अशौच पड़े ऐसी स्थिति में पहले अशौच समाप्त होने के पश्चात् भी दो दिन के लिये दूसरा अशौच रहता है, यदि 11 वें दिन को सूर्योदय से पहले तक दूसरे मरने का अशौच फिर से पड़े तो दूसरा अशौच तीन दिन के लिये रहता है। माता यदि पहले मरी हुई हो और उन्हीं अशौच के दिनों में पिता की भी मृत्यु हो जाये तो पिता के अशौच की समाप्ति पर ही शुद्धि होती है, यदि पिता की मृत्यु पहले हो और उसके अशौच में ही माता की मृत्यु हो जाये तो ऐसे अवसर पर पिता का अशौच समाप्त होने पर भी माता का अशौच दो दिन के लिये रहता है।

दिवगोन (मातृका पूजन) दिवगोण करके यदि अशौच पड़े तो अशौच का दोष नहीं होता है। विवाह का दिवगोण अधिक से अधिक दस दिन पहले और यज्ञोपवीत का दिवगोण 6 दिन पहले भी करने की विधि है।

यदि यज्ञोपवीत संस्कार रचाने का संकल्प किया हो और सूतक पड़े तो यथा विधि कूष्माण्डादि से आहुतियां देकर शुद्धि करके किसी प्रकार का दोष नहीं ऐसा धर्मशास्त्र में दर्ज है परन्तु मृतक (होंछ) के लिए यह नियम लागू नहीं होगा।

श्राद्ध देखने की विधि—जिस दिन तिथि के साथ "प्र" लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने ही दिन आता है। यदि तिथि के साथ "दि" लिखा हो उस दिन का श्राद्ध पहले ही दिन आता है। परन्तु जब अष्टमी (प्र) नवमी (प्र) दशमी (दि) ऐसे तिथि का क्रम हो तो अष्टमी का अष्टमी को नवमी का नवमी को और दशमी का दशमी को ही होगा। जब चतुर्थी (दि) पचमी (प्र) जब तिथि की स्थिति ऐसी हो तब चतुर्थी का श्राद्ध तृतीया को और पंचमी का पंचमी को ही होगा।

अंक ज्योतिष NUMEROLOGY

अंक विज्ञान ज्योतिष का एक अंग है। अंक विद्या से सम्बन्धित साहित्य विदेशों में चला गया और इस विद्या का बढ़ चढ़ कर प्रचार हुआ, पाश्चात्य विद्वान् 'केरू' ने भारत में आकर इस विद्या को प्राप्त किया, पाश्चात्य विद्वान् इस सचाई को स्वीकार करते हैं कि गणित विद्या के लिये सारा संसार भारत का ऋणी है, गणित विद्या को जन्म देने वाला भारत है गणित का आधार 'अंक' हैं, अरबी भाषा में अंकों को 'हिन्दसा' और गणित को 'अलिमि हिन्दसा' कहते हैं यानी यह विद्या हिन्दुस्तान से आई है। मूल अंक एक से लेकर 9 तक होते हैं।

जैसे ग्रहों के आधार से जीवन का शुभ अशुभ बताया जाता है वैसे ही अंक विज्ञान से भी जीवन का शुभ अशुभ फल बताया जाता है, यहां इस संक्षिप्त लेख में हम आपको मूल अंक आत्म अंक और नाम अंक निकालने की विधि बतायेंगे।

मूल अंक—अंग्रेजी तारीख के अनुसार जो आपकी तिथि होगी उसका पिण्ड बना कर 9 से भाग दीजिये जो शेष रहे आपका मूल अंक होगा, जैसे आपका जन्म 29 तारीख को हुआ है जिसका मूल अंक निकालने का एक ढंग यह भी है 9+2=11, 1+1=2 यह दो मूल अंक हुआ, अथवा 9+2=11÷9=2।

भाग्य अंक अथवा आत्म अंक—अंग्रेजी सन के अनुसार जो आपका सन महीना तथा तारीख होगा उसका पिण्ड बना कर मूल अंक निकालिए जैसे आपका जन्म 1967—6—25 को हुआ है, इसका मूल पिण्ड बनाने का ढंग है 1+9+6+7+6+2+5=36=3+6=9 अथवा 36 को 9 से भाग देने पर शेष 0 यानी 9।

एक और उदाहरण लीजिये—मोहन का जन्म 1972 ई० 3-24 इसका पिण्ड 1+9+7+2+3+2+4=28, 2+8=10, 1+0=1 अथवा पिण्ड को 9 से भाग देकर शेष 1 मोहन का भाग्य अंक हुआ।

नाम अंक—केरू के मत से आप अंग्रेजी अक्षरों में नाम लिख कर 'नाम अंक' निकालिये, केरू के मत से नाम अंक का विशेष महत्व है।

A	B	C	D	E	F	G	H	I	J	K	L	M	N	O	P	Q	R	S	T	U	V	W	X	Y	Z
1	2	3	4	5	8	3	5	1	1	2	3	4	5	7	8	1	2	3	4	6	6	6	5	1	7

उदाहरण—'मोहन कृष्ण' का नाम अंक निकालना है—**MOHAN KRISHAN** मूल मिण्ड 4+7+5+1+5+2+2+1+3+5+1+5=41÷9—शेष '5' मोहन कृष्ण का नाम अंक हुआ—अपना अंक निकाल कर आप निम्नलिखित में देखिये आपको शुभ काम करने के लिये कौन सी तारीख तिथि आदि शुभ है।

अंक 1 शुभ तारीखें 1-10-19-28 शुभ मास—जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अक्टूबर, शुभवावार-रविवार, गुरुवार, शुभ वर्ष—1-10-28-37-55, 64, 73, 82 46।

अंक 2 शुभ तारीख—2-4-8-11-16-20-22-26-29-31, शुभ मास—फरवरी, अप्रेल, अगस्त, नवम्बर। शुभवारें—सोमवार, बुधवार, शुभ वर्ष—2-11-20-29, 38, 47, 56, 65, 74, 83, 92।

अंक 3 शुभ तारीख—1-3-4-8-12-15-18-21-24-27-30। शुभवारें—मंगलवार, शुक्रवार, शुभमास—मार्च, मई, जून, जुलाई, सितम्बर, शुभ वर्ष—3-12-21-31-39-48-57-66-75-84।

अंक 4 शुभ तारीख—2-4-8-13-16-20-22-26-31 शुभ वारें—सोमवार, बुधवार, शुभ मास—फरवरी, अप्रेल, अगस्त, शुभ वर्ष—4-13-22-31-40-49-58-67-76-85।

अंक 5 शुभ तारीख—5-10-14-19-23-25-28। शुभवार—गुरुवार, शनिवार, शुभमास—जनवरी, मार्च मई, जुलाई, शुभ वर्ष 5-14-23-32-41-50-59-68-77-86।

अंक 6 शुभ तारीख—6-9-15-18-24, शुभवार—मंगलवार, शुक्रवार, शुभमास—जून, सितम्बर, शुभ वर्ष—6-15-24-33-42-51-60-69-78-87।

अंक 7 शुभ तारीख—7-14-16-25-28. शुभवार—गुरुवार, शनिवार, शुभमास—जनवरी, मार्च, मई, जुलाई शुभ वर्ष—7-16-25-34-43-52-61-70-79-88।

अक 8 शुभ तारीख–4-8-13-17-26, शुभवार–शनिवार, गुरुवार, शुभ मास–जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, शुभ वर्ष–8-17-36-35-44-54-62-71-80-89।

अंक 9 शुभ तारीख–9-15-18-24-27, शुभ वार–मंगलवार, शुक्रवार, शुभ मास–मार्च, जून, सितम्बर, शुभवर्ष–9-18-27-36-45-54-63-72-81-90।

अंकों का शत्रुमित्र विवरण

यदि आपने किसी से मिल कर कोई कारोबार करना है, अथवा किसी का विवाह करना है, दोनों के अंक विशेषतया नाम अंक निकाल कर देखें यदि अंकों की मित्रता है तो शुभ यदि शत्रुता है तो अशुभ।

1 अंक का 2–7–5 मित्र है, 2–8 शत्रु हैं, 3–4–6–9 सम हैं।
2 अंक का 3–5–6–8 मित्र हैं, 5–6 शत्रु हैं, 1–4 सम हैं।
3 अंक का 2–7–8–9 मित्र है, 5–6 शत्रु हैं, 1–4 सम हैं।
4 अंक का 2–5–7 मित्र हैं, 1–3–9 शत्रु हैं, 6–8 सम हैं।
5 अंक का 1–3–4 मित्र है, 9 शत्रु हैं, 2–6–7 शत्रु हैं।
6 अंक का 3 मित्र है, 9 शत्रु है, 1–2–4–5–7–8 सम हैं।
7 अंक का 8–3–5–6–8 मित्र है, 2–9 शत्रु हैं, 1–4 सम हैं।
8 अंक का 3 मित्र है, 1–4 शत्रु हैं, 2–5–6–7–8 सम हैं।
9 अंक का 8–9 मित्र है, 5–6 शत्रु है, 1–2–3–4–7 सम हैं।

कल्पना कीजिए आपका मूल अंक 3 है आत्म अंक 5 है और नाम अंक 7 है आप तीनों अंकों को काम में ला सकते हैं आप खुद निरीक्षण करके देखें कि आपके लिए कौन सा अंक किस विधि से ठीक उतरता है उसी को काम में लायें।

रत्न PRECIOUS STONE

भारत में रत्न धारण करने की प्रथा प्राचीन काल से चलती आई है, ग्रहों के अनिष्ट प्रभाव को कम करने के लिए तथा शुभग्रहों का बल बढ़ाने के लिए किस राशि अथवा ग्रह के लिए कौन-सा रत्न पहनना चाहिए जिसका वर्णन निम्नलिखित है।

नवग्रहों के रत्न

सूर्य–माणिक्य **Ruby**, चन्द्रमा–मोती **Pearl** भोम–मूंगा **Coral**, बुध–पन्ना **Emeralo**, बृहस्पति–पुखराज **Tobaz**, शुक्र–हीरा **Dimano**, शनि–नीलम **Sapphire**, राहु–गोमेद **Hessonite**, केतु–लहसनिया **Catseye**।

राशि के अनुसार रत्न धारण करना

मेष और वृश्चिक के लिए 'मूंगा', वृष और तुला राशि के लिए 'हीरा', मिथुन और कन्या के लिए 'पन्ना', कर्क और सिंह के लिए 'माणिक्य', धनु और मीन के लिए 'पुखराज', मकर के लिए 'नीलम', कुम्भ राशि के लिए 'गोमेद', धारण किया जाता है।

कौन सा रत्न कैसे और कहां धारण करना चाहिये

"माणिक्य· सूर्य"कम से कम 5 रत्ती वजन की तांबे अथवा सोने की अंगूठी में कम से कम 3 रत्ती वजन का माणिक्य जड़वाया जा सकता है, दायें हाथ की 'अनामिका' अंगुली यानी सबसे छोटी अंगुली की साथ वाली अंगूठी में डालें।

मोती (चन्द्रमा) सफेद कपड़े में लपेट कर पुरुष दायें बाजू और स्त्री बायें बाजू में अथवा दोने गले (कण्ठ) में डालें, यदि अंगूठी में जड़वाना हो तो 4 रत्ती अथवा इससे अधिक वजन के मोती को चांदी की अंगूठी में जड़वायें, अंगूठी को बायें हाथ की तर्जनी यानी अंगूठे साथ वाली अथवा सबसे छोटी अंगुली यानी कनिष्ठा में डालें।

मूंगा (भोम) कम से कम 6 रत्ती वजन का मूंगा सोने की अंगूठी में जिसका वजन आठ रत्ती से कम न हो जड़वा कर बायें हाथ की नीचे वाली अंगुली में धारण करें अथवा दायें बाजू में बांधें।

पन्ना (बुध) छः रत्ती वजन के सोने की अंगूठी में कम से कम 3 रत्ती वजन का पन्ना जड़वा कर दायें हाथ की सबसे छोटी अंगुली में अथवा छोटी अंगुली की साथ वाली अंगुली अनामिका में धारण करें।

पुखराज (बृहस्पति) 7 रत्ती वजन सोने की अंगूठी में 4 रत्ती वजन पुखराज जड़वा कर दायें हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका अंगुली में धारण करें।

हीरा (शुक्र) 7 रत्ती सोने की अंगूठी में 12 रत्ती वजन का हीरा जड़वा कर दायें हाथ की तर्जनी अथवा मध्यमा अंगुली में पहन लें।

नीलम (शनि) कम से कम 9 रत्ती वजन की 5 धातु वाली अंगूठी में कम से कम 4 रत्ती वजन का नीलम जड़वा कर दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

गोमेद (राहु) पांच धातु की 7 रत्ती वजन की अंगूठी में कम से कम 8 रत्ती बजन का नीलम जड़वा कर दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

लहसुनिया (केतु) कम से कम 7 रत्ती वजन की पांच धातु की अंगूठी में कम से कम 4 रत्ती का लहसुनिया जड़वा कर दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

रत्न कितने समय के पश्चात् बदलना चाहिये

पुराना रत्न नये व्यक्ति के पास पहुंच कर फिर से प्रभावशाली होता है। निश्चित समय के बाद बदलना चाहिये। माणिक्य—4 वर्ष के बाद। मोती 2 वर्ष एक मास 27 दिन। मूंगा—3 वर्ष। पुखराज 4 वर्ष 3 मास 18 दिन। हीरा—7 वर्ष। नीलम 5 वर्ष। गोमेद—3 वर्ष। लहसुनिया—3 वर्ष के बाद बदलना चाहिए।

नव रत्न धारण करने का मुहुर्त

माणिक्य—रविवार, तिष्या, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुणी ये नक्षत्र शुभ हैं। 9 बजे दिन से 12 बजे दिन तक शुभ समय है।

मोती—गुरुवार, रविवार, तिष्या नक्षत्र। प्रातः सूर्योदय से 10 बजे दिन तक शुभ समय है।

मूंगा—मंगलवार, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, घनिष्ठा 12 बजे दिन तक का समय शुभ है।

पुखराज—गुरुवार, तिष्या नक्षत्र, सूर्योदय से 11 बजे दिन तक का समय शुभ है।

हीरा—शुक्रवार, और नक्षत्र तिष्या का होना शुभ है।

नीलम—शनिवार, उत्तराषाढा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषक्, पूर्वाभद्रपद्, चित्रा, स्वाति, विशाखा, ये नक्षत्र। 12 बजे दिन तक धारण करें परन्तु शनि मकर राशि कुम्भ अथवा तुला में होना चाहिए।

गोमेद—शुक्रवार, स्वाति, शतभिषक्। प्रात: 10 बजे तक शुभ समय है।

लहसुनिया—बुधवार, शुक्रवार, अश्विनी, मघा, मूला नक्षत्र शुभ हैं। प्रात: 10 बजे दिन तक शुभ समय है। चन्द्रमा मेष अथवा धनु राशि का होना आवश्यक है।

जातक मिलाप

बल देखने की विधि :— लग्न और चन्द्रमा से वर वधू की जन्मकुण्डली के पहले चौथे, ७वें, ८वें, १२वें जितने पापग्रह हों उतने ही बल मानिये, एक पाप ग्रह का एक बल माना जाता है। बृहस्पति और शुक्र एक घर में इकट्ठे हों तो उसका भी एक बल मानिये। यदि लडके की जन्म कुण्डली में शुक्र से चौथे, ८, १२वें घर में कोई पापग्रह हों तो उतने बल लड़के के और मान लीजिये।

नाडी देखने का चित्र

आद्य नाड़ी

अश्वि	आद्र।	पुन	उफा	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शत	पूभा

मध्य नाडी

भर	मृग	तिष्या	पूफा	चित्रा	अनू	पूषा	धनि	उभा

अन्त्य नाडी

कृति	रोहि	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा	उषा	श्रव	रेव

नाडी देखने की विधि :— जन्मपत्री मिलाने के लिये दोनों वधूवर का नक्षत्र अवश्य मालूम होना चाहिये। यदि दोनों का नक्षत्र आद्य नाडी की पंक्ति में हो तो आद्य

नाड़ी दोष होता है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र मध्यनाड़ी की पंक्ति में हो तो मध्यनाडी दोष होता है, यदि दोनों वरवधू का नक्षत्र अन्त्य नाडी की पंक्ति में हो तो अन्त्य नाडी दोष होता है। मध्यनाड़ी दोष विशेष हानिकारक माना जाता है।

देव जाति - मनुष्य जाति - राक्षस जाति

देव जाति:-	अनु	मृग	श्रवण	पुन	रेवती	स्वाति	हस्त	अश्वि
मनुष्य जाति	पू॰षा	पू॰ फा॰	पू॰ भा॰	उ॰ भा॰	उ॰ फा॰	उषा	रो॰	भर॰ आद्रा
राक्षस जाति	मघा	अश्ले	धनि	कृति	ज्येष्ठा	मुला	शत	चित्रा विशा

देखने की विधि:— अनुराधा नक्षत्र होने पर देवजाति, ऐसे ही पूर्व फाल्गुणी नक्षत्र के लिये मनुष्य जाति, मघा नक्षत्र की राक्षस जाति :—

देव जाति + राक्षस जाति = मध्यम,	मनुष्यजाति + देव जाति = शुभ
राक्षस जाति + देव जाति = मध्यम।	देव जाति + मनुष्य जाति = शुभ
राक्षस जाति + मनुष्य जाति = अशुभ।	मनुष्य जाति + राक्षस जाति अशुभ

[illegible] जाति का होना शुभफल होता है, विशेषतया यदि लड़की की जाति राक्षस

षष्टाष्टक नवपञ्चक द्विद्वादशी

लडके अथवा लड़की राशि से गिनने पर आठवीं और छटी राशि **षष्ठाष्टक** कहलाती है, ऐसे ही एक का राशि से दूसरे की राशि तक गिनने पर नवीं और पाँचवीं राशि **नवपंचक** कहलाती है, दूसरी और बारवीं राशि **द्विद्वादशी** कहलाती है, जैसे लड़के या लडकी राशि मेष और वृश्चिक, मिथुन और मकर हो तो आपस में षष्टाष्टक होगी — आप निम्नलिखित चक्र मे देखिये :—

राशि कूट चक्र

मित्र षष्टाष्टक	(मेष और वृश्चिक)	मिथुन+मकर	(सिंह और मीन)	तुला और वृश्चिक	(धनु और कर्क)	कुम्भ+कन्या
शत्रु षष्टाष्टक	(वृष और धनु)	(कर्क और कुंभ)	कन्या और मेष	(वृश्चिक–मिथुन)	मकर और सिंह	(मीन+तुला)
मित्रनवपंचक	मेष+सिंह	मिथुन+तुला	सिंह+धनु	तुला+कुम्भ	धनु+मेष	कुम्भ+म०
शत्रुनवपंचक	वृष+कन्या	कर्क+वृश्चि.	कन्या+मकर	वृश्चिक+मीन	मकर+वृष	मीन+कर्क
मित्रद्विद्वादशी	मेष+मीन	मिथुन+वृष	सिंह+कर्क	तुला+कन्या	धनु+वृश्चिक	कुम्भ+मकर
शत्रद्विद्वादशी	मेष+वृष	मिथुन+कर्क	सिंह+कन्या	तुला+वृश्चि	धनु+मकर	कुम्भ+मीन

देखने की विधि :– मेष राशि की वृश्चिक राशि के साथ षष्टाष्टक ऐसे ही मिथुन और मकर की षष्टाष्टक होगी। **नोटः—** मित्रषष्टाष्टक, मित्रनवपंचक, मित्रद्विद्वादशी निषेध नहीं – बल्कि शुभफलदायक ही होती है।

नाडो अपवाद

लडके अथवा लडकी का नक्षत्र यदि रोहिणी, रेवती, मृगशिर, तिष्या कृत्तिका, उत्ततभाद्रपदा, श्रवण, आर्द्रा तथा ज्येष्ठा हो तो **नाडो दोष** नहीं होना है। यदि लडके अथवा लडकी में मे एक की राशि(क)ओर दूसरे का मिथुन, एक की धनु, दूसरे की मीन एक की तुला दूमरे की की राशि वृष, हो तो **नाडो दोष**-नहीं होता है। कर्क, कन्या, वृश्चिक अथवा मीन हो तो षष्टाष्टक दोष नहीं होता है। (**धर्म शास्त्र**)

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
मित्र	चन्द्र मौम गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चन्द्र बृह.	सूर्य राहु शुक्र	सूर्य चन्द्र मौम	बुध वुक्र राहु	बुध शुक्र राहु	बुध शुक्र शनि
शत्रु	शनि शुक्र राहु	राहु	बुध राहु	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र मौम	सूर्य चन्द्र मौम
सम	बुध	मौम शु. बृ. शनि	शुक्र शनि	मौम बृहस्पति शनि	राहु शनि	मौम बृहस्प.	बृहस्प.	बृहस्प.

(ग्रह मित्र चक्र)

देखने की विधि :- सूर्य का चन्द्रमा, मौम, बृहस्पति मित्र हैं — शनि शुक्र, राहु सूर्य के शत्रु हैं। बुध सूर्य का न शत्रु और न मित्र है।

यात्रा प्रकरण

यात्रा के लिये उत्तम नक्षत्र

अश्विनी, पुनर्वसु, अनूराधा, तिष्या, मृशिर. रेवती हस्त, धनिष्ठा ।

यात्रा लिये के निषेध नक्षत्र

भरणी, कृतिका, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति, विशाख ।

यात्रा के लिये नक्षत्र मध्यम

रोहिणी, उत्तरफाल्गुण, उत्तराषा. उत्तरभाद्रपद ; पूर्व फा. पूर्वाषा., पूर्वाभा., ज्येष्ठा, मूला, शत ।

यात्रा के लिये अशुभ योग

कालदण्ड, धौम्य:, ध्वांक्ष:, उन्मूलम्, मुसलम् मुद्गरम्, काण्ड:, क्षय:, शूलम् ।

यात्रा के लिये अशुभ चन्द्रमा

अपनी राशि से हानिकारक चन्द्रमा चौथा, आठवां, बारवां ।

यात्रा को जाना आवश्यक हो

बृहस्पतिवार, शुक्रवा, रविवार, को रात्रि में यात्रा को जाने में इन वारों में कोई दोष न मानिये, ऐसे ही सोमवार, शनिवार और मंगलवार – इन तीन वारों का दोष दिन को न मानिये ।

वार दोष निवारण के लिये

रविवार को पान खाकर यात्रा को जायें, सोमवार को दूध अथवा खीर, मंगलवार को आंवला अथवा कांजी खट्टी पदार्थ, बुधवार को मीठा, बृहस्पतिवार को दही शुक्रवार को कच्चा दूध, शनिवार को उडद अथवा लहर।

घातचन्द्र घातवार

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	राशिः
१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२	चन्द्र
रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	वार

मेष राशि वालों के लिए पहला चन्द्रमा घात चन्द्रमा है, ऐसे ही रविवार भी घातवार है, घातचन्द्रमा केवल यात्रा के लिये निषेध है।

यात्रा के लिये उत्तम योगिनी तथा चन्द्रमा

दिशा	वार	बायें योगिनी	पीछे योगिनी	सन्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र,	द्वितीया दशमी,	षष्ठी चतुर्द	मेष, सिंह, धनु	मकर कन्या, वृष,
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी, त्रयो०	प्रतिपदा, नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चिक, मीन
दक्षिण	सोम भौम, बुध, शुक्र,	प्रतिपद् नवमी	द्वितीया, दशमी	मकर, कन्या, वृष,	मिथुन, तुला, कुम्भ
उत्तर	सोम, शुक्र, शनि, रवि,	षष्ठी, चतुर्द	पंचमी, त्रयोदशी	कर्क वृश्चिक मीन	मेष सिंह धनु

राशियों का स्वभाव

मेष राशि वाला उद्योगी, आत्मविश्वासी, स्वभाव से तेज़ और हठी होता है, हर बात की गहराई में जाने वाला, जिस काम में जुट जायें, उस में प्रायः सफल रहता है, बुरी संगति से दूर रहने वाला होता है, बात बात पर तर्क वितर्क करने का स्वभाव रखता है, आशावादी कठिन कठिन कष्टों को सहन करने वाला, बडी सी बडी उलझनों का साहस से सामना करता है, किसी के सहारे जीवित रहना पसन्द नहीं करता है, हठी होने के कारण परिवार तथा सम्बन्धियों से प्रायः मतभेद रखता है, किसी भी समस्या का निर्णय करते समय ज़ल्दबाज़ी से काम लेता है, यह आप में सब से बड़ा अवगुण है, मेष राशि वाले व्योपार करें या नोकरी हर पहलू में सफल रहते हैं, धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहती है, आप को क्रोध बहुत जल्द आता है और शान्त भी बहुत जल्द हो जाते हैं, आप किसी काम को आरम्भ करते समय जितनी दिलचस्पी लेते हैं उतनी काम की समाप्ति तक नहीं रहती, आर्थिक स्थिति आप को डांवांडोल रहती है, कभी धन की अधिकता और कभी तंगदस्ती से दुचार होता है, आप को भाई बहिनों का सुख कम होता है, आप सैर सपाटे और दूसरे स्थानों पर घूमने की रुचि रखते हैं, आप की पत्नी चरित्रशील होती है, यदि आप महिला हैं तो ४० वर्ष की आयु तक आप के पति का चरित्र ढीला रहना आवश्यक है, स्वभाव आप दोनों पति पत्नी का गर्म होता है, इसी कारण से लडाई झगडों का वातावरण कभी कभी बनता ही है, सन्तान-सुख कम होता है, सन्तान होने पर भी उनका सुख साधारण होता है, जीवन में प्रयत्न के पश्चात् अच्छी पदवी मिलती है, फौज, न्याय, खानों से सम्बन्धित काम या इञ्जिनियरिंग लाईन में

सफल रहता है, जीवन में एक बार चोट लगने की सम्भावना है, या शरीर में चीरफाड़ करनी पड़ती है। आप को खुशामद अच्छी लगती है और आलोचना बुरी, यदि आप इन दोनों कमजोरियों पर कन्ट्रोल कर लें तो बहुत उन्नति कर सकते हैं, बचपन से ही आप लीड़री के विचार रखते हैं, विद्यार्थी जीवन में सभी अध्यापक, विद्यार्थी आप के प्रभाव से प्रभावित होते हैं, यदि आप व्योपार करते हैं तो वहां भी आप का नाम पहले दर्जे पर होगा, यदि आप की जन्मपत्री में भौम पहला, चौथा, सातवां अथवा आठवां हो तो अकस्मात् किसी दुर्घटना का खतरा रहता है, आप की आर्थिक दशा प्राय: अच्छी रहती है और जिन्दगी भर तंगदस्ती से दुचार नहीं होना पड़ता।

यद्यपि उपरलिखित फलादेश महिलाओं और पुरुषों के लिये एक जैसा है परन्तु महिला में यह विशेषता है कि वह पुरुष की अपेक्षा हृदय से कोमल होती है, बात चीत में तेज अवश्य होती है, परन्तु ऐसा होने पर भी किसी को दुःख नहीं देती अपितु स्वयं दुःख सहन करती है, यद्यपि आप के पति तर्क प्रवृत्ति के होते हैं परन्तु ईश्वर भक्ति, पाठपूजन की प्रवृत्ति और रीतिरिवाजों पर विश्वास अधिक होता है, महात्माओं, साधुओं, सन्तों की सेवा करना भी आप की मानसिक शान्ति का एक साधन होता है, जिन का जन्म संक्रांति के अनुसार भाद्र कार्तिक या पौष में हुआ हो उन के साथ विवाह, सांझेदारी या किसी प्रकार का सम्बन्ध अच्छा नहीं रहता है, मेष राशि का स्वामी चूंकि भौम है और भौम रक्त का स्वामी माना जाता है, इसलिये बवासीर, चोट, चीरफाड़ आदि का खतरा होता है, यदि आप का जन्म समय १२ बजे दिन से मध्यरात्रि के मध्यकाल में हो तो माता पिता रिश्तेदारों, सुसराल अथवा मित्रों से सम्पत्ति अथवा आर्थिक लाभ होता है, बिना किसी कारण के आप के शत्रु बहुत बन जाते हैं, परन्तु उन से किसी प्रकार की हानि नहीं होती है।

भौमवार आप के लिये शुभवार है, रंगों में लाल रंग आप के लिये लाभदायक रहता है, अंकों में केवल "९" का अंक आप के लिये विशेषतया लाभदायक है। रत्नों में से "मूंगा" आप के लिये शुभ रत्न माना गया है।

वृष राशि वाला ऐश्वर्य से युक्त, स्वस्थ तथा सुखी जीवन वाला होता है, जाईदाद और वाहन आदि बनाने की प्रवृति हर समय बनी रहती है, अनुशासन करना और स्वयं भी अनुशासन का पालन करने वाला होता है, अधिक परिश्रमी, अतिथिपूजक, सफाई पसन्द, मीठा बोलने वाला, आत्मविश्वासी, तथा आन पर मिटने वाला होता है, दूसरों के मन के भाव को शीघ्र समझने वाला, राजनैतिक अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी रखने वाला, हर मुश्किल को अपनी बुद्धि और बाहुवल से हल करने वाला होता है, बदला लेने की भावना मन में बनी रहती है जो इस राशि वाले का विशेष अवगुण होता है. आप परिश्रम पर विश्वास करते हैं, धोखाफिरेब आप जानते ही नहीं हैं. धन आप को एकत्रित नहीं होता बल्कि आवश्यकता अनुसार स्वयं मिलता रहता है, आप किसी के मातहत रहकर काम करना पसन्द नहीं करते, इसलिये आप ज़िदी या हठी भी कहलाते हैं, आपके जीवन का प्रारम्भ ही संघर्ष का होता है, कठिन परिश्रम करके ही आप उन्नति शिखर पर पहुँचते हैं, आप का भाग्योदय जीवन के मध्यभाग में होता है, आप का अन्तिम जीवन आध्यात्मिक होता है, मां-बाप तथा बुजर्गों की सेवा व आदर करने की भावना आप में अवश्य पाई जाती है, स्वादिष्ट पदार्थ तथा बढ़िया से बढिया वस्त्र पहनने की रुचि आप में पाई जाती है, खाने पीने में नियन्त्रण न होने के कारण आप का शरीर रोगी रहता है, आपकी आयु लम्बी हो सकती है, परन्तु वह तभी सम्भव है जब आप खान-पान पर कन्ट्रोल रखेंगे, आप को जल्दी क्रोध नहीं आता है परन्तु जब आता है तो आपे से बाहर, अपने मन की बात को आप प्रकट करते नहीं हैं और जब तक आप अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच जायें, उस काम को अधूरा नहीं छोड़ते हैं, आप के चापलूस दोस्त आप को हर समय घेरे रखते हैं, पति पत्नी में अधिक प्रेम होता है, आप की स्त्री मन्द बुद्धि से युक्त होने पर भी धार्मिक विचारवाली, समाज परिवार तथा रिश्तेदारों में आदर पाने वाली, चरित्रशील तथा विश्वासपात्र होती है, वृष राशि यदि पुरुष की हो तो स्त्री पहले मरती है, यदि महिला की हो तो पति का देहान्त पहले होता है, यानि

जीवन के अन्तिम कम से कम तीन या अधिक से अधिक सात वर्ष अकेले गुज़ारने पडते हैं, पुत्र-सुख मिलने पर भी आप की कन्यायें अधिक होती हैं, वृष राशि वाला दवाई (क्यमिस्ट) दुकान, होटल या कोई विशाल कारखाना खोलने में सफल रहता है, नौकरी करने पर आफिसर की पदवी पर पहुँचता है और हर प्रकार से सफल रहता है, वृष राशिवालों को सांझेदारी २१ अगस्त से २७ अगस्त तक, २० से २७ सितम्बर तक, २१ सितम्बर से २७ जनवरी तक और २१ अक्टूबर २७ नवम्बर तक उत्पन्न हुये लोगों से अच्छा तथा दृढ सम्बन्ध रहता है, ऐसे तो वृष राशि वाला हर राशि के साथ मेलजोल रखने में सफल रहता है, यही एक राशि है जिस पर किसी हानिकारक राशि का बुरा प्रभाव अधिक प्रभावशील नहीं रहता है, शुक्रवार आप के लिये शुभ दिन है, सफेद रंग या हल्का पीला रंग आप के लिये शुभ है, रत्नों में पन्ना और हीरा आप के लिये शुभ रत्न है, यदि आप की पहली सन्तान पुत्र हो तो उस को १६ वर्ष की आयु तक खतरा रहता है, पुत्र सुशील और आज्ञाकारी होता है, वृष राशिवालों का जीवन सामूहिक रूप से सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होता है, कोई विशेष दुर्घटना जीवन में नहीं होती, आप गाने बजाने के इच्छुक होते हैं, पानी से आप को डर रहता है, आंखों और सिर से सम्बन्धित शारीरिक कष्टों से आप को दुचार होना पड़ता है, यद्यपि बारह राशियों के स्वभाव का फलादेश पुरुष और महिलाओं दोनों के लिये लिखा गया है, परन्तु वृष राशिवाली महिला के लिये विशेषतया यह बात लिखने के योग्य है कि वह अपने स्वभाव और गुणों के कारण जिस घर में होती है, उसको स्वर्ग बनाने में कोई कसर बाकी नहीं रखती, अतिथिपूजा तथा हर एक काम को सुचारु ढंग से करने का गुण रखती है और खानदान की प्रतिष्ठा और प्रशंसा में वृद्धि करने में सहायक बनती है।

मिथुन राशि वाला चंचल, सुन्दर, धन दौलत से युक्त, उद्योगी, माता पिता का आदर करने वाला, कमजोर होने पर भी प्रसन्नचित्त होता है, जवानी में अपने चरित्र की रक्षा करने में असफल रहता है, आप

की आर्थिक दशा एक जैसी नहीं रहती, कभी धन की भरमार और कभी तंदस्ती से दुचार होना पड़ता है, कभी आप खर्च करने में हद से ज्यादा उदारचित्त और कभी कंजूसों को मात करने वाले होते हैं, धार्मिक क्षेत्र में भी स्थिर स्वभाव के नहीं होते, कभी धर्मात्माओं के गुरु और कभी नास्तिकों के मुखिया बन कर रहने वाले होते हैं, आप प्रायः यात्राओं में रहते हैं, यात्रायें आप के जीवन का अंग होती हैं, हर काम को जल्दबाजी से करने का स्वभाव होता है, हर एक व्यक्ति को क्षण मात्र में मित्र बनाते हैं, चतुर और हर मनुष्य की गहराई तक जानेवाले, अपनी बात को गुप्त रखने वाले, मान प्रतिष्ठा को बचाये रखने के निमित्त सब कुछ अर्पण करने वाले, दूसरों के उपकार को बदला शीघ्रातिशीघ्र चुकाने की चिन्ता करने वाले, हर कष्ट का मुकाबला धीरज से करने वाले, अपनी प्रशंसा सुनना पसन्द न करने का स्वभाव वाला, ज़िन्दगी का पहला भाग संघर्ष का, दूसरा ऐश्वर्य का और तीसरा व चौथा हिस्सा अस्वस्थ शरीर होने पर भी मानसिक शान्ति से युक्त होता है, कारोबार की अपेक्षा नौकरी में सफलता प्राप्त होती है, अपने बाहुबल से मकान जाईदाद आदि बनाता है, सन्तान होने पर भी सन्तानपक्ष से अशान्त रहता है, मित्रों तथा रिश्तेदारों से हर समय घेरे रहने पर भी कोई हमदर्द नहीं होता है, क्रोध जल्दी नहीं आता है और आने पर जल्दी शान्त हो जाता है, बाद में पश्चाताप करता है, आप की आर्थिक पुजिशन अस्थिर होती है, ३५ वर्ष आयु के लगभग शत्रुओं के फंदे में फंस कर हानि उठाता है, अपने सुसराल वालों के साथ सम्बन्ध ठीक नहीं रहता है, किसी भी समय बेकार रहना पसन्द नहीं करते, कुछ न कुछ करते रहने पर ही चित्त प्रसन्न रहता है, बोलने में चतुर होता है, मिथुन राशिवाला समाज में लीडर, वकील या लेक्चरार बन सकता है, यदि आप व्योपार करते हैं तो व्योपार में जल्दी पैसा कमाने का मार्ग निकालने, नई कम्पनी बनाने और शियरमार्केट में बहुत जल्दी सफलता प्राप्त करता है, प्रायः अपने धन्धे की लाईन बदलता रहता है, उपकार करने की प्रवृत्ति बनी रहती है, जीवन के लगभग २२वें वर्ष में तर्की करता है, अन्तिम जीवन आध्यात्मिक जीवन होता है, अकस्मात्

किसी अच्छे महात्मा का संयोग बनता है. आयु लम्बी होती है, जीवन में एक बार किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है, अथवा शरीर में चीरफाड़ करनी पड़ती हैं, विवाह एक से अधिक हो सकते हैं, आप की स्त्री मन की कोमल, हस्तकला में चतुर, स्वभाव से चंचल, धार्मिक प्रवृत्ति वाली होती है, यद्यपि उपरलिखित फलादेश पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिये एक जैसा है परन्तु मिथुन राशि वाली महिला के लिये विशेष बात यह है कि आप का अपने पति के साथ अधिक प्रेम होता है बल्कि आप के इशारे पर चलने वाला होता है, मिथुन राशिवाली स्त्री के लिये यह बात भी खास होती है कि उसका पहला जीवन दुःखमय जीवन होता है और विवाह के बाद भाग्योदय होता है, सन्तान आप की अच्छी होती है, परन्तु मां से अधिक प्यार रखती है, आप की मित्रता विवाह और साँझेदारी उन मनुष्यों से निभ सकती है जिनका जन्म २१ सितम्बर से २७ अक्टूबर तक, २१ जनवरी से २७ फर्वरी तक या २१ नवम्बर से २७ दिसम्बर तक हो।

तथा पेट सम्बन्धित रोग आप को घेरे रखते हैं, रोगी शरीर होते हुये भी अन्तिम जीवन परिवार सुख से युक्त होता है, मिथुन राशिवाले की स्त्री की आयु पुरुष से लम्बी होती है, यानी ७५ के लगभग।

बुधवार का दिन आप के लिये शुभ होता है, हरा या पीला रंग(हल्का) आप के लिये शुभ है। "५" का अंक आप के लिये अनुकूल है, आप के लिये "पन्ना" शुभ रत्न है।

कर्क राशि का स्वभाव

कर्क राशि वाले का जीवन सुखी, धनवान, चरित्रवान तथा धार्मिक होता है, माता पिता का आज्ञाकारी तथा भक्त होता है, माता पिता से भी सुख प्राप्त करने वाला होता है, प्राय: शरीर से स्वस्थ तथा सुडौल होता है, साधु सन्तों की सेवा करने वाला, मसताना स्वभाव के फकीरों पर अधिक विश्वास करने वाला होता है, कर्क राशिवाला धन खूब कमाता है, परन्तु अपनी शान तथा प्रसिद्धि के लिये पानी की भांति धन खर्च करता है, हर एक काम को चाव से आरम्भ करता है परन्तु आगे जाकर उत्साह ढीला पड जाता है, जिस कारण काम अधूरे ही रह जाते हैं, कर्क राशिवालों का स्वभाव वहमी होता है, जो आप के जीवन का विशेष अवगुण होता है, यह अवगुण आप की उन्नति में रुकावट का कारण है, आप अपने वंश की शान शौकत बढाने की धुन में लगे रहते हैं जिस के लिये हर बलि के लिये तय्यार होते हैं, इस लक्ष्य में आप बहुत हद तक सफल भी रहते हैं, सजावट, सफाई, सजधज और डिकुरेशन की उत्तम प्रवृत्ति आप में पाई जाती है, आप पर चन्द्रमा का प्रभाव अधिक होता है जब कि कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा होता है, इस ग्रह के प्रभाव से आप का स्वभाव सरल और शान्त होता है, इस स्वभाव के कारण आप कभी कभी ठगे भी जाते हैं, आप के जीवन का बहुत सा भाग सफर में ही व्यतीत हो जाता है, यानी "सफर" आपके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग हैं, गृहस्थपक्ष से आप सुखी रहते हैं, आप की स्त्री सौभाग्यशाली होती है उस का स्वभाव सरल और धार्मिक विचारों वाला होता है और अच्छी सन्तान को जन्म देती है, सरल स्वभाव के कारण परिवार और रिश्तेदारों में आदर पाती है, कर्क राशिवाली स्त्री का अन्तिम जीवन सुख शान्ति के वाता-

वरण में व्यतीत होता है और आप के अन्तिम समय तक लक्ष्मी भगवती आप के परिवार पर छाई रहती है, तंगदस्ती से जीवन भर कभी भी आप को दुचार नहीं होना पडता। कर्क राशिवालों को मित्र और रिश्तेदार हर समय घेरे रखते हैं परन्तु वे सभी चापलूस और स्वार्थी होते हैं, सच्ची मित्रता का प्रभाव आप को खटकता रहता है, ३५ वर्ष तक आप का जीवन संघर्ष का होता है, आप अपने मन की बात झटपट किसी से प्रकट नहीं करते, आप हवाई किले बनाने के भी आदी होते हैं, एक संकल्प को छोड़कर दूसरी ओर लग जाना आप का स्वाभाविक अवगुण होता है, कर्क राशि वाली महिला आमतौर पर नौकरी करती है, अनुशासन बनाये रखना और स्वयं भी अनुशासन में रहना पसन्द करती है। कर्क राशिवाली महिला जल्दी जोश में आ जाती है परन्तु शान्त भी जल्दी हो जाती है, कर्क राशिवाले धन का प्रयोग शान से करते हैं, भाइयों मे प्रायः मानसिक मतभेद रहता है, जब कि आपातत: दारी आन पडती है या अपनी इच्छा से ही ऐसी जिम्मेदारी ले लेते हैं। आप की सब से बड़ी सन्तान अच्छी पदवी पर पहुंचती है, आप दोनों पति पत्नी को दोनों पक्ष घर तथा सुसराल से बनी बनाई लाखों रुपयों की जाईदाद मिलती है, आप का स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहता है परन्तु कभी चोट या चीरफाड का योग बनता है, वराहमिहिर के ज्योतिषफलित के अनुसार कर्क राशिवाला तेज बुद्धि जल्दबाजी और दूसरों के अनुशासन में काम करने वाला होता है, ३५ वर्ष तक आप को कठिन परिश्रम करना पडता है, परन्तु उसके अनुसार उन्नति नहीं होती हैं, गाने बजाने आदि कलाओं में आप अधिक प्रवृत्ति रखते हैं। ५ वां २४ वां वर्ष व्यतीत होने पर आप की आयु लगभग ७० वर्ष की होती है, मसाने तथा हृदय की बीमारी का आप को डर रहता है, पीला तथा नारंगी रंग आप के लिये शुभ है, रविवार का दिन और "४" का अंक आप के लिये उत्तम है माणिक्य व पुखराज

सिंह राशि का स्वभाव

सिंह राशि वाला उद्योगी, धनवान् तथा उदारचित्त होता है, विशेषतया नौकरीपेशा होता है, नौकरी में व्योपार की अपेक्षा अधिक सफल रहता है, अपनी जन्म भूमि से प्रायः दूर रहता है, बड़े परिवार में जहां बच्चे बहुत हूँ जन्म लेता है और जीवन के अन्तिम समय तक बड़े परिवार में ही जीवन व्यतीत करता है, धन बहुत कमाता है, परन्तु धन का अधिक भाग अन्याय का होता है, और बहुत सा धन निरर्थ खर्च करता है, खानेखिलाने की प्रवृत्ति अधिक होती है, सिंह राशिवाले का शरीर सुडौल तथा देखने में सुदृढ होता है, खून की खराबी, नकसीर, अथवा बवासीर आदि व्याधि में ग्रस्त होता है और जीवन में एक बार आप्रेशन की नौबत आती है, सुन्दर वस्त्र पहनने और सजावट की प्रवृत्ति वाला होता है अपनी प्रशंसा तथा प्रतिष्ठा बनाने का इच्छुक होता है, समाज में श्रेष्ठ पदवी प्राप्त करने की इच्छा होने पर भी उस में असफल रहता है, दृढ़ संकल्प वाला होता है, एक बार जो निश्चय बना लेता है उस में अटल रहता है, सिंह राशिवाला धार्मिक प्रवृत्ति वाला होता है, सन्तों-साधुओं और फकीरों की सेवा करने में शान्ति अनुभव करता है, पूर्व जन्म के संस्कारों से अचानक किसी ब्रह्मनिष्ठ महात्मा का अनुग्रह प्राप्त करता है, अभिमानी तथा आत्मविश्वासी होने के कारण झुकने की अपेक्षा टूटना पसन्द करता है, दूसरे की प्रशंसा सुनना पसन्द नहीं करता है जो कभी हानि का कारण भी बन जाता है। बचपन की बुरी सुसाईटी से बहुत हानि उठाता है, जवानी में ऐश व अशरत का भोग सीमा में करता है, आप शेर की भान्ति हर एक को दबाये रखने के आदी होते हैं, जो आप के लिये एक भारी दोष है, आप माता पिता के आज्ञाकारी होते हैं,

परन्तु माँ की ओर अधिक झुकाव होता है, जीवन का पहला भाग संघर्ष तथा दौड़धूप में व्यतीत होता है, दूसरा भाग ऐश व अशरत में और अन्तिम भाग शान्त वातावरण विशेषतया आध्यात्मिक रूप में व्यतीत होता है। आप की पत्नी हठी स्वभाव की होने पर भी धार्मिक विचारवाली होती है, सिंह राशिवाला सहनशील, दृढसंकल्पवाला तथा क्षमा की वृत्ति वाला होता है, विश्वासपात्र और ईमान-दार होता है, जो कुछ दिल में होता है स्पष्ट कह देता है, त्यागवृत्ति बचपन से ही रहती है, नौकरी करने पर अच्छी पदवी पर पहुँचता है, सन्तान बहुत होती है, परन्तु उन से इच्छानुसार सुख नहीं मिलता है, बुराई का बदला भलाई में देने का स्वभाव होता है, जिस में आपकी स्त्री का भी सहयोग होता है, आप का घरेलू वातावरण अशान्त होता है, आप को अपनी पत्नी से भी विचारों का मतभेद होता है, आप को अपने किसी लावारिस सम्बन्धी से या सुसराल से बिना परिश्रम के धन मिलता है, परन्तु ऐसी सम्पत्ति प्राप्त करने में सम्बन्धियों की ओर से डाली गई अड़चनों

बार यात्रायें करनी पड़ती हैं, और वे यात्रायें भी आप के जीवन को उदय करने का कारण बनती हैं, आप के मित्र बहुत होते हैं, परन्तु उन से कोई लाभ मिलता नहीं अपितु कभी कभी हानि ही उठानी पड़ती है, शत्रुओं पर आपकी प्राय: विजय होती है, पशुधन आप के पास फलता फूलता नहीं, जीवन के ५वें, २७वें और ३० वें वर्ष में शरीरकष्ट, जिस मास में आप का जन्म हुआ हो उसी मास में पैदा होने वाले मनुष्य से आप की साझेदारी निभ सकती है। पीला तथा नारंगी रंग आप के लिये लाभदायक है, रविवार का दिन शुभ है, "४" का अंक आप के लिये अनुकूल है, रत्नों में "माणिक्य" आप के लिये शुभ रत्न है।

कन्या राशि का स्वभाव

कन्या राशिवाला भाग्यशाली, हर फन का माहिर धन, मकान, भूमि, ऐश्वर्य और बड़े परिवार वाला होता है, हर काम को उत्साह और लगन से करता है, कठोर हृदय होने पर भी अपने परिवार तथा सम्बन्धियों से सहानुभूति रखता है, लड़ाई झगड़ों और उलझनों को सुलझाने में विशेष महारत रखता है, जातिभेद को छोड़कर हर मनुष्य से एक जैसा व्यवहार करता है धर्म के कामों में अस्थिर बुद्धि अथवा तर्क वितर्क करने वाला होता है, दूसरों के रहस्य को समझ लेने की सूझ बूझ रखने वाला, पाखण्ड, धोखा, आपे से बाहर होना अपने मन के भेद को छुपाये रखने वाला, और चालाकी जैसे दोषों को भी प्रयोग में लाने वाला और सियासतदान होता है, आप के आरम्भ का जीवन संघर्ष से भरपूर होता है और आयु बढ़ने के साथ साथ ऐश्वर्य का स्वामी बनता है, आप को माता पिता की सम्पत्ति मिलती नहीं है, पैतृक सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिये मुकद्दिमाबाजी तक करनी पड़ती है आप के भाई बहिन बहुत होते हैं, परन्तु सुख एक ही भाई का मिलता है, नशीले पदार्थों से परहेज करता है, अपना चरित्र बचाये रखने पर सफल नहीं रहता, आप की स्त्री कंजूस परन्तु मीठी जबान वाली होती है, पति पत्नी में प्राय:तनाव रहता है, दो विवाह की सम्भावना भी होती है, किसी रिश्तेदार से न तो कोई सहयोग मिलता है और नही सहायता, आप के मित्र बहुत होते हैं, वही आड़े समय में काम आते हैं जिन पर विश्वास न हो, जब कि जिन पर विश्वास होता है उन में से जीवन में एक आध बार धोखा मिलने का अन्देशा है, यदि आप व्योपारी हैं तो गलत तरीके अथवा धोखे से धन कमाना आपके लिये हानिकारक है, धन कमाने में आप माहिर होते हैं, विशेषतया परिश्रम की अपेक्षा बुद्धिबल अथवा युक्तियों से धन कमाते हैं, यद्यपि आप जीवन में अधिक धन कमाते हैं परन्तु निरर्थ

खर्च के कारण कभी तंगदस्ती से भी दुचार होना पडता है सैर सपाटा, अतिथिसेवा, घूमना फिरना, पार्टियों में धन का खर्च करना आप के जीवन का एक स्वभाव होता है, दूसरों के गुण अवगुण परखने में आप की नजर तेज होती है, आप की बोलचाल मधुर होती है, पढने लिखने की ओर आप की विशेष रुचि रहती है और विद्या में आप सफल रहते हैं, फोटू और कारटूनों में आप रुचि रखते हैं, छोटी छोटी आकर्षक वस्तुएं तथा पुस्तकें जमह करने का शौक रखते हैं, यात्रायें भी अधिक करनी पडती हैं, समुद्रीय यात्रा का भी योग है, जो आप के जीवन को काया पलट करेगा, आप के शरीर में इतने रोग नहीं होते हैं, जितने रोगों का आप भ्रम करते हें, केवल पाचन शक्ति कमजोर होती है, आप सामाजिक कामों से भी दिलचस्पी रखते हैं, यदि आप गांव में रहते हैं तो पशुधन आप के लिये लाभकारी रहेगा और वह खूब फलेगा. कन्या राशि वाली महिला दूसरों के हित के लिये अपने सुख का स्वाहा करती है, प्रत्येक मजहब की ओर अधिक ध्यान देती है शान्ति का अनुभव करती हैं, विशेष धार्मिक न होने पर भी साधु-सन्तों, फकीरों पर आप अधिक विश्वास रखती हैं, यन्त्र मन्त्र के चक्र में आप पडी रहती हैं, कन्या राशि वालों का मकर राशिवालों के साथ सम्बन्ध अच्छा रहता है, ऐसे ही जिन लोगों का १९ फर्वर से २७ मार्च तक, या २१ दिसम्बर से २७ जनवरी तक जिन का जन्म हो उनके साथ भी साझेदारी, मित्रता, रिश्ता करना लाभदायक रहता है, जीवन का तीसरा वर्ष, ४१ वां और ५७वां वर्ष कष्ट का होता है, आयु लगभग ७९ वर्ष तक होती है, आप के लिये शुभवार बुधवार है, "५" का अंक लाभदायक रहता है, अंगूरी तथा कपूरी रंग और रत्नों में "पन्ना" धारण करना शुभ है।

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री
काशीनाथ शर्मा

तुला राशि का स्वभाव

तुला राशिवाला गम्भीर स्वभाव का होता है, विचार शील, आत्मविश्वासी और ईश्वर पर अधिक विश्वास करने वाला होता हैं, शरीर सुन्दर, सुढोल तथा स्वस्थ होता है, अच्छे और उच्च विचार वाले लोगों मे सम्बन्ध रखता है, हर काम को पूरी ज़िम्मेवारी मे निभाता है, कारोबार अथवा लेनदेन में सच्चा होता है, अपनी प्रशंसा सुनकर खुश होता है और साधारण सी निन्दा सुन कर परेशान हो जाता है, बदला लेने की भावना आप में बनी रहती है जो आप के जीवन का सब से बडा अवगुण है. तुला राशिवाले खाने पिलाने के शोकीन होते हैं, हंसमुख होना आप का जन्मजात गुण है, सभा-सम्मेलनों में हिस्सा लेना आप के जीवन का लक्ष्य होता है, आप की विचारधारा धार्मिक होती है, अपनी सभ्यता और मातृ-भूमि से अधिक प्रेम होता है, दूसरों को शीघ्र मित्र बनाने में प्रवीण होते हैं, मित्र हर समय आप को घेरे रखते हैं और इन में कई सच्चे हितैषी भी होते हैं, आप को क्रोध शीघ्र आता है परन्तु पानी के बुलबुले की भान्ति झट समाप्त होता है, आप के विचार समय समय पर बदलते रहते हैं, और आप थोड़ी सी सफलता पर फूले नहीं समाते, इस के विपरीत थोडी सी असफलता पर हद से ज्यादा परेशान हो जाते हैं, दूसरों की उन्नति देखकर आप स्पर्धा(रशक) करते हैं, टेक्निकल कामों से आप को बचपन से ही लगन होती है, व्योपारी होने पर आप को सट्टा लाटरी आदि से लाभ मिलता है, नौकरी करने पर अच्छी पदवी पर पहुंचते हैं, आप का भाग्य ४०वें वर्ष के वाद चमकता है, ३० वर्ष तक आप का जीवन संघर्ष का होता है, आप का विवाह छोटी अवस्था में हो होता है, स्त्री सुन्दर तथा हुशयार होती है, आप प्रायः स्त्री के वश में होते हैं, जिस कारण से अपने माता पिता और बुजर्गों से मतभेद रहता है, यद्यपि आप का जीवन पहली आयु में संघर्ष तथा दौड़धूप

का होता है, परन्तु अन्तिम जीवन सुख शान्ति के वातावरण में गुजरता है, आप की सन्तान सुशील तथा आज्ञाकारी होती है, परन्तु आप और आप की पत्नी के तेज और तुन्द स्वभाव से प्राय: गृहस्थ में अशान्ति का वातावरण बना रहता है, आप के भाई बहिन भी बहुत होते हैं वे सब प्रसन्नचित्त, प्रतिष्ठित और समाज मे प्रिय होते हैं ऐसा होने पर भी आप को उन से कोई सहायता या सहयोग नहीं मिलता है, आप को खाने पीने में अधिकतर सात्विक पदार्थ प्राय: प्रिय होते हैं, आप का अपने जीवन में जाईदाद सम्बन्धित मुकद्दिमा का सामना होगा, जिस से आप के शत्रुओं का एक समूह आप के खिलाफ होगा, प्रारब्ध पर आप अधिक विश्वास नहीं रखते हैं अपितु कर्म तथा परिश्रम के आधार पर उन्नति करना जानते हैं और अपने बाहुबल से ही धन कमाते हैं, खर्च करने में भी आप उदारचित्त होते हैं, आप अच्छे कामों में ही धन खर्च करते हैं, संस्थाओं, सभाओं और अनाथालयों को दान देने में आप आनन्द समझते हैं, [illegible]

है, यह सब कुछ होने पर भी आप का रहन सहन अमीराना और सजधज का होता है, आप जीवन में विवाह उत्सव आदि अधिक रचाते हैं, आप का जीवन सफल जीवन कहलाता है, आप की दीर्घ आयु होती है और वृद्धावस्था में भी स्वास्थ्य बना रहता है, धार्मिक प्रवृत्ति अन्तिम समय तक बनी रहती है, आप की मित्रता सांझेदारी अथवा रिश्तेदारी उन व्यक्तियों से अच्छी रहती है जिनका जन्म २१ जनवरी से २७ फर्वरी तक या २१ मई से २७ जून तक या २१ मार्च से २६ अप्रेल तक हुआ हो।

मेष, मिथुन, वृश्चिक और कुम्भ राशिवालों से मित्रता या कारोबारी सम्बन्ध आदि अच्छा रह सकता है वृष, मकर और मीन राशिवालों से आप को बचे रहना चाहिये, शुक्र का दिन आप के लिये शुभ है, भूरा, पीला और आसमानी रंग आप के लिये शुभ माना गया है, हीरा आप के लिये शुभ रत्न है, ६८वां वर्ष व्यतीत होने पर आप की आयु ८० वर्ष तक हो सकती है।

वृश्चिक राशि का स्वभाव

वृश्चिक राशिवाला अपने बाहुबल से खडा हो कर आगे बढता है, परिश्रम करना ही जीवन का लक्ष्य होता है, धनोपार्जन के नये नये तरीके सोचने का आदी होता है, बचपन प्राय: संकट के वातावरण में व्यतीत होता है, लगभग ३० वर्ष की आयु तक भाग्य के साथ लडता है, बोलने में चतुर होता है सामाजिक कामों से दिलचस्पी रखने वाला और खाने पीने का शौकीन होता है, शरीर स्वस्थ, सुन्दर तथा सुडौल होता है, वृश्चिक राशि वाला उस पेशे को अधिक पसन्द करता है जहां अनुशासन हो, प्राय: सभी कार्यों में जल्दबाजी करने वाला होता है, जोश में आकर अपने होश खोने वाला होता है, लडाई झगडों में प्राय: मध्यस्थ बनने की प्रवृत्ति रखता है, अपने हठ पर डटा रहता है, जहां तक परिवार तथा गृहस्थ के साथ बातचीत करते समय मतभेद रहता है, और तू तू मैं मैं की आदत बनी रहती है, आप झुकना नहीं जानते हैं टूटना जानते हैं, आप किसी का अनुशासन सहन नहीं करते, आप किसी के मातहत रहना पसन्द नहीं करते हैं आप कठिन से कठिन काम को सुलझाने में किसी भी प्रकार की घबराहट महसूस नहीं करते, धार्मिक क्षेत्र में आप तर्कवितर्क स्वभाव के होते हैं परन्तु ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास होता है, अन्तिम जीवन में आप को अचानक किसी महात्मा का अनुग्रह होता है, जो आप की मानसिक शान्ति का कारण बनता है, यद्यपि आप का स्वास्थ्य ठीक रहता है परन्तु जीवन में एक आध बार चोट लगने या किसी प्रकार का अपरेशन कराने तक की नौबत आ सकती है, आप में अधिक जाईदाद बनाने की की प्रवृत्ति होती है, आप प्राय: दूसरों की राय नहीं मानते और अपनी बात मनवाने के लिये हठधर्मी से काम लेते हैं, आप अपना संकल्प पूरा करने के लिये बडी सी बडी बलि देने को तैयार रहते हैं, वृश्चिक राशिवाले के दो से

रूप होते है, एक वह जो समाज में लोगों को नजर आता है, दूसरा वह जो इतना गुप्त होता है जिसकी बाहर किसी को हवा भी नहीं लगती, आप का आन्तरिक रूप भोग-विलास से भरपूर होता है जब कि आप समाज में आदर्श विचार वाले होते हैं, आप बुद्धिमान, प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित होते हैं, आप अपने जीवन में अच्छा धन कमाते हैं और अकस्मात् धन और सम्पत्ति भी मिलती है, नई नई जाईदाद बनाने के आप इच्छुक होते हैं, सन्तान होने पर भी सन्तान सुख इच्छानुसार नहीं होता, आप सम्बन्धियों को चाहते हैं और सम्बन्धी आप को घेरे रखते हैं, परन्तु उन की ओर से कोई लाभ मिलता नहीं हैं और नहीं कोई सहयोग, आप धुनके पक्के होते हैं, अपनी मान मर्यादा और प्रतिष्ठा बचाये रखने के लिये हर बलि के लिये तैयार रहते हैं, नौकरी करने पर ऊंची पदवी पर पहुंचते हैं, आप की स्त्री तेज स्वभाव वाली परन्तु चरित्रशील होती है, आप घरेलू समस्यायों में स्त्री के अधीन होते हैं, आप में बदला लेने की भावना होती है, आप दूसरों की राय नहीं मानते

के होते हैं, वृश्चिक राशिवाला जिस काम को अपने हाथ में लेता है, धीरज से उसे लक्ष्य तक पहुंचाता हैं, अपने विचारों से इतने ज़िद्दी होते हैं कि दूसरों के समझाने से भी नहीं मानते और अपने हठ पर तुले रहते हैं। आप का भाग्योदय जीवन के दूसरे भाग में होता है "वृश्चिक" बिच्छू को कहते हैं, इसका आधा भाग कोमल होता है, उस भाग का कोई प्रभाव नहीं होता, जहर की अधिकता दूसरे भाग में होती है, वरासत में भी सम्पत्ति मिलने का योग होता है, अधिक भोगी होने से ५० वर्ष की अवस्था में स्वास्थ्य का बिगडना आरम्भ हो जाता है। मिथुन और कुम्भ राशिवालों से सावधान रहना, कन्या, कर्कट राशि वालों से मित्रता होती, हरा, पीला रंग शुभ और "मूंगा" रत्न या "नीलम" आप के अनुकूल है। "६" का अंक आप के लिये लाभदायक है।

धनु राशि का स्वभाव

धनु राशिवाला तेज बुद्धि का स्वामी होता है, दानवीर, उदारचित्त तथा एकान्त में रहना पसन्द करता है, अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रखने के ध्यान में हर समय लगा रहता है, दूसरों को दबाये रखने की भावना के कारण अपने मातहतों को शत्रु बनाये रखता है, किसी भी कार्य मे असफल रहने पर भी मायूस नहीं होता, बल्कि अधिक धीरज से आगे बढ़ता है, जो आप के जीवन को सफल बनाने वाला एक विशेष गुण होता है, धनु राशिवाला गंभीर स्वभाव वाला होता है, सहनशीलता और धन जमह करने की प्रवृत्ति वाला होता है, आप के विचार ऊंचे होते हैं, परन्तु रहन सहन सादा होता है, विद्यार्थी जीवन में आप स्कूल के नेता और गृहस्थी जीवन में परिवार की बागडोर आप के हाथ में होती है, यहां तक कि दोस्त, सम्बन्धी अपनी समस्याओं और कठिनाइयों का हल तलाश करने में आप का सहारा लेते हैं, यद्यपि आप को हर समय मित्रों और रिश्तेदारों की टोलियां घेरे रखती हैं परन्तु उन में से आप का कोई सच्चा मित्र या हमदर्द नहीं होता, आप हर एक को अनुशासन में रखने की योग्यता रखते हैं, आप का जीवन कष्टों से भरपूर होता है परन्तु फिर भी आप घबराते नहीं हैं, आप का स्वभाव अन्दर से मक्खन से भी अधिक कोमल परन्तु बाहर से कठोर होता है, आप का विवाह एक ही होता है परन्तु आप की स्त्री की मृत्यु आप से बहुत पहले होती है, धनवान होने पर भी आप को कभी कभी आर्थिक संकट से दुचार होना पड़ता है, परन्तु आर्थिक संकट दो चार दिन का ही होता है, स्थाई या बहुत देर के लिये नहीं होता है, आप जीवन में अच्छा धन कमाते हैं और सार्थक धन खर्च करने की योग्यता भी रखते हैं, आप के जीवन में अचानक धन मिलने की भी सम्भावना है, आप को पैतृक सम्पत्ति भी मिलती है और अपनी कमाई से भी जमीन जायदाद

आदि बनाते हैं, आप के भाई बहिन कम होते हैं, सन्तान अधिक होने पर भी सन्तान से सन्तोषजनक सुख मिलता नहीं है, आप के विचार धार्मिक होते हैं, रूढिवादी विचारों का आप सम्मान करते हैं, पुराने रीतिरिवाजों का आप समर्थन करते हैं, आप को यात्राओं का बहुत शौक होता है, नई नई ज़ानकारी प्राप्त करना आप का स्वभाव होता है, धनु राशिवाले दो प्रकार के होते हैं - एक वे जो नियमों का पालन करते हैं, दूसरे वे जो नियमों का उल्लंघन करते हैं, इन में तो कई परोपकारी और स्वार्थी होते हैं, धनु राशिवाले प्रायः ऊंची पदवी पर पहुँचते हैं और सफल वकील या जज भी बन सकते हैं, यदि आप कारोबार करते हैं तो कपडे के कारोबार में आप खूब फलते फूलते हैं, आप को क्रोध आता है परन्तु जल्दी शान्त होता है, साधारण सी बातों की चिन्ता करके आप परेशान हो जाते हैं, बचपन में आर्थिक संकट के दौर से गुजरना पडता है, प्रायः खेलकूद के आप बहुत शौकीन होते हैं, बाग बगीचों को बनाने की प्रवृत्ति आप में पाई जाती है, ससुर किसी एक से मतभेद होता है, और सब से बडी सन्तान काफी परेशान करती है, जीवन में एक बार किसी खास मित्र से विश्वासघात होता है ।

आप की मित्रता, सांझेदारी, रिश्ता व सम्बन्ध जिन से ठीक रहता है उन की तारीख होनी चाहिये:— २१ मार्च से २३ अप्रेल तक, २१ जुलाई से २७ अगस्त तक, २२ नवम्बर से २२ दिसम्बर तक, २१ मई से २७ जून तक । आप का अन्तिम रोग अन्तड़ियों और फेफडों का होता है, बैंगनी रंग आप के लिये लाभदायक है, "पुखराज "नीलम" यह दोनों रत्न आप के लिये शुभ हैं, परन्तु नीलम को सावधानी से पहनना चाहिये ।

मकर राशि का स्वभाव

मकर आप भाग्यशाली हैं आप की राशि मकर है, और शनि उस का स्वामी है, इसलिये आप के जीवन पर अधिक प्रभाव शनि का होना आवश्यक है, कष्टों की पाठशाला में पढ़कर आप का जीवन बना है, आप धुन के पक्के, निर्भय तथा हठी स्वभाव के होते है आप दिखावे के प्रेम से घृणा करते हैं जिस के कारण से आप को कठोर तथा नास्तिक समझने का धोखा खाते हैं, आप हर समय मान प्रतिष्ठा बचाये रखने की धुन में लगे रहते हैं, आप की बात इतनी पक्की और सूझबूझ वाली होती है कि उस का मजाक उड़ाने या उसे निरर्थ समझने की किसी में हिम्मत नहीं होती, धन कमाना, स्वयं खाना और दूसरों को खिलाना सैर सपाटों में दिलचस्पी आपके जीवन का मुख्य लक्ष्य होता है, धनाढ्य होने पर भी आप निरर्थ खर्च करने से बचे रहते हैं इसलिये आप को कई लोग कंजूसों की कक्षा में गिनते हैं, जीवन में आप को बहुत से उतार चढ़ाव देखने पड़ते हैं, फिर भी आप किसी पहलू से निराश नहीं होते और नही किसी के सामने झुकते हैं, समाज में आप की गिनती सवसाधारण जनता में होती है, आप का नाम प्रायः छुपा हुआ होता है, धार्मिक प्रवृत्ति आप की कम होती है, साधु सन्तों फकीरों की संगति से आप दूर रहते हैं, आप वाह्यरूप में खुश्क स्वभाव के देखने में होते हैं, परन्तु अन्दर से आप का मन प्रेम और हमदर्दी से भरपूर होता है, किसी को कष्ट देना आप का स्वभाव नहीं होता, आप अधिक मित्र नहीं रखते हैं परन्तु आप को झटपट मित्र बनाया जा सकता है, जिस किसी से आप की मित्रता होती है वह स्थाई और विश्वसनीय होती है, आप की विचार-शक्ति बहुत दृढ होती है, बिना सोचे समझे आप कोई काम नहीं करते हैं, आप साहसी और उद्योगी होते हैं, आप किसी के मातहत काम करना पसन्द नहीं करते, आप नौकरी की अपेक्षा व्योपार में

सफल रहता है, जीवन में एक बार चोट लगने की सम्भावना है, या शरीर में चीरफाड़ करनी पडती है। आप को खुशामद अच्छी लगती है और आलोचना बुरी, यदि आप इन दोनों कमजोरियों पर कन्ट्रोल कर लें तो बहुत उन्नति कर सकते हैं, बचपन से ही आप लीडरी के विचार रखते है, विद्यार्थी जीवन में सभी अध्यापक, विद्यार्थी आप के प्रभाव से प्रभावित होते हैं, यदि आप व्योपार करते हैं तो वहां भी आप का नाम पहले दर्जे पर होगा, यदि आप की जन्मपत्री में भौम पहला, चौथा, सातवां अथवा आठवां हो तो अकस्मात् किसी दुर्घटना का खतरा रहता है, आप की आर्थिक दशा प्रायः अच्छी रहती है और ज़िन्दगी भर तंगदस्ती से दुचार नहीं होना पडता।

यद्यपि उपरलिखित फलादेश महिलाओं और पुरुषों के लिये एक जैसा है परन्तु महिला में यह विशेषता है कि वह पुरुष की अपेक्षा हृदय से कोमल होती है, बात चीत में तेज अवश्य होती है, परन्तु ऐसा होने पर भी किसी को दुःख नहीं देती अपितु स्वयं दुःख सहन करती

ईश्वर भक्ति, पाठपूजन की प्रवृत्ति और रीतिरिवाजों पर विश्वास अधिक होता है, महात्माओं, साधुओं, सन्तों की सेवा करना भी आप की मानसिक शान्ति का एक साधन होता है, जिन का जन्म संक्रांति के अनुसार भाद्र कार्तिक या पोष में हुआ हो उन के साथ विवाह, सांझेदारी या किसी प्रकार का सम्बन्ध अच्छा नहीं रहता है, मेष राशि का स्वामी चूंकि भौम है और भौम रक्त का स्वामी माना जाता है, इसलिये बवासीर, चोट, चीरफाड़ आदि का खतरा होता है, यदि आप का जन्म समय १२ बजे दिन से मध्यरात्रि के मध्यकाल में हो तो माता पिता रिश्तेदारों, सुसराल अथवा मित्रों से सम्पत्ति अथवा आर्थिक लाभ होता है, बिना किसी कारण के आप के शत्रु बहुत बन जाते हैं, परन्तु उन से किसी प्रकार की हानि नहीं होती है।

भौमवार आप के लिये शुभवार है, रंगों में लाल रंग आप के लिये लाभदायक रहता है, अंकों में केवल "६" का अंक आप के लिये विशेषतया लाभदायक है। रत्नों में

कुम्भ राशि का स्वभाव

कुम्भ राशिवाला हर बात को गुप्त रखने का आदी होता है साधारण सी बात को भी दिलचस्प ढंग से प्रकट करना इस का गुण होता है, यश, मान, प्रतिष्ठा की इच्छा आप में पाई जाती है, एक स्वतन्त्र पक्षी की भांति आप रहना पसन्द करते हैं, आप का स्वभाव ईर्ष्यालु होने के इलावा दयालु भी होता है, दु:खियों और गरीबों की सेवा तथा सहायता करने में आप किसी से पीछे नहीं रहते, आप की बात स्पष्ट होती है या यूं कहिये कि आप खुली पुस्तक की भांति होते हैं, आप अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिये गली कोचों को भी अपना सकते हैं ताकि लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त किया जासके, यदि आप को शार्टकट भी कहा जाये तो योग्य ही होगा, लम्बे, चौडे ,झमीले अथवा वादविवाद में पड़ना आप पसन्द नहीं करते हैं, कल की चिन्ता न करना और वर्तमान समय को भली प्रकार से व्यतीत करने में आप सन्तुष्ट रहते हैं, आप का स्वास्थ्य प्राय: ढीला रहता है परन्तु आप का शरीर सुडोल और सुन्दर होता है, आप दूसरों के बजाय अपना मार्ग बनाने में अपनी बुद्धि से काम लेते हैं, दूसरों से धोखा खाने पर भी उस पर विश्वास करते हैं और उनका साथ छोडते नहीं आप में यह सब से बडी कमजोरी होती है और इस कारण से हानि भी उठाते हैं, आप किसी काम में रुकावट आने पर उसे छोड देते हैं और मामूली सी असफलता देखने पर हतोत्साह होते हैं, बातचीत के द्वारा दूसरों को सन्तुष्ट करना आप का सब से बडा गुण होता है, प्राय: आप नौकरी करते हैं और उस में सफल रहते हैं, जीवन में एक बार आप का भाग्य अवश्य चमकता है और ऐसा समय किसी भी समय आ सकता है, आप का गृहस्थी जीवन उतार चढाव का होता है, आप के भाई बहिन कम होते हैं, यदि अधिक भी हैं तो भी उन से अनबन रहती है, सन्तान होने पर भी आप को सन्तान सुख नहीं मिलता

अपितु कष्ट मिलता है, आप को मादक चीजों का प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि नशीली वस्तु के सेवन से आप की उन्नति रुक जाती है, पैतृक सम्पत्ति हाथ से जाती है, आप की स्त्री प्राय: अस्वस्थ रहती है और उन के पोषण में आप को काफी परिश्रम करना पड़ता है, आप जिन्दगी में काफी उतार चढाव देखते हैं, दूसरों के लिये आप बहुत कुछ करते हैं परन्तु आप को अपने लिये अपने बाहुबल पर निर्भर रहना पडता है, आप के शत्रु बहुत होते है परन्तु आप सब प्रकार की कठिनाइयों का मुकाबला करके कष्टों को सहन करके अन्त में समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करते हैं, कुम्भ राशिवालों को प्राय: टान्सल अथवा सिरदर्द की शिकायत रहती है, पति पत्नी में मतभेद रहता है, सारावल्ली में लिखा है कि कुम्भ राशिवाली महिलायें निन्दक और धोखेबाज होती हैं, उनकी सचाई पर विश्वास नहीं किया जाता है, न यह किसी से सुदृढ सम्बन्ध रख सकती है, धन एकत्रित करने की इच्छुक होती है, परन्तु उस मे विवाह के कुछ समय पश्चात् सफल हो जाती है, कुछ महिलाओं को धन की लालसा सारी आयु तक पूरी नहीं होती, कुम्भ राशिवाले पुरुष प्राय: अमीर नहीं होते, परन्तु आवश्यकता अनुसार उन को धन मिलता रहता है, कर्क राशिवालों के साथ आप का सम्बन्ध ठीक नहीं रहता, जब कि मिथुन, तुला, कुम्भ राशिवालों के साथ आप का सम्बन्ध लाभदायक रहता है, इसके साथ ही जिन का जन्म २१ मई से २७ जून तक, २१ सितम्बर २७ नवम्बर तक हो, उन के साथ किसी का सम्बन्ध जोड़ने से शान्ति मिलती है, शनि का दिन आप के लिये शुभ है। लाल बैंगनी रंग आप के लिये लाभदायक है, "४" का अंक कुम्भ राशि के लिये शुभ माना गया है, रत्नों में से "नीलम" अथवा "पुखराज" धारण करना आप के लिये लाभकारी है।

मीन राशि का स्वभाव

मीन आप भाग्यशाली हैं आप की जन्मराशि मीन है, जिस का स्वामी बृहस्पति है, आप में अच्छे गुण पाये जाते है, आप का बोलचाल मधुर होता है, आप समाज में प्रतिष्ठित होते हैं और अपना चरित्र बनाये रखने में चौकस रहते हैं, आप को अपने जीवन को सफल बनाने के लिये भाई बन्धुओं और रिश्तेदारों से कोई सहायता नहीं मिलती, अपितु अपने बाहुबल के सहाय से तथा आत्मबल से उन्नति करते हैं, आप को अपने प्रयत्न तथा सचाई पर विश्वास है, आप अधिक धनाढ्य नहीं होते, फिर भी आप हर दृष्टि से भाग्यवान हैं कि आप की पत्नी सुन्दर तथा अच्छे पुत्रों को जन्म देने वाली, सौभाग्यवती, मधुर बोलने वाली तथा अच्छे स्वभाव की होती है, आप मिलनसार और विद्वान होते हैं, आप को प्रायः किसी से विरोध नहीं होता, आप का हृदय कोमल होता है, परोपकारी कामों में आप बढचढकर भाग लेते हैं, धार्मिक तथा सामाजिक कामों में आप सब कुछ न्योछावर करने के लिये तैयार रहते हैं, अतिथिसेवा आप का प्रथम कर्तव्य होता है आप अतिथि को ईश्वर का स्वरूप मानते हैं, यद्यपि आप में गुण बहुत हैं तो कमजोरियां भी कम नहीं, आप हवाई किले बनाने में तेज होते हैं, किसी कार्य के प्रारम्भ करने पर जरा सी अडचन पडने पर आप घबराते हैं, आप रूढ़िवादी होते हैं और पुराने रीतिरिवाजों पर विश्वास रखते है, आप वहमी स्वभाव के होते हैं. आप समाज में माने हुये आदरणीय पुरुष होते हैं, आप व्योपार करते हैं तो उस में नाम पाते हैं, कई बार आप अपने कारोबार की लाईन को बदलते हैं, आप का तिजारती सम्बन्ध समुद्रपार देशों से भी हो सकता है, आप अपने परिश्रम से जाईदाद बनाते हैं। धन नोकरी अथवा कारोबार की दृष्टि से ३० से ४० वर्ष की अवस्था तक आप का भाग्योदय होता है, मीन राशिवाले प्रायः विलास-

प्रिय होते हैं, भिन्न २ वस्तुओं से अपने शरीर को सुख पहुंचाने की धुन में लगे रहते हैं, आप का घरेलू जीवन शान्त होता है, बातचीत करने में आप समझदार होते हैं, खाने पिलाने के आप शौकीन होते हैं, दूसरों को भी अच्छा भोजन खिलाने में खुशी महसूस करते हैं, आप अपने कुटम्ब में कई दुर्घटनायें होती हैं, महिला होने पर गर्भाशय सम्बन्धी रोग होता है, पुरुष होने पर आंखों से सम्बन्धित रोगों का भय रहता है, वराहमेहर के मत से मीन राशिवाला समुद्रपार देशों से व्योपार करता है जिस से विशेष धन मिल सकता है, सारावल्ली में दर्ज है, जिस से विशेष धन मिल सकता है, सारावल्ली में दर्ज है कि मीन राशिाला मधुरभाषी होता है परन्तु उस में झूठ की मात्रा अधिक होती है, विवाह करने के पश्चात् ही आप का भाग्योदय होता है, आप के नौकर चाकर भी होते हैं, शत्रुओं का भय आप को बना रहता है, आप अपने भविष्य का ध्यान अवश्य रखते है, आप के शरीर को कोई न कोई रोग घेरे रखता है, जिस कारण आप बचपन में परेशान रहते हैं. आप के लिये, २५वें, ४०वें वर्ष में एक बार आप को रोग अरिष्ट आता है, आप की आयु लगभग ८० वर्ष की होती है, मान राशिवालों का सम्बन्ध कर्क तथा वृश्चिक राशिवालों के साथ स्थाई तथा सचाई पर निर्धारित होता है, मिथुन और सिंह राशिवालों के साथ आप का सम्बन्ध स्थाई नहीं होता अपितु यह सम्बन्ध आप के लिये दुःख का कारण बनता है, गुरुवार, शुक्रवार आप के लिये शुभ है, इन वारों पर प्राय: शुभ काम करें, तभी आप को सफलता मिलने की आशा हो सकती है, आप के लिये बैंगनी तथा नीला रंग शुभ होता है, इस रंग के वस्त्र आप को धारण करने चाहियें, अंकों में से आप के लिये ३ और ७ अंक लाभदायक है, आप के लिये शुभ रत्न पुखराज "नीलम" तथा "पन्ना" है।

कर्मकाण्ड दीपक
नया संस्करण

भविष्यवाणी

वर्ष का राजा=बृहस्पति देवता, वर्ष का मन्त्री सूर्य देवता धान्य के स्वामी=भौम देवता, सस्य के स्वामी बुध देवता फलों के स्वामी=शनि देवता, रस के स्वामी=शुक्र देवता रक्षामन्त्री=सूर्यदेवता, मेघ के स्वामी=सूर्यदेवता, धन के स्वामी=बुधदेवता, धातुओं के स्वामी बुध देवता। वर्ष का वाहन झूला, वसन्त का वाहन=घोड़ा। वर्षा भगवती कपाल्लिन (कावज बाय) वर्ष का राजा बुधदेवता (काश्मीरीय पद्धति में)

वेद के छः अंगों में ज्योतिष का महत्वपूर्ण स्थान है जबकि ज्योतिष शास्त्र का ज्ञान रखने वाला ज्योतिषी सूर्य चन्द्रमा के ग्रहण का समय ग्रहों का उदय अस्त आदि समय से पहले ही बताता है, जो बिल्कुल पूरा उतरता है, इससे स्पष्ट है ज्योतिष एक सम्पूर्ण विज्ञान है, इस के उल्ट ग्रहों के आधार से की हुई ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सूर्य चन्द्र ग्रहण की भांति पूरी उतरती नहीं है, यहां तक कि एक ही विषय के बारे में ज्योतिषियों की भविष्यवाणी भिन्न भिन्न होती है यदि ज्योतिष सम्पूर्ण और सही विज्ञान है तो भविष्यवाणी के प्रकट करने में अन्तर क्यों ?

जिन ऋषियों ने अपने आध्यात्मिक बल से ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थ प्रकट किये हैं उन्होंने भविष्यवाणी के लिये इस महान् विज्ञान को प्रकट नहीं किया है, अपितु वह ऋषि अपनी हर एक मनोकामना यज्ञों से सिद्ध करते थे, यज्ञों के लिये ग्रहस्थिति का सम्पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक होता है, अतः यज्ञों के प्रयोजन से ही ऋषियों ने इस महान् ज्योतिष विज्ञान को जन्म दिया है, परन्तु वराहमेहर आदि फलित शास्त्रों के मर्मज्ञों का कहना है, जो ग्रह मण्डल ब्रह्माण्ड में है वही ग्रहमण्डल पिण्ड में भी विराजमान है, संसार का अणु अणु ग्रहों से सम्बन्धित है, इसलिये ग्रहों का प्रभाव मनुष्य पर ही क्या संसार के अणु अणु पर पड़ता है, परन्तु किस ग्रह का प्रभाव किस प्राणी पर कितना अथवा किस रूप में पड़ता है, समय से पहले कहना असम्भव नहीं परन्तु कठिन अवश्य है, भविष्यवाणी करने वाले ज्योतिषी के लिये अनुभव, मानसिक पवित्रता स्वच्छ आहार तथा शुद्ध आचरण का होना आवश्यक है केवल गणित का जानना ही भविष्यवाणी के पूरा उतरने का साधन नहीं, इसीलिये गणित के प्रकाण्ड पण्डित भी भविष्यवाणी के अन्त में प्रायः लिखते हैं **"तत्वं चात्रेश्वरो वेत्ति नाहं वेद्मि कदाचन"** अर्थात् सचाई क्या है वह ईश्वर ही जानता है अल्पज्ञ ज्योतिषी नहीं।

गत वर्ष 2042 की भविष्यवाणी में हमने काश्मीर के विषय में लिखा था "वर्तमान सरकार तथा सरकार विरोधीग्रुप का आपसी टकराव काश्मीर के वातावरण को दरहम बरहम कर देगा नित्यप्रति दंगे फसाद हुल्लड़बाजी गुण्डागर्दी और भयंकर दृश्य जनता में अविश्वास उत्पन्न करेंगे, वर्तमान सरकार की डगमगाती दशा को देखकर केन्द्रीय सरकार के हस्ताक्षेप से काश्मीर के राजनैतिक क्षेत्र में ऐसा परिवर्तन आयेगा जिसमें काश्मीर के भाग्य का नया दौर आरम्भ होगा" यद्यपि यह भविष्यवाणी बहुत हद तक सही उतरी भी है परन्तु मन्त्री मण्डल में

कोई नया दौर अथवा परिवर्तन देखने में नहीं आया यह भविष्य वाणी 2042 विक्रमी की है इसलिये 13 अप्रेल 1986 तक मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होने की सम्भावना है, 2043 के आरम्भ से ही काश्मीर सरकार के विषय में केन्द्र की नीति दृढ़ तथा स्पष्ट होगी, जिसके फलस्वरूप वर्तमान सरकार दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास से शासन की बागडोर सम्भालेगी।

भारतीय गणतन्त्र का ३७वां वर्ष

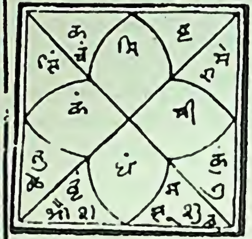

श्रीराजीव गांधी—

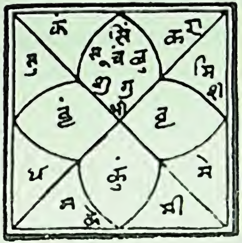

संसार ज्योतिष के दर्पण में

जगत लग्नम्

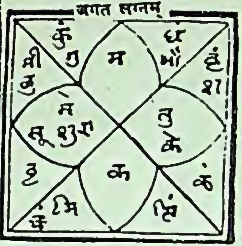

इस वर्ष शांति के देवता बृहस्पति ने आकाशीय मन्त्रीमण्डल में राज्य पद को अलंकृत किया है जिसके प्रभाव से हर मानव में "जीयो और जीने दो" की भावना जाग्रत होगी, प्राय: सभी छोटे बड़े देश विश्व शान्ति के निमित्त प्रयत्नशील रहेंगे, सार्वभौम शान्ति बनाये रखने के निमित्त संसार में विशाल सम्मेलन होंगे, जिनमें भारत जैसे शांति प्रिय देशों के अतिरिक्त प्राय: सभी युद्ध प्रिय अथवा शक्तिशाली देश भी सहयोग देने में विवश होंगे, मन्त्री पद को इस वर्ष सूर्य देवता ने संभाला है जिसको वर्ष लग्न में भौम पूर्ण दृष्टि से देख रहा है ज्योतिष फलित के अनुसार यह योग हानि कारक माना जाता है इस क्रूर योग के प्रभाव से हर एक राष्ट्र की राजनैतिक आर्थिक सामाजिक परिस्थितियां दिनों दिन बदलती रहेंगी, वृश्चिक राशि का शनि 27 ... अनुराधा नक्षत्र में ठहरेगा जो संसार के लिये अशुभफल

वर्ष प्रवेश लग्नम्

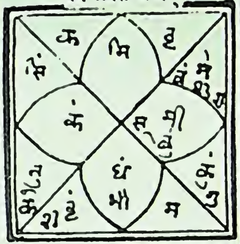

की चेतावनी, है, हर एक देश भिन्न भिन्न प्रकार की उलझनों में उलझा रहेगा, शनिदेवता किसी भी देश अथवा किसी भी राजनैतिक पार्टी को शांति का दम लेने नहीं देगा, अपितु हर एक देश नाशकारी नवीनतम अस्त्र-शस्त्रों का संचय करने की होड में रहेगा। स्थलीय जलीय दुर्घटनाओं भूकम्प, बाढ़ तूफान आदि दैवी उपद्रवों से संसार भयभीत होगा, शनि देवता पश्चिम दिशा के स्वामी माने जाते हैं इसलिये पश्चिमीय देश विशेषतया ईरान ईराक अरब देश अफगानिस्तान आदि का परस्पर टकराव बना रहेगा और किसी भी समय भयंकर रूप धारण करके असंख्य धन जन के नाश का कारण होगा, संसार में हर समय युद्ध के बादल मंडराते रहेंगे, परन्तु बृहस्पति के प्रभाव से किसी सार्व-भौम युद्ध का योग नहीं है।

भारत

भारतवर्ष एक विशाल देश है जहां भिन्न भिन्न धर्म भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के लोग रहते हैं इसलिए नित्य प्रति कोई न कोई राजनैतिक आर्थिक सामाजिक तबदीली अथवा सामाजिक झगड़ा देखने में आना कोई आश्चर्यजनक बात नहीं परन्तु इस वर्ष भारत की ग्रहचाल से विदित होता है भारत सरकार प्रायः सभी राजनैतिक आर्थिक सामाजिक साम्प्रदायिक झगड़ों तथा समस्याओं का धीरज से सामना करते हुए हर पहलू से देश को आगे बढ़ाने में सफल होगा, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, बृहस्पति जिस ने इस वर्ष राज पद को संभाला है भारत का प्रभावित ग्रह है, यह शुभ ग्रह भारत तथा विशेषतया भारत के प्रधान मन्त्री का अंग रक्षक बनकर रहेगा, उनके मान प्रतिष्ठा को बढ़ावा देने में सहायक होगा, बृहस्पति चूंकि बुद्धि के देवता माने गये है जिसके प्रभाव से देश के आन्तरिक तथा बाह्य झगड़ों को सुलझाने से प्रधान मन्त्री की सूझ बूझ से जनता प्रभावित होगी, भारत के प्रधान मन्त्री को गोचर से चौथे भाव में शनि चल रहा है, यह क्रूरग्रह उनको एक क्षण भी शान्ति का सांस लेने नही देगा, अपितु उनके लिए यह वर्ष अग्नि परीक्षा का होगा, देश में आतंकवाद अलगाववाद तोडफोड हडतालें सरकार के लिये अशान्ति का कारण होगी, देश में भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, चोरबजारी मूल्यों में वृद्धि की रोकथाम करने में सरकार बेबस रहेगी जिससे जनता में अशान्ति तथा बेचैनी होगी, परन्तु शनि का अधिक प्रभाव 27 नवम्बर 1986 तक ही रहेगा, 27 नवम्बर से सरकार की नीति में परिवर्तन आयेगा सरकार का हर एक कदम सख्त तथा सुदृढ़ होगा, जिसमें उग्रवाद तथा भारत विरोधी तत्वों का दबाने में सरकार बहुत हद तक सफल होगी, 27 नवम्बर 1986 तक पंजाब संकट का भी कोई स्थाई सन्तोषजनक समाधान नहीं होगा। वर्ष के मन्त्री पद को सूर्य देवता ने भी संभाला है जिसके फलस्वरूप भारत के मैत्री सम्बन्ध छोटी के देशों से सुदृढ़ होंगे भारत की विदेश नीति स्पष्ट रूप में संसार के सामने आयेगी, भारत की अखण्डता को स्थाई रखने के निमित्त महत्त्वपूर्ण कई आवश्यक कानून पास होंगे। **धन के स्वामी** बुध देवता होने से विदेशी मुद्रा कोष

में वृद्धि होगी, सिक्के के फैलाव का बहुत हद तक रोकथाम होगी, टैक्स चोरी तथा काले धन के रोक के लिए निश्चित कदम उठाया जायेगा, मजदूर, किसान, काश्तकार के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा बनाने के निमित्त नई-नई उद्योग योजनाओं को अमली रूप देने में सरकार जुटी रहेगी, बिजली, कोयला, पैट्रोलियम के पैदावार में आशा से अधिक वृद्धि होगी, आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने के निमित्त विदेशों से तिजारती समझौते होंगे, दस्तकारी तथा लघु उद्योगों को बढ़ाया जायेगा, **धान्य के स्वामी** बुध देवता होने से कृषि विभाग को विकसित किया जायेगा, खाद्यपदार्थों के वितरण के निमित्त डीपू सिस्टम अथवा सरकारी दुकानों का विस्तार किया जायेगा, सामूहिक रूप से यह वर्ष उपज के लिये रिकार्ड होगा।

पाकिस्तान

सरकार विरोधी पार्टियां जिया सरकार का तखता उलटने को प्रयत्नशील रहेंगे, पाकिस्तान की प्रभाव राशि कन्या होने से वर्तमान सरकार में किसी परिवर्तन का योग नहीं है, सरकार विरोधी तत्वों के विरुद्ध सख्त तथा सुदृढ़ कदम उठायेगी, नवम्बर 1986 ई० तक सरकार को भयंकर उलझनों का सामना करना होगा, किसी जाने माने नेता के अकस्मात मृत्यु का योग है, राजनैतिक क्षेत्र में उतार चढ़ाव होते रहेंगे, भारत के साथ सम्बन्ध बनते बिगड़ते रहेंगे।

काश्मीर

वर्ष का राजा बुधदेवता तथा मन्त्री सूर्यदेवता=बुध चूंकि अस्थिर स्वभाव वाला ग्रह है जो शुभग्रहों के साथ मिलकर शुभ बनता है, और अशुभग्रहों के साथ मिलकर अशुभ बनता है, इस रंग बदलने वाले ग्रह के प्रभाव से 13 अप्रेल 1986 ई तक मन्त्री मण्डल में परिवर्तन की सम्भावना है जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, 13 अप्रेल 1986 ई० से वर्तमान सरकार में किसी प्रकार की मौलिक तब्दीली नहीं आयेगी अपितु केन्द्रीय सरकार के सहयोग से काश्मीर सरकार आत्मविश्वास से अनुशासन की बागडोर संभालेगी जगत् लग्न वर्ष लग्न से बुध पर भौम की पूर्ण दृष्टि है जो मुख्यमन्त्री के शरीर के लिये अनिष्ठ है।

वर्ष का नाम प्रमाथी—होने से जनता में अनुशासन भंग की प्रवृत्ति बनी रहेगी जिसके फलस्वरूप सरकार विरोधी दल दबाये रखने में असफल रहेगी देश में दंगे फसाद तोड़फोड़, हुल्लड़बाजी तथा अग्नि दाह की दुर्घटनाओं से वातावरण अशान्त होगा।

वर्ष का वाहन झूला—होने से कभी कभी ऐसे राजनैतिक झटके आयेंगे जिससे वर्तमान सरकार डगमगाती नजर आयेगी परन्तु ऐसा होने पर भी परिवर्तन का कोई बुनियादी योग नहीं है।

धान्य के स्वामी, भौमदेवता (सूक्ष्म गणित से चन्द्रमा) सस्य के स्वामी बुधदेवता होने से सामूहिक रूप में धान्य की अधिकता रहेगी।

वर्षा की कमी होते हुये धान्य के लिए मौसमी हालात अनुकूल होंगे, धान्य की सिंचाई के लिए पानी सुलभ होगा, गेहूं मक्की, सरसों की

ज मध्यम होगी।

फलों के स्वामी शनि :—फलों की अधिकता होगी, बागात बेचने वाले व्यापारी लाभ में रहेंगे, परन्तु खरीदने वाले प्रायः हानि में रहेंगे, फलों के व्यापारियों को यह वर्ष अधिक दौड़-धूप का होगा, परन्तु अन्त में सामूहिक रूप से फलों के व्यापारियों को सन्तोषजनक लाभ नहीं होगा, अखरोट बादाम यानि खुश्क फलों की अधिकता होगी, प्रायः भाव डांवांडोल स्थिति में रहेंगे, इस वर्ष कभी फलों के भाव में अकस्मात् उछाला आयेगा, कभी आश्चर्यजनक कमी आयेगी, खुश्क मेवों के मूल्यों में प्रायः तेजी रहेगी।

धन के स्वामी बुध देवता :—सरकार तामीरी योजनाओं का निशाना पूरा करने में जुटी रहेगी, जिसके फलस्वरूप देश में धन का फैलाव होगा. मजदूर वर्ग कारीगरों के रहन सहन का स्तर ऊँचा होगा, पर्यटकों के यातायात में आशा से अधिक वृद्धि होगी जो काश्मीर के तिजारत को बढ़ावा देने में सहायक रहेगा, कालाधन बटोरने वालों के विरुद्ध जनता संगठित रूप से आवाज उठायेगी, जिसके फलस्वरूप चोरबाजारी घूस जैसे रोग का रोकथाम होगा।

मेघ के स्वामी सूर्य देवता :—होने से वर्ष भर प्रायः वर्षा की कमी होगी. श्रावण भाद्र में वर्षा की अधिकता होने पर भी किसी हानिप्रद बाढ़ का खतरा नहीं है। तेज हवाओं के चलने, बिजलियां तथा ओले आदि गिरने से हानि होगी। सर्दी के मौसम में बर्फ की कमी होगी सर्दी अधिक होगी।

हेली धूम केतु

(धूमकेतु) (पुच्छलतारा) (लं.टितारूक)

इस वर्ष 1986 के आरम्भ पर ही पुच्छल तारा देखने में आया जो अप्रैल के अन्त तक देखा जायेगा, 1910 ई० में यह तारा दिखाई दिया था, यह पुच्छल तारा लगभग 75, 76 वर्ष के पश्चात् दिखाई देता है. इसका नाम "हेली धूमकेतु" इसलिए पड़ा है 1682 ई० में "प्रोफेसर हेली" ने इस तारे के विषय में अन्वेषण किया था और बताया था यह तारा फिर से 76 वर्ष के पश्चात् दिखाई देगा, यह तारा प्रोफेसर हेली के कहने के अनुसार 1758 ई०, 1834 ई०, 1910 ई० और इस वर्ष 1986 ई० में फिर से दिखाई दिया, इस पुच्छल तारे का प्रकट होना अनिष्ट माना जाता है, चूंकि यह तारा 1986 ई० के आरम्भ से ही भारत में देखने में आया और अप्रैल के अन्त तक देखा जायेगा, वर्ष के आरम्भ पर ही इसका दिखाई देना भारत के लिये इस वर्ष अनिष्ठ की चेतावनी है, इस क्रूर तारे का प्रभाव भारत के जाने माने बयोवृद्ध नेताओं कारीगरों कलाकारों पर अधिक अनिष्ठ कारक है। (सम्पादक)

आमदनी खर्च का चित्र

मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी
2	11	2	11	14	2	11	2	14	8	8	14
5	11	11	4	2	11	11	5	8	11	11	9

आमदनी और खर्च का फल

आमदनी और खर्च के अंकों के जोड से एक कम करके आठ पर भाग दीजिये, यदि

(१) एक बाकी बचे तो यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में आदर मान से व्यतीत होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक तर्की की सम्भावना है यदि आप नोकरी के तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर अवश्य सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आप कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त बेखटके धन लगायें, आप के कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त यह वर्ष रिकार्ड होगा, कारोबार सम्बन्धित प्रत्येक काम में आप को लाभ रहेगा. विद्यार्थियों के लिये भी यह वर्ष अनुकूल है आप प्रयत्न कीजिये आशा से अधिक सफलता होगी ।

(२) दो बाकी बचे—जिन तर्की की आशाओं को लेकर आप बहुत समय से प्रतीक्षा कर रहे हैं प्रायः सभी आशायें पूर्ण होंगी हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित रूप से होगी, सफलता के साथ साथ आदरमान की दृष्टि

आप के सहायक हैं। यदि आप व्योपारी हैं आपका व्योपार यदि खाद्य पदार्थों से सम्बन्धित है तो उत्तम लाभ की आशा रखें. यदि आप कपडे से सम्बन्धित काम करते हैं तो लाभ की आशा न रखें, किरयाना लोहा मिशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्योपारी लाभ में रहेंगे, यदि आप का काम फलों बागों से सम्बन्धित है तो दौडधूप अधिक परन्तु अन्त में जाकर आपने खसारा में ही रहना होगा। नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या क्यों न हो जरा सी सावधानी से कदम उठाने पर हर समस्या का समाधान होगा, हर पहलू से उत्तम समय होने पर भी शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उपाय रूप में किसी भी मादक द्रव्य का सेवन न करें रविवार को निश्चित रूप से वैष्णव रहें

(३) तीन बाकी बचे–तो यह वर्ष संघर्ष का होगा, कोई

नहीं होगा, घरेलू परेशानियां भी आप को घेरी रखेंगी केवल परिवार में सन्तान पक्ष से शान्ति रहेगी घर में कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा जिस में अधिक से अधिक धनराशि का व्यय होगा शरीर के विषय में सावधान रहिये चोट आदि लगने का भी अन्देशा है. किसी रिश्तेदार मित्र अथवा किसी विश्वासपात्र से धोखा लगने का योग है, उपाय के रूप में 'हनुमान चालीसा" अथवा बहुरूपगर्भ का पाठ नियम से करें किसी भी दिन नागा न करें. यदि किसी दिन पाठ न कर सकोगे तो दूसरे दिन भी उस दिन का पाठ करें, यदि आप विद्यार्थी हैं आप को इस वर्ष सावधान रहना चाहिये रात दिन परिश्रम करने पर ही सफलता की आशा रखें, वह सफलता भी इच्छानुसार नहीं होगी, यदि आप इस वर्ष सफलता चाहते हैं तो नियम से घर के किसी वृद्ध सदस्य अथवा माता पिता के चरणों को प्रातः प्रणाम करके नित्य उन से आशीर्वाद प्राप्त करें

(४) यदि चार बाकी बचे तो यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़ धूप में ही गुजरेगा हर एक कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, यदि आप नौकरी पेशा हैं तो मर्जी के उलट स्थान परिवर्तन होगा, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप को घेरी रखेंगी, आमदनी इस वर्ष ज्यों की त्यों बनी रहेगी परन्तु खर्च के नये नये रास्ते निकल आयेंगे यदि आप व्योपारी हैं, तो लेनदेन के विषय में सावधान रहें अचानक धोखा लगने का अन्देशा है, लेनदेन अथवा धन के सम्बन्ध में किसी गैर का विश्वास न कीजिये बाद में पछताना पडेगा, जाईदाद सम्बन्धित कोई झगडा खड़ा होने का अन्देशा है. जाईदाद सम्बन्धित किसी झगडे का आरम्भ दिख पडते ही आपसी सुलह करने में दिलचस्पी रखें नही अन्त में हानि उठानी पडेगी । यदि आप विद्यार्थी हैं इस वर्ष पठनपाठन के विषय में सावधान रहें जरा सी ढील करने पर पास होने की आशा न रखें, उपाय के रूप में नित्य प्रातः काल उठ कर घर के किसी बुजरर्ग विशेषतया माता पिता के चरणों का स्पर्श करके आशीर्वाद प्राप्त करें निश्चय रखिये वह आशीर्वाद रामबाण का काम करेगा ।

५ शेष बचे तो वर्ष भर मानसिक अशान्ति बनी रहेगी, कोई भी कार्य विना रुकावट के सफल नहीं होगा, वर्षभर घरेलू परेशानियों से छुटकारा नहीं मिलेगा. धन की दशा भी डांवाँडोल रहेगी, कभी धन आवश्यकता अनुसार मिलता रहेगा कभी तंगदस्ती से भी दुचार होगा, कभी अचानक लाभ की भी सम्भावना है. उस लाभ की आशा में अधिक विश्वास न रखें, उपाय के रूप घर में कोई महोत्सव या मकान आदि बनाने का परोग्राम बनायें ऐसे शुभकामों में लगे रहना आपके लिये शान्ति का कारण बनेगा, यदि यात्रा का परोग्राम बनें अवश्य-बनायें घर की अपेक्षा आप यात्रा में सुखी रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग को चेतावनी है कि आप पढ़ाई में आलस्य न करें परिश्रम करने पर आप अच्छी पुजिशन में सफल होंगे ।

६ शेष बचना आपके वर्ष भर की शान्ति की सूचना है, आपको किसी महापुरुष से संयोग होगा जो आप की मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, कोई भी कार्य जो आप हाथ में लेंगे उस में अवश्य सफलता होगी, आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, मान की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, सामाजिक तथा धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेंगी, नौकरी पेशा वर्ग के लिये यद्यपि यह वर्ष दौड़धूप तथा संघर्ष का ही होगा परान्तु मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, ब्योपारी वर्ग भी लाभ में रहेगा, विद्यार्थियों के लिये, यह वर्ष सफलता का है, धन लाभ के साथ साथ खर्च का योग भी बलवान है, प्राय: खर्च शुभकामों में ही होगा घर में विवाह आदि महोत्सव रचाने का परोग्राम बनेगा ।

7 शेष बचें :—तो इस वर्ष आपका भाग्योदय होगा, आप केवल प्रोग्राम ही न बनायें अपितु हर प्रोग्राम को अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये, इस वर्ष ग्रह आपके अनुकूल हैं आपके कठिन से कठिन काम को सफल बनाने में सहायक होंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा, यदि आप मकान या जायदाद बनाने का विचार रखते हैं तो इस वर्ष इस शुभ अवसर को हाथ से न जाने दें यदि आप व्यापार करते हैं, या नौकरी अथवा विद्यार्थी हैं आप का हर काम जरा सा ध्यान देने से अवश्य सफल होगा, सम्भव है आपको यात्रा का प्रोग्राम बने इसमें भी सन्तोषजनक सफलता होगी, आपका स्वास्थ्य भी इस वर्ष ठीक रहेगा, धन लाभ के साथ-साथ खर्च का भी योग है।

८, यदि शेष आठ बचे, आठ का शेष रहना वर्ष भर को संघर्ष तथा दौड़ धूप का सूचक है, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानियां आप का पीछा छोड़ेंगी नहीं, यदि आप नौकरी करते हैं, तो दफतर में प्राय: मन अशान्त रहेगा' सम्बन्धित अफसरों से अनबन रहेगी, नौकरी सम्बन्धित यदि तर्की की कोई आशा है, परन्तु हर एक कार्य ज्यों का त्यों लटकता रहेगा, यदि आप व्योपार करते हैं परिश्रम बहुत करना होगा परन्तु पले कुछ नहो पडेगा, यदि आप विद्यार्थी हैं परिश्रम करने पर भी सन्तोषजनक सफलता नही होगी; यद्यपि यह वर्ष हर पहलू से ढीला ही रहेगा ऐसा होने पर भी धार्मिक प्रवृत्ति, सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेग, उपाय के रूप में आपको हर

हिन्दी सुन्दर छपाई के लिए
विजयेश्वर प्रिंटिग प्रेस तालाब
तिलू (जम्मू) को याद रखिये।

सप्तर्षि सम्वत् ५०६२ । चैत्र शुक्ल पक्ष । मीन में सूर्य बुध । धनु में भौम ।

कुम्भ में बृहस्पति । वृश्चिक में शनि । मेष में शुक्र राहु । तुला में केतु 1986 ई० ।

	राधं	हिज	चैत्र	अप्रे	वार	नक्षत्र	घड़ी पल		घड़ी पल	वसन्त ऋतु । उत्तरायण । 10 अप्रैल से 24 अप्रैल तक ।
14	4	29	28	10	गुरु	अश्वि प्र	9 20	प्र. दि	17 29	नवरात्र आरम्भ, बृहस्पतिमास । चन्द्र दर्शन मानसम्
	1	1	29	11	शुक्र	भर प्र	15 25	द्वि दि	21 57	9-50 रात मीन में बुध । मुद्गरम् ।
13	59	2	30	12	शनि	कृति प्र	21 52	तृ दि	26 55	7-42 दिन वृष में चन्द्र । ध्वज: ।
	56	3	वैशा	13	रवि	रोहि प्र	27 52	च दि	32 5	3-13 रात मेष में सूर्य मुहूर्त 30 किनारी प्रजापत्य:
	54	4	2	14	सोम	रोहि दि	0 19	पं प्र	4 45	वैशाखी, संक्रान्ति व्रत, 7-24 रात मिथुन में चन्द्र । प्रवर्ध:
	51	5	3	15	भौम	मृग दि	6 18	ष प्र	8 52	कुमार षष्टीव्रत । क्षय: ।
	48	6	4	16	बुध	आर्द्रा दि	11 29	स प्र	12 ·4	5-55 रात कर्क में चन्द्र । गज: ।
	46	7	5	27	गुरु	पुन दि	15 42	अ प्र	14 12	दुर्गाष्टमी । सिद्ध:
	43	8	6	18	शुक्र	तिष्या दि	18 46	न प्र	14 56	रामनवमी, उमाजयन्ती शारी आंगन यात्रा, शिवाभगवती जयंत उन्मूलम्
	41	·9	7	19	शनि	अश्ले दि	20 35	द प्र	14 26	2-14 दिन सिंह में चन्द्र । 8-5 प्रात: से गंडांत 8-19 रात तक मानसम्
	38	10	8	20	रवि	मघा दि	21 10	ए प्र	12 40	3-42 रात वृष में शुक्र । मुदगरम्
	36	11	9	21	सोम	पूफा दि	20 32	द्वा प्र	9 42	8-2 रात कन्या में चन्द्र । ध्वज: .
	34	12	10	22	भौम	उफा दि	18 53	त्रो प्र	5 48	महावीर जयंती, प्रजापत्य :
	32	13	11	23	बुध	हस्त दि	16 26	चं प्र	1 7	11-53 रात तुला में चन्द्र । आनन्द:
	30	14	12	24	गुरू	चित्रा दि	13 7	पू दि	28 49	चन्द्र ग्रहण, हनुमान जयंती चर:

श्राद्ध प्रतिपद से चतुर्थी तक पहले दिन, पंचमी से पूर्णिमा तक अपने दिन । **मध्याह्न** :—प्रतिपद पहले दिन, द्वितीया से पूर्णिमा तक अपने दिन,

यात्रा मुहूर्त :—10 अप्रैल पूर्व पश्चिम, 14 अप्रैल पूर्व बिना, 15 अप्रैल पूर्व दक्षिण 8-34 प्रात: तक । 17 अप्रैल पूर्व पश्चिम । 18 अप्रै० पश्चिम बिना 1-3 दिन तक 21 पूर्व बिना, 22 पूर्व दक्षिण, 23 उत्तर बिना यात्रा ।

ईसवी सं० 1986। वैशाख कृष्णपक्ष। मेष में सूर्य, राहु। धनु में भौम।

मीन में बुध। कुम्भ में बृहस्पति। वृष में शुक्र। वृश्चिक में शनि। तुला में केतु। ((ग्रहसंचार बजे और मिन्टों में)

	राष्ट्र	हिज	वैशा	अप्रे	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	वसन्त ऋतु। उत्तरायण। 25 अप्रैल से 8 मई तक।
	२८	१५	१३	25	शुक्र	स्वा दि	६ ३७	प्र दि	२३ १०	१-१० रात वृश्चिक में चन्द्र। मुसलम्।
१३	२६	१६	१४	26	शनि	वि दि	५ ४०	द्वि दि	१७ १४	शूलम्। ● चन्द्र:। ११-५७ रात अगस्त्य अस्त। श्री पंचमी, अलापक:।
	२३	१७	१५	27	रवि	अनू दि	१ ३६	तृ दि	११ १८	११-१५ रात से गण्डान्त। संकट चतुर्थी। मृत्यु:।
	२१	१८	१६	28	सोम	मूल प्र	२० ४०	च दि	५ २०	४-४३ प्रातः धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ। १०-३१ प्रातः तक गण्डान्त ●
	१६	१६	१७	29	भौम	पूषा प्र	१७ २०	प प्र	२१ २५	ऋ पंचमी श्राद्ध। स्कन्द षष्ठी। ३-२५ प्रातः तक मूल। मैत्रम्।
	१७	२०	१८	30	बुध	उषा प्र	१४ ४१	स प्र	१७ ०	७-५१ दिन मकर में चन्द्र। वज्रम्।
	१५	२१	१९	मई	गुरु	श्रव प्र	१२ ५७	अ प्र	१३ १४	६-१५ शा मेष में बुध। छत्र:।
	१३	२२	२०	2	शुक्र	धनि प्र	१२ १३	न प्र	१० ४८	१२-१४ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक प्रारम्भ। बुध अस्त। प्रजापत्य:।
	११	२३	२१	3	शनि	शत प्र	१२ ३६	द प्र	६ २७	आनन्द:।
	६	२४	२२	4	रवि	पूभा प्र	१४ २४	ए प्र	६ २७	६-४८ शा मीन में चन्द्र। वरूथिनी एकादशी। चर:।
	६	२५	२३	5	सोम	उभा प्र	१७ ३२	द्वा प्र	१० ३३	मुसलम् स्वामी लक्ष्मण जी जन्मोत्सव (निशात)
	४	२६	२४	6	भौम	रेव प्र	२१ ३०	त्रौ प्र	१२ ५४	६-२३ रात से गण्डान्त। ३-५२ मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। शूलम्।
	२	२७	२५	7	बुध	अ प्र	२६ ४	चं प्र	१६ ३४	१०-२० दिन तक गण्डान्त। १-५५ रात चन्द्रास्त। मृत्यु:।
१३	०	२८	२६	8	गुरु	भ दि	० ३२	अं प्र	२० ४६	वल्लभाचार्य जयंती। मानसम्।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से चतुर्थी तक पूर्व दिन। षष्ठी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद् द्वितीया अपने दिन। तृतीया चतुर्थी पूर्व दिन। षष्ठी से अमावसी तक अपने दिन।

यात्रा मुहूर्त :- २६ अप्रेल पूर्व बिना यात्रा ८-८ प्रातः से। २७ अप्रेल पूर्व उ० यात्रा। २८ पू० बिना यात्रा। २६ पू० दक्षिण। ३० अप्रेल उ० बिना यात्रा। १ मई पू० पश्चिम यात्रा। २, पू० उ० यात्रा। ३, प उ० यात्रा पश्चिम उ०। ४, पू० उ०। ५, प० उ०। ६ मई पूर्व उत्तर यात्रा। ७ मई उत्तर बिना यात्रा।

सप्तर्षि सं० ५०६२। वैशाख शुक्लपक्ष। मेष में सूर्य, बुध, राहु। धनु में भौम। कुम्भ में बृहस्पति। वृष में शुक्र। वृश्चिक में शनि। तुला में केतु।

	राघं	हिज	वैशा	मई	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घडी	पल	ग्रीष्म ऋतु। उत्तरायण। 9 मई से 23 मई तक।
१२	५८	२६	२७	9	शुक्र	भर	दि	६	३०	प्र	प्र	२५	४०	२-५५ दिन वृष में चन्द्र। मुद्गरम्। गंगा जयती। मृत्युः।
	५६	३०	२८	10	शनि	कृत्ति	दि	१२	५३	द्वि	प्र	२५	५२	दिन प्रविक। शनि मास। चन्द्रदर्शन। ध्वजः। प्रजापत्यः।
	५४	रम.	२९	11	रवि	रोहि	दि	९	२१	द्वि	दि	४	४२	२-४० रात मिथुन में चन्द्र। २-१५ दिन कृत्तिका में सूर्य। परशुराम जयंती
	५२	२	३०	12	सोम	मृग	दि	२५	२८	तृ	दि	९	३०	अक्षय तृतीया। त्रेतायुग जयंती। अछिन तृतीया कूठायार यात्रा। आनन्दः।
	४९	३	३१	13	भौम	आर्द्रा	दि	३०	५४	च	दि	१३	३६	मुपलम्। श्री शंकराचार्य जयंती। कुमारषष्ठी व्रत। मातंगः
	४७	४	ज्ये.	14	बुध	पुन	प्र	१	५	पं	दि	१६	४३	१-२२ रात वृष में सूर्य मुहूर्त ३० कितारी। कर्क में चन्द्र १-२२ दिन
	४५	५	२	15	गुरु	ति	प्र	४	१२	ष	दि	१८	५०	११-२९ रात मिथुन में शुक्र। संक्रान्ति व्रत। शूलम्।
	४३	६	३	16	शुक्र	श्ले.	प्र	६	१५	स	दि	१९	४०	९-५३ रात सिंह में चन्द्र। ३-४१ दिन से गण्डान्त २-१५ रात तक। मृत्युः।
	४१	७	४	17	शनि	मघा	प्र	७	१	अ	दि	१९	११	९-५२ रात वृष में बुध। काम्यः।
	३९	८	५	18	रवि	पूफा	प्र	७	१९	न	दि	१७	२८	३-४६ रात कन्या में चन्द्र। छत्रम।
	३७	९	६	19	सोम	उफा	प्र	५	०	द	दि	१४	३९	श्रीवत्सः। महात्मा बुध जयंती। मातंगः।
	३५	१०	७	20	भौम	हस्त	प्र	२	१२	ए	दि	१०	४९	नारद एकादशी कुमटवल यात्रा। सौम्यः।
	३४	११	८	21	बुध	चि	दि	३४	०	द्वा	दि	६	१०	७-५७ प्रातः तुला में चन्द्र। कालदण्डः।
१२	३३	१२	९	22	गुरु	स्वा	दि	३०	२५	त्रो	दि	०	५५	ध्वजः। गणेश चतुर्दशी, गणपतयार यात्रा। सिथरः।
	३२	१३	१०	23	शुक्र	वि	दि	२६	५०	पू	प्र	१५	१	१०-१८ दिन वृश्चिक में चन्द्र। ९-४८ दिन मकर में भौम।

श्राद्धः- प्रतिपद् द्वितीया अपने दिन। तृतीया से त्रयोदशी तक पूर्व दिन। पूर्णिमा अपने दिन। पूर्णिमा अपने दिन।

मध्याह्नः- प्रतिपद् द्वितीया अपने दिन। तृतीया से षष्ठी तक पूर्व दिन। सप्तमी से नवमी तक अपने दिन दशमी से त्रयोदशी तक पहले दिन

यात्रा मुहूर्त :- १० मई पूर्व बिना यात्रा १०-५० दिन से। ११ मई पू० उत्तर। १२ मई पू० बिना यात्रा ३-५० दिन तक। १५ मई पूर्व पश्चिम। १८ मई पू० उ० यात्रा। १९ मई पूर्व बिना यात्रा। २० मई पूर्व दक्षिण। २३ मई पश्चिम बिना यात्रा ४-१६ दिन से

शाका सं० १९०८। ज्येष्ठ कृष्णपक्ष। वृष में सूर्य, बुध। मकर में भौम।

कुम्भ में बृहस्पति। मिथुन में शुक्र। वृश्चिक में शनि। तुला में केतु। मेष में राहु।

राघं	हि	ज्ये	मई	वार	नक्षत्र	घडी पल	तिथि	घडी पल	ग्रीष्म ऋतु। उत्तरायण। 24 मई से 7 जून तक।
३१	१४	११	24	शनि	अनू दि	२२ ५२	प्र प्र	८ ५	नारद जयंती। अमृतम। ६-३८ शां तक। कृत्तिका में सूर्य समाप्त काण्ड:
१२ ३०	१५	१२	25	रवि	ज्ये दि	१८ ५०	द्वि प्र	२ ६	१-२ दिन धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ। ७-१६ प्रातः से गण्डान्त।
२९	१६	१३	26	सोम	मूला दि	१५ ४	तृ दि	३१ २७	११-३० दिन तक मूल संकट चतुर्थी। प्रलापक:।
२९	१७	१४	27	भौम	पूषा दि	११ ४५	च दि	२६ १९	३-५३ दिन मकर में चन्द्र। मैत्रम्।
२८	१८	१५	28	बुध	उषा दि	९ १	पं दि	२१ ५८	वज्रम्।
२७	१९	१६	29	गुरु	श्रव दि	७ ६	ष दि	१८ १४	८-५ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ। ध्वज:।
२६	२०	१७	30	शुक्र	धनि दि	६ १९	स दि	१५ ४१	प्रजापत्य:।
२५	२१	१८	31	शनि	शत दि	६ २६	अ दि	१४ १४	२-२५ रात मीन में चन्द्र। आनन्द:।
२४	२२	१९	जून	रवि	पूभा दि	७ ५२	न दि	१४ ५	चर:। [illegible] और पंचक समाप्त। भद्रकाली जयंती। शूलम्।
२३	२३	२०	2	सोम	उभा दि	१० ३६	द दि	१५ १०	७-३ प्रातः मिथुन में बुध। मुसलम्।
२३	२४	२१	3	भौम	रेव दि	१४ २७	ए दि	१७ २८	४-४६ प्रातः से गण्डान्त ५-३८ शां तक। १२-२४ दिन मेष में चन्द्र [illegible]
२२	२५	२२	4	बुध	अ दि	१६ २२	द्वा दि	२० ५०	बुध उदय। मृत्यु:।
२१	२६	२३	5	गुरु	भर दि	२५ ८	त्रयो दि	२५ ५	१०-६ रात वृष में चन्द्र। काम्य:।
२०	२७	२४	6	शुक्र	कृति दि	३१ २८	चं दि	२९ ५२	५-२४ दिन चन्द्रास्त। छत्रम्।
१९	२८	२५	7	शनि	रोहि प्र	२ ३५	अ दि	३४ ५१	वट सावित्री, सुम्बल यात्रा। हरीश्वर यात्रा(खोनमुह)। श्रीवत्स:।

श्राद्ध :- प्रतिपद द्वितीया तृतीया अपने दिन। चतुर्थी से अमावसी तक पहले दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद से षष्ठी तक अपने दिन। सप्तमी से एकादशी तक पहले दिन। द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन।

यात्रा मुहूर्त :- २४ मई पू० विना यात्रा। २५, पू० उ०। २६ मई पू० विना। २७ मई पू० दक्षिण। २८ उत्तर विना। २९ मई उत्तर दक्षिण यात्रा। ३० मई पूर्व उत्तर। ३१ मई उ० पश्चिम। १ जून पूर्व उत्तर। २ जून उ० पश्चिम। ३ जून पूर्व यात्रा। ४ जून उत्तर बिना यात्रा १-१२ दिन तक।

सप्तर्षि सं० ५०९२ । ज्येष्ठ शुक्लपक्ष । वृष में सूर्य । मकर में भौम ।

मिथुन में बुध शुक्र। कुम्भ में बृहस्पति वृश्चिक में शनि मेष में राहु। तुला में केतु।

ग्रीष्म ऋतु। उत्तरायण। 8 जून से 22 जून तक।

	गाघं	हिज	जंय	जून	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	
१२	१८	२६	२६	8	रवि	मृग	प्र	८	४७	प्र	प्र	४	६	६-५१ दिन मिथुन में चन्द्र। गोध्यः। ● क्षीरभवानी यात्रा। अधम्
	१७	३०	२७	9	सोम	आर्द्रा	प्र	१४	१६	द्वि	प्र	८	१५	चन्द्र मास। चन्द्रदर्शन। कालदण्डः।
	१७	शाब	२८	10	सोम	पुन	प्र	१६	०	तृ	प्र	११	२५	८-४६ रात कर्क में चन्द्र। ७-५३ प्रातः कर्क में शुक्र। स्थिरः।
	१६	२	२६	11	बुध	ति	प्र	२२	३२	च	प्र	१३	३१	मातंगः।
	१५	३	३०	12	गुरु	अश्.	प्र	२४	३०	पं	प्र	१४	१५	११-२३ रात से गण्डान्त। अमृतम। ★ मृत्युः।
	१४	४	३१	13	शुक्र	अश्.	दि	०	२३	ष	प्र	१३	४८	५-२३ प्रातः सिंह में चन्द्र। ११-४० दिन तक गण्डान्त। कुमारषष्ठी व्रत ★
	१३	५	३२	14	शनि	मघा	दि	१	२६	स	प्र	१२	४	काम्यः। मासान्त। ● त्रिनागी संक्रान्ति व्रत। ज्येष्ठाष्टमी। ●
	१२	६	हार	15	रवि	पूफा	दि	१	२२	अ	प्र	६	८	११-५१ दिन कन्या में चन्द्र। ११-१६ दिन मिथुन में सूर्य मुहूर्त ४५ ●
	११	७	२	16	सोम	उफा	दि	०	१०	न	प्र	५	१५	धीवत्सः।
	११	८	३	17	सोम	चि	प्र	१६	३०	द	प्र	०	३४	४-० दिन तुला में चन्द्र। ध्वजः।
	१०	६	४	18	बुध	स्वा	प्र	१५	२	ए	दि	३०	५५	निर्जला एकादशी। धौम्रः।
	६	१०	५	19	गुरु	वि	प्र	१२	४	द्वा	दि	२५	११	६-५० दिन वृश्चिक में चन्द्र। प्रवर्धः। कर्क में बुध। गजः।
	८	११	६	20	शुक्र	अनू	प्र	७	१४	त्रौ	दि	१६	६	क्षयः २-४३ रात तक। ८-४५ दिन से दक्षिणायन। १०-३३ रात
	८	१२	७	21	शनि	ज्ये	प्र	३	४८	चं	दि	१३	०	६-१० रात धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ। ३-३५ दिन से गण्डान्त।
	७	१३	८	22	रवि	मूला	प्र	३५	४२	पू	दि	६	५८	११-५० दिन आर्द्रा में सूर्य आर्द्र आरम्भ। सिद्धः।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से दशमी तक अपने दिन। एकादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से त्रयोदशी तक अपने दिन। चतुर्दशी से पूर्णिमा तक पूर्व दिन।

यात्रा मुहूर्त :- ८ जून पूर्व उत्तर यात्रा। १० जून पू० दक्षिण। ११. उ० विना यात्रा। १६. पू० विना। २० जून पश्चिम विना यात्रा। २१ जून पूर्व विना यात्रा। २२ जून पूर्व उत्तर यात्रा।

शाका सं० १९०८ । आषाढ कृष्णपक्ष । मिथुन में सूर्य । मकर में भौम ।

कर्क में बुध, शुक्र । वृश्चिक में शनि । मेष में राहु । तुला में केतु । ग्रीष्म ऋतु । दक्षिणायण । 23 जून से 7 जुलाई तक ।

राघं	हि	हार	जून	वार	नक्षत्र		घडी	पल	तिथि		घडी	पल	(ग्रहसंचार बजे और मिन्टों में)
८	१४	९	23	सोम	पूषा	दि	३२	४	प्र	दि	१	१२	११-५४ रात मकर में चन्द्र । [illegible] । श्री गुरुहरगोविन्द जयती । उन्मूलप
९	१५	१०	24	भौम	उषा	दि	२६	२१	तृ	प्र	१५	४१	मानसम् ।
१०	१६	११	25	बुध	श्रव	दि	२७	१४	च	प्र	११	५८	३-५६ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । संकट चतुर्थी । छत्रम् ।
११	१७	१२	26	गुरु	धनि	दि	२६	३	पं	प्र	६	१६	श्रीवत्स: ।
१२	१८	१३	27	शुक्र	शत	दि	२५	५७	ष	प्र	७	४५	सौम्य: ।
१३	१९	१४	28	शनि	पूभा	दि	२७	५	स	प्र	७	२५	१०-३ दिन मीन में चन्द्र । कालदण्ड: । ● पंचक समाप्त । मातंग: ।
१४	२०	१५	29	रवि	उभा	दि	२९	२८	अ	प्र	८	२४	स्थिर: ।
१५	२१	१६	30	सोम	रेव	दि	३३	२	न	प्र	१०	३६	१०-१३ दिन से गण्डान्त १-० रात तक । ६-३७ शां मेष में चन्द्र और ●
१६	२२	१७	जुला	भौम	अ	प्र	२	१४	द	प्र	१३	५६	अमृत ।
१७	२३	१८	2	बुध	भर	प्र	७	५०	ए	प्र	१८	३	५-१६ रात वृष में चन्द्र । योगिनी एकादशी । काण्ड: ।
१८	२४	१९	3	गुरु	कृति	प्र	१५	४२	द्वा	प्र	२२	५०	प्रलापक: ।
१९	२५	२०	4	शुक्र	रोहि	प्र	२०	३३	त्रो	प्र	२४	३८	दिन प्रांशक । मैत्र ।
२०	२६	२१	5	शनि	मृग	प्र	२४	४०	त्रो	दि	३	१०	५-४ शां मिथुन में चन्द्र । वज्रम् ।
२१	२७	२२	6	रवि	मृग	दि	२	५१	चं	दि	७	५१	७-३२ दिन सिंह में शुक्र । सौम्य: ।
२२	२८	२३	7	सोम	आर्द्रा	दि	७	५२	अ	दि	११	५४	४-७ रात कर्क में चन्द्र । कालदण्ड: । सोमामावसी

श्राद्ध :- प्रतिपद् पहले दिन । तृतीया से त्रयोदशी तक अपने दिन । चतुर्दशी अमावसी पहले दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् पूर्व दिन । तृतीया से त्रयोदशी तक अपने दिन । चतुर्दशी अमावसी पहले दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- २३ जून पू० विना यात्रा । २४ जून पूर्व दक्षिण । २५ उत्तर विना । २६, पूर्व पश्चिम । २७, ३० पूर्व यात्रा । २८ जून उत्तर पश्चिम २९, ३० पूर्व यात्रा । ३० जून उत्तर पश्चिम । १ जुलाई पू० दक्षिण । ४, पश्चिम विना । ५, पू० विना । ६ जुलाई पूर्व उत्तर यात्रा ।

सप्तर्षि सं० ५०६२ । आषाढ शुक्लपक्ष । मिथुन में सूर्य । मकर में भौम ।

कर्क में बुध । कुम्भ में बृहस्पति । सिंह में शुक्र । वृश्चिक में शनि । मेष में राहु । तुला में केतु ।

	राष्ट्रं	हिज	हार	जुला	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	ग्रीष्म ऋतु । दक्षिणायण । 8 जुलाई से 21 जुलाई तक ।
१२	२२	२९	२४	8	भौम	पुन	दि	१२	४४	प्र	दि	१५	८	चन्द्रदर्शन । स्थिर: ।
	२३	ज़ीक़	२५	9	बुध	ति	दि	१६	३३	द्वि	दि	१७	१२	बुध यास । बुध अस्त । मातंग: ।
	२४	२	२६	10	गुरु	अश.	दि	१९	११	तृ	दि	१८	६	१-८ दिन सिंह में चन्द्र । ६-५६ प्रात: से गण्डान्त ७-२० शा तक । अमृतम
	२५	३	२७	11	शुक्र	मघा	दि	२०	३१	च	दि	१९	४२	काण्ड: । ● रात कर्क में सूर्य मुहूर्त ४५ सामान्य । धौम्य: ।
	२६	४	२८	12	शनि	पूफा	दि	२०	४०	पं	दि	१६	१	७-४२ शा कन्या में चन्द्र । कुमारषष्ठी व्रत । प्रजापक: ।
	२७	५	२९	13	रवि	उफा	दि	१९	४०	ष	दि	१३	१४	१-२१ दिन से विजया सप्तमी मार्तण्ड तीर्थ यात्रा । मैत्रम् ।
	२७	६	३०	14	सोम	हस्त	दि	१७	४४	स	दि	९	२९	१०-५ रात तुला में चन्द्र । हार सप्तमी । वज्रम् ।
	२८	७	३१	15	भौम	चि	दि	१५	०	अ	दि	४	५३	हार अष्टमी । ध्वांक्ष: । + मुसलम् ।
	२९	८	श्राव	16	बुध	स्वा	दि	११	५३	न	दि	०	२२	हार नवमी । शारिका जयन्ती । ३-० रात वृश्चिक में चन्द्र । २-२५ [illegible]
	३०	९	२	17	गुरु	वि	दि	७	४७	ए	प्र	१२	४३	संक्रान्ति व्रत । देवशयनी एकादशी । प्रवर्ष ▷ हरिस्वाप । क्षय: ।
	३१	१०	३	18	शुक्र	अनू	दि	३	४१	द्वा	प्र	९	४२	११-४४ रात से गण्डान्त । ८-४१ रात मीन में बृहस्पति धनु में वक्री भौम▽
	३२	११	४	19	शनि	मूला	प्र	२०	४०	त्रौ	प्र	०	३९	५-२० रात धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ । ३-४५ रात तक मूल+
	३३	१२	५	20	रवि	पूषा	प्र	१९	५	च	दि	२९	५२	ज्वाला चतुर्दशी, शिव यात्रा । शूलम् ।
	३३	१३	६	21	सोम	उषा	प्र	१४	०	पू	दि	२४	३६	८-१ प्रात: मकर में चन्द्र । श्यामरजा । मृत्यु: हरी का पहला स्नान मार्तण्डतीर्थ

श्राद्ध :- प्रतिपद से नवमी तक पहले दिन । एकादशी से चतुर्दशी तक अपने दिन । पूर्णिमा पूर्व दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद द्वितीया पहले दिन । तृतीया चतुर्थी अपने दिन । पंचमी से नवमी तक पहले दिन । एकादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन

यात्रा मुहूर्त :- ८ जुलाई पूर्व दक्षिण यात्रा । ९, उत्तर बिना १२-४दिन तक । ११, पश्चिम बिना । १२, पू० बिना । १३, पू० उत्तर । १४; पूर्व बिना । १७ पूर्व पश्चिम । १८, पश्चिम बिना । १९, पू० बिना । २० पूर्व उत्तर । २१, पूर्व बिना यात्रा ।

ई० 1986। श्रावण कृष्णपक्ष। कर्क में सूर्य, बुध। धनु में वक्री भौम।

मीन में बृहस्पति। सिंह में शुक्र। वृश्चिक में शनि। मेष में राहु। तुला में केतु।

राधं	हि	श्राव	जुला	वार	नक्षत्र		घडी	पल	तिथि		घडी	पल	वर्षा ऋतु। दक्षिणायण। २२ जुलाई से 5 अगस्त तक।
३४	१४	७	22	मोम	श्रव	प्र	११	४४	प्र	दि	२०	०	मलापक:।
३६	१५	८	23	बुध	धनि	प्र	१०	२२	द्वि	दि	१६	११	१-४८ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक प्रारम्भ। मैत्रम्।
३८	१६	९	24	गुरु	शत	प्र	१०	३	तृ	दि	१३	२२	संकट चतुर्थी। वज्रम्।
४०	१७	१०	25	शुक्र	पूभा	प्र	१०	५५	च	दि	११	४०	५-४२ शां मीन में चन्द्र। बुध उदय। ध्वांक्ष।
४२	१८	११	26	शनि	उभा	प्र	१३	१	प	दि	११	१३	नाग पंचमी पांडयनाग यात्रा, पिस्सू धोम्य:।
४५	१९	१२	27	रवि	रेव	प्र	१६	३०	ष	दि	१२	१०	२-२ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त। ७-४१शां से गण्डान्त प्रवध:
४७	२०	१३	28	सोम	अ	प्र	२०	५१	स	दि	१४	८	८-२६दिन तक गण्डान्त। क्षय:।
४९	२१	१४	29	मोम	भर	प्र	२५	३८	अ	दि	१७	२०	गज:।
५१	२२	१५	30	बुध	भर	दि	०	५१	न	दि	२१	२१	१२-३४ दिन वृष में चन्द्र। काण्ड:।
५३	२३	१६	31	गुरु	कृति	दि	६	५५	द	दि	२६	३	मलापक:। कमला एकादशी। त्राल यात्रा। मंत्रम्।
५५	२४	१७	अग.	शुक्र	रोहि	दि	१३	१७	ए	दि	३१	०	१०-३६ दिन मिथुन में चन्द्र। ७-१६ प्रात: मिथुन में वक्री बुध
५७	२५	१८	2	शनि	मृग	दि	१९	३८	द्वा	प्र	१	३७	वज्रम्।
५९	२६	१९	3	रवि	आर्द्रा	दि	२५	२८	त्रो	प्र	५	५२	३-४२ दिन कर्क मे स्वचारी बुध। कन्या में शुक्र ८-४४ दिन। ध्वांक्ष:।
१	२७	२०	4	सोम	पुन	दि	३०	३३	चं	प्र	९	१४	११-२७ दिन कर्क में चन्द्र। कुम्भ में वक्री बृहस्पति ६-५५ प्रात:।
३	२८	२१	5	मोम	ति	दि	३३	३७	अं	प्र	११	३२	प्रवर्ध:।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से एकादशी तक पहले दिन। द्वादशी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद् द्वितीया अपने दिन। तृतीया से अष्टमी तक पहले दिन। नवमी से अमावसी तक अपने दिन।

यात्रा मुहूर्त :- जुलाई २२ जुलाई पूर्व दक्षिण यात्रा। २३ २४ पूर्व पश्चिम २५ उत्तर पश्चिम।

सप्तर्षि सं० ५०६२ । श्रावण शुक्लपक्ष । कर्क में सूर्य, बुध । धनु में वक्री भौम ।

कुम्भ में वक्री बृहस्पति । कन्या में शुक्र । वृश्चिक में शनि । मेष में राहु । तुला में केतु ।

राष्ट्र	हिज	श्राव	अंग्रे.	वार	नक्षत्र		घड़ी पल	तिथि		घड़ी पल	वर्षा ऋतु । दक्षिणायण । 9 अगस्त से २२ अगस्त तक ।
६	२९	२२	6	बुध	अश.	प्र	३ ४३	प्र	प्र	१२ ३९	८-४५ रात सिंह में चन्द्र । २-२८दिन से गण्डान्त ३-१३ रात तक । क्षय:
८	३०	२३	7	गुरु	मघा	प्र	५ २५	द्वि	प्र	१२ २४	चन्द्रदर्शन । गज: ।
१०	मह	२४	8	शुक्र	पूफा	प्र	५ ५२	तृ	प्र	१० ५४	३-३३ रात कन्या में चन्द्र । शुक्ल मास । महरम 1407 । सिद्ध: ।
१२	२	२५	9	शनि	उफा	प्र	५ ९	च	प्र	८ १४	उन्मूलम्
१४	३	२६	10	रवि	हस्त	प्र	३ २६	पं	प्र	४ ३२	मानसम् । मीन में राहु कन्या में केतु । १२-४१ दिन से शूलम् ।
१६	४	२७	11	सोम	चि	प्र	० ५२	ष	प्र	० २	८-४ प्रात: तुला में चन्द्र । कुमारषष्ठी व्रत । मुद्गरम् ।
१८	५	२८	12	भौम	स्वा	दि	३१ ४	स	दि	२८ १६	तुलसीदास जयंती । ध्वज: ।
२०	६	२९	13	बुध	वि	दि	२७ १९	अ	दि	२२ २३	११-८ दिन वृश्चिक में चन्द्र । बुधाष्टमी । प्रजापत्य. शां तक । चर:
२२	७	३०	14	गुरु:	अनू	दि	२३ १५	न	दि	१६ ३४	आनन्द: । गाथा । पवित्रा ११ । मुसलम् ।
२४	८	३१	15	शुक्र	ज्ये	दि	१९ ६	द	दि	१० २६	१-२६ दिन धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ । ७-५४ प्रात: से गण्डान्त ९-४१
२७	९	३२	16	शनि	मूला	दि	१५ ४	ए	दि	४ २२	११-५४ दिन तक मूल । मामान्न । ध्वज: । श्रावण द्वादशी, गोरात्र
२९	१०	भाद्र	17	रवि	पूषा	दि	११ २१	त्रौ	प्र	२० १३	४-१ दिन मकर में चन्द्र । ३-१४ दिन सिंह में सूर्य मुहूर्त ४५ पहाडीसंक्रान्ति
३१	११	२	18	सोम:	उषा	दि	८ १०	चं	प्र	१५ ३६	मृत्यु: । अमरनाथ यात्रा, थजीवारा यात्रा । मलापक: ।
३३	१२	३	19	भौम	श्रव	दि	५ ४०	पू	प्र	११ ५०	७-४८ कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । रक्षाबन्धन पूर्णिमा

श्राद्ध:- प्रतिपद् से सप्तमी तक अपने दिन । अष्टमी से एकादशी तक पूर्व दिन । त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

मध्याह्न:- प्रतिपद् से नवमी तक अपने दिन । दशमी से एकादशी तक पहले दिन । त्रयोदशी से पूर्णिमा तक अपने दिन

यात्रा मुहूर्त:- ८अगस्त पश्चिम विना । ९, पूर्व विना । १०, उत्तर पूर्व । १३ अगस्त उत्तर विना यात्रा ४-४५ दिन से १४,१५ पश्चिम यात्रा । १५ अगस्त पश्चिम विना यात्रा ।

विक्रमी सं० २०४३ । भाद्र कृष्णपक्ष । सिंह में सूर्य । धनु में वक्री भौम ।

कर्क में बुध । कुम्भ में वक्री बृहस्पति । कन्या में शुक्र । वृश्चिक में शनि । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

	राघं	ह	श्राव	अग.	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	वर्षा ऋतु । दक्षिणायण । 20 अगस्त से 4 सितम्बर तक ।
१३	३५	१३	४	20	बुध	धनि	दि	४	०	प्र	प्र	९	३	मैत्रम् ।
	३७	१४	५	21	गुरु	शत	दि	३	२०	द्वि	प्र	७	३५	१-२० रात मीन में चन्द्र । वज्रम् । (ग्रहसंचार बजे और मिन्टों में)
	३९	१५	६	22	शुक्र	पूभा	दि	३	५१	तृ	प्र	७	१	कूर्म तृतीया । ध्वांक्षः ।
	४२	१६	७	23	शनि	उभा	दि	५	४०	च	प्र	७	५७	३-४ रात से गण्डान्त । संकट चतुर्थी । नवदल यात्रा । सौम्यः । प्रवर्धः ।
	४४	१७	८	24	रवि	रेव	दि	८	४१	प	प्र	१०	२	९-२८ दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ३-५१ दिन तक गण्डान्त ।
	४७	१८	९	25	सोम	अ	दि	१२	५३	ष	प्र	१३	१९	चन्दन षष्ठी । क्षयः । गजः ।
	४९	१९	१०	26	सोम	भर	दि	१८	१	स	प्र	१७	२६	७-४७ रा । वृष में चन्द्र । २-३६ दिन सिंह में बुध । शीतला सप्तमी ।
	५२	२०	११	27	बुध	कृति	दि	२२	५३	अ	प्र	२२	११	जन्माष्टमी एक । सिद्धिः ।
	५४	२१	१२	28	गुरु	रोहि	दि	३०	१७	न	प्र	२७	२२	उन्मूलप ।
	५७	२२	१३	29	शुक्र	मृग	प्र	४	३५	द	प्र	२९	५४	७-३२ शाम मिथुन में चन्द्र । दिन अधिक । मानसम् ।
१४	०	२३	१४	30	शनि	आर्द्र	प्र	१०	४२	द	दि	८	२३	मुदगरम् ।
	२	२४	१५	31	रवि	पुन	प्र	१६	०	ए	दि	८	३५	६-४७ दिन कर्क में चन्द्र । अजा एकादशी । ध्वजः ।
	५	२५	१६	सितं	सोम	ति	प्र	२०	२४	द्वा	दि	११	५८	९-११ दिन तुला में शुक्र । गोवत्सा द्वादशी । प्रजापत्यः ।
	७	२६	१७	2	सोम	अश्ले	प्र	२३	३५	त्रो	दि	१४	१८	१०-२ रात से गण्डान्त । ४-१७ रात सिंह में चन्द्र । कलियुगजयन्ती ।
	१०	२७	१८	3	बुध	मघा	प्र	२५	३३	चं	दि	१५	२४	१०-३२ दिन तक गण्डान्त । चरः । मानन्दः ।
	१३	२८	१९	4	गुरु	पूफा	प्र	२६	१९	अ	दि	१५	१३	दर्भमावस । मुसलम् ।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से दशमी तक अपने दिन । एकादशी से अमावसी तक पहले दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से दशमी तक अपने । एकादशी से अमावसी तक पहले दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- २० अगस्त पूर्व पश्चिम । २१ अगस्त पू० पश्चिम यात्रा । २२ उत्तर पश्चिम ।२३ उत्तर पश्चिम । २४ पू० उत्तर ।
२५, पूर्व बिना । २८, पू० पश्चिम । २९, पश्चिम बिना । ३१ अगस्त पू० उत्तर यात्रा । १ सितंबर पूर्व बिना यात्रा

सप्तर्षि सं० ५०६२। भाद्र शुक्लपक्ष। सिंह में सूर्य, बुध। धनु में वक्री भौम।

कुम्भ में वक्री बृहस्पति। तुला में शुक्र। वृश्चिक में शनि। मीन में राहु। कन्या में केतु।

राध	हिंम	भाद्र	तारीख	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	
१५	२६	२०	5	शुक्र	उफा प्र	२५ ५१	प्र दि	१३ ४७	११-२० दिन कन्या में चन्द्र। शूलम्। रात तक। कालदण्ड: ←
१८	३०	२१	6	शनि	हस्त प्र	२४ २७	द्वि दि	११ १०	मृत्यु:। * चन्द्र और मूल प्रारम्भ। ८-४ दिन से गण्डान्त ३-१५ →
२०	मह	२२	7	रवि	चि प्र	२२ ३	तृ दि	७ ३८	४-६ दिन तुला में चन्द्र। सूर्य मास। काम्य:। ● कुमारषष्ठी व्रत
२३	२	२३	8	सोम	स्वा प्र	१९ ०	च दि	३ ९	ध्वज:। विनायक चतुर्थी। वराह पंचमी। छत्रम्।
२५	३	२४	9	भौम	वि प्र	१५ २२	प प्र	२१ १३	७-१७ शां वृश्चिक में चन्द्र। करकतीर्थ श्राद्ध। श्रीवत्स:। ●
२८	४	२५	10	बुध	अनू प्र	११ ३९	स प्र	१५ २१	१-१८ दिन मकर में भौम। ब्रह्म सरोवर श्राद्ध। सौम्य:।
३१	५	२६	11	गुरु	ज्ये प्र	७ २९	अ प्र	९ २३	गंगाष्टमी। गुशां तथा सादमाल्युन यात्रा। ९-२८ रात धनु में *
३३	६	२७	12	शुक्र	मूला प्र	३ २३	न प्र	३ २७	११-३९ दिन कन्या में बुध। स्थिर: % अनन्त चतुर्दशी। अनन्तनाग
३६	७	२८	13	शनि	पूषा दि	३० २९	द दि	२८ ३७	१२-१० रात मकर में चन्द्र। मातंग: % यात्रा। हरुव प्रारम्भ।
३८	८	२९	14	रवि	उषा दि	२७ ९	ए दि	२३ २३	नारायणी एकादशी, गौतमनाग यात्रा। अमृतम्। % मानसम्।
४१	९	३०	15	सोम	श्रव दि	२५ ११	द्वा दि	१८ ४३	३-४२ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक प्रारम्भ। इन्द्र द्वादशी। सिद्ध:।
४४	१०	३१	16	भौम	धनि दि	२२ ३६	त्रयो दि	१४ ५७	वितस्ता त्रयोदशी व्ययवोत्र(वेरीनाग) यात्रा। मासान्त। उन्मूलम्।
४६	११	असू	17	बुध	शत दि	२१ ४३	च दि	१२ ७	२-४८ दिन कन्या में सूर्य मुहूर्त १५ समुद्राय। संक्रान्ति व्रत %
४९	१२	२	18	गुरु	पूभा दि	२१ ५७	पू दि	१० २४	९-६ दिन मीन में चन्द्र। पितृपक्ष प्रारम्भ। मुद्गरम्।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से चतुर्थी तक पूर्व दिन। षष्ठी से दशमी तक अपने दिन। एकादशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से चतुर्थी तक पहले दिन। षष्ठी से त्रयोदशी तक अपने दिन। चतुर्दशी से पूर्णिमा तक पहले दिन।

यात्रा मुहूर्त :- ५ सितंबर पश्चिम विना यात्रा। ६, पूर्व यात्रा। १०, उत्तर विना यात्रा। ११, पूर्व पश्चिम। १२, पश्चिम विना। १३, पू० विना। १४, पूर्व उत्तर। १५, पूर्व विना।

विक्रमी सं० २०४३ । आश्विन कृष्णपक्ष । कन्या में सूर्य, बुध । मकर में

स्वचारी भौम । कुम्भ में बृहस्पति । तुला में शुक्र । वृश्चिक में शनि । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

शरद् ऋतु । दक्षिणायण । 19 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक ।

१४

रवि	हि	अगू	सित	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	
५१	१३	३	19	शुक्र	उभा	दि	२३	२६	प्र	दि	१०	१	ध्वज: । ११-१६ रात तक । प्रजापत्य: ।
५४	१४	४	20	शनि	रेव	दि	२६	११	द्वि	दि	१०	५२	४-५४ दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । १०-३५ दिन से गण्डान्त
५७	१५	५	21	रवि	अ	दि	३०	४	तृ	दि	१२	५५	संकट चतुर्थी । ८-३३ रात अगस्त्योदय । आनन्द: ।
५९	१६	६	22	सोम	भर	प्र	४	५८	चं	दि	१६	१०	३-३ रात वृष में चन्द्र । चर: ।
१	१७	७	23	भौम	कृति	प्र	१०	४२	प	दि	२०	१९	८-१० प्रात: से दिन रात बराबर । मुसलम् ।
३	१८	८	24	बुध	रोहि	प्र	१७	९	ष	दि	२५	६	शूलम् ★ ६-३२ प्रात: से गण्डान्त ६-५ शां तक ।
६	१९	९	25	गुरु	मृग	प्र	२३	३९	स	प्र	०	१५	साहिब सप्तमी । ३-५६ दिन मिथुन में चन्द्र । मृत्यु: ।
९	२०	१०	26	शुक्र	आर्द्र	प्र	२९	१२	अ	प्र	५	२९	महा लक्ष्मी अष्टमी । काम्य: ।
११	२१	११	27	शनि	पुन	प्र	३०	२२	न	प्र	९	५०	२-३० रात कर्क में चन्द्र । छत्रम् ।
१४	२२	१२	28	रवि	पुन	दि	५	२	द	प्र	१३	२८	ध्वज: ।
१६	२३	१३	29	सोम	ति	दि	९	३२	ए	प्र	१५	५८	९-५० रात तुला में बुध । इन्द्र एकादशी । प्रजापत्य: ।
१९	२४	१४	30	भौम	अश्ले	दि	१३	०	द्वा	प्र	१७	१५	११-४९ दिन सिंह में चन्द्र । आनन्द: । ★
२२	२५	१५	अक्टू	बुध	मघा	दि	१५	१०	त्रयो	प्र	१७	१८	गजच्छाया चर: ।
२४	२६	१६	2	गुरु	पूफा	दि	१६	९	चं	प्र	१६	०	७-८ शां कन्या में चन्द्र । १२-१४ रात चन्द्र अस्त । मुसलम् ।
२५	२७	१७	3	शुक्र	उफा	दि	१५	५०	अ	प्र	१३	३७	पित्रामावसी । विजयेश्वर यात्रा । शूलम् ।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से षष्ठी तक पूर्व दिन सप्तमी से अमावसी तक अपने दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से चतुर्थी तक पहले दिन । पंचमी से अमावसी तक अपने दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- १९ सितंबर पश्चिम बिना यात्रा । २०, पूर्व बिना यात्रा । २१, पू० उत्तर ६-२९ शां तक । २४, उत्तर बिना । २५, पू० पश्चिम । २७, पू० बिना । २८ सितंबर पू० उत्तर यात्रा ।

विक्रमी सं० २०४३ । आश्विन शुक्लपक्ष । कन्या में सूर्य । मकर में स्वचारी

बृहस्पति । तुला में बुध, शुक्र । कुम्भ में वक्री बृहस्पति । वृश्चिक में शनि । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

	राध	हिज	प्रसु	भवट्ट	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल		तिथि	घड़ी	पल	शरद् ऋतु । दक्षिणायण । 4 अक्टूबर से 17 अक्टूबर तक
१५	३०	२८	१८	4	शनि	हस्त	दि	१४	३०	प्र	प्र	१०	८	१२-६ रात तुला में चन्द्र । मृत्युः ।
	३२	२६	१६	5	रवि	चि	दि	१२	१५	द्वि	प्र	५	४८	काम्यः ।
	३५	आश्वि	२०	6	सोम	स्वा	दि	६	१६	तृ	प्र	०	५०	३-२४ रात वृश्चिक में चन्द्र । छत्रम् ।
	३७	२	२१	7	भौम	वि	दि	५	४३	च	दि	२४	७	भौममास । श्रीवत्सः ।
	४०	३	२२	8	बुध	अनू	दि	१	४७	पं	दि	१८	१३	कुमारषष्ठी व्रत । १२-१४ रात से गण्डान्त सौम्यः ।
	४२	४	२३	9	गुरु	मूला	प्र	२४	५६	ष	दि	१२	१२	५-४७ प्रातः धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ । ११-२६ दिन तक गण्डान्त
	४५	५	२४	10	शुक्र	पूषा	प्र	२१	४	स	दि	६	२५	प्रवंधः । कुमार जयंती । ४-१० रात तक मूल । धौम्यः ।
	४८	६	२५	11	शनि	उषा	प्र	१७	४२	अ	दि	०	३८	७-५२ प्रातः मकर में चन्द्र । ध्वहः । दुर्गाष्टमी । महानवमी
	५१	७	२६	12	रवि	श्रव	प्र	१४	५६	द	प्र	२२	३०	दसेरा । मुसलम् । शूलम् ।
	५३	८	२७	13	सोम	धनि	प्र	१२	५५	ए	प्र	१८	५०	११-४४ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । जया एकादशी ।
	५६	९	२८	14	भौम	शत	प्र	११	५२	द्वा	प्र	१६	७	मृत्युः । जयंती । लवंग पूर्णिमा । मासान्त । श्रीवत्सः ।
	५९	१०	२९	15	बुध	पूभा	प्र	११	५९	त्रौ	प्र	१४	४०	४-५३ दिन मीन में चन्द्र । काम्यः ।
१६	१	११	३०	16	गुरु	उभा	प्र	१३	१२	चं	प्र	१४	२३	छत्रम् । १-४३ रात तुला में सूर्य मुहूर्त ३० दरयाई । वाल्मीकी
	४	१२	कर्ति	17	शुक्र	रेव	प्र	१५	४८	पू	प्र	१५	२६	१२-२१ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ६-१० शां से गण्डान्त ।

चन्द्र ग्रहण-

श्राद्ध :- प्रतिपद् से चतुर्थी तक अपने दिन, पंचमी से अष्टमी तक पहले दिन, दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से षष्ठी तक अपने दिन, सप्तमी अष्टमी पहले दिन । दशमी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- ४ अक्टूबर पूर्व विना यात्रा । १२-३० दिन तक, ७ पूर्व दक्षिण यात्रा ६-३ दिन से । ८ उत्तर विना । ६ पूर्व पश्चिम । १० पश्चिम विना । ११ पूर्व विना १२, पूर्व उत्तर, १३ उत्तर पश्चिम, दक्षिण यात्रा ११-४४ दिन तक, १४ पूर्व यात्रा, १५ पूर्व पश्चिम ।

सप्तर्षि सं० ५०६२ । कार्तिक कृष्णपक्ष । तुला में सूर्य, बुध, शुक्र । मकर में

भौम । कुम्भ में बृहस्पति । वृश्चिक में शनि । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

	राध	ह	कत	अक्टूबर	वार	नक्षत्र		घडी	पल	तिथि		घडी	पल	
१६	७	१३	२	18	शनि	अ	प्र	१६	३१	प्र	प्र	१७	४२	संक्रान्ति व्रत । सोम्य: । ६-४३ दिन तक गण्डान्त ।
	९	१४	३	19	रवि	भर	प्र	२४	१८	द्वि	प्र	२१	१२	कालदण्ड: ।
	१२	१५	४	20	सोम	कृत	प्र	३०	५	तृ	प्र	२५	३३	१०-२२ दिन वृष में चन्द्र । स्थिर: ।
	१५	१६	५	21	भौम	रोहि	प्र	३४	३०	च	प्र	३१	२६	संकट चतुर्थी ।मातंग: ।
	१७	१७	६	22	बुध	रोहि	दि	३	५१	पं	प्र	३२	३४	९-५० रात मिथुन में चन्द्र । दिन अधिक । शूलम् ।
	२०	१८	७	23	गुरु	मृग	दि	१०	१६	पं	दि	३	१४	९-५० दिन वृश्चिक में बुध । मृत्यु: ।
	२२	१९	८	24	शुक्र	आद्र	दि	१६	३०	ष	दि	८	१५	काण्य: ।
	२४	२०	९	25	शनि	पुन	दि	२२	७	स	दि	१२	४४	९-२२ दिन कर्क में चन्द्र । छत्रम् ।
	२६	२१	१०	26	रवि	ति	दि	२६	५४	अ	दि	१६	१६	श्रीवत्स: ।
	२९	२२	११	27	सोम	अश्ले	प्र	३	३५	न	दि	१८	४५	सोम्य: ७-२० शां सिंह में चन्द्र । १२-४८ दिन से गण्डान्त १-३८ रात तक ।
	३१	२३	१२	28	भौम	मघा	प्र	६	१०	द	दि	२०	२	८-१९ दिन शुक्र अस्त। कालदण्ड: ।
	३३	२४	१३	29	बुध	पूफा	प्र	७	२९	ए	दि	२०	२	२-५७ रात कन्या में चन्द्र । रमा एकादशी । स्थिर: ।
	३५	२५	१४	30	गुरु	उफा	प्र	७	३५	द्वा	दि	१८	४२	गोवत्सा पूजा । मातंग: ।
	३७	२६	१५	31	शुक्र	हस्त	प्र	६	३२	त्रो	दि	१६	१३	अमृतम् ।
	४०	२७	१६	नवं	शनि	चित्र	प्र	४	३३	चं	दि	१२	५१	८-४० दिन तुला में चन्द्र । दीपमाला । काण्ड:
	४२	२८	१७	2	रवि	स्वा	प्र	१	४६	अ	दि	८	३०	प्रकाशक: । महर्षि कश्यप निर्वाण

श्राद्ध :- प्रतिपद् से पंचमी तक अपने दिन । षष्ठी से अमावसी तक पहले दिन ।

मध्याह्न:- प्रतिपद् से पंचमी तक अपने दिन, षष्ठी सप्तमी पहले दिन । अष्टमी से चतुर्दशी तक अपने दिन । अमावसी पहले दिन

यात्रा मुहूर्त :- १९ अक्टूबर पूर्व बिना, २१, पू० दक्षिण यात्रा । २२, पूर्व पश्चिम । २३ पूर्व पश्चिम ११-६ दिन तक । २४ पश्चिम बिना १-४० दिन तक २५ पूर्व बिना, २६ पूर्व उत्तर ६ बजे शां तक । २९ उत्तर बिना । ३० पू० पश्चिम ३१ पश्चिम बिना ।

विक्रमी सं० २०४३ । कार्तिक शुक्लपक्ष । तुला में सूर्य, शुक्र, वक्री बुध ।

मकर में भौम । कुम्भ में बृहस्पति । वृश्चिक में शनि । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

१६

रार्ष	हिव	कब	नव	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	(ग्रहसंचार और बजे मिन्टों में)
४४	२९	१८	3	सोम	वि	दि	२४	५८	प्र	दि	३	२९	८-१३ रात तुला में वक्री बुध । अन्नकूट ।११-३१ दिन वृश्चिक में चन्द्र ।
४६	३०	१९	4	भौम	अनू	दि	२१	३	द्वि	प्र	२५	४४	गोवर्धन पूजा । यम द्वितीया । चन्द्र दर्शन । वज्रम् ।।
४९	रवी	२०	5	बुध	ज्ये	दि	१६	५६	तृ	प्र	१९	५२	८-२३ दिन से ७-३७ शां तक गण्डान्त व्याप्ति: ।
५१	२	२१	6	गुरु	मूला	दि	१२	४७	च	प्र	१४	४	बृहस्पति मास । धौम्य: त्र्यहः दिन कम । मैत्रम् ।
५३	३	२२	7	शुक्र	पूषा	दि	८	५०	ष	प्र	९	६	४-२५ दिन मकर में चन्द्र । कुमारषष्ठी व्रत । प्रबंध: ।
५५	४	२३	8	शनि	उषा	दि	५	१६	स	प्र	७	३५	बुध अस्त । क्षय: । 卐 संक्रान्ति व्रत । श्री गुरुनानक जयन्ती । कालदण्ड:
५७	५	२४	9	रवि	श्रव	दि	२	१७	अ	दि	२५	१९	७-४१रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक प्रारम्भ । गोपाल अष्टमी । मुसलम्
०	६	२५	10	सोम	धनि	दि	०	१	न	दि	२१	४३	सत्ययुग जयती । शूलम् । → में चन्द्र । काण्ड: ।
२	७	२६	11	भौम	पूभा	प्र	३२	२५	द	दि	१९	५	१-११ रात कुम्भ में भौम । ४-३० दिन शुक्र उदय । १२-३५ रात मीन→
४	८	२७	12	बुध	उभा	प्र	३३	२३	ए	दि	१७	३७	हरिबोधिनी एकादशी । प्रलापक: ।
६	९	२८	13	गुरु	रेव	प्र	३४	१२	द्वा	दि	१७	२४	शिवस्वाप । ३-१८ रात से गण्डान्त । मंत्रम् ।
८	१०	२९	14	शुक्र	रेव	दि	१	२६	त्रो	दि	१८	३०	७-५६ प्रात: मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । श्रीवत्स: ●
११	११	३०	15	शनि	अ	दि	४	५९	च	दि	२०	५०	शनि अस्त । मासान्त । सौम्य: ● श्री नेहरू जयंती, बालदिवस
१३	१२	मग	16	रवि	भर	दि	९	१९	पू	दि	२८	१८	५-३७ रात वृष में चन्द्र । ११-३० रात वृश्चिक में सूर्य मुहूर्त ३० समुद्रीय

श्राद्ध :- प्रतिपद् पहले दिन । तृतीया से अष्टमी तक अपने दिन । नवमी से पूर्णिमा तक पहले दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् पहले दिन । तृतीया से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- ३ नवम्बर पूर्व बिना यात्रा ५-१० दिन से । ४, पूर्व दक्षिण । ५, उत्तर बिना । ६, पूर्व पश्चिम । ७, पश्चिम बिना । ८, पूर्व बिना । ९. पूर्व उत्तर । १०, उत्तर पश्चिम ।११, पूर्व यात्रा । १२, पूर्व पश्चिम । १३, पू० पश्चिम १४, पश्चिम बिना यात्रा ।

सप्तर्षि सं० । मार्ग कृष्णपक्ष । वृश्चिक में सूर्य, शनि । कुम्भ में भौम, बृहस्पति ।

तुला में वक्री बुध, शुक्र । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

	राघ	हि	मग	नव	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	हेमन्त ऋतु । दक्षिणायण । 17 नवम्बर । दिसम्बर तक ।
१७	१५	१३	२	17	सोम	कृति दि	१४ ५६	प्र प्र	३ ११	बुध उदय । स्थिर: ।
	१७	१४	३	18	भौम	रोहि दि	२० ५२	द्वि प्र	८ १७	मातंग: ।
	२०	१५	४	19	बुध	मृग प्र	१ ५६	तृ प्र	१३ ३८	५-० प्रात: मिथुन में चन्द्र । अमृतम् ।
	२२	१६	५	20	गुरु	आर्द्र प्र	८ १९	च प्र	१८ ५०	संकट चतुर्थी । काण्ड: ।
	२४	१७	६	21	शुक्र	पुन प्र	१४ १३	प प्र	२३ २२	४-३९ दिन कर्क में चन्द्र । प्रलापक: ।
	२६	१८	७	22	शनि	त प्र	१९ १७	ष प्र	२७ ४	मैत्रम् ।
	२७	१९	८	23	रवि	अश्ले प्र	२३ ९	स प्र	२९ ३६	८-२९ रात से गण्डान्त । २-५० रात सिह में चन्द्र । वज्रम् ।
	२८	२०	९	24	सोम	मघा प्र	२६ ५	अ प्र	३० ५२	९-७ दिन तक गण्डान्त । ध्वांक्ष: ।
	२९	२१	१०	25	भौम	पूफा प्र	२७ ४२	न प्र	३१ ५	धौम्य: ।
	२९	२२	११	26	बुध	उफा प्र	२८ १	द प्र	२९ २५	१०-३८ दिन कन्या में चन्द्र । प्रवर्ष: ।
	३०	२३	१२	27	गुरु	हस्त प्र	२७ ११	ए प्र	२७ १९	उत्पन्ना एकादशी । क्षय: ।
	३०	२४	१३	28	शुक्र	चित्र प्र	२५ २५	द्वा प्र	२३ ५७	३-५ दिन तुला में चन्द्र । गज: ।
	३१	२५	१४	29	शनि	स्वा प्र	२२ ४८	त्र्यो प्र	१९ ४२	सिद्ध: ।
	३१	२६	१५	30	रवि	वि प्र	२३ ४७	चं प्र	१४ ४५	७-४३शां वृश्चिक में चन्द्र । चन्द्रास्त ११-२३ दिन । उन्मूलम् ।
	३२	२७	१६	दिस	सोम	अनू प्र	१५ ४९	अं प्र	९ १८	सोमावसी, सोमयार यात्रा । मानसम् ।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से अमावसी तक अपने दिन ।

मध्याह्न:- प्रतिपद् से अमावसी तक अपने दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- १७ नवंबर पूर्व विना यात्रा । १८, पू० दक्षिण । २१, पूर्व उत्तर । २२पूर्व विना । २५, पू० दक्षिण । २६, पश्चिम विना २७ नवंबर पूर्व पश्चिम । ३०, पूर्व उत्तर यात्रा ।

विक्रमी सं० २०४३ । मार्ग शुक्लपक्ष । वृश्चिक में सूर्य, शनि । कुम्भ में भौम,

बृहस्पति । तुला में शुक्र, वक्री बुध । मीन में राहु । कन्या में केतु । (ग्रहसंचार बजे और मिन्टों में)

१७

राघं	हिज	मग	दिसं	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घडी	पल	हेमन्त ऋतु । दक्षिणायण । 2 दिसम्बर से 16 दिसम्बर
३५	२८	१७	2	मोम	ज्यं	प्र	११	४४	प्र	प्र	३	३३	१०-१० रात धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ । ४-३६ दिन से ३-४४ रात
३६	२९	१८	3	बुध	मूला	प्र	७	४७	द्वि	दि	२२	३०	८-३४ रात तक मूल । ध्वज: । तक गण्डान्त । मुद्गरम् ।
३७	रवी	१९	4	गुरु	पूषा	प्र	३	३८	तृ	दि	१६	४४	१२-३१ रात मकर में चन्द्र । प्रजारत्प: ।
३८	२	२०	5	शुक्र	उषा	प्र	०	१०	चं	दि	११	१७	आनन्द: । आरम्भ । ८-० रात वृश्चिक में बुध । स्थिर: ।
३९	३	२१	6	शनि	श्रव	दि	२१	३०	पं	दि	६	१८	शनि मास । कुमारषष्ठी व्रत । ३-५० रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक
४०	४	२२	7	रवि	धनि	दि	१६	१३	ष	दि	१	५७	=यहृ: । दिन कन । मातंग: ।
४०	५	२३	8	सोम	शत	दि	१८	१	अ	प्र	३१	१९	अमृतम् ।
४१	६	२४	9	मोम	पूभा	दि	१७	९	न	प्र	३०	४०	८-२७ दिन मीन में चन्द्र । काण्ड: ।
४२	७	२५	10	बुध	उभा	दि	१७	४९	द	प्र	३०	३	अलापक: । तक गण्डान्त । मोक्षदा एकादशी । मैत्रम् ।
४३	८	२६	11	गुरु	रेव	दि	१९	४२	ए	प्र	३१	२२	३-२७ दिन मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ९-१३ दिन १०-२० रात
४४	९	२७	12	शुक्र	अ	दि	२२	५१	द्वा	प्र	३३	५६	वज्रम् ।
४५	१०	२८	13	शनि	म॰	प्र	२	३७	त्रौ	प्र	३५	३०	दिन अधिक । १२-५४ रात वृष में चन्द्र । ध्वांक्ष: ।
४६	११	२९	14	रवि	कृति	प्र	७	५३	त्रौ	दि	२	५	धौम्य: । पहले दिन ।
४७	१२	३०	15	सोम	रोहि	प्र	१३	५५	चं	दि	६	४६	मासान्त । क्षय: । संक्रान्ति व्रत । क्षय: ।
४८	१३	पौष	16	सोम	मृग	प्र	२०	२०	पूं	दि	११	४२	१२-१९ दिन मिथुन में चन्द्र । ११-२६ दिन धनु में सूर्य ३० किनारी

श्राद्ध :- प्रतिपद् द्वितीया अपने दिन । चतुर्थी से षष्ठी तक पहले दिन । अष्टमी से त्रयोदशी तक अपने दिन । चतुर्दशी से पूर्णिमा तक

मध्याह्न :- प्रतिपद् से तृतीया तक अपने दिन । चतुर्थी से षष्ठी तक पहले दिन । अष्टमी से त्रयोदशी तक अपने दिन । चतुर्दशी पूर्णिमा

यात्रा मुहूर्त :- २ दिसंबर उत्तर विना यात्रा । ३, उत्तर विना । ४, पूर्व पश्चिम । ५, पश्चिम विना । ६, उत्तर विना । ७, पूर्व उत्तर । ८, पूर्व विना । ९, पूर्व यात्रा । १०, पूर्व पश्चिम । ११, पूर्व पश्चिम । १२, पश्चिम विना ४-४४ दिन तक । १५, पू० विना यात्रा ।

पहले दिन पहले दिन

ई० सं० 1986 । पौष कृष्णपक्ष । धनु में सूर्य । कुम्भ में भौम, बृहस्पति ।

वृश्चिक में बुध, शनि । तुला में शुक्र । मीन में राहु । कन्या में केतु ।

१७

राघं	हिज	पौष	दसं	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	हेमन्त ऋतु । उत्तरायण । 17 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक ।
४६	१४	२	17	बुध	आर्द्र प्र	२६ ४६	प्र दि	१७ ४	मातृका पूजा । मुजह्र तह्र । गजः । ● उत्तरायण । वज्रम्
५०	१५	३	18	गुरु	पुन प्र	३२ ४६	द्वि दि	२२ ११	११-५६ रात कर्क में चन्द्र । सिद्धः ।
५१	१६	४	19	शुक्र	ति प्र	३५ ४२	तृ प्र	२ २४	संकट चतुर्थी । काम्यः । मैत्रम् ।
५२	१७	५	20	शनि	ति दि	२ १६	च प्र	६ ३	८-४० दिन बुधास्त । शनि उदय १२-० दिन से । ३-५१ रात से गण्डान्त ।
५२	१८	६	21	रवि	अश्ले दि	६ ३४	प प्र	८ ३३	८-१७ दिन सिंह में चन्द्र । ४-३८ दिन तक गण्डान्त । १०-३७ रात से ●
५१	१९	७	22	सोम	मघा दि	९ ४१	ष प्र	९ ४९	वेताल षष्ठी । ध्वांक्षः ।
५०	२०	८	23	भौम	पूफा दि	११ ३१	स प्र	९ ४४	६-१६ रात कन्या में चन्द्र । सौम्यः ।
५०	२१	९	24	बुध	उफा दि	१२ ८	अ प्र	८ २४	महाकाली जयन्ती । प्रवर्धः ।
४९	२२	१०	25	गुरु	हस्त दि	११ ३४	न प्र	५ ५२	१२-२ रात से तुला में चन्द्र । क्षयः ।
४८	२३	११	26	शुक्र	चित्र दि	१० ०	द प्र	२ ११	३-५० दिन धनु में बुध । आनन्देश्वर भैरव जयंती । गजः ।
४७	२४	१२	27	शनि	स्वा दि	१७ ३५	ए दि	२२ २५	८-४५ रात वृश्चिक में चन्द्र । सफला एकादशी । सिद्धः ।
४६	२५	१३	28	रवि	वि दि	४ २७	द्वा दि	१७ २७	६-३५ रात मीन में भौम । उन्मूलम् ।
४५	२६	१४	29	सोम	अनू दि	० ४७	त्रौ दि	१२ ४	१२४४ रात से गण्डान्त । मानसम् । यक्षामावसी । छत्रम् ।
४४	२७	१५	30	भौम	मूला प्र	२८ १३	चं दि	६ २३	११-५६ दिन तक गण्डान्त । ६-२० प्रातः धनु में चन्द्र और मूल आरम्भ ।
४३	२८	१६	31	बुध	पूषा प्र	२४ ८	अ दि	० २९	श्रीवत्सः । व्यहः

श्राद्ध :- प्रतिपद् द्वितीया पहले दिन । तृतीया से एकादशी तक अपने दिन । द्वादशी से अमावसी तक पहले दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् पहले दिन । द्वितीया से त्रयोदशी तक अपने दिन । चतुर्दशी से अमावसी तक पहले दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- १८ दिसम्बर पूर्व पश्चिम यात्रा । १९, पश्चिम बिना । २०, पू० बिना ८-४५ दिन तक । २२, पूर्व बिना ११-३१ दिन से । २३, पू० दक्षिण । २४, उत्तर बिना । २५, पूर्व पश्चिम । २८, पूर्व उत्तर ९-२४ दिन से । २९, पूर्व बिना । ३० दिसंबर पू० दक्षिण यात्रा

ई० सं० 1987 । पौष शुक्लपक्ष । धनु में सूर्य, बुध । मीन में भौम, राहु ।

कुम्भ में बृहस्पति । वृश्चिक में शुक्र, शनि । कन्या में केतु । १९८७

	घ	हिज	पौष	जन	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	हेमन्त ऋतु । उत्तरायण । 1 जनवरी 15 जनवरी तक ।
१७	४२	२९	१७	1	गुरु	उषा प्र	२० १९	द्वि प्र	२४ ४७	८-४७ दिन मकर में चन्द्र । ८-४७ दिन वृश्चिक में शुक्र । सौम्य: ।
	४२	जमी	१८	2	शुक्र	श्रव प्र	१७ ४	तृ प्र	२० ३०	ध्वांक्ष: ।
	४१	२	१९	3	शनि	धनि प्र	१४ २७	च प्र	१५ ३६	११-४८ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । प्रवंध: ।
	४०	३	२०	4	रवि	शत प्र	१२ ४०	पं प्र	१२ १४	क्षय: ।
	३९	४	२१	5	सोम	पूभा प्र	११ ५३	ष प्र	९ ५४	४-१३ दिन मीन में चन्द्र । चन्द्र मास । कुमारषष्ठी व्रत । गद: ।
	३८	५	२२	6	भौम	उभा प्र	१२ १५	स प्र	८ ४२	श्री गुरुगोविन्द जयंती । सिद्ध: । उन्मूलम् ।
	३७	६	२३	7	बुध	रेव प्र	१३ ५१	अ प्र	८ ४७	१०-५९ रात मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । ७-५० दिन से गण्डान्त ।
	३६	७	२४	8	गुरु	अ प्र	१६ ४१	न प्र	१० १२	५-२० प्रात: तक गण्डान्त । मानसम् ।
	३५	८	२५	9	शुक्र	भर प्र	२० ४६	द प्र	११ ५२	मुद्गरम् ।
	३४	९	२६	10	शनि	कृति प्र	२५ ५२	ए प्र	१६ ३३	८-१३ दिन वृष में चन्द्र । पुत्र एकादशी । छत्र: ।
	३३	१०	२७	11	रवि	रोहि प्र	३१ ४६	द्वा प्र	२३ ११	प्रजापति: । 卐 ७-९ शा कर्क में चन्द्र । गज: ।
	३२	११	२८	12	सोम	मृग प्र	३५ ४	त्रौ प्र	२६ २७	७-२५ रात मिथुन में चन्द्र । ९-५० रात मकर में बुध । आनन्द: ।
	३१	१२	२९	13	भौम	मृग दि	३ ०	च प्र	३१ १७	मासान्त । क्षय: । श्री विवेकानन्द जयन्ती ।
	३०	१३	माघ	14	बुध	आर्द्रा दि	९ २८	पूं प्र	३५ ०	दिन अधिक । ७-२० शा मकर में सूर्य मुहूर्त ४५ समुद्राय । शिशिर संक्रान्ति 卐
	३०	१४	२	15	गुरु	पुन दि	१५ ३६	पू दि	१ ४९	सिद्ध: ।

श्राद्ध :- द्वितीया से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

मध्याह्न :- द्वितीया से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- १ जनवरी पूर्व पश्चिम । २, पश्चिम बिना । ३, उत्तर पश्चिम । ४, पूर्व उत्तर । ५, उत्तर पश्चिम । ६, पूर्व यात्रा । ७, पूर्व पश्चिम । ८, पूर्व पश्चिम । ११, पूर्व उत्तर । १२, पू० बिना । १३, पूर्व दक्षिण । १५, पूर्व पश्चिम यात्रा ।

सप्तर्षि सं० ५०६२ । माघ कृष्णपक्ष । मकर में सूर्य, बुध । मीन में भौम, राहु । कुम्भ में बृहस्पति । वृश्चिक में शुक्र, शनि । कन्या में केतु ।

राष्ट्र	हिज्र	माघ	जन	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	शिशिर ऋतु । उत्तरायण । 16 जनवरी से 29 जनवरी तक ।
१७ २६	१५	३	16	शुक्र	ति	दि	२१	३	प्र	दि	६	१९	उन्मूलम् । मानसम् ।
२८	१६	४	17	शनि	अश्ले	प्र	०	३०	द्वि	दि	९	५१	५-४३ रात सिंह में चन्द्र । ११-१७ दिन से गण्डान्त १२-१८ रात तक ।
२७	१७	५	18	रवि	मघा	प्र	४	६	तृ	दि	१२	१२	संकट चतुर्थी । मुद्गरम् ।
२६	१८	६	19	सोम	पूफा	प्र	६	०	च	दि	१३	२०	महात्मा गान्धी श्राद्ध । २-२ रात कन्या में चन्द्र । ध्वज: ।
२४	१९	७	20	भौम	उफा	प्र	६	५१	प	दि	१३	९	प्रजापत्य: ।
२२	२०	८	21	बुध	हस्त	प्र	६	३१	ष	दि	१?	४६	साहब सप्तमी । आनन्द: ।
२०	२१	९	22	गुरु	चित्र	प्र	५	६	स	दि	९	२१	७-५५ प्रात: तुला में चन्द्र । चर: । ८-५१ तक । काम्य: ।
१७	२२	१०	23	शुक्र	स्वा	प्र	२	४५	अ	दि	५	३३	मुसलम् । ❧ रहीम जयंती । छत्रम् ।
१५	२३	११	24	शनि	वि	दि	२५	१३	न	दि	१	२२	व्यह: । दिन कम । शूलम् ।
१३	२४	१२	25	रवि	अनू	दि	२१	४२	ए	प्र	२५	३०	षडतिला एकादशी । मृत्यु: ।
११	२५	१३	26	सोम	ज्ये	दि	१७	४६	द्वा	प्र	१९	३२	२-२८ दिन धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ । ८-५३ प्रात: से गण्डान्त
८	२६	१४	27	भौम	मूला	दि	१३	४४	त्रो	प्र	१३	३४	१२-५२ दिन तक मूल । ८-३४ दिन मीन में स्वचारी बृहस्पति ।
६	२७	१५	28	बुध	पूषा	दि	९	३८	चं	प्र	७	४८	४-५० दिन मकर में चन्द्र । शिव चतुर्दशी चन्द्रास्त । श्रीवत्स: ।
४	२८	१६	29	गुरु	उषा	दि	५	५५	अ	प्र	२	२२	द्वापरयुग जयंती । सौम्य: ।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से नवमी पहले दिन । एकादशी से अमावसी तक अपने दिन । अपने दिन ।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से तृतीया तक पहले दिन । चतुर्थी, पंचमी अपने दिन । षष्ठीसेनवमी तक पहले दिन । एकादशी से अमावसी तक

यात्रा मुहूर्त :- १६ जनवरी पश्चिम बिना यात्रा ३-४५ दिन तक । १९, पू० बिना । २०, पू० दक्षिण । २१, उत्तर बिना । २५, पू० उत्तर । २६, पूर्व बिना । २७, पूर्व दक्षिण । २८ जनवरी उत्तर बिना यात्रा ।

ई० सं० 1987 । माघ शुक्लपक्ष । मकर में सूर्य । मीन में भौम, बृहस्पति, राहु । कुम्भ में बुध । धनु में शुक्र । वृश्चिक में शनि । कन्या में केतु ।

राष	हिम	माघ	जन	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	शिशर ऋतु । उत्तरायण 30 जनवरी से 13 फरवरी तक ।
१७ २	२९	१७	30	शुक्र	श्रव वि	२ ३४	प्र वि	२३ २७	७-४४ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक आरम्भ । ११-१७ रात कुम्भ में
१६ ५६	३०	१८	31	शनि	शत प्र	३१ ५०	द्वि दि	१६ २१	चन्द्रदर्शन । आनन्द: । बुध, धनु में शुक्र २-४४ दिन । सौम्य: ।
५७	रज	१९	फर्व	रवि	पूभा प्र	३० ४९	तृ दि	१६ ३५	गौरी तृतीया । विद्यारम्भ के लिए उत्तम मुहूर्त १२-३ रात मीन में
५५	२	२०	2	सोम	उभा प्र	३० ५२	च दि	१३ ५३	त्रिपुरा चतुर्थी । मुसलम् । चन्द्र । चर: । जयन्ती । शूलम् ।
५३	३	२१	3	भौम	रेव प्र	३२ १३	पं दि	१२ ४८	१२-२४ रात म गण्डान्त । कुमारषष्ठी व्रत । वसन्त पञ्चमी । मीरा
५१	४	२२	4	बुध	अ प्र	३३ ४२	ष दि	१३ ४	३-३८ प्रात: मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त । १२-५० दिन तक गण्डान्त
४८	५	२३	5	गुरु	भ दि	१ ४	स दि	१४ ३६	मार्तण्ड जयंती । मार्तण्डतीर्थ महान् यज्ञ । मानसम् ।
४६	६	२४	6	शुक्र	भर दि	७ ५६	अ दि	१७ २१	भीष्म अष्टमी । ३-३७ दिनवृष में चन्द्र । मुद्गरम् ।
४४	७	२५	7	शनि	कृति दि	९ ४९	न दि	२१ १०	ध्वज: । बुध मास । बुध वर्ष । मृत्यु: ।
४२	८	२६	8	रवि	रोहि दि	१५ ३३	द दि	२५ ५०	२-३९ रात मिथुन में चन्द्र । जयशंकर प्रसाद जयंती । प्रजापत्य: ।
३९	९	२७	9	सोम	मृग दि	२१ ५२	ए प्र	३ ४७	११-२७ रात मेष में भौम । भीमसेन एकादशी । आनन्द: ।
३७	१०	२८	10	भौम	आर्द्र प्र	१ २९	द्वा प्र	९ ४०	चर: । दत्तात्रेय जयंती । ७-५५ शां से गण्डान्त । १-९ रात
३५	११	२९	11	बुध	पुन प्र	७ ४९	त्रो प्र	१४ ४१	२-२२ दिन कर्क में चन्द्र । मुसलम् । सिंह में चन्द्र । मृत्यु: ।
३३	१२	फा.	12	गुरु	ति प्र	१३ २५	च प्र	१९ ६	मासान्त । यक्षिणी चतुर्दशी । शूलम् ।
३०	१३	२	13	शुक्र	अश्ल प्र	१८ ८	पू प्र	२२ १९	६-१ प्रात: कुम्भ में सूर्य मुहूर्त १५ किनारी । काव पूर्णिमा । श्री

श्राद्ध :- द्वितीया से दशमी तक पहले दिन । एकादशी से पूर्णिमा तक अगले दिन ।

मध्याह्न प्रतिपद् से पंचमी तक अगले दिन । षष्ठी पहले दिन । सप्तमी से पूर्णिमा तक अगले दिन ।

यात्रा मुहूर्त :- ३० जनवरी पश्चिम बिना यात्रा । ३१, पूर्व पश्चिम । १ फरवरी उत्तर पूर्व । २, उत्तर पश्चिम । ३, पूर्व यात्रा । ४, उत्तर बिना । ५, पूर्व पश्चिम ७-३९ प्रात: तक । ७, पू० बिना ११-० दिन से । ८, पूर्व उत्तर । ९ फरवरी पू० बिना यात्रा ।

विक्रमी सं० २०४३। फाल्गुण कृष्णपक्ष। कुम्भ में सूर्य, बुध। मेष में भौम।

मीन में बृहस्पति, राहु। धनु में शुक्र। वृश्चिक में शनि। कन्या में केतु।

राघ	हिज	फा.	फर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	शिशिर ऋतु। उत्तरायण। 14 फरवरी 27 फरवरी तक।
२८	१४	३	14	शनि	मघा	प्र	२१	४५	प्र	प्र	२४	३६	काम्य:। ७-३१ दिन तक गण्डान्त
२६	१५	४	15	रवि	पूफा	प्र	२४	१०	द्वि	प्र	२५	३२	छत्रम्।
२४	१६	५	16	सोम	उफा	प्र	२५	१६	तृ	प्र	२५	८	६-४३ दिन कन्या में चन्द्र। श्रीवत्स:।
२२	१७	६	17	भौम	हस्त	प्र	२५	१४	च	प्र	२३	३३	संकट चतुर्थी। सौम्य:।
१९	१८	७	18	बुध	चित्रा	प्र	२४	१२	प	प्र	२०	५५	३-५० दिन तुला में चन्द्र। कालदण्ड:।
१७	१९	८	19	गुरु	स्वा	प्र	२१	५१	ष	प्र	१६	४२	धूम्र:
१४	२०	९	20	शुक्र	वि	प्र	१६	१	स	प्र	१२	२५	७-५२ रात वृश्चिक में चन्द्र। मातङ्ग:।
११	२१	१०	21	शनि	अनू	प्र	१५	२७	अ	प्र	७	१४	होराष्टमी। चक्रेश्वर यात्रा। अमृतम्।
८	२२	११	22	रवि	ज्ये	प्र	११	३१	न	प्र	१	३६	१०-३८ रात धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ। ५-३ रात से गण्डान्त। काण:
६	२३	१२	23	सोम	मूला	प्र	७	२२	द	दि	२३	३१	३-७ रात तक मूल। प्रलापक:। ४-१ रात तक गण्डान्त।
३	२४	१३	24	भौम	पूषा	प्र	३	१३	ए	दि	१७	४१	१२-५७ रात मकर में शुक्र। विजया एकादशी। मैत्रम्।
०	२५	१४	25	बुध	उषा	दि	२७	१६	द्वा	दि	१२	०	३-५२ दिन मकर में शुक्र। शिवरात्रि एक। वज्रम्। ध्वज:।
५८	२६	१५	26	गुरु	श्रव	दि	२३	४९	त्रो	दि	६	४१	३-४८ रात कुम्भ में चन्द्र और पंचक प्रारम्भ। शिवचतुर्दशी एक।
५५	२७	१६	27	शुक्र	धनि	दि	२०	५८	चं	दि	१	५२	उपह:। दिन कम। प्रजापत्य:।

श्राद्ध :- प्रतिपद् से दशमी अपने दिन। एकादशी से चतुर्दशी तक पहले दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से द्वादशी तक अपने दिन। त्रयोदशी चतुर्दशी पहले दिन।

यात्रा मुहूर्त :- १५ फरवरी पू० उत्तर यात्रा। १६, उत्तर बिना। १७, पू० दक्षिण। २२, पूर्व उ०। २३, उत्तर बिना। २४, पूर्व दक्षिण
२५, पू० दक्षिण। २६, पू० पश्चिम। २७ फरवरी पू० उत्तर यात्रा।

विक्रमी सं० २०४३ । फाल्गुण शुक्लपक्ष । कुम्भ में सूर्य, बुध । मेष में भौम

मीन में बृहस्पति, राहु । मकरमें शुक्र । वृश्चिक में शनि । कन्या में केतु ।

	गाघ	हिजं	फा.	फर	वार	नक्षत्र		घड़ी पल	तिथि		घड़ी पल	शिशर ऋतु । उत्तरोयण । 28 फरवरी से 15 मार्च तक ।
	५२	२८	१७	28	शनि	शत	दि	१८ ५१	प्र	प्र	२६ १२	आनन्द: ।
१५	५०	२६	१८	मार्च	रवि	पूभा	दि	१८ २३	द्वि	प्र	२३ ५४	८-० दिन **मीन में चन्द्र । परमहंस रामकृष्ण जयन्ती** । चर: ।
	४८	चन्द्र	१६	2	सोम	उभा	दि	१८ ३१	तृ	प्र	२२ ४८	मुसलम् । 　　　१-१३ रात तक । शूलम् ।
	४४	२	२०	3	भौम	रेव	दि	१८ ३६	च	प्र	२२ ५६	२-१७ दिन **मेष में चन्द्र और पंचक समाप्त** । ८-६ प्रातः से गण्डान्त
	४२	३	२१	4	बुध	अ	दि	२० ५८	पं	प्र	२४ २४	मृत्यु: ।
	३६	४	२२	5	गुरु	भर	दि	२४ ३३	ष	प्र	२७ ६	१०-५६ रात **वृष में चन्द्र** । कुमारषष्ठी व्रत । काम्य: ।
	३६	५	२३	6	शुक्र	कृति	प्र	० २३	स	प्र	३० ५१	**शुक्र मास** । छत्रम् ।
	३४	६	२४	7	शनि	रोहि	प्र	५ ५४	अ	प्र	३१ ८	दिन अधिक । **तैलाष्टमी** । श्रीवत्स: ।
	३१	७	२५	8	रवि	मृग	प्र	१२ २	अ	दि	४ ३१	**होलाष्टमी** । १२-५३ दिन **मिथुन में चन्द्र** । सौम्य: ।
	२८	८	२६	9	सोम	आर्द्र	प्र	१८ २६	न	दि	६ ३२	कालदण्ड: । 　　　चन्द्र । **होली पूर्णिमा**
	२६	६	२७	10	भौम	पुन	प्र	२४ ४७	द	दि	१४ ४८	६-३८ रात **कर्क में चन्द्र** । स्थिर: । 　　　**सौम्त** । काम्य: ।
	२३	१०	२८	11	बुध	ति	प्र	३० ७	ए	दि	१६ ४४	**अमला एकादशी** । मातंग: ।
	२०	११	२६	12	गुरु	अश्ले	प्र	३० ४०	द्वा	दि	२४ ०	२-४ रात से गण्डान्त । ब्रह्मस्वाप । अमृतम् । 　　　सौन्त मृत्यु: ।
	१८	१२	३०	13	शुक्र	अश्ले	दि	४ ४३	त्री	दि	२७ १६	८-३० दिन **सिंह में चन्द्र** । २-५४ दिन तक गण्डान्त । **यालभञ्जन** ।
	१५	१३	चैत्र	14	शनि	मघा	दि	८ ३८	च	दि	२६ २४	१-१८ रात **मीन में सूर्य** मुहूर्त ३० किनारी । **बसन्त ऋतु आरम्भ** ।
	१२	१४	२	15	रवि	पूफा	दि	११ २५	पू	प्र	० ४१	२-३७ रात **बृहस्पति अस्त** । संक्रान्ति व्रत । ५-२३ दिन कन्या में

श्राद्ध :—प्रतिपद् से अष्टमी तक अपने दिन नवमी से चतुर्दशी तक पहले दिन पूर्णिमा अपने दिन ।

[illegible] :—प्रतिपद् से अष्टमी तक अपने दिन, नवमी दशमी पहले दिन, एकादशी से पूर्णिमा तक अपने दिन ।

यात्रा मुहूर्त :—28 फरवरी उत्तर-पश्चिम, 1 मार्च पूर्व उत्तर, 2 मार्च उत्तर-पश्चिम, 3 मार्च पूर्व 4 मार्च उत्तर विना 3-12 दिन तक । 7 पूर्व विना । 5 पूर्व उत्त० 10 पूर्व० दक्षिणी 11 मार्च उत्त० विना । 15 मार्च उत्तर. पश्चिम यात्रा ।

विक्रमी सं० २०४३ । चैत्र कृष्णपक्ष। मीन में सूर्य, बृहस्पति, राहु । मेष में भौम । कुम्भ में बुध। मकर में शुक्र। वृश्चिक में शनि। कन्या में केतु।

राष्ट्र	हिज	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र	घड़ी पल	तिथि	घड़ी पल	(ग्रहसंचार बजे और मिन्टों में)
१०	१५	३	16	सोम	उफा दि	१२ ५५	प्र प्र	० १०	श्रीवत्स:।
७	१६	४	17	भौम	हस्त दि	१३ १०	द्वि दि	२८ ८	११-४३ रात तुला में चन्द्र। सौम्य:।
४	१७	५	18	बुध	चित्र दि	१६ २०	तृ दि	२५ २०	संकट चतुर्थी। कालदण्ड:
२	१८	६	19	गुरु	स्वा दि	१० ३०	च दि	२१ ३४	३-१४ रात वृश्चिक में चन्द्र। स्थिर:।
०	१९	७	20	शुक्र	विशा दि	७ ५१	पं दि	१७ ०	८-३८ दिन को दिन रात बराबर। नवरोज। मातंग:।
५७	२०	८	21	शनि	अनू दि	४ ३४	ष दि	११ ५३	१-१२ रात से गण्डान्त। अमृतम्। ● १२-७ दिन तक गण्डान्त। काणः
५४	२१	९	22	रवि	ज्येष्ठादि	० ५६	स दि	६ १५	६-५१ प्रातः से धनु में चन्द्र और मूल प्रारम्भ १२-१४ रात कुम्भ में शुक्र ●
५२	२२	१०	23	सोम	पूषा प्र	२२ ०८	अ दि	० ३२	ध्वज:। ५-१० प्रातः तक मूल उन्मूलम्।
४९	२३	११	24	भौम	उषा प्र	२० १	द प्र	१८ २०	०-३४ दिन से मकर में चन्द्र। मानसम्।
४७	२४	१२	25	बुध	श्रव प्र	१४ ४३	ए प्र	१२ ४७	पापमोचनी एकादशी। छत्रम्।
४४	२५	१३	26	गुरु	धनि प्र	११ ३६	द्वा प्र	७ ५२	६-२४ प्रातः वृष में भौम। ११-५१ दिन कुम्भ में चन्द्र और पंचक प्रारम्भ ❀
४१	२६	१४	27	शुक्र	शत प्र	६ १२	त्रो प्र	३ ३८	सौम्य:।
३९	२७	१५	28	शनि	पूभा प्र	६ ४२	चं प्र	० १७	३-५० दिन मीन में चन्द्र चन्द्रास्त। चैत्रचतुर्दशी। कालदण्ड:।
३६	२८	१६	29	रवि	उभा प्र	७ १४	अ दि	२८ ४६	विचारनागयात्रा। जनकपुरयात्रा। श्रीभट्टदिवस। स्थिर: ❀ श्रीवत्स:।

श्राद्ध :- प्रतिपद् द्वितीय अपने दिन तृतीया से अष्टमी तक पहले दिन। दशमी से अमावसी तक अपने दिन।

मध्याह्न :- प्रतिपद् से पंचमी तक अपने दिन। षष्ठी सप्त० अष्टमी पहले दिन। दशमी से अमावसी तक अपने दिन।

यात्रा मुहूर्त :- १६ मार्च पूर्व विना यात्रा। १७ मार्च पूर्व दक्षिण। २० मार्च पश्चिम विना यात्रा ९-४० दिन से। २१ मार्च पू० विना। २२पू उत्तर यात्रा। २३, पू० विना। २४,पूर्व दक्षिण २५, उत्तर विना। २६, पूर्व पश्चिम। २७, पू० उत्तर। मार्च ३० पू० विना

पञ्चाङ्ग

तथा

मुहूर्त—प्रकरण

सप्तर्षि सं० ५०६२ विक्रमी सं० २०४३

ईस० 1986

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय की पुस्तकें तथा हिन्दी उर्दू पंचांग निम्नलिखित अड्रेस पर प्रायः हर समय मिल सकते हैं :—

विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय ब्रिजबिहारा

गोविन्द नवधारा गणपतयार श्री नगर

२०४३ वि० एक दृष्टि में

अप्रैल
10 नवरेह
13 वैशाख
14 वैशाखी व्रत
17 दुर्गाष्टमी
18 रामनवमी
22 महावीर जयन्ती
24 चन्द्रग्रहण

मई
3 लक्ष्मी नारायण यज्ञ
4 वल्लभाचार्य जयन्ती
5 स्वामी लक्ष्मण जी जन्मोत्सव
7 रविन्द्रनाथ टैगोर जयन्ती
11 परशुराम जयन्ती
11 छत्रपति शिवाजी जयन्ती
12 अक्षिछन तृतीया (कूटिया यात्रा)
14 शंकराचार्य जयन्ती
15 रामानुजाचार्य जयन्ती
18 सीता जयन्ती
20 कुमटुवल यात्रा

मई
22 गणेश चतुर्दशी
23 बुध जयन्ती

जून
3 भद्रकाली जयन्ती
7 वटसावित्री
7 मुम्बल हरीश्वर यात्रा
15 ज्येष्ठ अष्टमी (क्षीर भवानी
22 आर्द्र आरम्भ

जुलाई
13 विजया सप्तमी
30 ज्वाला चतुर्दशी
21 छड़ी पहला स्नान (मार्तण्ड
23 भगवान तिलक जयन्ती

अगस्त
12 तुलसीदास जयन्ती
13 सिंघ आरम्भ
19 अमरनाथ यात्रा

अगस्त
25 चन्दन षष्ठी
27 जन्माष्टमी

सितम्बर
4 दरब अमावसी
9 करनक तीर्थ श्राद्ध
10 ब्रह्मसरोवर श्राद्ध
11 गंगाष्टमी
14 गौतमनाग यात्रा
16 वेथवोतुर यात्रा
17 अनन्तचतुर्दशी
17 अनन्तनाग यात्रा
17 हुरद आरम्भ
18 पितृपक्ष आरम्भ
23 दिनरात बराबर

अक्टूबर
2 गान्धी जयन्ती
2 लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती
3 पितृमावसी

अक्टूबर
4 नवदुर्गारम्भ
11 दुर्गाष्टमी
12 दसेरा
17 वाल्मीकी जयन्ती
31 इन्द्रागांधी बलिदान दिवस

नवम्बर
1 महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस
12 हरिबोधिनी एकादशी
14 नहरू जयती

दिसम्बर
17 मातृका पूजा
21 उत्तरायण
25 महाकाली जयन्ती
26 आन्देश्वर भैरव जयन्ती
30 यक्षामावसी

शुक्रास्त
कार्तिक कृष्णपक्ष दशमी 28 अक्टूबर से
कार्तिक शुक्लपक्ष दशमी तक

जनवरी

13 विवेकानन्द जयन्ती
14 शिशर संक्रान्ति
17 रहीम जयन्ती
28 शिव चतुर्दशी

फरवरी

1 गौरी तृतीया
3 वसन्तपंचमी
3 मीराजयन्ती
5 मार्तण्ड जयन्ती
6 भीष्माष्टमी
8 जयशङ्कर प्रसाद जयन्ती
12 यक्षिणी चतुर्दशी
13 दत्तात्रेय जयन्ती
21 होराष्टमी
25 शिवरात्रि
26 शिवचतुर्दशी

मार्च

1 परमहंस रामकृष्ण जयन्ती
14 गोत

विजया सप्तमी

मार्तण्डतीर्थ यात्रा

यह महत् पर्व आषाढ़ शुक्लपक्ष षष्ठी रविवार तदानुसार 13 जुलाई 1986 को 1 बजे 21 मिनट दिन से आरम्भ होगा।

काश्मीर का प्राचीन तथा सुन्दर महान् तीर्थ

गौतम नाग

गौतम नाग (अनन्तनाग) में श्री स्वामी माधवदास जी के अथाह परिश्रम से एक विशाल मन्दिर बन चुका है जिसमें इस वर्ष गौतमऋषि की प्रतिष्ठा होने वाली है जिसके सम्बन्ध में एक विशाल यज्ञ रचाने का परोग्राम है जिस परोग्राम से शीघ्र ही जनता को सूचित किया जायेगा।

उमानगरी श्मारी आँगन

यहाँ हर वर्ष स्वामी स्वयमानन्द जी की अध्यक्षता में भाद्रशुक्लपक्ष अष्टमी को एक विशाल यज्ञ होता है जिस में सहस्रों श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं, इस वर्ष के यज्ञ के कार्यक्रम के विषय में भी यथावत् शीघ्र ही जनता को सूचित किया जायेगा।

श्री पूर्णराज भैरव यज्ञ

यहां कार्तिक शुक्लपक्ष पूर्णिमा को एक महान् यज्ञ होगा जिसके परोग्राम के विषय में जल्दी ही जनता को सूचित किया जायेगा।

शुक्रास्त

कार्तिक कृष्णपक्ष दशमी 28 अक्टूबर से
कार्तिक शुक्लपक्ष दशमी 11 नवम्बर तक (हर कार्य के लिए निषेध)

खुजबाग बारामुला में यज्ञ

स्वामी नटराज जी की अध्यक्षता में

11 अगस्त को आरम्भ होकर
12 अगस्त को समाप्त

हिन्दी सुन्दर छपाई के लिए विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रेस तालाब तिलू (जम्मू) को याद रखिये।

वृत–सूची

संक्रान्ति व्रत

वैशाख 14 अप्रैल सोमवार
ज्येष्ठ 15 मई गुरुवार
आषाढ़ 15 जून रविवार
श्रावण 17 जुलाई गुरुवार
भाद्र 17 अगस्त रविवार
असूज 17 सितम्बर बुधवार
कार्तिक 18 अक्टूबर शनिवार
मार्ग 16 नवम्बर रविवार
पौष 16 दिसम्बर मंगलवार
माघ 14 जनवरी बुधवार
फाल्गुण 13 फरवरी शुक्रवार
चैत्र 15 मार्च शनिवार

अष्टमी व्रत

'शुक्ल पक्ष'

चैत्र 17 अप्रैल गुरुवार
वैशाख 17 मई शनिवार
ज्येष्ठ 15 जून रविवार
आषाढ़ 15 जुलाई मंगलवार
श्रावण 13 अगस्त बुधवार
भाद्र 11 सितम्बर गुरुवार
असूज 11 अक्टूबर शनिवार
कार्तिक 9 नवम्बर रविवार
मघर 8 दिसम्बर सोमवार
पौष 7 जनवरी बुधवार
माघ 6 फरवरी शुक्रवार
फाल्गुन 8 मार्च रविवार

कुमार षष्ठी व्रत

शुक्लपक्ष

चैत्र 15 अप्रैल मंगलवार
वैशाख 14 मई बुधवार
ज्येष्ठ 13 जून शुक्रवार
आषाढ़ 12 जुलाई शनिवार
श्रावण 11 अगस्त सोमवार
भाद्र 9 सितम्बर भोमवार
असूज 9 अक्टूबर गुरुवार
कार्तिक 7 नवम्बर शुक्रवार
मगर 6 दिसम्बर शनिवार
पौष 5 जनवरी सोमवार
माघ 3 फरवरी भोमवार
फाल्गुन 5 मार्च गुरुवार

संकट चतुर्थी व्रत

कृष्णपक्ष

वैशाख 27 अप्रैल रविवार
ज्येष्ठ 26 मई सोमवार
आषाढ़ 25 जून बुधवार
श्रावण 25 जुलाई शुक्रवार
भाद्र 23 अगस्त शनिवार
असूज 22 सितम्बर सोमवार
कार्तिक 21 अक्टूबर भोमवार
मगर 20 नवम्बर गुरुवार
पौष 19 दिसम्बर शुक्रवार
माघ 18 जनवरी रविवार
फाल्गुन 17 फरवरी भोमवार
चैत्र 18 मार्च बुधवार

अमावसी व्रत

वैशाख 18 अप्रैल गुरुवार
ज्येष्ठ 7 जून शनिवार
आषाढ़ 7 जून शनिवार
आषाढ़ 7 जुलाई सोमवार
श्रावण 5 अगस्त भोमवार
भाद्र 4 सितम्बर गुरुवार
असूज 3 अक्टूबर शुक्रवार
कार्तिक 2 नवम्बर रविवार
मघर 1 दिसम्बर सोमवार
पौष 31 दिसम्बर बुधवार
माघ 29 जनवरी गुरुवार
फाल्गुण 27 फरवरी शुक्रवार
चैत्र 29 मार्च रविवार

पूर्णिमा व्रत

चैत्र 24 अप्रैल गुरुवार
वैशाख 23 मई शुक्रवार
ज्येष्ठ 22 जून रविवार
आषाढ़ 21 जुलाई सोमवार
श्रावण 19 अगस्त भोमवार
भाद्र 18 सितम्बर गुरुवार
असूज 17 अक्टूबर शुक्रवार
कार्तिक 16 नवम्बर रविवार
मघर 16 दिसम्बर मंगलवार
पौष 15 जनवरी गुरुवार
माघ 13 फरवरी शुक्रवार
फाल्गुन 15 मार्च रविवार

यज्ञोपवीत सं० २०४३

घंटे और मिन्टों में

वैशाख कृष्ण पक्ष

27 अप्रैल तृतीय रविवार
6-41 प्रातः से
8-34 प्रातः तक (वृ)
8-34 दिन से
10-23 दिन तक (मि)

वैशाख शुक्ल पक्ष

11 मई द्वितीया रविवार
9-24 दिन से
9-53 दिन तक (मि)

12 मई तृतीया सोमवार
5-41 प्रातः से
7-34 दिन तक (वृ)

19 मई दशमी सोमवार
7-14 प्रातः से
9-29 दिन तक (मि)
11-54 प्रातः से
2-18 दिन तक (सि)

21 मई द्वादशी बुधवार
7-2 प्रातः से
9-13 दिन तक (मि)
11-42 दिन से
2-6 दिन तक (सि)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

25 मई द्वितीया रविवार
6-45 प्रातः से
9-56 दिन तक (मि)
11-25 दिन से
1-49 दिन तक (सि)

28 मई पंचमी बुधवार
6-32 प्रातः से
8-44 दिन तक (मि)
11-12 दिन से
1-36 दिन तक (सि)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

18 जून एकादशी बुधवार
10-0 दिन से
12-14 दिन तक (सि)

आषाढ़ कृष्णपक्ष

26 जून पंचमी गुरुवार
9-16 दिन से
11-39 दिन तक (सि)

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

जुलाई 9 द्वितीया बुधवार
9-3 दिन से
11-26 दिन तक (सि)

13 जुलाई षष्ठी रविवार
8- 2 दिन से
10-26 दिन तक (सि)
10-26 दिन से
12-49 दिन तक (क)

आश्विन शुक्लपक्ष

5 अक्टूबर द्वितीया रविवार
7-39 प्रातः से
10-6 दिन तक (तु)
12-27 दिन से
2-29 दिन तक (धं)

6 अक्टूबर तृतीया सोमवार
7-36 प्रातः से
10-2 दिन तक (तु)

8 अक्टूबर पंचमी बुधवार
7-28 प्रातः से
9-55 दिन तक (तु)
12-16 दिन से
2-18 दिन तक (धं)

12 अक्टूबर दशमी रविवार
7-13 प्रातः से
9-40 दिन तक (तुं)
12-1 दिन से
2-3 दिन तक (धं)

13 अक्टूबर एकादशी सोमवार
7-10 प्रातः से
9-36 दिन तक (तुं)
11-57 दिन से
2-0 दिन तक (धं)

कार्त्तिक कृष्णपक्ष

22 अक्टूबर पंचमी बुधवार
11-23 दिन से
1-26 दिन तक (धं)

23 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
7-3 प्रातः से
8-58 दिन तक (तुं)

कार्तिक शुक्लपक्ष

7 नवम्बर षष्ठी शुक्रवार
10-20 दिन से
11-23 दिन तक (धं)

12 नवम्बर एकादशी बुधवार
10-0 दिन से
12-3 दिन तक (धं)

14 नवम्बर त्रयोदशी शुक्रवार
9-52 दिन से
11-55 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्णपक्ष

19 नवम्बर तृतीया बुधवार
9-31 दिन से
11-35 दिन तक (धं)
11-35 दिन से
1-14 दिन तक (म)

21 नवम्बर पंचमी शुक्रवार

9-23 दिन से
11-27 दिन तक (धं)
11-27 दिन से
1-6 दिन तक (मं)

मार्ग शुक्ल पक्ष

10 दिसम्बर दशमी बुधवार
8-3 प्रातः से
10-6 दिन तक (धं)

11 दिसम्बर एकादशी गुरुवा
7-58 प्रातः से
10-1 दिन तक (धं)
10-1 दिन से
11-40 दिन तक (म)

12 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवार
7-54 प्रातः से
9-57 दिन तक (धं)
9-57 दिन से
11-35 दिन तक (मं)

माघ कृष्णपक्ष

16 जनवरी प्रतिपद शुक्रवार
10-1 दिन से
10-23 दिन तक (कुं)
11-42 दिन से
1-12 दिन तक (मं)

माघ शुक्लपक्ष

4 फरवरी षष्ठी बुधवार
7-43 प्रातः से
9-6 दिन तक (कुं)
9-6 दिन से
10-25 दिन तक (मी)

8 फरवरी दशमी रविवार
7-28 प्रातः से
8-50 दिन तक (कुं)
8-50 दिन से
10-9 दिन तक (मी)

9 फरवरी एकादशी सोमवा
7-24 प्रातः से
8-46 दिन तक (कुं)
8-46 दिन से
10-9 दिन तक (मी)

11 फरवरी त्रयोदशी बुधवा
7-16 प्रातः से
8-38 दिन तक (कुं)
8-38 दिन से
9-57 दिन तक (मी)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

मार्च पंचमी बुधवार
7-14 प्रातः से
8-33 दिन तक (मी)
10-3 दिन से
11-56 दिन तक (वृ)

विवाह मुहूर्त

संo ५०६२

सप्तर्षि

विवाह मुहूर्त

1986

चैत्र शुक्लपक्ष

19 अप्रैल दशमी शनिवार
11-19 रात से
1-22 रात तक (धं)
1-22 रात से
3-1 रात (मं)
3-1 रात से
4-28 रात तक (कु)
4-28 रात से
5-43 रात तक (मी)

20 अप्रैल एकादशी
9-2 दिन से 11-17 दिन तक (मि)
11-17 दिन से 1-42 दिन तक (क)

21 अप्रैल द्वादशी सोमवार
2-0 दिन से
4-2 दिन तक (सिं)
2-53 रात से
4-16 रात तक (कु)

23 अप्रैल चतुर्दशी बुधवार
6-58 प्रात से
8-51 दिन तक (वृ)
11-5 दिन से
12-30 दिन तक (क)

वैशाख कृष्णपक्ष

25 अप्रैल प्रतिपद शुक्रवार
6-49 प्रातः से
8-42 दिन तक (वृ)

28 अप्रैल चतुर्थी सोमवार
10-45 दिन से
1-10 दिन तक (क)
1-10 दिन से
3-34 दिन तक (सिं)
3-34 दिन से
5-57 दिन तक (क)
12-47 रात से
2-25 रात तक (मं)

2-25 रात से
3-48 रात तक (सि)
30 अप्रैल सप्तमी बुधवार
10-37 दिन से
1-2 दिन तक (क)
1-2 दिन से
3-26 दिन तक (सि)
3-26 दिन से
5-49 दिन तक (कं)
2-17 रात से
3-40 रात तक (कुं)
3-40 रात से
4-59 रात तक (मी)
1 मई अष्टमी गुरुवार
10-30 दिन से
12-58 दिन तक (क)
12-58 दिन से
3-22 दिन तक (सि)
3-22 दिन से
5-45 दिन तक (कं)

2-13 रात से
3-36 रात तक (कुं)
3-36 रात से
4-55 रात तक (मी)
2 मई नवमी शुक्रवार
10-29 दिन से
12-54 दिन तक (क)
12-54 दिन से
3-18 दिन तक (सि)
3-18 पिन से
5-41 दिन तक (कं)
4 मई एकादशी रविवार
1-0 रात से
2-1 रात तक (मं)
2-1 रात से
3-24 रात तक (कुं)
5 मई द्वादशी सोमवार
10-17 दिन से
12-42 दिन तक (क)

12-42 दिन से
3-6 दिन तक (सि)
3-6 दिन से
5-29 दिन तक (कं)
12-19 रात से
1-57 रात तक (मं)
1-57 रात से
3-20 रात तक (कुं)
7 मई चतुर्दशी बुधवार
10-9 दिन से
12-34 दिन तक (क)
वैशाख शुक्लपक्ष
11 मई द्वितीया रविवार
9-53 दिन से
12-18 दिन तक (क)
12-18 दिन से
2-42 दिन तक (सि)
2-42 दिन से
5-5 दिन तक (मं)
11-55 रात से
1-34 रात तक (कु)

1-34 रात से
2-56 रात तक (कुं)
2-56 रात से
4-15 रात तक (मी)
12 मई तृतीया सोमवार
9-49 दिव से
12-14 दिन तक (क)
12-14 दिन से
2-38 दिन तक (सि)
2-38 दिन से
3-50 दिन तक (कं)
16 मई सप्तमी शुक्र
11-39 रात से
1-18 रात तक (मं)
1-18 रात से
2-40 रात तक (कुं)
2-40 रात से
3-59 रात तम (मी)
17 मई अष्टमी शनिवार
9-33 दिन से
11-58 दिन तक (क)

2-22 दिन मे
4-45 दिन तक (कं)
18 मई नवमी रविवार
11-31 रात से
1-10 रात तक (मं)
2-32 रात से
3-51 रात तक (मी)
19 मई दशमी सोमवार
9-25 दिन से
11-50 दिन तक (क)
11-50 दिन से
2-4 दिन तक (सि)
21 मई द्वादशी बुधवार
9-13 रिन से
11-42 दिन तक (क)
11-42 दिन से
2-6 दिन तक (सि)
22 मई त्रयोदशी गुरुवार
9-9 दिन से
11-38 दिन तक (क)
11-38 दिन तक

विवाह मुहूर्त

11-38 दिन स
2-2 दिन तक (सिं)
2-20 दिन से
4-25 दिन तक (कं)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

25 मई द्वितीया रविवार
1-2 दिन से
1-49 दिन तक (सिं)
1-49 दिन से
4-12 दिन तक (कं)
12-40 रात से
2-2 रात तक (कुं)
2-2 रात से
3-21 रात तक (मी)

26 मई तृतीया सोमवार
6-40 दिन से
8-51 दिन तफ (मि)

28 मई पंचमी बुधवार
6-32 प्रातः से
8-44 दिन तक (मि)
11-12 दिन से
1-36 दिन तक (सिं)
1-36 दिन से
3-59 दिन तक (कं)
1-50 रात से
3-9 रात तक (मी)

29 मई षष्ठी गुरुवार
6-28 प्रातः से
8-39 दिन तक (मि)
8-39 दिन से
11-8 दिन तक (क)
11-8 यिन से
1-31 दिन तक (सिं)
1-31 दिन से
3-55 दिन तक (कं)
1-45 रात से
3-3 रात तक (मी)

30 मई सप्तमी शुक्रवार
6-24 दिन से
7-52 दिन तक (मि)

1 जून नवमी रविवार
6-15 दिन से
8-26 दिन तक (मि)
8-26 दिव से
10-55 दिन तक (क)
10-55 दिन से
1-18 दिन तक (मि)
1-18 दिन से
3-42 दिन तक (कं)
12-10 रात से
1-32 रात तक (कुं)

2 जून दशमी रविवार
6-10 प्रातः से
8-21 दिन तक (मि)
8-21 दिन से
10-50 दिन तक (क)
10-50 दिन से
1-14 दिन तक (सिं)
1-14 दिन से
3-37 दिन तक (कं)
12-6 रात से
1-28 रात तक (कुं)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

13 जून षष्ठी शुक्रवार
5-27 दिन से
7-43 दिन तक (मि)
12-31 दिन से
2-54 दिन तक (कं)
7-41 रात से
9-44 रात तक (धं)
11-22 रात से
12-45 रात तक (कुं)

16 जून नवमी सोमवार
9-59 दिन से
12-22 दिन तक (मि)
12-22 दिन से
2-46 दिन तक (कं)
11-14 रात से
12-36 रात तक (कुं)
12-36 रात से
1-56 रात तक (मी)

18 जून एकादशी बुधवार
10-0 दिन से
12-14 दिन तक (सिं)
12-14 दिन से
2-37 दिन तक (कं)
11-6 रात से
12-28 रात तक (कुं)
12-28 रात से
1-38 रात तक (मी)

21 जून चतुर्दशी शनिवार
10-53 रात से
12-15 रात तक (कुं)
12-15 रात से
1-34 रात तक (मी)

22 जून पूर्णिमा रविवार
9-33 दिन से
11-57 दिन तक (मि)
11-57 दिन से
2-20 दिन तक (कं)

आषाढ़ कृष्णपक्ष

25 जून चतुर्थी बुधवार
9-22 दिन से

विवाह मुहूर्त

11-44 दिन तक (मि)
11-44 दिन से
2-7 दिन तक (कं)
11-58 रात से
1-17 रात तक (मी)
26 जून पंचमी गुरुवार
9-16 दिन से
11-39 दिन तक (सि)
11-39 दिन से
2-3 दिन तक (कं)
11-53 रात से
1-12 रात तक (मी)
28 जून सप्तमी शनिवार
10-22 रात से
11-15 रात तक (कुं)
11-45 रात से
1-14 रात तक (मी)
29 जून अष्टमी रविवार
9-3 दिन से
11-26 दिन तक (सि)
11-26 दिन से
1-50 दिन तक (कं)
10-14 रात से
11-36 रात तक (कुं)
30 जून नवमी सोमवार
8-58 दिन से
11-22 दिन तक (सि)
11-22 दिन से
1-45 दिन तक (कं)
10-14 रात से
11-36 रात तक (कुं)
11-36 रात से
12-55 रात तक (मी)
5 जुलाई त्रयोदशी शनि०
8-37 दिन से
11-1 दिन तक (सि)
11-1 दिन से
1-24 दिन तक (कं)

आषाढ़ शुक्लपक्ष

10 जुलाई तृतीया गुरुवार
9-31 रात से
10-53 रात तक (कुं)
10-53 रात से
12-12 रात तक (मी०)
11 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार
10-35 दिन से
12-55 दिन तक (कं)
12 जुलाई पंचमी शनिवार
9-22 रात से
10-40 रात तक (कं)
10-42 रात से
12-3 रात तक (मी)
13 जुलाई षष्ठी रविवार
8-2 दिन से
10-26 दिन तक (सि)
10-26 दिन से
12-49 दिन तक (कं)
14 जुलाई सप्तमी सोमवार
7-58 प्रातः से
10-22 दिन तक (सि)
10-22 दिन से
10-35 रात तक (कं)
9 जुलाई त्रयोदशी शनिवार
7-41 दिन से
10-5 दिन तक (सि)
10-5 दिन से
12-28 दिन तक (कं)
10-19 रात से
11-38 रात तक (मी)

श्रावण कृष्णपक्ष

23 जुलाई द्वितीया बुधवार
7-24 दिन से
9-48 दिन तक (सि)
9-48 दिन से
12-11 दिन तक (कं)
26 जुलाई पंचमी शनिवार
7-12 प्रातः से
9-36 दिन तक (सि)
9-36 दिन से
11-59 दिन तक (कं)
27 जुलाई षष्ठी रविवार
7-8 प्रातः से
9-32 दिन तक (सि)
9-32 दिन से
11-55 दिन तक (कं)
9-46 रात से
11-5 रात तक (मी)
28 जुलाई सप्तमी सोमवार
7-4 प्रातः से
9-28 दिन तक (सि)
9-28 दिन से
11-51 दिन तक (कं)
9-42 रात से
11-1 रात तक (मी)
31 जुलाई दशमी गुरुवार
8-25 दिन से
9-16 दिन तक (सि)
9-16 दिन से
11-39 दिन तक (कं)
9-30 रात से
10-49 रात तक (मी)
अगस्त एकादशी शुक्रवार
6-48 प्रातः से
9-12 दिन तक (सि)

9-12 दिन से
11-35 दिन तक (कं)
9-26 दिन से
10-45 दिन तक (मी)
2 अगस्त द्वादशी शनिवार
6-44 प्रातः से
9-8 दिन तक (मि)
9-8 दिन से
11-31 दिन तक (कं)

श्रावण शुक्ल पक्ष

7 अगस्त द्वितीया गुरुवार
8-48 दिन से
11-10 दिन तक (क)
7-39 रात से
9-2 रात तक (कुं)
8 अगस्त तृतीया शुक्रवार
10-17 रात से
10-47 रात तक (मे)
9 अगस्त चतुर्थी शनिवार
6-16 प्रातः से
8-40 दिन तक (मि)

7-31 रात से
8-54 रात तक (कुं)
10 अगस्त पंचमी रविवार
6-12 प्रातः से
8-36 दिन तक (सि)
11 अगस्त षष्ठी सोमवार
6-8 प्रातः से
8-32 दिन तक (मि)
8-22 दिन से
10-55 दिन तक (क)
15 अगस्त दशमी शुक्रवार
7-12 रात से
8-34 रात तक (कुं)

आश्विन शुक्लपक्ष

5 अक्टूबर द्वितीया रविवार
12-27 दिन से
2-29 दिन तक (धं)
10-12 रात से
12-28 रात तक (मि)
9 अक्टूबर षष्ठी गुरुवार
7-25 प्रातः से

9-51 दिन तक (तु)
3-53 दिन से
5-15 दिन तक (कुं)
9-58 रात से
12-13 रात तक (मि)
2-38 रात से
5-1 रात तक (मि)
12 अक्टूबर दशमी रविवार
7-13 प्रातः से
9-40 दिन तक (तुं)
12-1 दिन से
2-3 दिन तक (ध)
3-42 दिन से
5-4 दिन तक (कुं)
9-45 रात से
12-2 रात तक (मि)
2-26 रात से
4-50 रात तक (सि)
13 अक्टूबर एकादशी सोमव
7-10 प्रातः से
9-36 दिन तक (तु)

15 अक्टूबर त्रयोदशी बुधव
10-52 रात से
11-50 रात तक (मि
16 अक्टूबर चतुर्दशी गुरुवा
6-59 प्रातः से
9-25 दिन तक (तु)
11-47 दिन से
1-48 दिन तक (धं)

कार्तिक कृष्णपक्ष

20 अक्टूबर तृतीया सोमवार
6-2 रात से
6-44 रात तक (क)
22 अक्टूबर पंचमी बुद्धवार
11 23 दिन से
1-26 दिन तक (धं)
4-27 दिन से
5-46 दिन तक (मी)
4-13 रात से
6-36 रात तक (कं)

कार्तिक शुक्लपक्ष

14 नवम्बर त्रयोदशी शुक्रवार

9-52 दिन से
11-55 दिन तक (धं)
7-38 रात से
9-53 रात तक (मि)
9-53 रात से
12-18 रात तक (क)

मार्ग कृष्ण पक्ष

17 नवम्बर प्रतिपद् सोमवार
7-26 रात से
9-41 रात तक (मि)
5-53 रात से
7-19 रात तक (तु)
19 नवम्बर तृतीया बुधवार
9-31 दिन से
11-35 दिन तक (धं)
11-35 दिन से
1-10 दिन तक (कं)
2-55 दिन से
5-6 दिन तक (मे)
23 नवम्बर सप्तमी रविवा
4-29 रात से

विवाह

6-54 रात तक (तुं)

24 नवंबर अष्टमी सोमवार

9-11 दिन से

11-15 दिन तक (धं)

11-15 दिन से

12-53 दिन तक (मं)

3-35 दिन से

5-5 दिन तक (मे)

6-58 रात से

9-13 रात तक (मि)

9-13 रात से

11-38 रात तक (क)

26 नवम्बर दशमी बुधवार

4-20 रात से

6-46 रात तक (तुं)

27 नवम्बर एकादशी गुरुवार

8-59 दिन से

11-2 दिन तक (धं)

11-2 दिन से

12-40 दिन तक (मं)

3-21 दिन से

4-52 दिन तक (मे)

6-45 रात से

9-6 रात तक (मि)

9-6 रात से

11-25 रात तक (क)

11-25 रात से

1-49 रात तक (सिं)

28 नवम्बर द्वादशी शुक्रवार

8-54 दिन से

10-57 दिन तक (धं)

10-57 दिन से

12-36 दिन तक (मं)

6-40 शांम से

8-56 रात तक (मि)

8-56 रात से

11-20 रात तक (क)

29 नवम्बर त्रयोदशी शनिवार

8-50 दिन से

10-53 दिन तक (धं)

10-53 दिन से

12-32 दिन तक (मं)

6-36 शांम से

8-51 रात तक (मि)

8-51 रात से

11-18 रात तक (क)

मार्ग शुक्लपक्ष

3 दिसम्बर द्वितीया बुधवार

8-33 दिन से

10-36 दिन तक (धं)

10-36 दिन से

12-14 दिन तक (मं)

6-19 रात से

8-34 रात तक (मि)

4 दिसम्बर तृतीया गुरुवार

6-50 शांम से

8-30 रात तक (मि)

8-30 रात से

10-50 रात तक (क)

5 दिसम्बर चतुर्थी शुक्रवार

8-24 दिन से

10-29 दिन तक (धं)

10-29 दिन से

12-6 दिन तक (मं)

6-10 शाम से

8-26 रात तक (मि)

8-26 रात से

10-50 रात तक (क)

6 दिसम्बर पंचमी शनिवार

8-20 दिन से

10-23 दिन तक (धं)

6-6 रात से

8-21 रात तक (मि)

3-33 रात से

5-58 रात तक (तुं)

10 दिसम्बर दशमी बुधवार

8-3 दिन से

10-6 दिन तक (धं)

10-6 दिन से

11-44 दिन तक (मं)

5-49 शांम से

8-4 रात तक (मि)

8-4 रात से

10-29 रात तक (क)

3-16 रात से

5-41 रात तक (तुं)

11 दिसम्बर एकादशी गुरुवार

7-58 प्रातः से

10-1 दिन तक (धं)

5-45 शांम से

8-0 रात तक (मि)

8-0 रात से

10-24 रात तक (क)

3-12 रात से

5-37 रात तक (तुं)

12 दिसंबर द्वादशी शुक्रवार

7-54 प्रातः से

9-57 दिन तक (धं)

9-57 दिन से

11-35 दिन तक (मं)

14 दिसंबर त्रयोदशी रविवार

8-32 रात से

10-20 रात तक (क)

2-59 रात से

5-24 रात तक (तुं)

माघ कृष्णपक्ष

17 जनवरी द्वितीया शनिवार

12-28 रात से

2-55 रात तक (तुं)

5-10 रात से

7-18 रात तक (धं)

18 जनवरी तृतीया रविवार

8-52 दिन से

10-14 दिन तक (कुं)

11-33 दिन से

1-4 दिन तक (मे)

2-57 दिन से

5-12 दिन तक (मि)

21 जनवरी षष्ठी बुधवार

8-39 दिन से

10-2 दिन तक (कुं)

10-2 दिन से

11-21 दिन तक (मे)

2-44 दिन से

4-59 दिन तक (मि)

12-11 रात से

2-36 रात तक (तुं)

4-58 रात से

7-1 रात तक (धं)

22 जनवरी सप्तमी गुरुवार

8-30 दिन से

9-58 दिन तक (कुं)

11-17 दिन से

12-47 दिन तक (मे)

2-40 दिन से

4-55 दिन तक (मि)

12-7 रात से

2-32 रात तक (तुं)

4-54 रात से

6-57 रात तक (धं)

23 जनवरी अष्टमी शुक्रवार

8-31 दिन से

9-40 दिन तक (कुं)

11-13 दिन से

12-43 दिन तक (मे)

2-36 दिन से

4-51 दिन तक (मि)

25 जनवरी एकादशी रविवार

8-23 दिन से

9-46 दिन तक (कुं)

11-5 दिन से

12-30 दिन तक (मे)

माघ शुक्लपक्ष

30 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवार

11-30 रात से

2-0 रात तक (तुं)

4-22 रात से

6-20 रात तक (धं)

2 फरवरी चतुर्थी सोमवार

7-51 प्रातः से

9-14 दिन तक (कुं)

10-33 दिन से

12-3 दिन तक (मे)

1-56 दिन से

4-11 दिन तक (मि)

11-23 रात से

1-48 रात तक (तुं)

4-10 रात से

6-13 रात तक (धं)

4 फरवरी षष्ठी बुधवार

1-48 दिन से

4-3 दिन तक (मि)

4-3 रात से

6-28 रात तक (धं)

7 फरवरी नवमी शनिवार

11-3 रात से

1-28 रात तक (तुं)

3-50 रात से

5-43 रात तक (धं)

8 फरवरी दशमी रविवार

11-59 रात से

1-24 रात तक (तुं)

3-46 रात से

5-39 रात तक (धं)

9 फरवरी एकादशी सोमवार

7-24 प्रातः से (कुं)

8-46 प्रातः तक

10-5 दिन से

11-30 दिन तक (मे)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

15 फरवरी द्वितीया

3-36 रात से

5-17 रात तक (धं)

5-17 रात से

6-56 रात तक (मं)

16 फरवरी तृतीया

12-56 दिन से

3-11 दिन तक (मि)

3-11 दिन से

5-36 दिन तक (क)

3-10 रात से

5-13 रात तक (धं)

5-13 रात से

6-52 रात तक (मं)

18 फरवरी पंचमी बुधवार

3-39 रात से

5-5 रात तक (धं)

5-5 रात से

6-44 रात तक (मं)

19 फरवरी षष्ठी गुरुवार
12-44 दिन से
3-10 दिन तक (मि)
3-10 दिन से
5-24 दिन तक (क)
21 फरवरी अष्टमी शनिवार
2-52 दिन से
5-17 दिन तक क

फाल्गुण शुक्लपक्ष

1 मार्च द्वितीया रविवार
7-12 रात से
9-34 रात तक (कं)
2-21 रात से
4-24 रात तक (धं)
4-24 रात से
6-3 रात तक (म)
2 मार्च तृतीया सोमवार
7-21 रात से
8-40 दिन तक (मे)
4 मार्च पंचमी बुधवार
7-14 प्रातः से
8-33 दिन तक (मी)
11-56 दिन से
2-11 दिन तक (मि)
13 मार्च त्रयोदशी शुक्रवार
1-37 रात से
3-39 रात तक (धं)
3-39 रात से
5-22 रात तक (म)

यज्ञोपवीत तथा विवाह सम्बंधित (नक्षत्रों के बारे में)

मुहूर्तों के लिये नक्षत्रों का एक महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, जिन नक्षत्रों के होने अथवा न होने के बारे में धर्म-शास्त्रों का मतभेद हो, ऐसी परिस्थिति में देशाचार का महत्त्व होता है परन्तु जहां धर्मशास्त्रकारों का मत भेद न हो तो ऐसी स्थिति में देशाचार का महत्त्व नहीं, चूंकि यज्ञोपवीत मुहूर्तों के लिये रोहिणी, उत्तर-फाल्गुण, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों को अपनाने में सभी ऋषि सहमत हैं, अतः हमने इन नक्षत्रों पर भी 7 नवंबर 12 नवंबर 10 दिसंबर 8 फरवरी को यज्ञोपवीत मुहूर्त दर्ज किये हैं जो धर्म-शास्त्र के आधार से बिल्कुल शुद्ध और सही हैं। इसी प्रकार विवाह मुहूर्त में चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा तथा अश्विनी नक्षत्र पर भी विवाह मुहूर्त दर्ज किये है, जिन नक्षत्रों को विवाह के लिये अपनाने में पारस्कर गृह्य सूत्रकार की स्पष्ट आज्ञा है, यहां तक कि वेदों में भी इन नक्षत्रों को विवाह मुहूर्त में अपनाने का संकेत मिलता है, 'धर्म-सिंधु' में भी इन मुहूर्तों को विवाह के लिये अपनाने की आज्ञा है, ऐसे मजबूत प्रमाण होने पर भी भारत के प्रायः पंचांग कर्ताओं ने इन नक्षत्रों को अपनाया है। हमने भी इन नक्षत्रों पर विवाह मुहूर्त "विजयेश्वर जन्त्री" में दर्ज किये हैं। जिनकी सूची निम्न दी गई है।

विवाह मुहूर्त.

30 अप्रैल, 1 मई, 2 मई, 7 मई, 29 मई, 30 मई, 25 जून, 23 जुलाई, 28 जुलाई, 12 अक्टूबर 13 अक्टूबर, 14 नवंबर, 5 दिसंबर 6 दिसंबर, 11 दिसंबर, 12 दिसंबर, 30 जनवरी, 4 फरवरी, तथा 4 मार्च

सप्तर्षि सं० ५०६२

विक्रमी सं० २०४३

ईसवी सं० 1986

बुनियादि मकान

(शंकु प्रतिष्ठा)

(पूर्व पश्चिम मुख)

श्रावण कृष्णपक्ष

23 जुलाई द्वितीया बुधवार
7-24 प्रातः से
9-48 दिन तक (सि)
9-48 दिन से
12-11 दिन तक (कं)

24 जुलाई तृतीय गुरुवार
7-20 प्रातः से
9-44 दिन तक (सि)
9-44 दिन से
10-54 दिन तक (कं)

26 जुलाई पंचमी शनिवार
7-12 प्रातः से
9-30 दिन तक (सि)
9-36 दिन से
11-55 दिन तक (कं)

श्रावण शुक्लपक्ष

11 अगस्त षष्ठी सोमवार
6-11 प्रातः से
8-32 दिन तक (सि)

11 अगस्त षष्ठी सोमवार
8-32 प्रातः से
10-55 दिन तक (कं)

भाद्र कृष्णपक्ष

22 अगस्त तृतीया शुक्रवार
7-56 प्रातः से
10-19 दिन तक (कं)

भाद्र शुक्लपक्ष

8 सितंबर चतुर्थी सोमवार
7-31 प्रातः से
9-16 दिन तक (कं)

माघ कृष्णपक्ष

21 जनवरी षष्ठी बुधवार
8-39 दिन से
10-2 दिन तक (कुं)
12-51 दिन से
2-44 दिन तक (वृ)

22 जनवरी सप्तमी गुरुवार
8-30 दिन से
9-58 दिन तक (कुं)

माघ शुक्लपक्ष

31 जनवरी द्वितीया शनिवार
7-59 प्रातः से
9-22 दिन तक (कुं)
12-11 दिन से
2-4 दिन तक (वृ)

2 फरवरी चतुर्थी सोमवार
12-50 दिन से
1-56 दिन तक (वृ)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

16 फरवरी तृतीया सोमवार
8-14 दिन से
9-33 दिन तक (मी)
11-3 दिन से
12-56 दिन तक (वृ)
12-56 दिन से
3-11 दिन तक (मि)

18 फरवरी पंचमी बुधवार
8-6 दिन से
9-25 दिन तक (मी)
10-55 दिन से
12-48 दिन तक (वृ)
12-48 दिन से
3-10 दिन तक (मि)

19 फरवरी षष्ठी गुरुवार
8-2 दिन से
9-21 दिन तक (मी)
10-51 दिन से
12-44 दिन तक (वृ)
12-44 दिन से
3-0 दिन तक (मि)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

2 मार्च तृतीया सोमवार
10-11 दिन से
12-4 दिन तक (वृ)
12-4 दिन से
2-19 दिन तक (मि)

बुनियादि मकान

(शंकु प्रतिष्ठा)

(दक्षिण उत्तर मुख)

चैत्र शुक्लपक्ष

17 अप्रैल अष्टमी गुरुवार
1-57 दिन से
4-21 दिन तक (सि)
4-21 दिन से
6-44 दिन तक (कं)

वैशाख कृष्णपक्ष

30 अप्रैल सप्तमी बुधवार
6-29 प्रातः से
8-22 दिन तक (वृ)
8-22 दिन से
10-37 दिन तक (मि)
1-2 दिन से
3-26 दिन तक (सि)
3-26 दिन से
5-49 दिन तक (कं)

बुनियाद मकान मुहूर्त्त

वैशाख शुक्लपक्ष

12 मई तृतीया सोमवार
5-41 प्रातः से
7-34 दिन तक (वृ)
12-14 दिन से
2-38 दिन तक (मि)
2-38 दिन से
5-1 दिन तक (कं)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

24 मई प्रतिपद् शनिवार
6-49 प्रातः से
9-0 दिन तक (मि)
11-29 दिन से
1-54 दिन तक (मि)
1-54 दिन से
2-13 दिन तक (कं)

28 मई पंचमी बुधवार
6-32 प्रातः से
8-44 दिन तक (मि)

कार्त्तिक कृष्णपक्ष

22 अक्टूबर पंचमी बुधवार
11-23 दिन से
1-26 दिन तक (धं)
4-27 दिन से
5-46 दिन तक (मीं)

मार्ग कृष्णपक्ष

19 नवम्बर तृतीया बुधवार
9-31 दिन से
11-35 दिन तक (धं)
2-38 दिन से
3-55 दिन तक (मी)

22 नवंबर षष्ठी शनिवार
9-19 दिन से
11-23 दिन तक (धं)
2-24 दिन से
3-43 दिन तक (मीं)

मार्ग शुक्लपक्ष

5 दिसम्बर चतुर्थी शुक्रवार
1-28 दिन से
2-47 दिन तक (मीं)

प्रवेश मुहूर्त्त

(नये मकान में)

वैशाख शुक्लपक्ष में

12 मई तृतीया सोमवार
5-41 प्रातः से
7-34 दिन तक (वृ)

19 मई दशमी सोमवार
7-10 प्रातः से
9-25 दिन तक (मि)
2-14 दिन से
2-14 दिन से
4-37 दिन तक (कं)

21 मई द्वादशी बुधवार
7-2 प्रातः से
9-13 दिन तक (मि)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

29 मई पंचमी बुधवार
1-36 दिन से
2-15 दिन तक (कं)

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

18 जून एकादशी बुधवार
12-14 दिन से
2-37 दिन तक (कं)

आषाढ़ कृष्णपक्ष

26 जून पंचमी गुरुवार
11-39 दिन से
2-30 दिन तक (कं)

आषाढ़ शुक्लपक्ष

9 जुलाई द्वितीया बुधवार
10-43 दिन से
1-7 दिन तक (कं)

14 जुलाई सप्तमी सोमवार
10-22 दिन से
12-45 दिन तक (कं)

21 जुलाई पूर्णिमा सोमवार
9-56 दिन से
11-12 तक (कं)

आश्विन शुक्लपक्ष

13 अक्टूबर एकादशी सोमवा
11-57 दिन से
2-0 दिन तक (धं)
3-38 दिन से
5-1 दिन तक (कु)

कार्तिक कृष्णपक्ष

22 अक्टूबर पंचमी बुधवार
9-2 दिन से
11-23 दिन तक (धं)
3-5 दिन से
4-27 दिन तक (कु)

कार्त्तिक शुक्लपक्ष

12 नवंबर एकादशी बुधवार
10-0 दिन से
12-3 दिन तक (धं)

13 नवंबर द्वादशी गुरुवार
9-56 दिन से
11-59 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्णपक्ष

19 नवंबर तृतीया बुधवार
9-31 दिन से
11-35 दिन तक (धं)

प्रवेश

मार्ग शुक्लपक्ष

5 दिसम्बर चतुर्थी शुक्रवार
8-24 दिन से
10-29 दिन तक (धं)
1-28 दिन से
2-47 दिन तक (मी)

11 दिसम्बर एकादशी गुरुवार
7-48 प्रातः से
10-1 दिन तक (धं)

माघ कृष्ण पक्ष

16 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवार
10-1 दिन से
10-23 दिन तक (कुं)
11-42 दिन से
1-12 दिन तक (वृ)

माघ शुक्लपक्ष

31 जनवरी द्वितीया शनिवार
12-11 दिन से
2-4 दिन तक (वृ)
2-4 दिन से
4-19 दिन तक (मि)

2 फरवरी चतुर्थी सोमवार,
7-5 प्रातः से
9-14 दिन तक (कुं)
1-56 दिन से
4-11 दिन तक (मि)

7 फरवरी नवमी शनिवार
3-39 दिन से
3-51 दिन तक (मि)

9 फरवरी एकादशी सोमवा
7-24 प्रातः से
8-46 दिन तक (कुं)
8-46 दिन से
10-5 दिन तक (मी)
1-28 दिन से
3-43 दिन तक (मि)

फाल्गुण कृष्णपक्ष

8-14 दिन से
9-33 दिन तक (मी)
11-3 दिन से
12-56 दिन तक (वृ)
12-56 दिन से
3-11 दिन तक (मि)

फाल्गुण शुक्लपक्ष

2 मार्च तृतीया सोमवार
10-11 दिन से
12-4 दिन तक (वृ)
12-4 दिन से
2-19 दिन तक (मि)

चूढ़ाकर्म मुहूर्त्त

वैशाख शुक्लपक्ष

12 मई तृतीया सोमवार
9-49 दिन से
12-14 दिन तक (क

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

28 मई पंचमी बुधवार
8-44 दिन से
11-12 दिन तक (क

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

18 जून एकादशी बुधवार
7-25 प्रातः से
9-50 दिन तक (क)

आषाढ़ कृष्णपक्ष

26 जून पंचमी गुरुवार
6-51 प्रातः से
9-16 दिन तक (क)

आषाढ़ शुक्लपक्ष

9 जुलाई द्वितीया बुधवार
9-3 दिन से
11-26 दिन तक (मि)

आश्विन शुक्लपक्ष

6 अक्टूबर तृतीया सोमवार
7-36 प्रातः से
10-2 दिन तक (तुं)

8 अक्टूबर पंचमी बुधवार
10-28 प्रातः से
9-55 दिन तक (तुं)

13 अक्टूबर एकादशी सोमवा
7-10 प्रातः से
9-36 दिन तक (तुं)

कार्तिक कृष्णपक्ष

22 अक्टूबर पंचमी बुधवार
11-23 दिन से
1-26 दिन तक (धं)

23 अक्टूबर पंचमी गुरुवार
7-3 दिन से
8-58 दिन तक (तुं)

कार्तिक शुक्लपक्ष

14 नवंबर त्रयोदशी शुक्रवार
9-52 दिन से
11-55 दिन तक (धं)

मार्ग कृष्णपक्ष

19 नवंबर तृतीया बुधवार
9-31 दिन से
11-30 दिन तक (धं)

21 नवंबर पंचमी शुक्रवार
9-23 दिन से
11-27 दिन तक (धं)

मार्ग शुक्लपक्ष

11 दिसम्बर एकादशी गुरुवा

शेष 105 पृ० पर देखो

जातकर्म
(काहुनेयर मुहूर्त)

चैत्र शुक्लपक्ष
16 अप्रैल सप्तमी बुधवार
१०-३८ दिन से
वैशाख कृष्णपक्ष
२८ अप्रै० तृतीय रविवार
६-३१ प्रात. तक
वैशाख शुक्लपक्ष
११ मई द्वितीया रविवार
१२ मई तृतीया सोमवार
६-२७ प्रात: तक
१६ मई दशमी सोमवार
२१ मई द्वादशी बुधवार
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
२८ मई पंचमी बुधवार
ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
१८ जून एकादशी बुधवार
२० जून त्रयाद० शुक्रवार
आषाड कृष्णपक्ष
२६ जून पंचमी गुरुवार
आषाढ शुक्लपक्ष
६ जुलाई द्वितीया बुधवार
१२-४ दिन तक
१३ जुलाई षष्ठी रविवार
१४ जुल० सप्त. सोमवार
६-१७ दिन तक
१८. जुल. द्वादशी शुक्रवार
७.० प्रात: तक
२३जुला द्वितीया बुधवार
२४ जुला तृतीय गुरुवार
१०-५४ दिन तक
श्रावण शुक्लपक्ष
१० अग. पंचमी रविवार
११ अग. षष्ठी सोमवार
१४ अग नवमी गुरुवार
१२-२८ दिन मे
आश्विन शुक्लपक्ष
५ अक्टू. द्वितीया रविवार
६ अक्टू. तृतीय सोमवार
१०-२६ दिन तक
८ अक्टू. पंचमी बुधवार
७-३० प्रात: तक
१२ अक्टू. दशमी रविवार
१३ अक्टू. एकादशी सोम
कार्तिक कृष्णपक्ष
२२ अक्टू. पंचमी बुधवार
कार्तिक शुक्लपक्ष
१३ नव. द्वादशी गुरुवार
१४ नव. त्रयोदशी शुक्र.
मार्ग कृष्णपक्ष
१६ नव. तृतीय बुधवार
२१ नव पंचमी शुक्रवार
मार्ग शुक्लपक्ष
५ दिस. चतुर्थी शुक्रवार
१२-४ दिन से
१० दिस. दशमी बुधवार
११ दिस. एकादशी गुरु.
१२ दिस. द्वादशी शुक्र.
माघ शुक्लपक्ष
२ फर. चतुर्थी सोमवार
१२-५० दिन से
४ फर. षष्ठी बुधवार
५ फर. सप्तमी गुरुवार
७-३६ प्रात: तक
५ फर. दशमी रविवार
६ फर. एकादशी सोम.
११ फर. त्रयोदशी बुध.
फाल्गुण कृष्णपक्ष
१६ फर. तृतीया सोम.
१८ फर. पंचमी बुधवार
फाल्गुण शुक्लपक्ष
१ मार्च द्वितीया रविवार
२-१२ दिन से
२ मार्च तृतीय सोमवार
४ मार्च पंचमी बुधवार
११ मार्च एकादशी बुध

वाग्दान
गण्डन मुहूर्त

चैत्र शुक्लपक्ष
१० अप्रै. प्रतिपद गुरुवार
२० अप्रै एकादशी रवि.
२१ अप्रै द्वादशी सोमवार
वैशाख कृष्णपक्ष
२७ अप्रै. तृतीय रविवार
६-३१ प्रात: तक
२८ अप्रै चतुर्थी सोम.
८-० प्रात: से
३० अप्रै. सप्तमी बुधवार
२ मई नवमी शुक्रवार
५ मई द्वादशी सोमवार
वैशाख शुक्लपक्ष
११ मई द्वितीया रविवार
१२ मई तृतीया सोमवार
६-२७ दिन तक
१८ मई नवमी रविवार
१२-३४ दिन से
१६ मई दशमी सोमवार
२३ मई पूर्णिमा शुक्रवार
४-२६ दिन से
ज्येष्ठ कृष्णपक्ष
२५ मई द्वितीया रविवार
१-२ दिन से
२६ मई तृतीया सोमवार
२८ मई पंचमी बुधवार
३० मई सप्तमी शुक्रवार
७-५६ प्रात: तक
१ जून नवमी रविवार
११-४ दिन से

वाग्दान

२ जून दशमी सोमवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

८ जून प्रतिपद् रविवार
१३ जून षष्ठी शुक्रवार
१८ जून एकादशी बुध.
२० जून त्रयोदशी शुक्र.
१–१ दिन तक
२२ जून पूर्णिमा रविवार

आषाढ कृष्णपक्ष

२६ जून पंचमी गुरुवार
३–४६ दिन तक
३ जुलाई द्वादशी गुरुवार
४ जुलाई त्रयोदशी शुक्र

आषाढ शुक्लपक्ष

११ जुलाई चतुर्थी शुक्र.
१२-३२ दिन में
१३ जुलाई षष्ठी रविवार
१४ जुलाई सप्तमी सोम
१२-३५ दिन तक
२१ जुलाई पूर्णिमा सोम

श्रावण कृष्णपक्ष

२३ जुलाई द्वितीय बुध
२५ जुलाई चतुर्थी शुक्र.
१०-१३ दिन में
२७ जुलाई षष्ठी रविवार
३० जुलाई नवमी बुधवार
६-१० दिन से
३१ जुलाई दशमी गुरु०
१ अगस्त एकादशी शुक्र

श्रावण शुक्लपक्ष

७ अगस्त द्वितीया गुरु.
८ अगस्त तृतीया शुक्र.
१० अगस्त पंचमी रवि
१५ अगस्त दशमी शुक्र.
१-२६ दिन में

आश्विन शुक्लपक्ष

५ अक्टू. द्वितीया रवि.
११-३७ दिन से
६ अक्टू. तृतीया सोमवार
१०-२६ दिन तक
९ अक्टू षष्ठी गुरुवार
१० अक्टू. सप्तमी शुक्र
६-३३ दिन तक
१२ अक्टू. दशमी रवि.
१३ अक्टू. एकादशी सोम

कार्तिक कृष्णपक्ष

२० अक्टू तृतीया सोम.
२२ अक्टू. पंचमी बुध०
२३ अक्टू. पंचमी गुरु.
११-६ दिन तक

कार्तिक शुक्लपक्ष

१४ नवं. त्रयोदशी शुक्र.
७-५६ प्रातः तक

मार्ग कृष्णपक्ष

१७ नवं प्रतिपद् सोम.
१९ नवं. तृतीया बुध.
२६ नवं. दशमी बुधवार
२७ नवं. एकादशी गुरु

मार्ग शुक्लपक्ष

३ दिसंबर द्वितीय बुध
४ दिसंबर तृतीय गुरुवार
२-१४ दिन तक
५ दिसंबर चतुर्थी शुक्र.
१२-४ दिन में
१० दिसंबर दशमी बुध
११ दिसंबर एकादशी गुरु
३-२७ दिन तक
१४ दिसं त्रयोद० रवि०
८-२७ दिन तक

माघ कृष्णपक्ष

जनवरी
१८ जन तृतीय रविवार
१२-२२ दिन तक
२१ जन षष्ठी बुधवार
२५ जन एकादशी रवि०
२६ जन द्वादशी सोमवार
२-२२ दिन तक

माघ शुक्लपक्ष

३० जन प्रतिपद शुक्रवार
४-४४ दिन में
१ फर्व तृतीया रविवार
१-४३ दिन तक
२ फर. चतुर्थी सोमवार
१२-५० दिन से
८ फर. दशमी रविवार
९ फर्व एकादशी सोमवार

फाल्गुन कृष्णपक्ष

१५ फर. द्वितीया रविवार
१६ फर. तृतीया सोम.
१९ फर. षष्ठी गुरुवार
२३ फर्व दशमी सोमवार
२६ फर्व त्रयोदशी गुरु०
९-३४ दिन तक

फाल्गुन शुक्लपक्ष

१ मार्च द्वितीया रविवार
२ मार्च तृतीया सोमवार
६ मार्च सप्तमी शुक्रवार

विद्यारम्भ

(स्कूल में दाखिल होना)

चैत्र शुक्लपक्ष

१० अप्रै० प्रतिपद् गुरु०
१–८ दिन से

वैशाख शुक्लपक्ष

११ मई द्वितीया रविवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

२५ मई द्वितीया रविवार
१-२ दिन में
२८ मई पंचमी बुधवार

विद्यारम्भ मुहूर्त्त

२–१५ दिन तक

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१२ जून पंचमी गुरुवार

आषाढ कृष्णपक्ष

२६ जून पंचमी गुरुवार

आषाढ शुक्लपक्ष

६ जुलाई द्वितीया बुधवार

१० जुलाई तृतीया गुरु०

१-८ दिन तक

१३ जुला षष्ठी रविवार

१८ जुला द्वादशी शुक्रवार

७-० प्रात: तक

श्रावण कृष्णपक्ष

२३ जुला द्वितीया बुध०

२४ जुला तृतीया गुरुवार

१०-५४ दिन तक

श्रावण शुक्लपक्ष

८ अगस्त तृतीया शुक्र०

१० अग. पंचमी रवि०

१५ अग. दशमी शुक्रवार

१-२६ दिन स

आश्विन शुक्लपक्ष

५ अक्टू. द्वितीया रवि०

६ अक्टू. षष्ठी गुरुवार

१२ अक्टू. दशमी रवि०

कार्तिक कृष्णपक्ष

२३ अक्टू. पंचमी गुरुवार

८-२१ प्रात: तक

मार्ग कृष्णपक्ष

१६ नव तृतीया बुधवार

मार्ग शुक्लपक्ष

४ दिस. तृतीया गुरुवार

७-१४ दिन तक

११ दिस. एकादशी गुरु०

१२ दिस. द्वादशी शुक्र०

४-४४ दिन तक

माघ कृष्णपक्ष

१६ जन प्रतिपद् शुक्रवार

माघ शुक्लपक्ष

१ फर्वरी तृतीया रविवार

१-४३ दिन तक

४ फर्व षष्ठी बुधवार

८ फर्व दशमी रविवार

फाल्गुण कृष्णपक्ष

१५ फर्व द्वितीया रवि०

१८ फर्व पंचमी बुधवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

१ मार्च द्वितीया रविवार

१२ मार्च द्वादशी गुरु०

चूल्हा

बनाने के मुहूर्त्त

चैत्र शुक्लपक्ष

१६ अप्रैल सप्तमी बुध०

१०-३८ स

वैशाख कृष्णपक्ष

२५ अप्रैल प्रतिपद् शुक्र०

३-६ दिन स

वैशाख शुक्लपक्ष

२१ मई द्वादशी बुधवार

७-१६ शा स

२२ मई त्रयोदशी गुरु०

५-५५ प्रात: तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

२८ मई पंचमी बुधवार

२६ मई षष्ठी गुरुवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१८ जून एकादशी बुध०

२० जून त्रयोदशी शुक्र०

आषाढ शुक्लपक्ष

६ जुलाई द्वितीया बुध०

१२-४ दिन तक

११ जुलाई चतुर्थी शुक्र०

१-४० दिन तक

१६ जुलाई नवमी बुध०

१०-८ दिन तक

१८ जुलाई द्वादशी शुक्र०

श्रावण कृष्णपक्ष

२३ जुलाई द्वितीया बुध

१-४८ दिन तक

श्रावण शुक्लपक्ष

८ अगस्त तृतीया शुक्र०

१४ अगस्त नवमी गुरु०

१२-२८ दिन स

३-८ दिन तक

आश्विन शुक्लपक्ष

८ अक्टूबर पंचमी बुध०

१०-३० प्रात: तक

मार्ग कृष्णपक्ष

२१ नवं. पंचमी शुक्रवार

२७ नवं. एकादशी गुरु०

मार्ग शुक्लपक्ष

५ दिसंबर चतुर्थी शुक्र.

१२-४ दिन स

११ दिसंबर एकादशी गुरु

३-२७ दिन स

१२ दिसंबर द्वादशी शुक्र

४-४८ दिन तक

माघ कृष्णपक्ष

१६ जनवरी प्रतिपद् शुक्र.

१०-१ दिन स

३-५४ दिन तक

माघ शुक्लपक्ष

४ फर्वरी षष्ठी बुधवार

५ फर्व सप्तमी गुरुवार

७-३६ प्रात: तक

११ फर. त्रयोदशी बुध०

फाल्गुण कृष्णपक्ष

१६ फरवरी षष्ठी गुरु०

फाल्गुण शुक्लपक्ष

८ मार्च पंचमी बुधवार

३-१२ दिन तक

११ मार्च एकादशी गुरु०

वस्त्र आदि धारण करने के मुहूर्त

[पुरुष तथा स्त्रियों के लिये]

चैत्र शुक्लपक्ष

१० अप्रैल प्रतिपद् गुरु०

वैशाख कृष्णपक्ष

२५ अप्रैल प्रतिपद् शुक्र०

२७ अप्रैल तृतीया रवि०

१०-२३ दिन तक

वैशाख शुक्लपक्ष

२१ मई द्वादशी बुधवार

२३ मई पूर्णिमा शुक्रवार

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

२६ मई षष्ठी गुरुवार

८-१८ दिन से

३० मई सप्तमी शुक्रवार

७-५६ प्रातः तक

४ जून द्वादशी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१८ जून एकादशी बुध०

१९ जून द्वादशी गुरुवार

२० जून त्रयोदशी शुक्र०

आषाढ कृष्णपक्ष

२६ जून पंचमी बुधवार

३-४८ दिन तक

आषाढ शुक्लपक्ष

१३ जुलाई षष्ठी रविवार

१६ जुलाई नवमी बुध०

श्रावण कृष्णपक्ष

२३ जुलाई द्वितीया बुध

१-४८ दिन तक

२७ जुलाई षष्ठी रविवार

श्रावण शुक्लपक्ष

१० अगस्त पंचमी रवि०

१४ अग. नवमी गुरुवार

१२-२८ दिन से

३-८ दिन तक

भाद्र कृष्णपक्ष

२० अगस्त प्रतिपद् बुध०

७-२३ प्रातः तक

२४ अग. पंचमी रवि०

भाद्र शुक्लपक्ष

७ सितं तृतीया रविवार

९-१७ दिन तक

१० सितं सप्तमी बुधवार

आश्विन कृष्णपक्ष

१९ सितं प्रतिपद शुक्र०

३-४७ दिन से

२१ सितं तृतीया रविवार

११-३७ दिन तक

आश्विन शुक्लपक्ष

५ अक्टूबर द्वितीया रवि

८ अक्टू. पंचमी बुधवार

७-२० दिन तक

कार्तिक कृष्णपक्ष

२१ अक्टू. त्रयोदशी शुक्र

१-३७ दिन से

कार्तिक शुक्लपक्ष

९ नवम्बर अष्टमी रवि०

८-१२ दिन से

१३ नवं द्वादशी गुरुवार

१४ नवं. त्रयोदशी शुक्र०

२-४६ दिन तक

मार्ग कृष्णपक्ष

२७ नवं. एकादशी बुध०

२८ नवं द्वादशी शुक्रवार

मार्ग शुक्लपक्ष

११ दिस. एकादशी गुरु०

१२ दिस. द्वादशी शुक्र०

४-४४ दिन तक

पौष कृष्णपक्ष

२६ दिस. दशमी शुक्र०

२८ दिस द्वादशी रवि०

पौष शुक्लपक्ष

७ जनवरी अष्टमी बुध०

माघ कृष्णपक्ष

२१ जन षष्ठी बुधवार

२२ जन सप्तमी गुरुवार

२३ जन अष्टमी शुक्रवार

२५ जन एकादशी रवि०

४-२८ दिन तक

माघ शुक्लपक्ष

३० जन प्रतिपद् शुक्रवार

४ फर्वरी षष्ठी बुधवार

५ फर्व सप्तमी गुरुवार

७-३६ प्रातः तक

फाल्गुन कृष्णपक्ष

१८ फर. पंचमी बुधवार

१९ फर. षष्ठी गुरुवार

२० फर्व सप्तमी शुक्रवार

फाल्गुन शुक्लपक्ष

४ मार्च पंचमी बुधवार

चैत्र कृष्णपक्ष

१८ मार्च तृतीया बुध०

१९ मार्च तृतीया गुरुवार

३-९ दिन से

२० मार्च पंचमी शुक्रवार

२६ मार्च द्वादशी गुरुवार

वस्त्र धारण मुहूर्त

केवल पुरुषों के लिए

चैत्र शुक्लपक्ष

१७ अप्रैल अष्टमी गुरु०

वैशाख कृष्णपक्ष

३० अप्रैल सप्तमी बुध०

वैशाख शुक्लपक्ष

११ मई द्वितीया रविवार

९-२८ दिन तक

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

२८ मई पंचमी बुधवार

आषाढ कृष्णपक्ष

२९ जून अष्टमी रविवार

श्रावण कृष्णपक्ष

३१ जुलाई दशमी गुरु०

१ अगस्त एकादशी शुक्र०

१०-५९ दिन तक

३ अगस्त त्रयोदशी बुध०

३-५३ दिन से

भाद्र कृष्णपक्ष

३१ अगस्त एकादशी रवि

भाद्र शुक्लपक्ष

५ सितम्बर प्रतिपद् शुक्र०

वस्त्र आदि धारण

१६ सितं प्रतिपद् शुक्र०
३-४७ दिन तक
२४ सितंबर षष्ठी बुध०
२८ सितं दशमी रविवार

कार्तिक कृष्णपक्ष

२२ अक्टू. पंचमी बुध०
६-५ दिन तक
३० अक्टू द्वादशी गुरु०

मार्ग कृष्णपक्ष

२१ नवम्ब पंचमी शुक्र०
२६ नवं दशमी बुधवार

मार्ग शुक्लपक्ष

५ दिसंब० चतुर्थी शुक्र०
१२-४ दिन से

पौष कृष्णपक्ष

१८ दिसंबर द्वितीया गुरु.
१६ दिसं तृतीया शुक्रवार

पौष शुक्लपक्ष

१ जनवरी द्वितीया गुरु
११ जन द्वादशी रविवार
१५ जन पूर्णिमा गुरुवार

माघ शुक्लपक्ष

८ फर्वरी दशमी रविवार
१-२३ दिन तक

फाल्गुण कृष्णपक्ष

२५ फर्व द्वादशी बुधवार
५-४६ शा तक

फाल्गुण शुक्लपक्ष

११ मार्च एकादशी बुध

दूध देना

वैशाख कृष्णपक्ष

२७ अप्रेल तृतीया रवि०
६-३१प्रातः तक

वैशाख शुक्लपक्ष

१३ मई चतुर्थी भौमवार
६-० शा म
२० मई एकादशी सोम

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

२५ मई तृतीया गुरुवार
१-२ दिन से

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१० जून तृतीया भौमवार

आषाढ कृष्णपक्ष

२४ जून तृतीया भौमवार

आषाढ शुक्लपक्ष

८ जुलाई प्रतिपद् भौम०

श्रावण कृष्णपक्ष

२२ जुलाई प्रतिपद् भौम
३ अगस्त त्रयोदशी रवि०
३-५३ दिन से

श्रावण शुक्लपक्ष

१० अग. पंचमी रवि०
१४ अगस्त नवमी गुरु०
१२-२८ दिन से
३-८ दिन तक
१६ अग. पूर्णिमा भौम
८-११ दिन तक

आश्विन शुक्लपक्ष

७ अक्टूबर चतुर्थी भौम०
४-२२ दिन से
६ अक्टू. षष्ठी गुरुवार
११-४१ दिन म
१२ अक्टू. दशमी रवि०

कार्तिक कृष्णपक्ष

२३ अक्टूबर पंचमी गुरु०
८-२१ दिन तक
४ नवंबर तृतीया भौम०
३-३६ दिन तक
६ नवं पंचमी गुरुवार
१२-२० दिन तक

मार्ग कृष्णपक्ष

१८ नवं द्वितीया भौमवार
३-४६ दिन से
२७ नवं. एकादशी गुरु०

पौष शुक्लपक्ष

१५ जनवरी पूर्णिमा गुरु

माघ कृष्णपक्ष

२० जन पंचमी भौमवार
८-१६ रात से
२७ जन त्रयोदशी भौम०
१२-५२ दिन तक

माघ शुक्लपक्ष

८ फर्वरी दशमी रविवार
१-२३ दिन म

फाल्गुण कृष्णपक्ष

२६ फर्व त्रयोदशी गुरुवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

१० मार्च दशमी भौम०

द्विचक्षौर मुहूर्त्त

चैत्र शुक्लपक्ष

१७ अप्रेल अष्टमी गुरु०

वैशाख कृष्णपक्ष

२५ अप्रेल प्रतिपद् शुक्र०
२७ अप्रेल तृतीया रवि०

वैशाख शुक्लपक्ष

२१ मई द्वादशी बुधवार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१५ जून अष्टमी शुक्रवार
१८ जून एकादशी बुध०
१६ जून द्वादशी गुरुवार
२० जून त्रयोदशी शुक्र०

आषाढ शुक्लपक्ष

१३ जुलाई षष्ठी रविवार
१४ जुलाई सप्तमी सोम

श्रावण शुक्लपक्ष

१० अग. पंचमी रवि०
११ अगस्त षष्ठी सोम०
१३ अगस्त अष्टमी बुध०
१४ अगस्त नवमी गुरुवार
१२-२८ दिन से

आश्विन शुक्लपक्ष

५ अक्टू. द्वितीया रवि०
६ अक्टू तृतीया सोमवार
८ अक्टूबर पंचमी बुध०

फाल्गुण कृष्णपक्ष

१८ फर्व पंचमी बुधवार

फाल्गुण शुक्लपक्ष

४ मार्च पंचमी बुधवार

शिशुर

मागं शुक्लपक्ष

११ दिसं एकादशी गुरु०

९-२७ दिन स

१२ दिस. द्वादशी शुक्र०

पौष कृष्णपक्ष

२४ दिसंबर ग्रष्टमी बुध

१२-२६ दिन स

२५ दिसं नवमी गुरुवार

२६ दिसंबर दशमी शुक्र

२८ दिस. द्वादशी रवि०

पौष शुक्लपक्ष

७ जनवरी प्रष्टमी बुध०

८ जन नवमी गुरुवार

१४ जन पूणिमा बुधवार

शेष (जरानागय) पृ 163

7-58 प्रातः से

10-1 दिन तक (धं)

माघ कृष्णपक्ष

16 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवार

10-1 दिन से

10-22 दिन तक (कुं)

पन्नदान

पन्नद्युन मुहूर्त

भाद्र कृष्णपक्ष

२४ ग्रगस्त पंचमी रवि०

भाद्र शुक्लपक्ष

७ सितं तृतीया रविवार

८ सितं चतुर्थी सोमवार

१० सितं सप्तमी बुध०

१५ सित द्वादशी सोम०

४-२२ दिन स

१७ सित चतुर्दशी बुध०

चूढ़ाकर्म मुहूर्त

9 फरवरी एकादशी सार्न

7-24 प्रातः से

8-44 दिन तक (कुं)

11 फरवरी त्रयोदशी बुधव

7-16 प्रातः से

8-38 प्रातः तक (कुं)

फाल्गुण शुक्लप

4 मार्च पंचमी बुधवार

7-12 प्रातः से

8-33 दिन तक (मी)

यज्ञोपवीत राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

11 मई द्वितीया रविवार

19 मई दशमी सोमवार

21 मई द्वादशी बुधवार

28 मई पंचमी बुधवार

18 जून एकादशी बुधवार

26 जून पंचमी गुरुवार

13 जुलाई षष्ठी रविवार

5 अक्टूबर द्वितीया रविवार

6 अक्टूबर तृतीया सोमवार

12 अक्टूबर दशमी रविवार

13 अक्टूबर एकादशी सोमवा

22 अक्टूबर पंचमी बुधवार

23 अक्टूबर गुरुवार

7 नवम्बर षष्ठी शुक्रवार

14 नवम्बर त्रयोदशी शुक्रवा

16 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवार

4 फरवरी षष्ठी बुधवार

8 फरवरी दशमी रविवार

9 फरवरी एकादशी सोमवा

11 फरवरी त्रयोदशी बुधवा

4 मार्च पंचमी बुधवार

वृष कन्या मकर

19 मई दशमी सोमवार

21 मई द्वादशी बुधवार

25 मई द्वितीया रविवार

28 मई पंचमी बुधवार

18 जून एकादशी बुधवार

26 जून पंचमी गुरुवार

9 जुलाई द्वितीया बुधवार

13 जुलाई षष्ठी रविवार

5 अक्टूबर द्वितीया रविवार

6 अक्टूबर तृतीया सोमवार

8 अक्टूबर पंचमी बुधवार

12 अक्टूबर दशमी रविवार

13 अक्टूबर एकादशी सोम

22 अक्टूबर पंचमी बुधवार

23 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

12 नवम्बर एकादशी बुध

19 नवम्बर तृतीया बुधव

21 नवम्बर पंचमी शुक्रवा

10 दिसम्बर दशमी बुधवा

11 दिसम्बर एकादशी गुरु

16 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवा

8 फरवरी दशमी रविवार

9 फरवरी एकादशी सोमवा

11 फरवरी त्रयोदशी बुधवा

2 मार्च तृतीया सोमवार

मिथुन तुला कुम्भ

27 अप्रैल तृतीया रविवार

12 मई तृतीया सोमवार

18 जून एकादशी बुधवार

26 जून पंचमी गुरुवार

9 जुलाई द्वितीया बुधवार

23 अक्टूबर पंचमी गुरुवार

7 नवम्बर षष्ठी शुक्रवार

12 नवम्बर एकादशी बुधवा

19 नवम्बर तृतीया बुधवार

21 नवम्बर पंचमी शुक्रवार

यज्ञोपवीत

10 दिसम्बर दशमी बुध
11 दिसम्बर एकादशी गु
12 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवा
16 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवा
8 फरवरी दशमी रविवार
9 फरवरी एकादशी सोमवा
11 फरवरी त्रयोदशी बुधवा

कर्क वृश्चिक मीन

4 फरवरी षष्ठी बुधवार
8 फरवरी दशमी रविव

27 जनवरी तक कुम्भ का बृहस्पति होने से कोई शुभ मुहूर्त नहीं, आव-श्यकता होने पर पूजा तथा उपाय के बाद में विजयेश्वर कार्यालय से पत्र-व्यवहार करें।

विवाह मुहूर्त राशि के अनुसार

मेष सिंह धनु

19 अप्रैल दशमी शनिवार
20 अप्रैल एकादशी रविवार
21 अप्रैल द्वादशी सोमवार
23 अप्रैल चतुर्दशी बुधवार
25 अप्रैल प्रतिपद् शुक्रवार
28 अप्रैल चतुर्थी सोमवार
30 अप्रैल सप्तमी बुधवार
1 मई अष्टमी गुरुवार
2 मई नवमी शुक्रवार
7 मई चतुर्दशी बुधवार
11 मई द्वितीया रविवार
12 मई तृतीया सोमवार
16 मई सप्तमी शुक्रवार
22 मई त्रयोदशी गुरुवार
25 मई द्वितीया रविवार
26 मई तृतीया सोमवार
28 मई पंचमी बुधवार
29 मई षष्ठी गुरुवार

30 मई सप्तमी शुक्रवार
13 जून षष्ठी शुक्रवार
16 जून नवमी सोमवार
18 जून एकादशी बुधवार
21 जून चतुर्दशी शनिवार
22 जून पूर्णिमा बुधवार
25 जून चतुर्थी बुधवार
26 जून पंचमी गुरुवार
30 जून रात को लग्न
5 जुलाई त्रयोदशी शनिवार
11 जुलाई चतुर्थी शुक्रवार
12 जुलाई पंचमी शनिवार
13 जुलाई षष्ठी रविवार
14 जुलाई सप्तमी सोमवार
5 अक्टूबर द्वितीया रविवार
9 अक्टूबर षष्ठी गुरुवार
12 अक्टूबर दशमी रविवार
13 अक्टूबर एकादशी सोमव
20 अक्टूबर तृतीया सोमवार

14 नवम्बर त्रयोदशी शुक्रवा
17 जनवरी द्वितीया शनिवार
18 जनवरी तृतीया रविवार
21 जनवरी कुम्भ लग्न केवल
22 जनवरी सप्तमी गुरुवार
23 जनवरी अष्टमी शुक्रवार
30 जनवरी प्रतिपद् शुक्रवार
4 फरवरी षष्ठी बुधवार
7 फरवरी नवमी शनिवार
8 फरवरी दशमी रविवार
9 फरवरी एकादशी सोमवार
15 फरवरी द्वितीय रविवार
18 फरवरी पंचमी बुधवार
19 फरवरी षष्ठी गुरुवार
4 मार्च पंचमी बुधवार
13 मार्च त्रयोदशी शुक्रवार

वृष कन्या मकर

19 मई दशमी सोमवार
21 मई द्वादशी बुधवार
22 मई त्रयोदशी गुरुवार
28 मई पंचमी बुधवार
29 मई षष्ठी गुरुवार
30 मई सप्तमी शुक्रवार
1 जून नवमी रविवार
2 जून दशमी रविवार
16 जून नवमी सोमवार
18 जून एकादशी बुधवार
25 जून चतुर्थी बुधवार
26 जून पंचमी गुरुवार
28 जून सप्तमी शनिवार
29 जून अष्टमी रविवार
30 जून को रात के लग्न
5 जुलाई त्रयोदशी शनिवार
10 जुलाई तृतीया गुरुवार
12 जुलाई पंचमी शनिवार
13 जुलाई षष्ठी रविवार
14 जुलाई सप्तमी सोमवार

विवाह

23 जुलाई द्वितीया बुधवार
26 जुलाई पंचमी शनिवार
27 जुलाई षष्ठी रविवार
31 जुलाई दशमी गुरुवार
1 अगस्त एकादशी शुक्रवार
2 अगस्त द्वादशी शनिवार
9 अगस्त चतुर्थी शनिवार
10 अगस्त पंचमी रविवार
11 अगस्त षष्ठी रविवार
5 अक्टूबर द्वितीया रविवा
12 अक्टूबर दशमी रविवार
13 अक्टूबर एकादशी सोम
15 अक्टूबर त्रयोदशी बुधवा
16 अक्टूबर चतुर्दशी गुरुवा
20 अक्टूबर तृतीया
22 अक्टूबर पंचमी बुधवार
17 नवम्बर प्रतिपद् सोमवा
19 नवंबर तृतीया बुधवार
26 नवंबर दशमी बुधवार
27 नवंबर एकादशी गुरुवा
28 नवंबर द्वादशी शुक्रवार

29 नवंबर त्रयोदशी शनिवा
5 दिसम्बर चतुर्थी शुक्रवा
6 दिसम्बर पंचमी शनिवा
10 दिसंबर दशमी बुधवार
11 दिसंबर रात को तुला लग्न
14 दिसम्बर त्रयोदशी रवि
17 जनवरी द्वितीया शनि
18 जनवरी तृतीया रवि
25 जनवरी एकादशी रवि
30 जनवरी प्रतिपद् शुक्र
2 फरवरी चतुर्थी सोमवा
7 फरवरी नवमी शनिवा
8 फरवरी दशमी रविवा
9 फरवरी एकादशी सोम
16 फरवरी तृतीया सोमवा
18 फरवरी पंचमी बुधवार
19 फरवरी षष्ठी गुरुवार
21 फरवरी अष्टमी शनिवा
1 मार्च द्वितीया रविवार
2 मार्च तृतीया सोमवार

मिथुन तुला कुम्भ

19 अप्रेल दशमी शनिवार
20 अप्रेल एकादशी रविवार
21 अप्रेल दिन के लग्न
25 अप्रेल प्रतिपद् शुक्रवा
28 अप्रेल चतुर्थी सोमवा
2 मई सिंह और कन्या लग्न
4 मई एकादशी रविवा
5 मई द्वादशी सोमवार
7 मई चतुर्दशी बुधवार
11 मई द्वितीया रविवार
12 मई तृतीया सोमवार
18 जून एकादशी बुधवार
21 जून चतुर्दशी शनिवार
22 जून पूर्णिमा रविवार
26 जून पंचमी गुरुवार
28 जून सप्तमी शनिवा
29 जून अष्टमी रविवार
30 जून नवमी सोमवार
5 जुलाई त्रयोदशी शनि
10 जुलाई तृतीया गुरुवा
11 जुलाई चतुर्थी शुक्रवा
19 जुलाई त्रयोदशी शनि
26 जुलाई पंचमी
27 जुलाई षष्ठी रविवा
28 जुलाई सप्तमी सोम

1 अगस्त मीन सिंह कन्या
2 अगस्त द्वादशी शनिवा
7 अगस्त द्वितीया गुरुवा
8 अगस्त तृतीया शुक्रवा
11 अगस्त कन्या लग्न
15 अगस्त दशमी शुक्रवार
20 अक्टूबर तृतीया सोम
22 अक्टूबर पंचमी बुधवा
14 नवंबर त्रयोदशी शुक्रव
17 नवंबर प्रतिपद् सोमवार
19 नवम्बर तृतीया बुधवार
23 नवंबर सप्तमी रविवार
24 नवंबर अष्टमी सोमवार
28 नवंबर रात के लग्न
29 नवंबर त्रयोदशी शनिवा
3 दिसम्बर द्वितीया बुधवा
4 दिसंबर तृतीया गुरुवार
6 दिसंबर कर्कट तुला लग्न छोड़कर
10 दिसंबर दशमी बुधवार
11 दिसम्बर एकादशी गुरुवा
12 दिसम्बर द्वादशी शुक्रवा
15 फरवरी द्वितीया रविवा

18 फरवरी पंचमी बुधवार
19 फरवरी षष्ठी गुरुवार
21 फरवरी अष्टमी शनिवार
1 मार्च द्वितीया रविवार
2 मार्च तृतीया सोमवार
4 मार्च पंचमी बुधवार
13 मार्च त्रयोदशी शुक्रवार

कर्क वृश्चिक मीन

2 फरवरी चतुर्थी सोमवार
4 फरवरी षष्ठी बुधवार
7 फरवरी नवमी शनिवार
8 फरवरी रात को धनु लग्न
16 फरवरी तृतीया सोमवार
21 फरवरी अष्टमी शनिवार
1 मार्च द्वितीया रविवार
2 मार्च तृतीया सोमवार
4 मार्च पंचमी बुधवार
13 मार्च त्रयोदशी शुक्रवार

राशि केअनुसार

बुनियाद मकान

पूर्व पश्चिम मुख

मेष सिह धनु

6 सितम्बर द्वितीया शनि
8 सितम्बर चतुर्थी सोमव
21 जनवरी षष्ठी बुधवार
22 जनवरी सप्तमी गुरुवा
31 जनवरी द्वितीया शनिव
16 फरवरी तृतीया सोमवा
18 फरवरी पंचमी बुधवार
19 फरवरी षष्ठी गुरुवार

वृष कन्या मकर

23 जुलाई द्वितीया बुधवा
24 जुलाई तृतीया गुरुवार
26 जुलाई पंचमी शनिवा
11 अगस्त षष्ठी सोमवार
21 जनवरी बुधवार षष्ठी
31 जनवरी द्वितीया शनिवा
2 फरवरी चतुर्थी सोमवार
16 फरवरी तृतीया सोमवा
18 फरवरी पंचमी बुधवार
19 फरवरी षष्ठी गुरुवार
2 मार्च तृतीया सोमवार

मिथुन तुला कुम्भ

२४ जुला तृतीया गुरुवार
26 जुलाई पंजमी शनिवार
11 अगस्त षष्ठी सोमवार
22 अगस्त तृतीया शुक्रवार

8 सितं चतुर्थी सोमवा
16 फरवरी तृतीया सोमवा
2 मार्च तृतीया सोमवार

कर्क वृश्चिक मीन

23 जुलाई द्वितीया बुधवार
24 जुलाई तृतीया गुरुवा
26 जुलाई पंचमी शनिवार
11 अगस्त षष्ठी सोमवार
22 अगस्त तृतीया शुक्रवार

नोट:- यह मुहूर्त उर्दू जन्त्री में लिखने से रह गये हैं

दक्षिण उत्तर मुख

मेष सिह धनु

30 अप्रेल सप्तमी बुधवार
12 मई तृतीया सोमवार
24 मई प्रतिपद् शनिवार
28 मई पंचमी बुधवार
22 अक्टूबर पंचमी बुधवार

वृष कन्या मकर

28 मई पंचमी बुधवार
22 अक्टूबर पंचमी बुधवार
19 नवंबर तृतीया बुधवार
22 नवंबर षष्ठी शनिवार
5 दिसम्बर चतुर्थी शुक्रवार

मिथुन तुला कुम्भ

30 अप्रेल प्रातः वृष लग्न
12 मई तृतीया सोमवार
19 नवंबर तृतीया बुधवार
23 नववर षष्ठी शनिवार
5 दिसंबर चतुर्थी शुक्रवार

कर्क वृश्चिक मीन

30 अप्रेल सप्तमी बुधवार
24 मई प्रतिपद् शनिवार
19 नवंबर तृतीया बुधवार
22 नवंबर षष्ठी शनिवार
5 दिसंबर चतुर्थी शुक्रवार

विजेश्वर जंत्री मिल सकती है

(1) विजेश्वर ज्योतिषालय विजविहार ।
(2) गोविन्द नव धारा (रजिस्टर्ड) गणपतयार (श्रीनगर)
(1) विजयेश्वर प्रिंटिंगप्रेस नानाव तिन् (समीप जैन मन्दिर
(2) भसीन स्टेशनरी स्टोर पक्काडंगा (दू: भाष 43885
(3) गुप्ता स्टेशनरी स्टोर मिर्झाचौक
देहाती पुस्तक भंडार चावड़ी बाजार (दू:भा. 2610301

ग्रह संचार 2043
विजश्वर पंचाङ्ग से

भौम

23 मई मकर में
18 जुलाई वक्री धनु में
10 सितम्बर मकर में
11 नवम्बर कुम्भ
28 दिसम्बर मीन
9 फरवरी मेष
26 मार्च वृष

बुध

1 मई मेष मे
17 मई वृष
2 जून मिथुन
21 जून कर्क
26 अगस्त सिंह
12 सितम्बर कन्या
29 सितम्बर तुला
6 दिसम्बर वृश्चिक में
26 दिसम्बर धनु में
12 जनवरी मकर में
30 जनवरी कुम्भ

बृहस्पति

18 जुलाई मीन में
4 अगस्त वक्री कुम्भ
27 जनवरी मीन

शुक्र

20 अप्रैल वृष में
15 मई मिथुन
10 जून कर्क
6 जुलाई सिंह
3 अगस्त कन्या
1 सितम्बर तुला
1 जनवरी वृश्चिक
30 जनवरी धनु
25 फरवरी मकर

शनि

वृश्चिक में

राहु केतु

17 अगस्त मीन में राहु
कन्या में केतु

ग्रह संचार
सूक्ष्मगणित के

भौम

26 सितम्बर तक धनु में
26 सितम्बर मकर
29 दिसम्बर मीन
11 फरवरी मेष में

बुध

4 मई मेष में
19 मई वृष
2 जून मिथुन
20 जून कर्क
27 अगस्त सिंह
11 सितम्बर कन्या
29 तितम्बर तुला
23 अक्टूबर वृश्चिक
10 नवम्बर वक्री तुला
5 दिसम्बर वृश्चिक
25 दिसम्बर धनु
12 जनवरी मकर
31 जनवरी कुम्भ

बृहस्पति

2 फरवरी तक कुम्भ में
2 फरवरी से मीन में

शुक्र

21 अप्रैल वृष में
16 मई मिथुन
10 जून कर्क
6 जुलाई सिंह
12 अगस्त कन्या
31 अगस्त तुला
30 दिसम्बर वृश्चिक
30 जनवरी धनु
25 फरवरी मकर

शनि

वृश्चिक में
18 अगस्त मीन राहु

विवचक्षीर मुहूर्त्त

चैत्र शुक्लपक्ष
१७ अप्रेल अष्टमी गुरु०

वैशाख कृष्णपक्ष
२५ अप्रेल प्रतिपद् शुक्र०
२७ अप्रेल तृतीया रवि०

वैशाख शुक्लपक्ष
२१ मई द्वादशी बुधार

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष
१५ जून अष्टमी शुक्रवार
१८ जून एकादशी बुध०
१९ जून द्वादशी गुरुवार
२० जून त्रयोदशी शुक्र०

आषाढ शुक्लपक्ष
१३ जुलाई षष्ठी रविवार
१४ जुलाई सप्तमी सोम

श्रावण शुक्लपक्ष
१० अग. पचमी रवि०
११ अगस्त षष्ठी सोम०
१२ अगस्त अष्टमी बुध०
१८ अगस्त नवमी गुरुवार

आश्विन शुक्लपक्ष
५ अक्टू. द्वितीया रवि०
६ अक्टू तृतीया सोमवार
८ अक्टूबर पंचमी बुध०

फाल्गुन कृष्णपक्ष
१८ फरव पंचमी बुधवार

फाल्गुन शुक्लपक्ष
४ माच पंचमी बुधवार

सर्वार्थसिद्ध योग

कोई भी सर्वसाधारण शुभ कार्य यानि किसी अफसर से मिलना दरखास्त देना, खरीद व फरोख्त करना, हिसाब खोलना, ऋण लेना, किसी शुभ कार्य सम्बन्धित सामान का घर में लाना आदि के लिये सर्वार्थसिद्ध योग :

17 अप्रैल गुरुवार
10 अप्रैल गुरुवार
23 अप्रैल बुधवार
12-30 दिन तक
7 मई बुधवार
5-56 शांतक
10 मई शनिवार
10-50 दिन से
12 मई सोमवार
3-50 दिन तक
15 मई गुरुवार
23 मई शुक्रवार
4-16 दिन से

1 जून रविवार
8-31 दिन से
3 जून मंगलवार
11-12 दिन से
15 जून रविवार
5-54 प्रातः से
20 जून शुक्रवार
29 जून रविवार
5-11 शांतक
1 जुलाई मंगलवार
13 जुलाई रविवार
17 जुलाई गुरुवार
8-37 दिन से
18 जुलाई शुक्रवार
30 जुलाई बुधवार
5 अगस्त मंगलवार
7-11 प्रातः से
6 अगस्त बुधवार
13 अगस्त बुधवार
4-45 दिन से
14 अगस्त गुरुवार

3-8 दिन तक
17 अगस्त रविवार
10-20 दिन से
24 अगस्त रविवार
9-28 दिन तक
26 अगस्त मंगलवार
1-14 दिन से
27 अगस्त बुधवार
3-38 दिन से
1 सितम्बर सोमवार
2 सितम्बर मंगलवार
24 सितम्बर रविवार
5-13 शांतक
19 सितम्बर शुक्रवार
21 सितम्बर रविवार
6-29 शांतक
23 सितम्बर मंगलवार
24 सितम्बर बुधवार
29 सितम्बर सोमवार
10-1 दिन तक

30 सितम्बर मंगलवार
11-49 दिन तक
8 अक्टूबर बुधवार
7-21 प्रातः तक
17 अक्टूबर शुक्रवार
22 अक्टूबर बुधवार
24 अक्टूबर शुक्रवार
1-40 दिन से
26 अक्टूबर रविवार
5-50 शांतक
3 नवम्बर सोमवार
5-10 शांतक
4 नवम्बर मंगलवार
3-36 दिन तक
13 नवम्बर गुरुवार
14 नवम्बर शुक्रवार
17 नवम्बर सोमवार
1-23 दिन से
19 नवम्बर बुधवार
21 नवम्बर शुक्रवार
29 नवम्बर शनिवार

सर्वार्थसिद्ध योग

1 दिसम्बर सोमवार
6 दिसम्बर शनिवार
4-10 दिन तक
11 दिसम्बर गुरुवार
12 दिसम्बर शुक्रवार
4-44 दिन तक
15 दिसम्बर सोमवार
18 दिसम्बर गुरुवार
24 दिसम्बर बुधवार
27 दिसम्बर शनिवार
10-45 दिन तक
29 दिसम्बर सोमवार
7-55 प्रात: तक
2 जनवरी शुक्रवार
6 जनवरी मंगलवार
8 जनवरी गुरुवार
12 जनवरी सोमवार
15 जनवरी गुरुवार
20 जनवरी मंगलवार
21 जनवरी बुधवार
30 जनवरी शुक्रवार
8-21 दिन तक
5 फरवरी गुरुवार
2-39 दिन तक
7 फरवरी शनिवार
1-1 दिन से
9 फरवरी सोमवार
3-53 दिन तक
1 मार्च रविवार
2. दिन से
3 मार्च मंगलवार
2-17 दिन से
7 मार्च शनिवार
15 मार्च शनिवार
11-11 दिन से
20 मार्च शुक्रवार
9-4' दिन से
29 मार्च रविवार

पंचक आरम्भ तथा समाप्ति काल

मई

2 शुक्रवार 12-14 दिन से
6 मंगलवार 3-52 दिन तक
29 गुरुवार 8-15 रात से

जून

3 मंगलवार 12-24 दिन तक
25 बुधवार 3-56 रात से
30 सोमवार 6-36 शांतक

जुलाई

23 बुधवार 1-48 दिन से
27 रविवार 2-2 रात तक

अगस्त

19 मंगलवार 7-48 रात से
24 रविवार 9-28 दिन तक

सितम्बर

15 सोमवार 3-43 रात से
20 शनिवार 4-54 दिन तक

अक्टूबर

13 मंगलवार 11-44 दिन से
17 शुक्रवार 12-21 रात तक

नवंबर

9 रविवार 7-41 रात से
14 शुक्रवार 7-56 प्रात: तक

दिसम्बर

6 शनिवार 3-40 रात से
11 गुरुवार 3-27 दिन तक

जनवरी

3 शनिवार 11-46 दिन से
7 बुधवार 10-59 रात तक

फरवरी

26 गुरुवार 3-18 रात से

मार्च

3 मंगलवार 2-17 दिन तक

असलेपा नक्षत्र भी मूल नक्षत्र की भांति हानिकारक होता है परन्तु पादों के फल में अन्तर होता है जैसा कि आपको चित्र देखने से विदित होगा, आप घबराये मत असलेपा तथा मूला नक्षत्र पर उत्पन्न हुए बालक की जन्म कुण्डली में ग्रह स्थिति विशेष-तया बृहस्पति अच्छा हो तो वह बालक भी अपने वंश का नाम उज्ज्वल करने वाला होता है, यदि आप शान्ति न करवा सकें तो जन्त्री में लिखे हुए औषधियों से माता तथा बालक को जिस दिन मूल नक्षत्र हो शांति करवाये

मूलपाद चित्र

	मूल का आरम्भ		पिता के लिए अशुभ		माता के लिए अशुभ		धन हानि		शुभ
अप्रै. 28	4 बजे 53 प्रातः से	28	10 बजे 31 दिन तक	28	4 बजे 9 दिन तक	28	9 बजे 47 रात तक	28	3 बजे 25 रात तक
मई 25	1 बजे 2 दिन से	22	6 बजे 39 रात तक	25	12 बजे 16 रात तक	26	5 बजे 53 प्रातः तक	26	1 बजे 30 दिन तक
जून 21	9 बजे 10 रात से	21	2 बजे 44 रात तक	22	8 बजे 19 प्रातः तक	22	1 बजे 53 दिन तक	22	7 बजे 36 रात तक
जुला.19	5 बजे 20 प्रातः से	19	10 बजे 56 दिन तक	19	4 बजे 32 दिन तक	19	10 बजे 8 शा तक	20	3 बजे 45 रात तक
अग. 15	1 बजे 29 दिन से	15	7 बजे 5 रात तक	15	12 बजे 41 रात तक	16	6 बजे 17 प्रातः तक	16	11 बजे 54 दिन तक
सितं. 11	9 बजे 42 रात से	11	3 बजे 17 रात तक	12.	8 बजे 52 दिन तक	12	2 बजे 27 दिन तक	12	8 बजे 2 रात तक
अक्तू. 9	5 बजे 47 प्रातः से	9	11 बजे 22 दिन तक	9	4 बजे 58 दिन तक	9	10 बजे 34 शां तक	10	4 बजे 10 प्रातः तक
नवं. 5	1 बजे 58 दिन से	5	7 बजे 33 रात तक	5	1 बजे 9 रात तक	6	6 बजे 45 प्रातः तक	6	12 बजे 21 दिन तक
दिसं. 2	10 बजे 10 रात से	2	3 बजे 46 रात तक	3	9 बजे 22 दिन तक	3	2 बजे 58 दिन तक	3	8 बजे 34 शा. तक
दिसं. 30	6 बजे 20 प्रातः से	30	11 बजे 55 दिन तक	30	5 बजे 30 शाम तक	30	11 बजे 5 रात तक	30	4 बजे 41 रात तक
जन. 26	2 बजे 28 दिन से	26	8 बजे 4 रात तक	26	1 बजे 40 रात तक	27	7 बजे 16 प्रातः तक	27	12 बजे 52 दिन तक
फर्व. 22	10 बजे 38 रात से	22	4 बजे 13 रात तक	23	9 बजे 49 दिन तक	23	3 बजे 24 दिन तक	23	9 बजे रात तक
मार्च 22	6 बजे 51 प्रातः से	22	12 बजे 24 दिन तक	22	6 बजे 1 रात तक	22	11 बजे 36 रात तक	23	5 बजे 10 प्रातः तक

अश्लेषापाद चित्र

	आरम्भ		[illegible]		धन हानि		माता के लिए अशुभ		पिता के लिए अशुभ
अप्रै. 18	1 बजे 30 दिन से	18	7 बजे 4 शा तक	18	1 बजे 52 रात तक	19	8 बजे 3 प्रातः तक	19	2 बजे 14 दिन तक
मई 15	9 बजे 4 रात से	15	3 बजे 15 रात तक	16	9 बजे 27 दिन तक	16	3 बजे 38 दिन तक	16	9 बजे 53 रात तक
जून 12	4 बजे 36 प्रातः से	12	10 बजे 50 दिन तक	12	5 बजे 5 दिन तक	12	1 बजे 18 रात तक	13	5 बजे 32 प्रातः तक
जुल. 9	12 बजे 4 दिन से	9	6 बजे 20 शा तक	9	12 बजे 36 रात तक	10	6 बजे 51 प्रातः तक	10	1 बजे 8 दिन तक
अग. 5	7 बजे 11 शा से	5	1 बजे 34 रात तक	6	7 बजे 58 प्रातः तक	6	2 बजे 22 दिन तक	6	8 बजे 45 रात तक
सितं. 1	3 बजे 2 रात से	2	9 बजे 21 दिन तक	2	3 बजे 39 दिन तक	2	9 बजे 58 रात तक	2	4 बजे 17 रात तक
सित.29	10 बजे 1 दिन से	29	4 बजे 28 दिन तक	29	10 बजे 55 रात तक	30	5 बजे 22 प्रातः तक	30	11 बजे 49 दिन तक
अक्. 26	5 बजे 50 शां से	26	12 बजे 12 रात तक	27	6 बजे 35 प्रातः तक	27	12 बजे 57 दिन तक	27	7 बजे 20 शा तक
नवं. 22	1 बजे 15 रात से	23	7 बजे 38 प्रातः तक	23	2 बजे 2 दिन तक	23	8 बजे 26 रात तक	23	2 बजे 50 रात तक
दिसं.20	8 बजे 45 प्रातः से	20	2 बजे 53 दिन तक	20	9 बजे 1 रात तक	21	3 बजे 9 रात तक	21	9 बजे 17 दिन तक
जन. 16	3 बजे 54 दिन से	16	10 बजे 21 रात तक	16	4 बजे 49 रात तक	17	11 बजे 16 दिन तक	17	5 बजे 43 दिन तक
फर्व. 12	1 बजे 15 रात से	13	5 बजे 43 प्रातः तक	13	12 बजे 12 दिन तक	21	6 बजे 40 रात तक	13	1 बजे 9 रात तक
मार्च 11	6 बजे 31 शा से	11	12 बजे 33 रात तक	12	6 बजे 35 प्रातः तक	12	12 बजे 37 दिन तक	22	6 बजे 40 रात तक

ॐ

बारह राशियों का वर्षफल

तथा

मासिक फलादेश

सम्पादक :—

ज्योतिषी प्रेमनाथ शास्त्री

विजयेश्वर जन्त्री का राशिफल जिन ग्रन्थों के आधार से लिखा जाता है, वे शास्त्र हैं —बृहद्संहिता, वराहसंहिता, वशिष्ठ संहिता, ज्योति प्रकाश, ज्योतिष सागर, ज्योतिष सिन्धु, रत्नकोष, फल संग्रह, ग्रह गोचर ज्ञान, गोचर विचार इत्यादि ।

"गोचरफल"

'गोचर' का अर्थ :—गो 'गम्' धातु से बना है, 'गम्' का अर्थ है जाना, 'चर्' का अर्थ है एक राशि से दूसरी राशि में चलना, ग्रह का एक राशि से दूसरी राशि में जाना **'गोचर'** कहलाता है। ग्रह का राशि बदलते समय मनुष्य पर क्या तथा कैसा प्रभाव पड़ता है जिन शास्त्रों में विस्तार से दर्ज है गोचर शास्त्र कहलाते हैं ।

एक ही राशि असंख्य मनुष्यों की होती है। परन्तु ऐसा होने पर भी यह फल हर प्राणी पर कुछ न कुछ पूरा उतरता ही रहता है, इस फलादेश का पूरा उतरना सम्पादक की योग्यता नहीं अपितु इन ग्रंथों के बनाने वाले वराहमिहर, वशिष्ट, नारद, गर्ग, ललाचार्य, यवनाचार्य, बैद्यनाथ, आचार्य श्रीपति इत्यादि ऋषियों की ही महानता है, इन आदरणीय आचार्यों के सामने नतमस्तक होकर मैं आज ज्येष्ठ शुक्लपक्ष पूर्णिमा 3 जून 1985 ई० को यह गोचरफल (राशिफल) लिखने का श्री गणेश विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय विजबिहारा में कर रहा हूं ।

1986 ई०

मेष राशि का वर्षफल

मेष राशि की वर्षकुण्डली के ग्रहों का फलादेश गोचर शास्त्रों के आधार से नीचे पढ़िये :—

सूर्य :—11 वें भाव में होने से दूर देश में घूमना पड़ता है, खर्च की अधिकता होती है, शरीर अस्वस्थ रहता है, दरबार में मान हानि होती है, मित्र भी शत्रु बनते हैं, हर काम में रुकावट पड़ती है ।

चन्द्रमा :—पहले भाव में होने से सुख और आनन्द की प्राप्ति होती है, शरीर स्वस्थ रहता है, खाने को अच्छे पदार्थ और पहनने को वस्त्र मिलें, गृहस्थी होने पर स्त्री का सुख, अचानक लाभ की प्राप्ति ।

भौम :—नवें भाव में भौम का होना अशुभ माना जाता है, मान प्रतिष्ठा में कमी होती है, कमाई में रुकावट पड़ती है, धार्मिक तथा सामाजिक कामों से दिलचस्पी नहीं रहती है, नीच विचारों के लोगों की संगति में पड़ने का अन्देशा ।

बुध :—बारहवां बुध भी गोचर से अनिष्ट माना जाता है, धन की हानि, घरेलू परेशानियां घेरे रखेंगी, अचानक कोई झगड़ा अथवा कोई झूठा आरोप लगने की सम्भावना, शत्रुओं से भय, सेहत में बिगाड़, सम्बन्धियों और प्रेमियों से अचानक अनबन ।

बृहस्पति :—नवें भाव में बृहस्पति होने से कमाई में वृद्धि, गृहस्थी होने पर पुत्र पैदा होने का योग है, राजदरबार में आदर मिले, हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता, धर्मकार्यों में दिलचस्पी ।

शुक्र :—पहले भाव में शुक्र का होना गोचर से उत्तम माना गया है, अच्छे-अच्छे कार्यों में धन का खर्च होना, आमदनी की अधिकता, आदर मान में वृद्धि, यात्रा में लाभ, व्यापार में अचानक लाभ।

शनि :—सातवें भाव में होने से घर छोड़ने पर मजबूर होना, स्त्री का रोगी होना, अचानक धन की हानि. यात्रा में कष्ट, अचानक कोई दुर्घटना का होना, मान हानि, नौकरी अथवा कारोबार हाथ से निकल जाने का अन्देशा।

राहु :—पहले भाव में राहु का होना उत्तम माना जाता है, मान में वृद्धि होती है, धन की अधिकता, गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहता है (यह मत यवनाचार्य का है)।

केतु :—सातवां केतु होने से मान में वृद्धि होती है, धन की अधिकता होती है, पुत्रों की ओर से मानसिक शान्ति होती है, शरीर में चोट लगने का अन्देशा होता है।

मेष राशि का वर्षफल

मेष राशि की वर्षकुण्डली के ग्रहों के 'वेध' 'अष्टक वर्ग', 'उदय अस्त' 'वक्री मार्गी' 'उच्च नीच' 'दृष्टि' 'शत्रुता' मित्रता आदि का विचार करने से मालूम होता है, यह वर्ष आपको शान्त वातावरण में ही गुजारना होगा, शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि आपका शरीर पहले से ही अस्वस्थ है तो इस वर्ष गत वर्षों की अपेक्षा बहुत हद तक स्वस्थ रहेगा, यदि आपके शरीर में अब कोई तकलीफ है जिसके काट छांट के बारे में आप सोच रहे हैं आप बिना किसी हिचकिचाहट के आप्रेशन आदि जो भी इलाज करवाना हो अवश्य करवायें, निश्चय रखिये आपका रोग समूल समाप्त होगा, गृहस्थी होने पर यदि धर्म पत्नी के बारे में ऐसी ही कोई समस्या है तो उसके लिये भी ग्रह अनुकूल है, शारीरिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा. परन्तु इस बात का अवश्य ध्यान रखे यदि आपको जन्मपत्री से शरीर के विषय में अशुभ दशा चल रही है तो उसका उपाय करने पर ही आपके शरीर के बारे में लिखा हुआ फलादेश पूरा उतरेगा, उपाय के रूप मे इस दोहे को कण्ठस्थ करके बार-बार उच्चारण करते रहें "प्रभुनाम की औषधि—खरी खनत से खाये। रोग-पीड़ा व्यापे नहीं, सब संकट हट जाये।।" इस दोहे के अतिरिक्त भोजन खाने से पहले और बाद में "श्रीमद्भागवद्गीता" के निम्न श्लोक का उच्चारण अवश्य करें :—अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहम् आश्रितः प्राणापान समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्"।

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा, जो कोई भी काम आपके हाथ में होगा क्यों न वह काम दूसरों के लिए हानिकारक ही हो परन्तु आपके लिए लाभदायक रहेगा, यदि आप नये सिरे से कोई कारोबार करना चाहते हैं अथवा चालू व्यापार को ही तरक्की देने के लिए कोई विशेष पूंजी खर्च करना चाहते हैं तो दोनों सूरतों में आपका कारोबार

तेजी से आगे बढ़ेगा, आप मन लगाकर काम में जुट जायें और खुले दिल से कारोबार में पूंजी लगायें तो यह वर्ष आपके कारोबार को चमकाने की नींव डालने का वर्ष होगा, यदि आप किसी फैक्टरी से सम्बन्धित काम करते हैं तो यह वर्ष लाभ की दृष्टि से स्मरणीय वर्ष होगा, यदि आप जमींदार हैं और आपका सम्बन्ध फलों तथा बागात से है तो आपको अधिक दौड़धूप करनी होगी, ऐसा करने पर भी लाभ की आशा न रखें, नौकरी पेशा मेष राशि वालों के लिए सामान्यतः इस वर्ष के पहले छः मास अशान्त वातावरण के होंगे और वर्ष के दूसरे छः मास हर प्रकार से सुखशांति के होंगे,. वर्ष के अन्तिम तीन महीनों में अचानक तरक्की का योग भी है, यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो भी अचानक कोई विशेष लाभ मिलेगा, गृहस्थी होने पर यह वर्ष आपके लिए एक महत्वपूर्ण वर्ष होगा, इस वर्ष आपके हाथों में ऐसा कोई शुभ काम रचाये जाने की सम्भावना है जो आपके मान प्रतिष्ठा आदि में वृद्धि करेगा यह भी सम्भव है कि आपने कोई तामीरी काम आरम्भ करना होगा, यद्यपि आरम्भ में उस तामीरी काम की योजना छोटी मोटी ही होगी परन्तु अन्त में वह योजना विशाल रूप धारण करेगी, यद्यपि यह वर्ष आर्थिक दृष्टि से उत्तम है भी परन्तु खर्च की दृष्टि से यह वर्ष बलवान् है, खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, नौकरी पेशा होने पर आपकी तब्दीली होगी वह तब्दीली तरक्की के साथ होगी, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं, घबराइये मत साहस रखें प्रयत्न करने पर नौकरी अवश्य मिलेगी, विद्यार्थियों के लिये यह वर्ष विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता का होगा, यदि आप ने किसी ट्रेनिंग आदि के लिये जाना हो तो उसमें सफलता अवश्य मिलेगी, यदि विदेश जाने का कोई प्रोग्राम है तो इस वर्ष डटकर कोशिश करें, यदि इस वर्ष आशा पूरी नहीं होगी तो आगे ऐसा योग आना मुश्किल है, यदि आप पढ़ाई सम्बन्धित परीक्षा आदि में इस वर्ष लटक गये तो अपना दुर्भाग्य मानिये, अतः यह फलादेश पढ़ते ही अपनी पढ़ाई का प्रोग्राम बनायें, एक क्षणमात्र भी निष्फल न करें, पढ़ाई आरम्भ करने से पूर्व तीन बार उच्चारण किया करें—इस नियम को वर्ष भर के लिये बनाये रखें।

"ॐ गुरुदेवाय विद्महि महादेवाय धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्"

मेष राशि का मासिक फलादेश

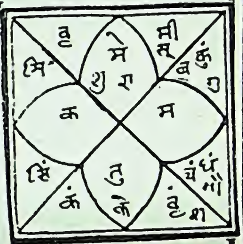

अप्रैल :—इस मास के आरम्भ पर सूर्य चन्द्रमा, भौम तथा शनि ये सभी ग्रह अनिष्ठ स्थानों में ठहरे हैं, ऐसा होने के बावजूद ये सभी ग्रह वेध में हैं जिसके फलस्वरूप यह ग्रह अशुभ होते हुये भी इस मास में शुभ फलदायक ही होंगे, शेष बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा राहु अष्टकवर्ग के आधार से अच्छी पुजीशन में हैं, इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास शांति के वातावरण में ही गुज़रेगा आय की दृष्टि से यह मास

अच्छा रहेगा, यद्यपि खर्च का योग इस मास में बलवान है तो भी खर्च की अपेक्षा आमदनी अधिक रहेगी, चन्द्रमा नवें भाव में होने से मन में प्रायः नीच तरंगों का प्रकट होना तथा नीचे कर्म करने की प्रवृत्ति बनी रहेगी, यदि आप दुकानदार हैं तो आप इस मास में आशा से अधिक लाभ में रहेंगे, यदि आप थोक काम करते हैं तो यह मास यथावत् चलता रहेगा, यदि फलों अथवा बागान से सम्बन्धित काम करते हैं तो दौड़ धूप अधिक होगी परन्तु आपके तिजारत सम्बन्धी सभी काम अधूरे ही रहेंगे, यद्यपि लाभ के लिये यह मास ठीक नहीं है परन्तु हानि की भी कोई सम्भावना नहीं है, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आपका कामकाज तेजी से चलेगा, आपके सभी लटके हुये काम भी हल हो जायेंगे, नौकरी पेशा होने पर दरबार में आपका आदर व मान बना रहेगा, दफ्तर में सम्बन्धित कार्यकर्त्ताओं से प्रेम व्यवहार में वृद्धि होगी, मास के पहले सप्ताह तथा अन्तिम सप्ताह में घर के किसी सदस्य की अकस्मात् परेशानी रहेगी, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य होगी, पठन-पाठन की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, यदि आपने कोई इन्टरव्यू देना हो तो आपकी सफलता अवश्य होगी, अगर आप नौकरी की तलाश में है प्रयत्न कीजिये ऐसा अवसर हाथ से मत जाने दीजिये, यदि इस मास में आपको नौकरी का काम सिद्ध न हुआ तो फिर इस वर्ष नौकरी मिलने की कोई आशा न रखें, नौकरी सम्बन्धित यदि दूर से दूर यात्रा भी करनी पड़े तो उसमें किसी प्रकार की हिचकिचाहट न करें, सम्भव है यात्रा ही आपकी सफलता का कारण बनेगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :— 3, 4, 5, 6, 10, 11, 15, 16 और 22।

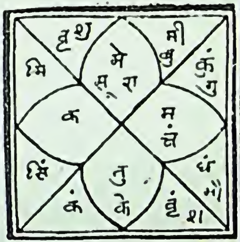

मई :—मासिक फलादेश में अधिक प्रभाव सूर्य का होता है, गोचर में पहले भाव का सूर्य अशुभ माना जाता है पर राहु के वेध में होने से तथा उच्च राशि का 17 डिग्री पर होना आपके लिये शुभ शकुन का सूचक है, इस योग के प्रभाव से आपका शरीर स्वस्थ रहेगा, जिस कार्य में आपका हाथ होगा सम्पूर्ण रूप से सफलता होगी, शेष ग्रहों की स्थिति भी सामान्यतः ठीक ही है, अष्टक वर्ग को दृष्टि में रखकर यही विदित होता है गृहस्थी होने पर घर में मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा जो कि शान व मान के साथ सम्पूर्ण हो जायेगा, यदि आप गृहस्थ सम्बन्धी किसी समस्या में उलझे हुये हैं जिसके सुलझाने का आजतक आपने एड़ी चोटी का जोर लगाया होगा परन्तु कोई समाधान न निकला हो, इस मास में गृहस्थ सम्बन्धी ग्रह आपके अनुकूल है जिसके फलस्वरूप हर एक समस्या का समाधान स्वयं ही होगा, आप जिस किसी भी कारोबार से सम्बन्धित हैं इस मास में आपकी आर्थिक स्थिति में अचानक सुधार होगा, यदि आप लाटरी डालने के आदी हैं

इस मास मे अपने भाग्य की आजमाइश लें, कुछ भी हो किसी न किसी तरीके से आपको कोई लाभ अवश्य मिलेगा, व्योपारियों लिए भी यह मास लाभ का है चाहे आप किसी भी तिजारत से सम्बन्धित होंगे विशेषतया तेल. धान्य आदि का थोक काम करने वालों के लिये यह मास लाभदायक होगा, इस मास के ग्रह व्योपारियों के कनुकुल हैं डटकर काम में जुट जायें यदि आप नौकरीपेशा है तो मास के आरम्भ पर दसवां चन्द्रमा होने से यह मास आप के लिये अशुभ है कोई भी काम सिद्ध होगा ही नही, यदि दैवयोग से कोई काम सिद्ध होगा भी उसके सिद्ध करने के लिए कठिन से कठिन उलझनों का सामना करना होगा, यदि आप गृहस्थी हैं तो सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति होगी, यदि सन्तानपक्ष सम्बन्धित कोई परेशानी हो वह अवश्य मिट जायेगी वह परेशानी लड़के सम्बन्धित हो अथवा लडकी सम्बन्धित, हर दोनों सूरतों में परेशानी मिट जायेगी, विद्यार्थियों के लिए यह महीना सुख का ही है जबकि वृहस्पति मित्रदृष्टि से पांचवें भाव को देख रहा है, पठन पाठन की प्रवृति में वृद्धि होगी, विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता होगी: इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :-

1. 2, 3, 4, 7, 8, 12, 13, 19, 20, 21, 22, 26, 27, 30 और 31।

जून :—सूर्य, चन्द्रमा भौम शनि ये चारों ग्रह अशुभ भाव में ठहरे हैं ऐसा होने के बावजूद ये चारों ग्रह वेध में हैं, शेष ग्रह भी दृष्टि अष्टकवर्ग के आधार से अच्छी स्थिति में हैं, इस शुभ योग के प्रभाव से यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता होगी, गृहस्थी होने पर घर में

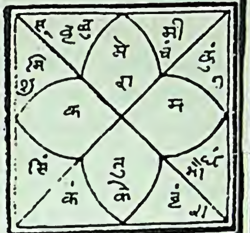

अतिथियों भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों का आना जाना जोरों पर रहेगा, यद्यपि आय भी इस मास में अच्छी होगी परन्तु खर्च का योग भी आय से अधिक बलवान् हैं, घर में बुजर्गों की सेवा करने का अवसर मिले, यदि आप तिजारतपेशा हैं तो आप का तिजारत इस मास में सफल रहेगा, माल का खरीदना बेचने की अपेक्षा अधिक लाभदायक रहेगा, यदि आपको वाहन अथवा कोई जायदाद खरीदने का विचार है तो इस मास में खरीदनें का प्रोग्राम बनाये नौकरीपेशा होने पर आपको अकस्मात तर्की का योग है अथवा तर्की की आशा पक्की हो जायेगी, तब्दीली की भी सम्भावना है, तब्दीली भी आपकी इच्छानुसार होगी, यदि आपको इस मास में यात्रा का योग बने उसको अमली रूप अवश्य दीजिये वह यात्रा आपको लाभदायक रहेगी, विद्यार्थी होने पर आपको यदि विद्या सम्बन्धित कोई योजना है तो उस काम का श्रीगणेश इस मास से कीजिये, विद्या सम्बन्धित आरम्भ किया हुआ काम भविष्य में

आपके लिये लाभदायक रहेगा, यदि आप नोकरी की तलाश में हैं ऐसे काम में बहुत प्रयत्न करने पर भी सफलता की कोई आशा नही है, नौकरी सम्बन्धित विघ्नों की शान्ति के लिये जन्त्री पाठ प्रकरण में से "अष्टादश श्लोकी गीता" का नित्य पाठ किया करें, यदि सम्भव हो तो रोज दूध सहित जल शिवलिंग पर चढ़ाया करें 'महादेव, महादेव, महादेवेतिकीर्तनात् वत्सं गौरिव गौरीशो धावन्तमभिधावति" । इस मास के शुभ दिन हैं :-

4, 5, 9, 16, 17, 18, 26, 27 और 30 ।

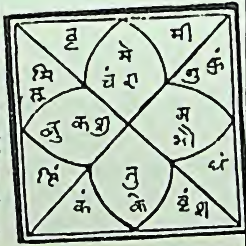

जुलाई :—इस मास में लग्न में चन्द्रमा और राहु अशुभ होते हुए भी वेध में होने से शुभफलदायक होंगे, 11वां बृहस्पति भी शुभफल की ही चेतावनी है, आठवां शनि भी केतु के वेध में है शेष ग्रहों की स्थिति भी अष्टकवर्ग दृष्टि आदि के अनुसार उत्तम है, इस मिले जुले शुभ योग के प्रभाव से यह मास सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा, आपका शरीर भी ठीक रहेगा, यदि शरीर में पहले से कोई तकलीफ है तो उसका भी सुधार होगा, यदि आपको स्त्री की ओर से कोई परेशानी है तो इलाज करवाने पर ग्रहों के प्रभाव से उसका शरीर भी अवश्य स्वस्थ हो जायेगा, यदि आपको घर में सन्तानपक्ष से कोई परेशानी है तो उस परेशानी का इस मास में अवश्य अन्त होगा, यदि आप व्योपारी हैं तो आपके व्योपार में वृद्धि हो जायेगी, व्योपार सम्वन्धित हर काम में सफलता होगी, यदि आप किसी फैक्ट्री से सम्बन्धित कारोवार करते हैं तो आपके कारोवार में अचानक तर्की की क्रान्ति आयेगी, यदि आप फलों तथा बागों से सम्बन्धित काम करते है तो दौडधूप अधिक रहेगी परन्तु इस मास में आपकी कारोवार सम्बन्धित कोई भी समस्या पूर्ण हो नही जायेगी, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आपका कारोबार खूब तेजी से आगे बढ़ता जायेगा और आगे के लिये भी काम को अच्छी तरह चालू होने के लिये साधन सुलभ होंगे, नौकरीपेशा होने पर इस मास में अकस्मात् तब्दीली का योग है जो तब्दीली इच्छानुसार नही होगी, दरबार की ओर से भी आप परेशान ही रहेगें, अचानक किसी सम्बन्धित अफसर से अनबन, विद्यार्थी होने पर पठन-पाठन की ओर आपकी दिलचस्पी कम रहेगी, विद्या सम्बन्धित कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नही होगा बल्कि हर काम में रुकावटें तथा बाधायें पडती रहेंगी, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं प्रयत्न करने पर सफलता की कोई आशा न रखें, अगर किसी विद्यार्थी को इस मास में परीक्षा या इन्टरव्यू देना हो अथवा कोई परिणाम निकलने वाला हो तो नीचे दिये हुए मन्त्र का बार-बार उच्चारण करने पर ही सफलता की आशा रखें दोहा "बुद्धिहीन तनु जानु कैसे सुमरों पवनकुमार । बल बुद्धि विद्या दिये हो, मोरी हरहु क्लेश"

इस मास के शुभ दिन हैं :- 1, 2, 6, 7, 13, 14, 21, 22

अगस्त :—इस मास के शुभ अशुभ ग्रहों के वेध अष्टक, वर्ग दृष्टि शत्रु मित्र, उदय अस्त-वक्री मार्गी तथा ग्रहों के अंशों को ध्यान में रखकर सम्पादक की राय में आपको यह मास कैसे गुजारना होगा निम्न पढ़ें :—इस मास में आपको संघर्ष करना पडेगा, शान्ति का दम लेने का

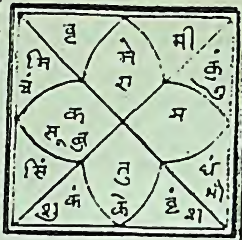

अवसर नही मिलेगा, बहुत प्रयत्न करने पर भी किसी कार्य में यथेष्ट लाभ नही मिलेगा न तो कोई सन्तोषजनक सिद्धि होगी, नौकरीपेशा होने पर आपके हर आरम्भ किये हुए काम में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी परन्तु अन्त में हर काम का परिणाम आपके हक में होगा, दफ्तर में सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से भी अनबन रहेगी, शत्रुओ का जोर रहेगा परन्तु आप पर कोई हावी होगा नही, अगर आप नौकरी में ही कारोबार आरम्भ करने के बारे में सोच रहे हैं, नौकरी करू या कारोबार आप इस परेशानी में न रहे, आपने अन्त में कारोबार ही करना होगा जिसमें आप सफल रहेंगे, लाजिम है आप इसी माह में उस काम का श्रीगणेश करें, गृहस्थी होने पर आप को इस मास में घरेलू परेशानी घेरे रखेंगी, सन्तानपक्ष से आप परेशान रहेंगे, खर्च की इस मास में अधिकता कम रहेगी आमदनी यथावत् रहेगी, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से विशेष रुचि रहेगी, तीर्थो-मन्दिरों-महात्माओं साधुसन्तों से मिलने जुलने की प्रवृति में वृद्धि होगी, यद्यपि यह मास अधिक संघर्ष तथा दौडधूप वाला ही होगा भी, परन्तु नया काम आरम्भ करने के लिए इस मास के ग्रह अनुकुल हैं, यदि आप इस मास को शान्त वातावरण में गुजारना चाहते हैं तो बार-बार उच्चारण किया करें।

देहि मे सौभाग्यं-आरोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥

इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये- 2, 9, 10, 11, 12, 13, 17, 18, 19, 24, 25, 29, 30 और 31,

सितम्बर—मासिक फलादेश में अधिक प्रभाव सूर्य और चन्द्रमा का होता है, यह दोनों ग्रह मास के आरम्भ पर अच्छी स्थिति में नहीं हैं, सूर्य के पाँचवें भाव के विषय में गोचर फलित में दर्ज है—शारीरिक और मानसिक अशान्ति रहती है, अचानक झगड़े खड़े हो जाते हैं, राजदरबार में

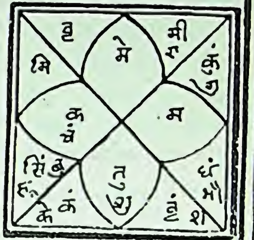

अनबन रहती है, अचानक कोई दुर्घटना होती है। ऐसे ही चौथे चन्द्रमा के बारे में लिखा हैं—भाई बन्धुओं से लड़ाई झगड़ा होता है, शरीर में अचानक कोई रोग प्रकट होता है,अग्नि या पानी से भय रहता है,समाज में अनादर होता है, गृहस्थी होने पर स्त्री की तरफ से परेशानी रहती है

यद्यपि यह दो ग्रह अच्छी पुजीशन में नहीं हैं परन्तु शेष ग्रह वेध अष्टक वर्ग की दृष्टि से अच्छी स्थिति में हैं, इस मिले जुले शुभ अशुभ योग के प्रभाव से यह मास डांवांडोल स्थिति में गुजरेगा, कभी हर प्रकार से अशान्त वातावरण रहेगा और कभी शान्त वातावरण, शरीर सुख प्राय: उत्तम रहेगा।, आय में कोई विशेष वृद्धि नहीं होगी, अपितु यथाक्रम काम चलता रहेगा, यदि आप व्योपारी हैं रात दिन काम में जुटे रहेंगें परन्तु तो भी आपके परिश्रम के अनुसार आप को लाभ नहीं मिलेगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं तो आप अवश्य लाभ में रहेंगे,यदि आप नौकरी करते हैं दरबार सम्बन्धित कोई समस्या हो वह ज्यूं की त्यूं लटकती रहेगी,गृहस्थी होने पर गृहस्थ सम्बन्धी रोज की नई-नई समस्यायें आपको अशान्त बनाये रखेंगी, खर्च की भर-मार से तंगदस्ती से दुराचार होगा, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों में सम्मिलित होना इस मास का विशेष व्यसन रहेगा, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा। अथवा मंगल कार्यों में सम्मिलित होने के प्रोग्राम बनते रहेंगें, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा यदि आप का कोई परिणाम इस मास में निकलने वाला है तो सफलता की कोई आशा न रखें, यदि आपने किसी इन्टरविव अथवा परीक्षा में सम्मिलित होना हो तो उस में सफल होने का योग नहीं है पठन-पाठन की प्रवृत्ति भी कम रहेंगी। जिस विद्यार्थी ने इस मास में कोई परीक्षा देनी हो, निम्न लिखे गये उपाय को अपनाने से ही सफलता की आशा रखें :—

उपाय—"ॐ ब्रूं बृहस्पतये नमः" । इस मन्त्र का बार बार उच्चारण किया करें। इस मास के शुभ दिन हैं :—5, 6, 7, 14, 15, 16, 17, 21, 26, 27 और 28,

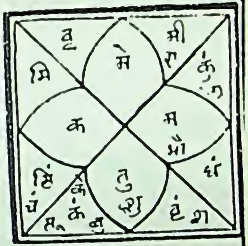

अक्टूबर—यह मास सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मेलजोल, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा जो शान और मान से रचाया जायेगा, पार्टियों में शामिल होना भाई बन्धुओं तथा मित्रों के साथ खाना पीना इस मास का मुख्य व्यसन होगा, आमदनी में यदि कुछ वृद्धि होगी नहीं लेकिन खर्च की भर मार होगी, कमाया हुआ धन ही खर्च करना होगा, अगर आप व्योपारी हैं तो आपको रात-दिन काम में जुट के लगा रहना पड़ेगा, ऐसा करने के बावजूद भी वांछित लाभ की कोई आशा नहीं, यदि आपका कारोबार फलों से सम्बन्धित अथवा बागात ही आपकी कमाई के साधन हैं, यह मास यद्यपि अधिक से अधिक दौड़धूप का होगा भी परन्तु अन्त में लाभ इच्छा पूर्वक मिलेगा, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आमदनी तथा आदरमान की दृष्टि से यह मास रिकार्ड होगा, इस मास में अगर यात्रा का योग बने वह यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी। यदि आपको इस वर्ष कोई नामीरी काम करने का विचार है अथवा कोई

जायदाद वाहन आदि खरीदने का विचार है तो इसी मास में उसका श्री गणेश कीजिये, आप निश्चिय रखिये इस मास में ऐसा आरम्भ किया हुआ काम दिनों दिन तेजी से तर्की करता रहेगा, विद्यार्थियों के लिये यह महीना अशान्तिका ही है,पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी,पार्टियों में शामि होना मित्रों से मिलना जुलना आपकी पढ़ाई में बाधक होगा, यद्यपि यह मास हर प्रकार से मेष राशि वालों के लिये शुभ फलदायक है परन्तु शरीर के विषय में आपको सावधान रहना चाहिये, अचानक शरीरकष्ट होने अथवा चोट लगने की सम्भावना है,यदि जन्मपत्री आदि में दशा शुभ होने से आप शारीरिक कष्ट से बच भी जाओगे परन्तु घर के किसी निकटतम सदस्य के शरीर की परेशानी आपके रंग में भंग करने का कारण होगी, इसलिये आवश्यक है आप उपाय जरूर करें :—प्रातः नहा धोकर किसी कटोरी में थोड़ा सा शुद्ध जल लेकर उसको हाथ से पकड़कर वह पानी पी लीजिए :—

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहं आश्रितः ।
प्राणः पान समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।।

इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—3,4,5,6,14,15,18,19, 23,24,30 और 31,

नवम्बर :—सातवें भाव का सूर्य यद्यपि गोचर में हानिकारक माना जाता है परन्तु चन्द्रमा और शुक्र के वेध में होने से सूर्य का प्रभाव आप पर उत्तम रहेगा जैसा कि गोचर शास्त्र में दर्ज है—शरीर स्वस्थ रहता है, गृहस्थ का सुख मिलता है, आमदनी में वृद्धि होती है, शुभ कामों पर खर्च होता है, सामाजिक तथा धार्मिक कामों की ओर अधिक झुकाव रहता है सातवां चन्द्रमा भी शुभ फल का ही सूचक है, आठवां बुध भी गोचर में उत्तम माना जाता है, 11 वां वृहस्पति यद्यपि शुभ फलदायक है भी परन्तु वेध में होने से भूषण होते हुए भी वह इस मास में आपके लिये दूषण है, इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास प्रायः शान्त वातावरण में ही गुजरेगा, परन्तु शरीर बिगड़ने की भी सम्भावना है जिसका केवल एक मात्र उपाय है - आप इस मास में कभी भी मांस का प्रयोग न करें न किसी पार्टी मे शामिल हो जायें हो सके तो 2 नवम्बर रविवार को पूरा 24 घंटे का उपवास रखें, कमाई में भी वृद्धि होगी, अकस्मात् लाभ का भी योग है व्योपारी वर्ग के लिये यद्यपि यह मास ढीला रहेगा, अगर आप फलों से सम्बन्धित तिजारत करते हैं, इस मास मे फलों अथवा बागात का बेचना हर दोनों सूरतों में आपके लिये लाभदायक रहेगा, यदि आपकी आय का साधन केवल जमीन है तो जमीन के माध्यम से अथवा पशुधन से कुछ लाभ मिलेगा, नौकरी

पेशा होने पर यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा, यदि नौकरी सम्बन्धित किसी उलझन ने आपको घेरे रखा है इस माह में थोड़ा सा प्रयत्न करने पर स्वयं ही हल हो जायेगी, दरबार में आदर व मान बना रहेगा, विद्यार्थी होने पर पठन-पाठन की ओर प्रवृत्ति बनी रहेगी, यदि इस मास में विद्या सम्बन्धित नतीजा निकलने वाला है तो आप सफल रहेंगे, यदि आपको विद्या सम्बन्धित कोई नया प्रोग्राम आरम्भ करने का विचार है तो इस मास में उसका आरम्भ करें सफलता निश्चित है इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :— 1,2,8,9,14,15,19,20,26,27 और 28।

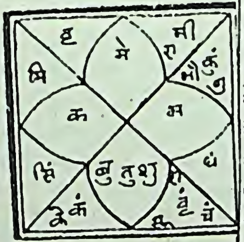

दिसम्बर :—इस मास में प्रायः सभी ग्रह अच्छी स्थिति में हैं, सूर्य चन्द्रमा शनि ये तीनों ग्रह हानि कारक होते हुये भी वेध में होने से शुभफल दायक ही होंगे, शेष ग्रह भी अष्टकवर्ग वेध आदि के आधार से अच्छी स्थिति में है इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह मास शांत वातावरण में व्यतीत होगा, आपका शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि आप के शरीर में पहले से कोई तकलीफ है तो किसी महात्मा साधु सन्त के पास जायें उनके आशीर्वाद से ठीक होगा, यदि आप गृहस्थी हैं आप का घरेलू सुख उत्तम रहेगा विशेषतया सन्तान-पक्ष से शान्ति बनी रहेगी जबकि वृहस्पति पांचवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, स्त्री की ओर से भी मानसिक शान्ति रहेगी, यदि आप तिजारतपेशा है आपका संबंध मशीनरी कोयला तेल सीमेंट आदि से है तो आपको इस मास में अधिक दौड़ धूप करनी पड़ेगी, यद्यपि इस मास मे उस दौड़ धूप का लाभ दिखाई न दे परन्तु उस परिश्रम का परिणाम भविष्य में अच्छा रहेगा, यदि आप किरयाना कपड़ा आदि से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो यह मास आपके लिये लाभदायक है नौकरी पेशा होने पर जिस काम में आपका हाथ होगा सफलता अवश्य होगी, यदि पहले से कोई नौकरी सम्बन्धित समस्या लटकी हुई है इस मास में थोड़ा सा प्रयत्न करने पर उस समस्या का समाधान अवश्य होगा, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं इस मास में अकस्मात् ऐसा कोई साधन मिलेगा जो आपको नौकरी दिलवाने में सहायक होगा, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में मनोवांछित सफलता होगी, उपरिलिखित फलादेश का सार यूं है कि यह मास हर पहलू से उत्तम रहेगा। यह सम्पादक की अपनी राय नहीं है अपितु गोचर-शास्त्रों का सहारा लेकर लिखा है परन्तु आप नोट कीजिए विशेषतया विद्यार्थी वर्ग मेरे नीचे लिखे उपाय को असली रूप दें न ही तो उन पर यह फलादेश पूरा उतरेगा नहीं।

उपाय :—प्रातः उठकर माता-पिता अथवा घर के किसी बुजर्ग के चरणों पर सिर झुकाकर उनके चरणों को स्पर्श करके श्रद्धा से चूमो तब तक सिर ऊपर मत उठाओ जब तक वह आशीर्वाद न दें। इस मास के शुभ दिन :—5, 6, 7, 8, 12, 13, 24, 25 और 26,

जनवरी 1987 ई० :—इस मास के आरम्भ पर केन्द्र अर्थात् पहले चौथे सातवें और दसवें भाव में कोई ग्रह नहीं है, ऐसे ही नवें भाव में सूर्य चन्द्रमा भौम का संयोग होना अशुभफल की चेतावनी है, बारवां भौम और राहु भी अशुभफल का ही संकेत है, दृष्टि अष्टकवर्ग के आधार से ग्रह कुछ सुधरे हुये भी हैं, इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह मास अशान्त वातावरण में गुजरेगा, शरीर के विषय में आप सावधान रहिये, अकस्मात् शरीर-कष्ट का योग है अथवा शरीर में अचानक चोट की सम्भावना है, आमदनी में कोई वृद्धि नहीं होनी अपितु खर्च की भरमार होगी, यदि खर्च की अधिकता से बच भी गये तो आचानक हानि की सम्भावना, बारवें भौम और राहु के प्रभाव से आपको इस मास में तंगदस्ती से दुचार होगा, यदि आप व्योपारी है तो आपको तिजारत में हानि की सम्भावना, नौकरी पेशा होने पर आप नौकरी के विषय में हर पहलू से परेशान रहेंगे, कोई झूठा आरोप लगने का अंदेशा है, गृहस्थी होने पर आपको घरेलू परेशानियां घेरे रखेंगी, केवल माता-पिता अथवा किसी मित्र की सहानुभूति सहायक रहेगी, यदि आप विद्यार्थी हैं बृहस्पति पांचवें घर को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है जिसके फलस्वरूप विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, सामान्य

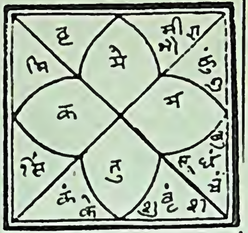

रूप से यह मास मेष राशिवालों के लिये मनहूस महीना है चूंकि यह मास नये वर्ष का पहला महीना है अगर इस महीने के अशुभ शकुन को शुभ शकुन में तबदील करना चाहते हैं तो निम्न उपाय को वर्ष भर अवश्य अपनायें :—

उपाय :—किसी भी नशीली वस्तु का कदापि प्रयोग न करें "महादेव" इस मन्त्र को याद करके बार-बार उच्चारण करते रहें—

महादेव ! महादेव ! महादेवेति कीर्तनात् ।
वत्सं गौरिव गौरीशो धावन्तमभिधावति ॥

इस मास के शुभ दिन भेंट करें :—1, 2, 3, 8, 9, 13, 14, 15, 20, 21, 29, 30 और 31

फरवरी :—ग्यारवें भाव में एक साथ चन्द्रमा बुध बृहस्पति का होना इस मास के शुभ फल की चेतावनी हैं परन्तु लग्न का स्वामी भौम बारवें भाव में होना अशुभ फल को जितलाता है, इस क्रूर योग के प्रभाव से अचानक आपके शरीर में चोट लगने की सम्भावना हैं अथवा अचानक शरीर-कष्ट का योग है, इस कष्ट से बचने के लिये उपाय के रूप में पृष्ठ 28 से "रोगान अशेषान् अपहंसि" इस मन्त्र का प्रायः उच्चारण किया करे, आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, जिस

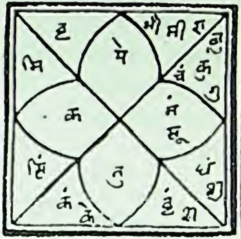

काम में आपका हाथ होगा सफलता अवश्य होगी यदि आप तिजारत पेशा है तो आप का तिजारत इस मास में लाभदायक रहेगा, यदि आप के हां धन सम्बन्धित कोई समस्या बहुत देर से लटकी पड़ी है तो इस मास में थोड़ा सा प्रयत्न करने पर वह समस्या हल होगी, सामूहिक रूप से आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, नौकरी पेशा होने पर तब्दीली इच्छानुसार नहीं होगी परन्तु अन्त में वह तब्दीली आपके लिये लाभदायक रहेगी, यदि तब्दीली न होगी तो भी अचानक तर्की का योग है, गृहस्थी होने पर यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा गृहस्थ सम्बन्धी जो भी कोई समस्या हो इस मास में स्वयं ही सुलझ जायेगी घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बने, पार्टियों में सम्मिलित होना इस मास का विशेष व्यसन होगा, इस मास का अधिक समय अतिथि सेवा में गुजरेगा, यद्यपि यह मास लाभ की दृष्टि से उत्तम है परन्तु खर्च के दृष्टिकोण से भी बलवान् है, प्रायः शुभकामों पर ही खर्च होगा, यदि इस मास में यात्रा का प्रोगाम बने तो यात्रा को अवश्य जायें वह यात्रा का प्रोग्राम आपके लिये लाभदायक रहेगा, 11 वें भाव में चन्द्रमा बुध बृहस्पति के संयोग से धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, साधु सन्तों तथा श्रेष्ठ पुरुषों से अचानक मिलने जुलने का शुभ अवसर मिलेगा यद्यपि हर पहलू में यह मास उत्तम है परन्तु शरीर के विषय में सावधान रहना आवश्यक है उपाय के रूप में 10 फरवरी 17 फरवरी तथा 24 फरवरी को बिना किसी हिचकिचाहट के कुत्तों को रोटियां डालें अथवा चूरा बनाकर पक्षियों को डालें। इस मास के शुभ दिन हैं—4, 5, 9, 10, 16, 25 और 26।

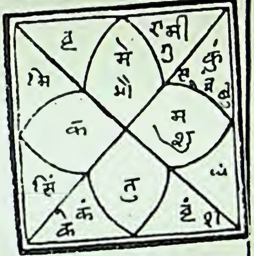

मार्च :—इस मास में पहले भाव में भौम का रहना हानिकारक माना जाता है जिसके विषय में गोचर-शास्त्रों में दर्ज है—कोई आरम्भ किया हुआ काम सफल नहीं होता है, रक्त विकार बवासीर, चोट आदि का कष्ट होता है, गृहस्थी होने पर स्त्री को भी शारीरिक कष्ट होता है, चूंकि मेष राशि का स्वक्षेत्रीय मंगल होने से यह क्रूर प्रभाव, अधिक प्रभावित नहीं करेगा तो भी उपाय करना आवश्यक है, उपाय के रूप में इस मास के पहले मंगलवार को यानि 3 मार्च को कुल सवा किलो वजन का गुड़, गेहूं मसूर ये तीनों चीजें मिलाकर लाल कपड़े में बांधकर दक्षिणा सहित किसी दरिद्रनारायण को दीजिए, शेष चन्द्रमा बृहस्पति राहु का एक साथ बारवें भाव में होकर तीनों ग्रहों का वेध में होना अशुभ योग माना जाता है इस मिले-जुले योग के अनुसार यद्यपि आप का शरीर ठीक नहीं रहेगा परन्तु शेष हर पहलू यह मास आपके लिये लाभदायक है, यदि आप तिजारत पेशा है तो आपका तिजारत तर्की की ओर बढ़ता जायेगा, अगर आप जमींदार हैं विशेषतया यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते है तो इस मास में आप फलों अथवा बागात का खरीद करें अथवा बेचें दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगे, नौकरी पेशा होने पर दसवां शुक्र आपको दरबार की ओर से परेशान इस मास के शुभ दिन है :— 7, 9, 11, 16, 17, 24 और 25।

वृष राशि का वर्षफल

गोचर शास्त्रों मे ग्रहों का संक्षिप्त फल :-

सूर्य ११वे भाव मे सूर्य का फल - धन प्राप्ति, उत्तम भोजन का मिलना, नई पदवी मिलने की सम्भावना, अच्छे पुरुषों का अनुग्रह, स्वास्थ्य का स्वस्थ होना, माता पिता की सेवा करने की प्रवृत्ति मे वृद्धि, घर मे कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बने, आमदनी मे अधिकता, खर्च सार्थक।

चन्द्रमा बारवें भाव में चन्द्रमा का फल:- बारवां चन्द्रमा यद्यपि गोचर-शास्त्रों में हानिकारक माना जाता है परन्तु सूर्य और बुध के वेध में होने से अशुभ चन्द्रमा होने पर भी शुभ फलदायक ही होगा, जैसा कि गोचर मर्मज्ञों का कहना है, खर्च की अधिकता

वृष राशि का वर्षचक्र

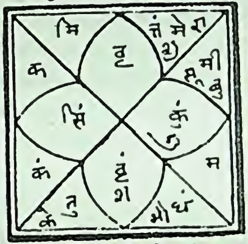

परन्तु खर्च सार्थक होगा, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों मे दिलचस्पी, यात्रा का योग तथा उस में लाभ, शत्रुओं पर विजय।

भौम आठवें भाव के भौम का फल :- घर से निकलने पर विवश होना पडता है, अचानक चोट लगने की सम्भावना भाई-बन्धुओं से अनबन, नीच कर्मो की ओर अधिक प्रवृत्ति, शत्रुओं का अधिक भय, आमदनी में रुकावट, खर्च की अधिकता।

बुध ११वे भाव में बुध का फल :- स्वास्थ्य यश और धन की प्राप्ति, मित्रों तथा भाई-बन्धुओं से मेलमिलाप में वृद्धि, सन्तानपक्ष अथवा पितृपक्ष से मानसिक शान्ति, शुभ कामों में लगन,

बृहस्पति वर्षफल में बृहस्पति का अधिक प्रभाव होता है जब कि बृहस्पति १३ मास के पश्चात् राशि बदलता है, दसवें भाव के विषय में गोचर शास्त्रों में कहा है - मान-हानि की सम्भावना, अन्न तथा धन की हानि, दरबार की ओर से परेशानी, पितृपक्ष से अशान्ति।

शुक्र बारवें भाव का शुक्र गोचर में यद्यपि उत्तम माना जाता है परन्तु वेध में होने से अशुभ फलदायक ही होगा जैसा कि गोचर शास्त्र के मर्मज्ञों का कहना है – खर्च की बहुतात होती है, धन प्रायः अशुभ कार्यों पर खर्च होता है, नीच कर्म करने की प्रवृत्ति बनी रहती है, कमाई में बाधा पड़ती है, घरेलू अशान्ति रहती है।

शनि सातवां शनि यद्यपि गोचर में हानिकारक माना गया है परन्तु छटे भाव में गये हुये केतु के वेध में होने से 17 अगस्त तक कन्या राशि में रहेगा जिस के फलस्वरूप शनि का प्रभाव 17 अगस्त तक आप पर शुभ रहेगा, हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता, गृहस्थ सुख. भाई-बन्धुओं से मेलजोल, 17 अगस्त के पश्चात् आप पर शनि का प्रभाव हानिकारक रहेगा, मानसिक अशान्ति, निरर्थ खर्च, आमदनी में रुकावट, शरीर कष्ट।

राहु 17 अगस्त तक राहु ११वें भाव में होने से खर्च की अधिकता, अचानक धन की हानि, घर से बाहर रहने पर विवश होना पड़ता है, 17 अगस्त से राहु ११वें भाव में आयेगा जिस का फल है – शुभ कामों की ओर प्रवृत्ति, साधु सन्तों से मिलने जुलने का अवसर मिले, आदर मान में वृद्धि, हर काम में सफलता।

केतु 17 अगस्त तक केतु छटे भाव में रहेगा जिस का फल है- शत्रुओं की अधिकता, खर्च की भरमार, हर काम में रुकावट, आंखों में तकलीफ। 17 अगस्त से केतु पांचवें भाव में आयेगा जिस का फल है- सन्तानपक्ष से परेशानी, हर आरम्भ किये हुये काम में विघ्न, बुद्धि भ्रम का होना।

****

वृष राशि का वर्षफल

सम्पादक की दृष्टि में

वेध अष्टकवर्ग दृष्टि शत्रु मित्र आदि को दृष्टि में रखकर विदित होता है - यह वर्ष दौड़धूप में ही गुजारेगा, कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, शरीर के भाव का स्वामी शुक्र वेध में है जिस के फलस्वरूप आप को वर्ष भर परेशानी बनी रहेगी, चाहे एक अंग में तकलीफ होगी चाहे दूसरे अंग के बिगड़ने का

वृष राशि का वर्षचक्र

सन्देश है, यदि आप को जन्म-पत्री के आधार से किसी बलवान् शुभ ग्रह की दशा चल रही है जो आप को शरीर कष्ट से बचाये रखेगी, ऐसा होने पर घर के किसी घनिष्ठ सदस्य के शरीर सम्बन्धी परेशानी बनी रहेगी, यदि आप विवाहित हैं तो स्त्री के शरीर के विषय में सावधान रहिये, शरीर को स्वस्थ रखने के लिये उपाय अवश्य करें, उपाय के रूप में जन्मदिन पर किसी रविवार के दिन **"श्रीमद्भगवद्गीता,"** का सम्पुट पाठ इस निम्नलिखित मन्त्र से करवायें :– **अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देवमाश्रित: प्राणापान - समायुक्त: पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।**

व्यापारी वर्ग का कारोबार यथावत् चलता रहेगा, परन्तु यथावत् चलने के लिये भी आप को अथाह प्रयत्न करना होगा, क्योंकि इस वर्ष कारोबार सम्बन्धित भिन्न - भिन्न प्रकार की उलझनों का आप को सामना करना होगा यदि आप को इस वर्ष कारोबार को विशाल बनाने के निमित्त कोई योजना है हो सके तो इस वर्ष ऐसे किसी काम का आरम्भ करें, यदि आप थोक काम करते हैं आप को इस वर्ष अथाह परिश्रम करना होगा, ऐसा करने पर भी सन्तोषजनक लाभ की आशा नहीं, यदि आप किरयाना कपड़े आदि से सम्बन्धित छोटा मोटा काम करतेहै तो आप इस वर्ष लाभ की कोई आशा न रखें परन्तु हानि की भी कोई सम्भावना नहीं है यदि आप किसी फैक्टरी से सम्बन्धित कारोबार करते हैं आप का काम डांवांडोल स्थिति में रहेगा यदि आपका कारोबार फलों अथवा बागात से सम्बन्धित है वर्षभर आपको कई प्रकार की उलझनों का सामना करना होगा परन्तु सामूहिक रूप से आप वर्ष के अन्त में सन्तोषजनक रूप से लाभ में ही रहेंगे, वर्ष के पहले छ: मास खरीद के लिये और छ: महीने बेचने के लिये सामूहिक रूप से लाभदायक रहेंगे, यदि आप को नये सिरे से कोई कारोबार करने का विचार है जिस में आप ने कोई बड़ी धन की राशि खर्च करनी होगी, ऐसे कामों के लिये यह वर्ष लाभदायक रहेगा।

आप यदि नौकरी करते हैं अच्छे पद पर विराजमान हैं तो आप को इस वर्ष अपने अधीन कार्यकर्ताओं से सावधान रहना चाहिये किसी भी समय अधीन व्यक्ति से मानहानि तथा धोखा मिलेगा,

यदि आपको घूस लेने का रोग लगा है और आप यह फलादेश पढ़कर घूस न लेने की प्रतिज्ञा नहीं करेंगे तो आप निश्चय रखिये आप का नौकरी से हाथ धो बैठने का भी डर है, इस उपाय को आप काल्पनिक मानये, अपितु मेरा लिखा हुआ यह फल आप पर अवश्य पूरा उतरेगा, ऐसे तो नौकरीपेशा वृष राशिवालों का भी इस रिशवत की बीमारी से दूर रहना चाहिये नहीं तो बाद में आप को पछताना पड़ेगा, दसवाँ बृहस्पति गोचर से हानिकारक माना गया है, वर्षफल में बृहस्पति और शनि का अधिक प्रभाव होता है, बृहस्पति के प्रभाव से दरबार में आप को वर्षभर मानसिक परेशानी बनी रहेगी, हर प्रारम्भ किये हुये कार्य में कोई न कोई उलझन खड़ी होगी, सम्बन्धित किसी अफसर से अचानक अनबन का योग है, यदि आप नौकरी नहीं करते हैं परन्तु नौकरी की तलाश में है तो दसवें बृहस्पति के प्रभाव से नौकरी मिलने में रुकावट होगी, 1987 फरवरी में बृहस्पति राशि बदलकर ११वें भाव में आयेगा अतः फरवरी के बाद ही आप के नौकरी मिलने की सम्भावना है, यदि आप नये सिरे से कोई व्योपार करना चाहते हैं तो फर्वरी 1987 के बाद ही उसका श्रीगणेश करे, यदि आप गृहस्थी है और घर में कोई मंगलकार्य रचाने का कोई परोग्राम है, उस कार्य को सम्पूर्ण करने में कठिन से कठिन उलझनों का सामना करना पड़ेगा परन्तु बहुत संघर्ष से आप की प्रतिष्ठा बनी रहेगी, यह भी सम्भव है आप ने इस वर्ष कोई तामीरी काम करना होगा तो वह कार्य भी फर्वरी 1987 के बाद ही प्रारम्भकरें, यदि आप का कोई तामीरी काम पहले से लटक रहा है, ऐसे काम में आप जुट जाये बहुत दौड़धूप और उलझनों के बाद ही आप का तामीरी काम सम्पूर्ण होगा, यदि आप ने कोई जाईदाद वाहन आदि बेचना हो तो ऐसा कार्य आप के लिये लाभदायक रहेगा, यदि आप ने खरीदना हो तो आप हानि में रहेंगे, यदि आप को यात्रा का परोग्राम बने तो बिना किसी हिचकिचाहट के उस प्रोग्राम को सफल बनायें, इस वर्ष का लाभ आप की यात्रा में छुपा हुआ है, यदि आप गृहस्थी हैं आप का घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा, घनिष्ठ किसी सम्बन्धी से अचानक अनबन होगी, सन्तानपक्ष से आप परेशान रहेंगे वह परेशानी विशेषतया फर्वरी 1987 तक रहेगी जब कि बृहस्पति राशि बदल रहा है, यदि आप विवाहित नहीं हैं और विवाह की तलाश में हैं यदि कहीं सम्बन्ध जुड़ा हुआ है तो वह सम्बन्ध फिर से कट जाने की सम्भावना है, यदि आप लड़की है आप के माता पिता यदि आप के विवाह के लिये कटिबद्ध हैं तो इस वर्ष आप का विवाह शान और मान से होगा, विद्यार्थियों

कठिनाई भी यह वर्ष संघर्ष का ही है, विद्या-सम्बन्धित हर काम में प्रयत्न करने पर ही सफलता की आशा रखें। उपाय के रूप में आप इस मन्त्र को कण्ठस्थ कीजिये, भगवान् शंकर का ध्यान करते हुये उच्चारण किया करें :-

ॐ नमः शंभवाय च, मयोभवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च, शिवतराय च।

वृष राशि का मासिक फल

अप्रेल इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है विशेषतया आप को शरीर में सावधान रहना चाहिये, यदि आप शरीर से स्वस्थ है उस अभिमान में मत रहिये अचानक शरीर बिगड़ने का अन्देशा है. यदि आप का शरीर पहले से अस्वस्थ है तो आप को विशेषतया सावधान रहना चाहिये, उपाय के रूप में हर सोमवार को भगवान् शंकर पर दूध सहित जल चढ़ायें, जल चढ़ाते समय उपरिलिखित भगवान् शंकर के मन्त्र का उच्चारण किया करें.

यदि आप गृहस्थी है आठवां सोम आप की स्त्री को भी प्रभावित करेगा उसके शरीर बिगड़ने का अन्देशा, यदि आप और आप की स्त्री दैवयोग से शरीरकष्ट से बच भी गये तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर की परेशानी बनी रहेगी, धन की दृष्टि से यह समय डांवांडोल स्थिति में व्यतीत होगा, यदि आप व्योपारी है आप का व्योपार यदि खाद्यपदार्थ से सम्बन्धित है तो यह मास अधिक दौड़ धूप का होगा परन्तु लाभ की कोई आशा न रखें, यदि आप का कारोबार किरयाना कपड़े आदि से सम्बन्धित है तो आप अवश्य लाभ में रहेंगे, यदि आप का सम्बन्ध फलों तथा बागात से है तो इस मास में फलों का खरीदना या बेचना आप के लिये लाभदायक रहेगा, यदि आप नौकरी पेशा हैं यह मास कुछ अशान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा सम्बन्धित मुलाजिमों के साथ अनबन तथा नाराजगी, गृहस्थी होने पर घर में कोई महो-

अप्रेल मास का वर्षफल

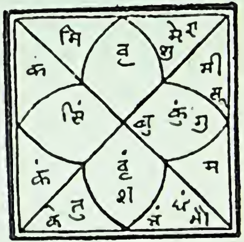

त्सव रचाने का परोग्राम परन्तु वह परोग्राम सफल होना असम्भव है, यदि आप अविवाहित हैं विवाह के इच्छुक हैं यदि आप पुरूष है विवाह का सम्बन्ध यदि कहीं निश्चित हुआ है वह सम्बन्ध भी कट जाने की सम्भावना है, यदि आप लडकी है विवाह सम्बन्ध होने अथवा बात निश्चित होने का योग है, विद्यार्थी होने पर इस मास में आप को पठनपाठन की ओर दिल नहीं लगेगा, सैर सपाटा अथवा मित्रों से मिलने जुलने में ही यह मास गुजरेगा, यदि इस मास में कोई रिजल्ट निकलने वाला है तो सफलता की आशा न रखें, यदि इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना है ऐसे कार्य में भी बाधा पडेगी सामूहिक रूप से विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास सफलता तथा शान्ति का नहीं है इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :-

4 से 8तक 12, 13 17, 18, 24, 25.

मई लग्न का स्वामी शुक्र का वृष राशि में होना इस मास के सुख शान्ति की चेतावनी है. 15 मई तक शुक्र वृष राशि में ही रहेगा मिथुन राशि का शुक्र भी उत्तम माना जाता है, 15 मई तक आप को अकस्मात् लाभ प्राप्ति का योग है. इस मास में घर में कोई मंगल अथवा शुभ कार्य रचाने का प्रोग्राम निश्चित होगा, शरीर स्वस्थ रहेगा केवल पति को अचानक शरीरकष्ट अथवा चोट लगने की सम्भावना है, यद्यपि मास के पहले दिन ही बुध राशि बदल रहा है परन्तु सूर्योदय के समय मीन का हो चुका है, ज्योतिष-फलित के आधार में बुध का प्रभाव मास भर रहेगा जिस के प्रभाव से प्रत्येक कार्य के हल करने के निमित्त यद्यपि आप को बहुत अधिक दौडधूप भी करनी होगी परन्तु लाभ इच्छानुसार होगा, व्यापारीवर्ग के लिये व्यापार की स्थिति यद्यपि कुछ डांवाडोल रहेगी भी परन्तु अन्त में सामूहिक रूप से आप लाभ में ही रहेंगे, यदि आप फलों अथवा बागात से सम्बन्ध रखते हैं तो इस मास में यदि आप बागान या फल खरीदें आप लाभ में रहेंगे, यदि आप बेचेंगे तो वर्ष के अन्त में आप को विदित होगा कि आप हानि में हैं, नौकरीपेशा होने पर दरबार की ओर से आप को कोई न कोई परेशानी घेरे रहेगी, यदि आप नौकरी के इच्छुक हैं तो इस मास में आप का बना हुआ काम बिगडने की सम्भावना है, यदि आप कोई नामीरी काम करोगे उप

मई मास का वर्षफल

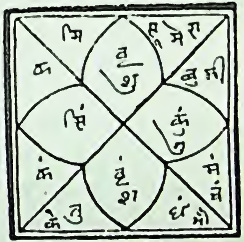

मे अचानक कोई उलझन खड़ी होगी जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगी, विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास विशेष शान्ति का नहीं है, विद्या-सम्बन्धित हर प्रारम्भ किये हुये काम में रुकावटें खड़ी होंगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये – 3 से 6 तक 10, 11, 15. 21. 22. 29, 30 और 31।

जून - लग्न में सूर्य का होना यद्यपि हानिकारक माना जाता है परन्तु सूर्य वेध में पड़ा है ऐसे ही भौम और शनि यह दोनों ग्रह वेध में है, इस मिले जुले शुभ योग के आधार में यह मास सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा, हर प्रारम्भ किये हुये काम में सिद्धि होगी, यदि आप थोक निजारतपेशा हैं आप का काम यथावत् चलता रहेगा, यदि आप सर्वसाधारण दुकानदार हैं आप का कारोबार किरयाना कपड़ा आदि में सम्बन्धित है तो आप का काम तेजी में चलेगा और सन्तोषजनक लाभ भी मिलेगा, यदि फलों अथवा बागान से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो यह मास दौड़धूप में ही गुजरेगा, यद्यपि कोई विशेष लाभ इस मास मे नही मिलेगा परन्तु लाभ की आशा इस मास में सुदृढ़ होगी, नौकरीपेशा होने पर आदर व मान के साथ साथ हर कार्य में सिद्धि होगी, सम्बन्धित अफसरों से मेलजोल का अधिक अवसर मिलेगा, यदि नौकरी सम्बन्धित कोई काम रुका पड़ा है जरा भी सावधानी से हर एक कार्य सिद्ध होगा, गृहस्थी होने पर यदि आप पहले से किसी घरेलू समस्या में उलझे हैं थोड़ा सा प्रयत्न करने पर उस समस्या का समाधान निकल आयेगा, विद्यार्थियों के लिये यह मास हर काम में सिद्धि का होगा, यदि आपने कोई परीक्षा दी है या देने वाले हो इस मास में सफल होना है। पठन-पाठन की प्रवृत्ति अधिक रहेगी, यदि आप नौकरी के इच्छुक हैं, सम्भव है आप इस मास में सफल हो जाओगे, यदि ऐसा न भी हुआ तो भी आप का किया हुआ परिश्रम निष्फल नहीं होगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये– 1, 2, 6, 7, 18, 19, 20,26, 27।

जून मास का वर्षफल

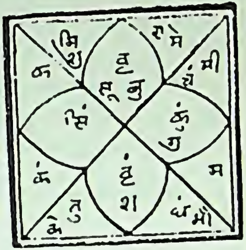

जुलाई इस मास में अधिक संघर्ष करना होगा, कोई भी कार्य बिना रुकावट के सिद्ध नहीं होगा हर प्रारम्भ किया कार्य लटकता रहेगा, शरीर की दशा भी डांवाडोल रहेगी गाहे एक अंग में तक-

माफ गःहे दूसरे अंग में तकलीफ होगी, चोट लगने का भी अन्देशा है, अथवा शरीर में चीरफाड की सम्भावना है उपाय के रूप में आप इस मास में मांस का प्रयोग न करें यदि आप गृहस्थी हैं तो आप को अचानक नई नई समस्याओं से दुचार होना होगा यदि आप विवाहित नहीं है, यदि आप पुरूष हैं तो इस मास में विवाह का योग बने अथवा विवाह की बात निश्चित हो जायेगी, यदि आप लडकी है इस मास में विवाह सम्बन्धित बनी हुई बात भी बिगड जयेगी. तिजारत पेशा लोगों के लिये यह मास आमदनी की दृष्टि से यदि डावाडोल रहेगा परन्तु अचानक कोई लाभ मिलने का भी योग है, यदि आप कोई तामीरी काम रचाने की योजना बना रहे हैं तो इस मास में काम का श्रीगणेश करें यदि आप ने कोई जाईदाद खरीदना हो अथवा कोई वाहन आदि खरीदने का परोग्राम है तो इस मास को हाथ से जाने मत दीजिये ऐसे कामों के लिये यह मास सफलता का है, नौकरी पेशा होने पर यह मास आदर मान से गुजरेगा, यदि तर्की की कोई आशा बनी हुई है उस में यदि कुछ रूकावट पडती है प्रयत्न कीजिये या तो इसी मास में तर्की मिलेगी अथवा तर्की की आशा सुदृढ़ होगी, विद्यार्थी वर्ग सावधान रहे यदि आप इस मास में पढ़ाई में लापरवाई करेंगे उस का परिणाम आगे के लिये भी हानिकारक होगा। इस मास में किया हुआ स्वाध्याय परीक्षा में पास करने में सहायक होगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये – 3, 4, 5, 8, 9. 15, 16, 24, 25, 26. 27 ।

जुलाई मास का वर्षफल

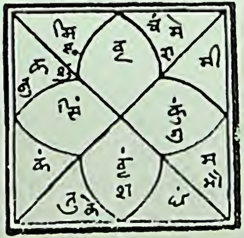

अगस्त: इस मास के प्रारम्भ पर चन्द्रमा अच्छी स्थिति में नहीं है, परन्तु सूर्य का तीसरे भाव में होना उत्तम माना गया है, तीसरा बुध हानिकारक माना जाता है परन्तु चन्द्रमा के वेध में होने से यह ग्रह भी शुभ है, इस मिले जुले योग के प्रभाव से आप का स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहेगा, यदि आप गृहस्थी हैं और स्त्री की कुछ परेशानी है तो इस मास में किसी नये डाक्टर से इलाज करवायें, डाक्टर बदलने पर ही इलाज प्रभावशाली रहेगा, पांचवां शुक्र गोचर से उत्तम माना जाता है, इस ग्रह के प्रभाव से गृहस्थी होने पर सन्तानपक्ष में मानसिक शान्ति मिलेगी, यदि आप के किसी लडके को कोई तर्की की आशा है तो इस मास में सफलता अवश्य होगी, आर्थिक

दृष्टि से यह मास सन्तोषजनक रहेगा, व्योपारियों के लिये यह समय रात दिन काम में जुटे लगे रहने का है, यदि कारोबार को विशाल बनाने का कोई प्रोग्राम है तो इस मास में आप काम को विशाल बनाने के लिये धन लगायें - आप की योजना सफल रहेगी, यदि आप का फल अथवा बागात सम्बन्धित कारोबार है तो यह मास आप के लिये अधिक से अधिक परिश्रम का होगा परन्तु सन्तोषजनक लाभ होगा नहीं, यदि आप कपड़े किरयाने आदि का थोक व्योपार करते हैं तो सन्तोषजनक लाभ मिलेगा, मद्य से सम्बन्धित व्योपारी हानि में रहेंगे, यदि आप नौकरी करते हैं तो यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा, नौकरी सम्बन्धित यदि कोई समस्या है तो वह ज्यों की त्यों बनी रहेगी, विद्यार्थी होने पर पठन-पाठन की ओर प्रवृत्ति बनी रहेगी, विद्यासम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता अवश्य होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :-

अगस्त मास का वर्षफल

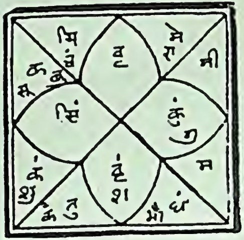

5, 6, 11, 12, 20, 23, 27, 28।

सितंबर: हम ऊपर लिख चुके हैं कि मासिक फल में सूर्य और चन्द्रमा का अधिक प्रभाव होता है, सूर्य चौथे भाव में चन्द्रमा के वेध में होने से शुभ है, तीसरा चन्द्रमा शुभ माना जाता है जैसा कि गोचर-शास्त्रों में दर्ज है – काम करने की अधिक प्रवृत्ति होती है, शत्रुओं पर विजय होती है, कारोबार में धन मिलता है, सरकार से लाभ मिलता है, बुद्धिबल में वृद्धि होती है, मास के आरम्भ पर सूर्य और चन्द्रमा का शुभ होना मास भर के शुभ फल की सूचना है, लग्न पर शनि की पूर्ण दृष्टि होने से अचानक शरीर विगड़ने का अन्देशा है, चोट लगने अथवा शरीर में कांट छांट करने की सम्भावना है, गृहस्थी होने पर आठवें भौम के होने से आप को स्त्रीपक्ष से परेशानी बनी रहेगी, धन की दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आप तिजारतपेशा हैं तो आप का कारोबार जोरों पर चलेगा, इस

सितंबर मास का वर्षफल

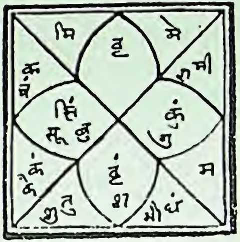

मास में रात दिन काम में जुटे रहने का योग है, प्रायः हर काम में सफलता तथा लाभ, नौकरीपेशा होने पर दरबार में आदर व मान, बिगडे काम सुधरेंगे, अचानक कोई शुभ सन्देश मिले अथवा तर्की का योग है, घर में कोई मंगल कार्य रचाने की योजना बनेगी जिस में अधिक से अधिक धन की राशि खर्च होगी, भाई-बन्धुओं रिश्ते-दारों से मेलमिलाप का योग, आमदनी की दृष्टि से यद्यपि यह मास उत्तम है भी परन्तु खर्च की भरमार रहेगी, उपार्जित किया हुआ धन ही खर्च करना होगा. तामीरी काम आरम्भ करने का इस मास में योग है, इस मास में तामीरी कामों पर लगाया हुआ धन सार्थक खर्च होगा, विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास शान्ति का है, विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन हैं – 1, 2, 8, 9, 16 से 20 तक, 23, 24, 28 और 29।

अक्टूबर: यद्यपि इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है परन्तु ग्रहों के वेध अष्टकवर्ग शत्रुमित्र की दृष्टि में रखते हुये विदित होता है कि यह मास सुख-शान्ति के वातावरण से व्यतीत होगा, हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी, आदर व मान के दृष्टिकोण से यह मास उत्तम है, आप के हाथों से इस मास में कोई ऐसा काम सम्पूर्ण होगा जो आप की प्रतिष्ठा को बढ़ायेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, गृहस्थी होने पर आप की स्त्री का शरीर अस्वस्थ रहेगा, यदि आप पितृपक्ष से परेशान हैं तो वह परेशानी भी अकस्मात् दूर होगी, यदि आप की माता का शरीर का तकलीफ है तो उस के विषय में सावधान रहिये जब कि दोनों क्रूर ग्रह भौम-शनि मातृभाव को देख रहे है, यदि आप नये रूप में कोई तामीरी काम रचाने की योजना बना रहे हैं तो इस मास में उसका आरम्भ न करें, इस मास में आरम्भ किया हुआ काम योजनाबद्ध ढंग से सम्पूर्ण नहीं होगा अपितु देर तक लटका रहेगा, यदि आप ने कोई तामीरी काम पहले ही आरम्भ किया है तो ऐसे काम में किसी प्रकार की रुकावट नहीं होगी, यदि आप ने कोई जाईदाद अथवा वाहन आदि खरीदना हो ऐसे काम में आप हानि में ही रहेंगे नौकरीपेशा वृष राशिवालों को इस मास के ग्रह अनुकूल हैं, यह

अक्टूबर मास का वर्षफल

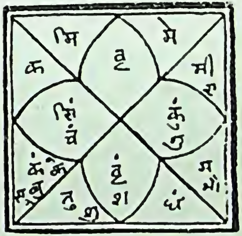

मास मान तथा प्रतिष्ठा मे गुजरेगा। यदि यात्रा का परोग्राम बन जाये, बिना किसी हिचकिचाहट के यात्रा को प्रवश्य जायें, इस मास में यात्रा प्राप के लिये लाभदायक है। हर व्योपारी वर्ग के लिये यह मास लाभ का ही है, फलों तथा बागात मे सम्बन्धित व्योपारी रात दिन काम मे लगे रहेंगे, लाभ भी सन्तोषजनक रूप में मिलेगा। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास परेशानी का ही होगा, और सपाटा में समय व्यर्थ होगा। इस मास के शुभ दिन हैं - 1, 2, 10, 11, 12 13, 22, 23, 29 और 30।

नवम्बर: सूर्य और चन्द्रमा यह दोनों ग्रह एक साथ छटे भाव में होना शुभ माना जाता है परन्तु वृष लग्न का स्वामी शुक्र का छटे भाव मे होना हानिकारक माना जाता है जिस के प्रभाव मे प्राप का शरीर इस मास मे डांवाडोल स्थिति में रहेगा, मास भर शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी। सातवें भाव में बुध और शनि का होना परंतु परेशानी की चेतावनी है, यदि प्राप विवाहित है तो प्राप की स्त्री को प्रचानक कोई शरीर-कष्ट होने का योग है, इस कष्ट से बचने का एक मात्र उपाय है हर शनिवार यानि 1, 8, 15, 22 और 29 नवम्बर को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करे। धन की दृष्टि से यह मास मध्यम रहेगा, यदि प्राप तिजारत करते हैं तो प्राप का कारोबार ढीला पडेगा। यदि यात्रा का योग बने तो वह यात्रा प्राप को लाभ की दृष्टि से उत्तम रहेगी। बृहस्पति भौम के वेध में है जिस के प्रभाव से प्राप के मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। यदि प्राप नौकरीपेशा हैं तो तर्क्की की प्राशा सुदृढ होगी प्रथवा इसी मास में प्रचानक तर्क्की मिले। यदि प्राप फलों प्रथवा बागात से सम्बन्धित तिजारत करते हैं, बेचने की प्रपेक्षा प्राप खरीदने मे लाभ मे रहेंगे, घर मे कोई मंगलकार्य रचाने का परोग्राम बने परन्तु उस के रचाने मे प्रचानक विघ्न, यदि प्राप इस कष्ट से बचना चाहते हैं तो प्राप इस मास में सारे परिवारवाले वैष्णव रहने की प्रतिज्ञा कीजिये, यदि ऐसा न किया तो प्रवश्य कोई विघ्न प्रा घेरेगा जो रंग में भंग करने का कारण बनेगा, विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास विद्यासम्बन्ति हर कार्य में सफलता का होगा, पठन-पाठन की प्रोर प्रवृत्ति बनी रहेगी। इस मास के शुभ दिन नोट

नवंबर मास का वर्षफल

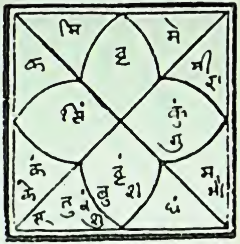

कीजिये :- 1, 2, 10, 11, 12, 13, 22, 23, 29 और 30।

दिसम्बर सातवें भाव में सूर्य चन्द्रमा और शनि का एक साथ होना अनिष्टकार योग है। हर आरम्भ किये हुये कार्य में रुकावटे तथा उलझनें खडी होंगी। गृहस्थी होने पर आप को घरेलू परेशानियाँ घेरे रखेंगी, यदि आप विवाहित हैं तो स्त्री की ओर से कोई न कोई चिन्ता बनी रहेगी, यदि आप को लड़के अथवा लडकी के विवाह की कोई चिन्ता है तो उस चिन्ता का इस मास में अवश्य समाधान होगा। व्योपारी होने पर व्योपार में रुकावटों के इलावा अकस्मात् हानि की सम्भावना है, कोई भी आरम्भ किया हुआ काम सफल नहीं रहेगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो इस मास में माल का खरीदना आप के लिये लाभदायक रहेगा। नौकरी पेशा होने पर यह मास शान्त वातावरण में गुजरेगा, सम्बन्धित अफसरों से अचानक नाराजगी अथवा कोई आरोप लगने की

दिसंबर मास का वर्षफल

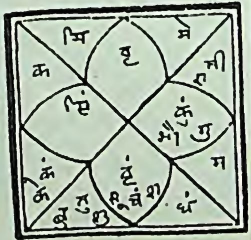

सम्भावना है, उपाय के रूप में नौकरी पर जाने से पहले एक बार अवश्य इन्द्राक्षी का पाठ करें, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों के साथ भी नाराजगी की सम्भावना है। यद्यपि यह मास हर पहलू में हानिकारक है परन्तु धार्मिक तथा सामाजिक कामों की ओर अधिक झुकाव रहेगा। इस मास के शुभ दिन हैं – 1, 2, 7 से 10 तक, 14, 15, 19, 20, 26 और 27।

जनवरी: आठवें भाव में सूर्य चन्द्रमा बुध का एक साथ होना एक प्रकार का अरिष्ट माना जाता है परन्तु यह तीनों ग्रह वेध में पडे हैं, इस लिये शरीर के लिये हानिकारक नहीं हैं अपितु आप का शरीर स्वस्थ रहेगा, अतिथि-सेवा साधु-सन्तों की सेवा करने की प्रवृत्ति बनी रहेगी. बुद्धिबल में वृद्धि, हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित है। यदि आप व्योपारी हैं चाहे वह किसी भी लाइन से सम्बन्धित हो आप सफल रहेंगे। यदि आप कोई काम नये सिरे से आरम्भ करना चाहते हैं तो इस मास के ग्रह ऐसे कार्य के लिये अनुकूल नहीं हैं, सफलता की कोई आशा न रखें यदि आप ने वाहन आदि खरीदना या बेचना हो तो इस मास को व्यतीत होने दीजिये। यदि आप नौकरीपेशा हैं तो यह मास यथावत् बना रहेगा, सम्बन्धित अफसरों से मिलने जुलने का सुअवसर मिलेगा,

अन्तिम सप्ताह में कुछ लाभ मिलने की सम्भावना है, सामाजिक तथा धार्मिक कामों की ओर अधिक प्रवृत्ति बनी रहेगी, यदि आप परिवार वाले गृहस्थी हैं आप को यदि सन्तानपक्ष से कोई परेशानी है तो उस परेशानी का इस मास में अन्त होगा यहां तक कि सन्तानपक्ष से कोई शुभ सन्देश मिलने की भी सम्भावना है। इस मास में यदि यात्रा का योग बने तो उस यात्रा को अमली रूप दीजिये, घर की अपेक्षा यात्रा में आप को मानसिक शान्ति बनी रहेगी। विद्यार्थी होने पर विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य होगी। इस मास के शुभ दिन ये हैं - 4, 5, 6, 10, 11, 12, 15, 16, 17, 22, 23, 31।

जनवरी मास का वर्षफल

फर्वरी नवें भाव का सूर्य हानिकारक माना जाता है ऐसे ही दसवां बृहस्पति भी अनिष्टकारक ही होता है परन्तु यह दोनों ग्रह वेध में हैं इसलिये यह दोनों ग्रह शुभफल की ही चेतावनी है, शनि को छोड़कर अन्य ग्रहों की स्थिति ठीक ही है, शनि सातवें भाव से लग्न को देख रहा है जिस के फलस्वरूप शरीर अस्वस्थ रहने का योग है, शरीर के विषय में सावधान रहिये, चोट लगने की भी सम्भावना है, उपाय के रूप में इस मास में मांस का प्रयोग न करें नहीं तो शरीरकष्ट के पश्चात् पछताना पडेगा, कारोबार की दृष्टि से यह मास उत्तम है, व्यापारीवर्ग को रात दिन काम में जुटे रहने का मास है, यदि आप लोहे - सीमेंट तेल आदि से सम्बन्धित कारोबार करते है तो आप प्रयत्न करने पर भी लाभ में नहीं रहेंगे। यात्रा की भी सम्भावना है जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगी, हो सके तो यात्रा का परोग्राम न बनायें, गृहस्थी होने पर घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा। यदि आप को तामीरी काम का विचार है अथवा कोई जाईदाद वाहन आदि खरीदने की योजना है तो इस मास में ऐसे काम का आरम्भ करना आप के

फरवरी मास का वर्षफल

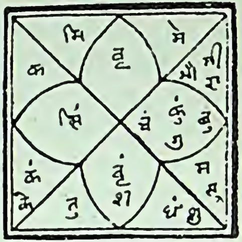

लिये अनुकूल है, नौकरीपेशा होने पर इस मास में अचानक तर्की मिलने का योग है अथवा अचानक लाभ मिले। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास सफलता का है। यदि आप ने कोई परीक्षा देनी अथवा दी हुई है तो दोनों रूपों में आप सफल रहेंगे। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये – 1, 2, 3, 7, 8, 12, 13, 19, 20, 27 और 28।

मार्च इस मास में ग्रहों की स्थिति अच्छी है। बारवां सोम यदि हानिकारक है परन्तु वेध में होने से वह भी शुभ फलदायक है, केवल सातवां शनि इस मास में हानिकारक ग्रह है जिस के प्रभाव से आप का शरीर सुख मध्यम रहेगा अथवा गृहस्थी होने पर स्त्रीपक्ष से आप को अशान्ति बनी रहेगी, स्त्री के विषय में भी सावधान रहिये,

मार्च मास का वर्षफल

उपाय के रूप में मंगलवार तथा शनिवार को कुत्तों को रोटियां डाला करें। आर्थिक दृष्टि से यह मास व्योपारी होने पर यदि आप का सम्बन्ध परचून किरयाना अथवा कपड़े के काम में है तो आप लाभ में ही रहेंगे, बाकि काम करने वालों के लिये यह मास कुछ ढीला ही रहेगा। गृहस्थी होने पर आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा विशेषतया मातापिता की सेवा करने का अवसर प्राप्त होगा, सन्तानपक्ष से भी शान्ति बनी रहेगी, लड़की अथवा लड़के का विवाह सम्बन्ध जोड़ने का प्रोग्राम निश्चित होगा, नौकरीपेशा होने पर यह मास शान व मान से व्यतीत होगा, आप के बिगड़े हुये काम भी सुधरेंगे। विद्यार्थीवर्ग को विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये - 1, 2, 3, 7, 8, 19, 20, 27 और 28।

मिथुन राशि का वर्षफल

गोचर वर्षचक्र के ग्रहों का पृथक् पृथक् फलादेश

गोचर शास्त्रों से

सूर्य १०वां धन और स्वास्थ्य का लाभ, प्रतिष्ठित अफसरों से मेलमिलाप, शुभ कामों से स्वच्छ कमाई, हर कार्य में सफलता, अकस्मात् कोई पदवी मिले, आदर में वृद्धि ।

चन्द्रमा ११वां आमदनी में वृद्धि, व्यापार में लाभ, सन्तान सुख, खाने के लिये उत्तम भोजन मिले, मित्रों में मेलमिलाप, स्त्रीपक्ष से मानसिक शान्ति, व्यापारी होने पर तेल घी आदि के व्यापार में लाभ रहेगा ।

भौम ७वां मानसिक अशान्ति और शरीर कष्ट, भाई-बन्धुओं से अनबन, घरेलू अशान्ति, स्त्री की ओर से परेशानी, व्यापार में हानि ।

बुध १०वां अचानक किसी नई पदवी की प्राप्ति अथवा कोई नया कार्य प्रारम्भ, शत्रुओं पर विजय, कारोबार में वृद्धि, धन में अधिकता, पुत्र-सुख अथवा घर में पुत्रजन्म, हर कार्य में सफलता ।

बृहस्पति ६वां धन की वृद्धि, घर में मंगल कार्य, सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति, राजदरबार में आदर, सामाजिक कामों से दिलचस्पी ।

शुक्र ११वां धन की वृद्धि, सभी प्रारम्भ किये हुये कार्य में सफलता, उत्तम भोजन की प्राप्ति, स्त्री सुख में वृद्धि भाई-बन्धुओं तथा मित्रों से मेलमिलाप ।

शनि ६वां धन और सुख की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, सम्पत्ति का लाभ, स्वास्थ्य में सुधार, गृहस्थ सुख ।

राहु ११वां शुभ कामों की ओर प्रवृत्ति, धार्मिक तथा सामाजिक कामों से लगाव, किसी मित्र अथवा रिश्तेदार से धोखा ।

केतु ५वां सन्तानपक्ष से परेशानी, बुद्धिभ्रम, हर प्रारम्भ किये हुये काम में रुकावट ।

मिथुन राशि का वर्षफल

सपादक की दृष्टि से

वर्षफल में बृहस्पति और शनि का महत्वपूर्ण स्थान होता है, बृहस्पति जनवरी 1987 तक आप को अच्छी स्थिति में है शनि आप को वर्ष भर छटे भाव में रहेगा ऐसे ही और ग्रहों का भी ध्यान में रखकर यही दिखत होता है – कि यह वर्ष आप को सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा, आप के स्वास्थ्य को बनाये रखने के लिये भी इस वर्ष ग्रह अनुकूल है विशेषतया जब कि बृहस्पति आप के शरीर को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, केवल इस बात का ध्यान रखें कि यदि जन्मपत्री के आधार से आपको शरीर सम्बन्धित हानिकारक दशा चल रही है उस का उपाय अवश्य कीजिये इस वर्ष गोचर से किसी प्रकार के अरिष्ट का योग तो नहीं है, यद्यपि पहले से कोई शरीरकष्ट है उस की भी समाप्ति होगी।

मिथुन राशि का वर्षफल

धन आप इस वर्ष को अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण स्मरणीय वर्ष मानिये। इस वर्ष की आप कदर करें, क्षणमात्र भी व्यर्थ न करें केवल योजनायें ही बनाते न रहें अपितु जो कोई भी योजना बनाओगे, उस योजना को आत्मविश्वास से अमली रूप दीजिये, ग्रह आप की सफलता में सहायक होंगे। यदि आप अच्छी स्थिति में कारोबार करते हैं तो इस वर्ष आप तिजारत को जितना विशाल बनाना चाहोगे ऐसे काम में आप की सफलता निश्चित है, यदि आप परचून का काम करते हैं तो इस वर्ष आप तनमन से काम में जुट जायें आप इस वर्ष एक ताजर का रूप धारण करेंगे। यदि आप खाद्यपदार्थ से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो यह वर्ष अधिक संघर्ष में व्यतीत होगा, अन्त में सामूहिक रूप से आप खसारा में रहेंगे, यदि आप तेल घी·हार्डवियर लोहे आदि से सम्बन्धित काम करते हैं तो निश्चय रखिये यह वर्ष आप के लिये सुनहरी वर्ष होगा। यदि आप जमींदार हैं केवल जमीन ही आप की कमाई का साधन है तो आप के लिये ऐसा लाभदायक वर्ष बहुत वर्षों के बाद आया है और बहुत वर्षों के पश्चात् ऐसा लाभदायक वर्ष आयेगा। मेरे इस फलादेश से आप यह अर्थ न लें

कि आप को घर बैठे लाभ मिलेगा अपितु यह फलादेश तभी पूरा उतरेगा जब आप रात दिन परिश्रम करोगे, ग्रह आप के परिश्रम को सार्थक बनायेंगे। यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो इस वर्ष आप को रात दिन काम में जुटे रहना होगा तब ही लाभ सन्तोषजनक रूप में मिलेगा, यदि आप गृहस्थी हैं तो वर्ष भर कोई न कोई परेशानी आप को घेरे रखेगी, स्त्री की ओर से परेशान रहोगे उसके शरीर का बिगड़ना आप की परेशानी का कारण होगा, यदि दैवयोग से उस का शरीर स्वस्थ रहा तो भी कोई न कोई घरेलू परेशानी घेरे रखेगी। ससुरालपक्ष से भी अचानक अनबन अथवा नाराजगी का योग है। सारांश यही है कि गृहस्थपक्ष से आप इस वर्ष परेशान रहोगे जब कि भौम लगभग वर्षभर हानि-कारक स्थिति में रहेगा। भौम आप को 10 सितंबर तक सातवां, 11 नवम्बर तक आठवां, 28 दिसम्बर तक नवां, 9 फरवरी तक दसवां रहेगा, सामूहिक रूप से भौम आप का अच्छी पुजिशन में नहीं है जो निश्चित रूप से अपने क्रूर प्रभाव से आप के गृहस्थ को प्रभावित करेगा, इस क्रूर ग्रह से बचने के लिये आप उपाय अवश्य कीजिये। उपाय के रूप में आप हर मंगलवार को शिवमन्दिर में जाने का प्रोग्राम बनाये, वहां भगवान् शंकर पर दूधसहित जल चढ़ायें, जल चढ़ाते समय पढ़ें –

"महादेव महादेव महादेवेति कीर्तनात्
वत्सं गौर् - इव गौरीशो धावन्तम् - अभिधावति"

यदि आप के घर में गाय है तो हर मंगलवार को सूर्योदय से पूर्व गाय को गुड़ खिलाया करें, इन मेरे लिखे उपायों को अपनाने से भौम का क्रूर प्रभाव शान्त होगा, यद्यपि स्त्रीपक्ष से परेशान रहोगे परन्तु सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति बनी रहेगी, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, मातृपक्ष की सहानुभूति बनी रहेगी, यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं तो आप इस वर्ष अवश्य प्रारम्भ करें ऐसे काम के लिये ग्रह अनुकूल हैं, ऐसे शुभ समय को हाथ से मत जाने दीजिये। यदि आप ने पहले से कोई तामीरी काम प्रारम्भ किया है और वह अधूरा पड़ा है तो उस काम को भी सम्पूर्ण करने का प्रयत्न कीजिये आप को काम प्रारम्भ करते ही ऐसे साधन मिलेंगे जो आप के काम को सम्पूर्ण करने में सहायक होंगे, यदि आप ने कोई जाईदाद अथवा वाहन आदि खरीदना हो तो आज ही खरीदने का प्रोग्राम बनायें। इस वर्ष वाहन का खरीदना आप के लिये शुभ शकुन है, यदि आप ने बाग अथवा जमीन आदि खरीदना हो तो ऐसे काम में हिचकिचाहट

न करें अवश्य खरीदें, ऐसा कार्य आप के लिये लाभदायक रहेगा। नौकरीपेशा वृष राशिवालों के लिये यह वर्ष शान और मान का है जब कि वर्ष के आरम्भ पर सूर्य और बुध दसवें भाव में ठहरे हैं, यदि आप को नौकरी मिलने की आशा है और उस में कुछ रुकावट है आप डट कर प्रयत्न कीजिये आप की कामना पूरी होगी, नौकरी की आशा न होने पर भी अचानक नौकरी मिलने का योग है। यदि ऐसा सम्भव न हो तो भी अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आदर व मान में वृद्धि होगी, यात्राओं का योग, प्रायः हर एक यात्रा आप के लिये लाभदायक रहेगी, मिथुन राशिवाले विद्यार्थियों पर इस वर्ष बृहस्पति अधिक प्रभावशाली रहेगा जबकि वह आप के विद्या के भाव को पूर्णदृष्टि से देख रहा है, आप इस वर्ष विद्या सम्बन्धित हर काम में प्रायः सफल रहोगे, यदि आप को विद्यासम्बन्धित कोई यात्रा बने वह यात्रा भी आप के लिये लाभदायक रहेगी इस वर्ष आप को पठनपाठन के ग्रह अनुकूल हैं अतः आप एक क्षण भर भी निष्फल न करें, यदि इस वर्ष कोई विद्यार्थी सफल होने से रह जायेगा तो अपनी भाग्यहीनता समझें, आप आत्मविश्वास से नियम में रह कर पढ़ाई में जुट जायें आप अवश्य इच्छानुसार सफल होंगे।

* * * * * * * * * * * * * *

मिथुन राशि का मासिक फल

अप्रेल: इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति अच्छी है केवल भौम अच्छी पुजिशन में नहीं है, भौम के प्रभाव से आप का शरीर अस्वस्थ रहेगा, अचानक चोट लगने का खतरा है, यदि आप का शरीर स्वस्थ रहेगा भी परन्तु स्त्रीपक्ष से आप परेशान रहोगे। इस मास में घरेलू वातावरण कुछ अशान्त रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, व्योपारी होने पर आप का व्योपार तेजी से आगे बढ़ता रहेगा। यदि आप किरयाना कपडे से सम्बन्धित व्यापार परचून रूप में करते हैं तो आप का कारोबार लाभ में रहेगा, यदि आप थोक काम करते हैं तो यह मास आप के लिये ढीला रहेगा। यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते हैं, इस मास में फलों अथवा बागात की खरीद आप के लिये लाभदायक रहेगी, इस मास में माल का बेचना आप के

अप्रेल मास का वर्षफल

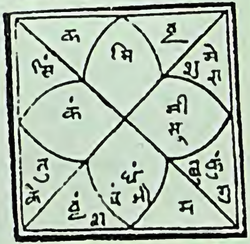

लिये हानिकारक होगा, आप ठेकेदारी का काम करते हों तो इस मास में जो काम नये सिरे से प्रारम्भ करोगे तो वह आप के लिये लाभदायक रहेगा, पहले से चालू काम में रुकावटें आती रहेंगी। यदि आप को जाईदाद सम्बन्धित कोई परेशानी है तो वह परेशानी इस मास में समाप्त होगी। हर एक कार्य जो नये सिरे से इस मास में प्रारम्भ करना होगा ऐसे काम में आप सफल रहेंगे, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से आप की दिलचस्पी बनी रहेगी। यद्यपि इस मास में कमाई अच्छी रहेगी भी परन्तु खर्च की भी भरमार रहेगी, विद्यार्थियों को विद्या-सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं :- 1, 2, 8, 9, 10, 11, 15, 16, 20, 21, 26, 27, 28 और 29।

मई: मास के प्रारम्भ पर चन्द्रमा भौम और शुक्र की स्थिति अच्छी नहीं है, शेष ग्रह कुछ अच्छी स्थिति में ही हैं। वेध अष्टकवर्ग आदि को दृष्टि में रखकर विदित होता है कि यह मास संघर्ष में ही गुजरेगा जो कोई भी कार्य आप के हाथ में होगा बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। शरीर प्राय: स्वस्थ रहेगा जब कि शरीर का स्वामी बुध केन्द्र में ठहरा है, यदि पहले से शरीर में कोई तकलीफ है जरा सा ध्यान देने से अकस्मात् आप का शरीर स्वस्थ होगा। भौम का क्रूर प्रभाव गृहस्थी होने पर आप की स्त्री को विशेषतया प्रभावित करेगा, आप की स्त्री के शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, यदि आप का अभी विवाह नहीं हुआ है, आप लड़की हैं या लड़का यदि आप का विवाह सम्बन्ध कहीं जुड़ा है तो उस के कट जाने का योग है। आर्थिक दृष्टि से सामूहिक रूप से यह मास ढीला रहेगा। यदि आप दुकानदार हैं और आप का काम परचून का है तो आप का काम यथावत् चलेगा, यदि आप के कारोबार का सम्बन्ध तेल लोहे सीमेंट आदि से है तो आप के कारोबार में अकस्मात् वृद्धि होगी, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो धन की कमी से आप के काम में रुकावट। यदि आप का कारोबार फलों अथवा बागात से सम्बन्धित है तो इस मास में अकस्मात् हानि की सम्भावना है, घर में कोई ऐसा प्रोग्राम बनेगा जिस में भाई-बन्धुओं से मेलमिलाप का योग है धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहे

मई मास का वर्षफल

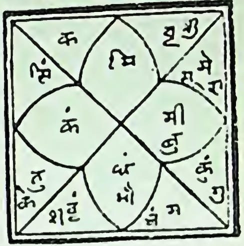

खर्च का योग भी बलवान् है परन्तु प्रायः खर्च शुभ कामों पर ही होगा नौकरी पेशा होने पर यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा, सम्बन्धित अफसरों से मिलने जुलने का अवसर मिले, जो मेल मिलाप आप के लिये लाभदायक रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास शुभ फलदायक होगा, विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता निश्चित है, यदि आप ने कोई परीक्षा दी है अथवा कोई इन्टरविव आदि देना है उस में सफलता होगी जब कि बृहस्पति अष्टकवर्ग वेध आदि के आधार से अनुकूल है। शुभ दिन नोट कीजिये :- 5, 6, 7, 8, 12, 13, 17, 18, 24 25,

जून सूर्य और बुध का बारवे भाव में होना हानिकारक माना जाता है, यह दोनों ग्रह शुक्र के वेध में पड़े हैं भौम को छोड़ कर शेष ग्रहों की स्थिति अच्छी है, विशेषतया शुक्र का प्रभाव 1986 के अन्त तक रहेगा, 1986 के अन्त तक १, २ ३, ४वें भाव में शुक्र क्रमशः आता रहेगा इन सभी भावों में शुक्र का होना शुभफलदायक है जैसा कि गोचर शास्त्रों में १भाव के सूर्य के विषय में दर्ज है, धन और सुख की प्राप्ति, शत्रुओं का नाश, सन्तान सुख, विद्याप्राप्ति में सफलता खाने पीने खिलाने पिलाने की प्रवृत्ति, व्यापार में उन्नति, दूसरे शुक्र के विषय में – धन का लाभ, शरीर के स्वस्थ होना स्त्री की ओर से सुख महिला होने पर पति की ओर से शान्ति, सन्तान - सुख, शत्रु का नाश। तीसरा शुक्र भी गोचर से उत्तम माना जाता है जैसा कि गोचर-शास्त्रों में दर्ज है - भाई - बन्धुओं से सुख की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय, धन का लाभ तथा मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि। चौथा शुक्र होने पर सभी कार्यों में सफलता, वाहन मोटर आदि का सुख, समाज में आदर जाईदाद का लाभ. पांचवे भाव के शुक्र के विषय में गोचर फलित में कहा है सन्तान सुख मिलता है, अन्न तथा धन का लाभ होता है, शत्रुओं पर विजय होती है। उपलिखित गोचरफल तथा अन्यान्य ग्रहों की दृष्टि में रखते हुये विदित होता है कि यह मास सुखशान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा जो कोई भी काम आप हाथ में लेंगे सफलता अवश्य होगी, घर में मंगल कार्य रचाने के प्रोग्राम बनते रहेंगे, शुभ कामों पर आशा से अधिक धन खर्च होगा। आमदनी की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास

जून मास का वर्षफल

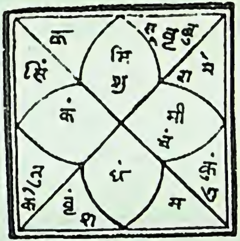

हर काम में सफलता का है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 1, 2, 8. 9, 13, 14, 20, 21, 28, 29 और 30।

जुलाई: सूर्य का लग्न में होना हानिकारक माना जाता है। ११वां चन्द्रमा यद्यपि गोचर से शुभ माना जाता है परन्तु चन्द्रमा भौम के वेध मे है यानि इस मास के प्रारम्भ पर यह दोनों ग्रह सूर्य और चन्द्रमा भौम के वेध में हैं जब कि मासिक फलादेश मे इन दोनों ग्रहों का प्रभाव अधिक होता है, शुभ अशुभ ग्रहों के वेध अष्टकवर्ग की दृष्टि में रखकर विदित होता है - आप का शरीर स्वस्थ होने पर भी अचानक बिगड़ने का अन्देशा है, शरीर के विषय में सावधान रहिये, उपाय के रूप में इस मास मे मांस का प्रयोग न करें। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, यदि आप दुकानदार हैं तथा आप का काम परचून का है तो आप अधिक लाभ में रहेंगे, यदि आप थोक काम करते हैं तो रात दिन काम में जुटे रहने पर भी अन्त में आप खसारा में रहेंगे। यदि आप फलों अथवा बागात से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो इस मास में खरीद फरोख्त दोनों रूपों मे आप असफल रहेंगे, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, यदि आप को लड़की अथवा लड़के के रिश्ता जोड़ने की परेशानी है तो आप उस कार्य के लिये दौड़धूप कीजिये यह समस्या अवश्य हल होगी। नौकरीपेशा होने पर आप को दरबार में हर प्रकार से मानप्रतिष्ठा बनी रहेगी। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर भी इस मास में नहीं मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी। सैर सपाटा तथा भाई-बन्धुओं के साथ मेलजोल में यह मास तेजी से व्यतीत होगा। इस मास के शुभ दिन नोट करें:- 1, 2, 6, 7, 11, 13, 17, 18, 2 , 27 और 29।

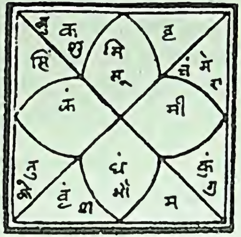

अगस्त: यद्यपि इस मास के प्रारम्भ पर दूसरे भाव में सूर्य ठहरा है जो गोचर मे अशुभ माना जाता है परन्तु बुध के वेध में होने से अशुभ सूर्य भी शुभ फलदायक होगा ऐसा गोचर-शास्त्र के मर्मज्ञों का कहना है। शेष ग्रह इस मास मे अच्छी स्थिति में हैं, शरीर सुख आप का उत्तम रहेगा, यदि शरीर में पहले से कोई तकलीफ है तो इस मास में यह तकलीफ दूर होगी, यद्यपि बावजूद भी सुहृद

तथा कारोबार के लिये हानिकारक माना गया है परन्तु सोम शनि वेध में होने से आप के लिये लाभ दायक रहेगा, यदि आप गृहस्थी हैं तो घरेलू हर एक समस्या का समाधान अवश्य होगा, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का भी प्रोग्राम बनेगा, यदि आप के हां लड़के अथवा लड़की के विवाह के सम्बन्ध में कोई चिन्ता है तो इस मास में प्रयत्न कीजिये आप

अगस्त मास का वर्षफल

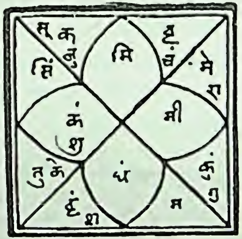

की यह चिन्ता अवश्य दूर हो जायेगी। यदि आप को कोई जाईदाद अथवा मकान आदि खरीदने का प्रोग्राम है इस मास में ऐसे काम का श्रीगणेश कीजिये ऐसे काम के आरम्भ पर कोई अड़चन नहीं आयेगी व्योपारी होने पर आप का व्योपार इस मास में सफल रहेगा, कारोबार सम्बन्धित जिस काम में आप का हाथ होगा, सफलता निश्चित है। यदि आप खाद्यपदार्थ से सम्बन्धित काम करते हैं तो इस मास को आप इस वर्ष का मनहूस महीना मानिये, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं, अगर आप ने फल अथवा बागात खरीदने हों तो आप सफल रहेंगे, यदि आप ने फल अथवा बागात बेचने हों तो इस मास में बेचें नहीं अपितु दूसरे मास में बेचने का प्रोग्राम बनायें। नौकरीपेशा होने पर यह मास शान्त वातावरण में ही गुज़रेगा, नौकरी सम्बन्धित यदि आप किसी उलझन में उलझे हुये हैं तो ज़रा सा प्रयत्न करने पर आप की उलझन सुलझ जायेगी, विद्यार्थियों के लिये यह मास विद्यासम्बन्धित हर काम के लिये सफलता का है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 1, 2, 3, 8, 14, 15. 22, 23, 24, 25, 26, 30 और 31।

सितंबर: इस मास में ग्रहों की दशा अगस्त मास की जैसी है, शुक्र पांचवें भाव में भी आया है – पांचवें शुक्र के बारे में गोचर शास्त्रों में दर्ज है - गृहस्थी होने पर पुत्रों से प्रेम तथा लाभ धन की प्राप्ति, यश में वृद्धि, शत्रुओं पर विजय, डिपार्टमेन्टल परीक्षा में सफलता, सामूहिक रूप से पांचवां शुक्र आप के लिये हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, बन्धुजन में वृद्धि होगी। व्योपारी होने पर व्योपार सम्बन्धित हर काम में सफलता तथा लाभ - विशेषतया यदि आप तेल सीमेंट आदि से सम्बन्धित काम करते हैं तो इस मास में आप मालामाल होंगे, खाद्य पदार्थों के सटाबसट इस मास में असारा में रहेंगे अपितु धनात्मक कारोबार सम्बन्धित परे-

शानी बडी होगी, यदि आप का किरयाना कपडा सम्बन्धित तिजारत है तो आप लाभ में रहेंगे। गृहस्थी होने पर घर में कोई मंगलकार्य रचाने का परोग्राम बनेगा, खाने खिलाने के परोग्राम बनते रहेंगे, भाई बन्धु रिश्तेदारों के आयात में वृद्धि होगी, अतिथि सेवा इस मास का विशेष व्यसन होगा, खर्च का योग इस मास में प्रबल, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास सफलता का है विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये:- 3, 4, 10, 11, 14, 18, ¿0 21, 62, 27।

सितंबर मास का वर्षफल

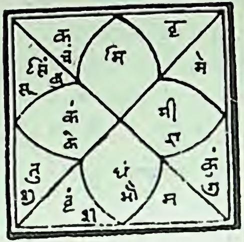

अक्टूबर : इस मास में शरीर के विषय में सावधान रहिये, अचानक शरीर कष्ट अथवा चोट का अन्देशा है, यदि आप वाहन चलाते हैं तो मंगलवार को दक्षिण दिशा की ओर न चलायें, यदि मंगलवार को ही चलाना आवश्यक है तो मंगलवार को १२ बजे दिन से पूर्व न चलायें, धनभाव का स्वामी चन्द्रमा जिसको भौम और शनि दोनों पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं, इस क्रूरयोग के प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति इस मास में डांवाडोल रहेगी, यदि आप तिजारतपेशा हैं तो आप का कारोबार ढीला पडेगा, दौडधूप अधिक करनी होगी परन्तु लाभ कुछ होगा नहीं, इस मास का अन्तिम सप्ताह आप के लिये हानिकारक सिद्ध होगा, यदि आप लोहे तथा मशीनरी सम्बन्धित काम करते हैं, छटे भाव में शनि होने के प्रभाव से आप कुछ लाभ में ही रहेंगे, नौकरीपेशा होने पर अचानक तबदीली का योग जो तब्दीली आप के लिये परेशानी का कारण होगी, यदि दैवयोग से तबदीली न भी होगी तो भी आप दरबार के भार से परेशान रहोगे, किसी सम्बन्धित अफसर से अचानक नाराजगी होगी अथवा कोई आरोप लगने का अन्देशा है, यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते है तो इस मास में आप पर बृहस्पति का प्रभाव अधिक प्रभावशाली रहेगा, संघर्ष अधिक करना होगा परन्तु हर आरम्भ किये हुये कार्य में आप सफल रहेंगें, यदि आप ठेकादारी का काम करते हैं आप का काम सफल रहेगा, गृहस्थी होने पर इस मास में आप पर शुक्र का प्रभाव आधिक रहेगा जिस के शुभप्रभाव से आप के यहाँ कोई मंगल कार्य रचाने का परोग्राम बनेगा जिस मंगल कार्य में अधिक से अधिक धन खर्च करने का परोग्राम होगा, परन्तु शुक्र के प्रभाव से वह मंगल

पराक्रम ज्ञान से सम्पूर्ण होगा, धार्मिक कामों प्रयत्न सामाजिक कामों में अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी, दसवें राहु के प्रभाव से इस मास में साधु - सन्तों अथवा श्रेष्ठ पुरुषों से मिलने का शुभ अवसर मिलेगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 1, 2, 7, 8, 16, 17, 18, 19, 23, 24, 25, 29 ।

नवम्बर: पांचवें भाव में सूर्य चन्द्रमा शुक्र का एक साथ होना हानिकारक माना जाता है, शुक्र स्व में होते हुये भी अशुभ फल का ही देने वाला होगा यह मिला जुला हानिकारक योग आप को बुद्धि भ्रम पैदा करने वाला होगा,

नवम्बर मास का वर्षफल

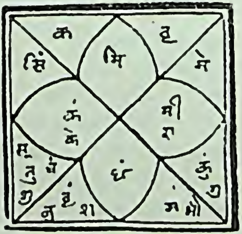

जो कोई भी काम आप हाथ में लेंगे सन्तोषजनक लाभ नही होगा, तिजारत पेशा होने पर आप के तिजारत में कोई तेजी आयेगी नहीं अपितु आप का कारोबार यथावत् चलेगा, यदि आप किसी फैक्ट्री से सम्बन्धित काम करते है आप का कारोबार इस मास में सफल रहेगा, यदि आप कपड़े किरयाना से सम्बन्धित तिजारत करते है तो आप की तिजारत ढीली रहेगी, नौकरीपेशा होने पर यह मास शान्त वातावरण में ही व्यतीत होगा, आप हर प्रारम्भ किये हुये काम में प्रायः सफल रहेंगे, यदि आप नौकरी सम्बन्धित किसी उलझन में उलझे है प्रयत्न करने पर इस मास में वह उलझन भी सुलझ जायेगी, यदि कोई तर्की की आशा है, यदि वह तर्की मिलेगी नहीं तो आशा सुदृढ़ होगी, आप की नौकरी सम्बन्धित हर एक समस्या इस मास में हल होगी, इस मास में खर्च के नये नये मार्ग निकल आयेंगे, साथ साथ आमदनी में भी वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास डांवांडोल स्थिति का होगा, पठनपाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी, भाई-बन्धु रिश्तेदारों के मेलमिलाप में अधिकतर व्यस्त रहोगे, सैरसपाटा करना इस मास का विशेष व्यसन होगा, धार्मिक कामों की ओर प्रवृति बनी रहेगी, माता पिता की ओर अधिक झुकाव तथा लगाव बना रहेगा, यदि इस मास में यात्रा का योग बने बिना किसी हिचकिचाहट के उस यात्रा को अमलीरूप दीजिये, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये:- 3, 4, 12, 13, 14, 15, 24, 25 ।

दिसम्बर: इस मास में आप शत्रुओं से सावधान रहिये, कई घनिष्ट सम्बन्धी अथवा विश्वासपात्र मित्र भी आप के शत्रु बनेंगे, ऐसा क्रूरयोग होने पर भी कोई भी शत्रु आप पर विजयी नही होगा

अपितु आप की जरा सी सावधानी से शत्रु भी आप के चरण-चूमेंगे, तिजारत पेशा होने पर यह मास आप के लिये ढीला होगा प्राय: इस मास मे हाथ पर हाथ धर कर बैठना होगा, इस मास में माल खरीदना आप के लिये लाभदायक होगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते है आप के लिये बेचने का काम लाभदायक रहेगा, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं आप सावधान रहिये किसी विश्वास पात्र से अचानक धोखा मिलेगा, यदि आप नौकरी करते है तो तबदीली का योग है, जो तबदीली पहले आप के लिये परेशानी का कारण बनेगी, परन्तु पश्चात् आप के लिये लाभदायक होगी, आदरमान प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह मास उत्तम होगा सम्बन्धित अफसरों से मेल मिलाप में वृद्धि होगी, गृहस्थी होने पर आप को पुत्र सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी. मन मे हर समय नीच विचार उठते रहेंगे, नीच पुरुषों के संग रहने की प्रवृति बनी रहेगी नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित कोई न कोई चिन्ता आप को हर समय घेरे रखेगी सम्बन्धित कार्य कर्ताओं से अचानक अनबन का योग है। विद्यार्थी होने पर विद्यासम्बन्धित हर काम में असफलता यदि आपने कोई परीक्षा इन्टरविवू आदि देना हो तो इस मास में सफलता की कोई आशा न रखें, मिथुन राशि वालों को यदि मकान जाईदाद वाहन आदि खरीदना या बनाना हो तो इस मास में ऐसे काम का श्रीगणेश करना आप के लिये अनुकूल तथा लाभदायक रहेगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 9, 10, 11, 12, 13, 17, 19, 22, 23, 28, 29

जनवरी : सातवें भाव का सूर्य यद्यपि गोचर से हानिकारक माना जाता है, परन्तु वेध में होने से शुभफलदायक, ऐसे ही दसवें भाव का भोम यद्यपि हानिकारक है परन्तु वेध में होने से वह भी शुभ है छटे भाव में शुक्र का होना हानिकारक है, शनि अच्छी पुजिशन में है, इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, यदि शरीर मे पहले से कोई तकलीफ है जरा सी सावधानी करने से शरीर स्वस्थ हो जायेगा. आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आप तिजारत-पेशा है तो यह मास आप के लिये विशेष लाभदायक रहेगा, तिजारत - सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में आप लाभ में रहेंगे, यदि आप लोहा मिशीनरी सम्बन्धित काम करते है तो आप इस मास में खसारा में रहेंगे, परन्तु लोहे से सम्बन्धित व्योपारियों को माल के खरीद के लिये यह मास लाभदायक रहेगा, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों की ओर अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी, घर मे खाने खिलाने के दिनों दिन परोग्राम बनते रहेंगे, नौकरीपेशा मिथुन राशिवालों के लिये यह मास शान का होगा, अचानक लाभ अथवा तर्की का योग है, सम्बन्धित अफसरों से मेलजोल मे वृद्धि होगी, दरबार में मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, दरबार सम्बन्धित

हर काम में सफलता होगी, विद्यार्थी होने पर यह मास आप के लिये कोई विशेष सुख शान्ति का नहीं होगा अपितु विद्यासम्बन्धित हर काम में सन्तोषजनक सफलता नहीं होगी, यदि आप नौकरी के तलाश में हैं तो इस मास में बना हुआ काम भी बिगड जायगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 6, 7, 8; 9, 13, 18, 19, 25 और 26 ।

जनवरी मास का वर्षफल

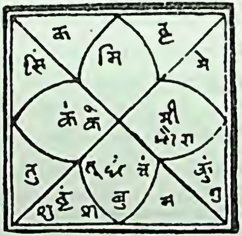

फर्वरी नवे भाव में चन्द्रमा और बुध हानिकारक माना जाता है परन्तु ये दोनों ग्रह वेध में हैं, अतः यह शुभ फलदायक होंगे, चन्द्रमा बुध और बृहस्पति का नवें भाव में एक साथ होना इस मास के शुभ शकुन का सूचक है, इस मास में जो कोई भी काम आप हाथ में लेंगे उस में सफलता निश्चित है। यदि आप कारोबार करते हैं अथवा जिस किसी भी कारोबार से आप सम्बन्धित हों तो लाभ की दृष्टि से यह मास आप के लिये एक स्मरणीय मास होगा। नौकरीपेशा मिथुन राशिवालों के लिये यह मास सुख शान्ति का मास होगा. यदि तर्की का कोई सिलसिला विचाराधीन है तो इस मास में वह समस्या हल होगी, यदि तर्की न भी मिले तो भी तर्की की आशा सुदृढ़ होगी, यदि आप नौकरी नहीं करते हैं और नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में डट कर प्रयत्न कीजिये सफलता अवश्य होगी, यदि इस मास में भी आप को नौकरी न मिले तो न मालूम कितनी देर आप को प्रतीक्षा में रहना होगा। ऐसे ही सातवें भाव का शुक्र भी गोचर में हानिकारक माना जाता है जैसा कि गोचर-शास्त्र में दर्ज है, अनादर का भय रहता है, रोजगार में रुकावट पडती है, शरीर रोगी होता है, यात्रायें अधिक होती हैं। सम्पादक की राय में शुक्र आप के गृहस्थ को प्रभावित करेगा। यदि आप गृहस्थी हैं तो इस मास में किसी घरेलू परेशानी से दुचार होगा। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 2, 3, 4, 5, 9 10, 14 15, 19 और 20 ।

फरवरी मास का वर्षफल

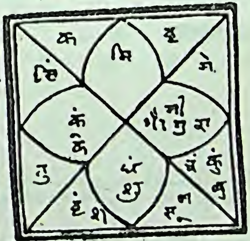

मार्च इस मास में ग्रहों की स्थिति अच्छी है, यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा. शरीर सुख आप का उत्तम रहेगा, यदि आप का शरीर पहले से अस्वस्थ है तो इस मास में जरा सी शरीर

सम्बन्धित सावधानी रखने से आप का शरीर स्वस्थ होगा, यदि आप के शरीर में कोई आप्रेशन आदि करवाने का प्रोग्राम है तो इस मास को हाथ से जाने मत दीजिये, शरीर को स्वस्थ बनाने के लिये इस मास के ग्रह अनुकूल है, आय की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है, यदि आप तिजारत करते है और आप का सम्बन्ध परचून से है तो आप का काम ढीला हो चलेगा, यदि आप थोक काम करते है तो आप का काम सन्तोषजनक रूप में चलेगा, नौकरीपेशा होने पर यह मास शान्त वातावरण में व्यतीत होगा, यदि कोई तर्की का सिलसिला चल रहा है तो इस मास में आप की तर्की अवश्य होगी, यदि आप की तब्दीली होगी तो वह भी इच्छानुसार होगी, सम्बन्धित अफसरों से मेलजोल में वृद्धि होगी जो मेलजोल आप की प्रतिष्ठा को बढ़ाने में सहायक होगा, यदि आप कोई जाईदाद आदि खरीदना चाहते हैं तो यह मास ऐसे काम के लिये अनुकूल है। यदि आप ने वाहन मोटर आदि खरीदना हो तो इस मास में खरीदना आप के लिये शुभ शकुन होगा। गृहस्थी होने से यदि आप को कोई घरेलू परेशानी है तो

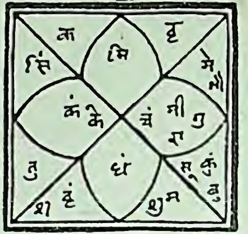

उस परेशानी का समाधान इस मास में अवश्य होगा। यदि आप लड़की अथवा लड़के के विवाह के विषय में चिन्तित है तो उस चिन्ता का हल भी इस मास में निकल आयेगा। विद्यार्थी होने पर विद्यासम्बन्धित हर काम में अवश्य सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 1, 2, 3, 4, 8, 9, 13, 14, 20, 21, 29, 30 और 31।

दिसम्बर

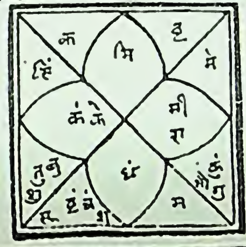

कर्क राशि का वर्ष फल

गोचर शास्त्रों से

सूर्य :—नवें भाव में होने से अकस्मात् हानि, झूठा आरोप लगने का अन्देशा, आमदनी में कमी, शरीर कष्ट, वृद्धों अथवा रिश्तेदारों से विरोध, अनादर का भय, हर आरम्भ किये हुये काम में असफलता।

चन्द्रमा :—दसवें भाव में होने से हर काम में सफलता, स्वास्थ्य में सुधार, सरकार की ओर से धन और आदर मिले, नौकरी में तरक्की, अफसरों से मेल मिलाप, गृहस्थ से शांति।

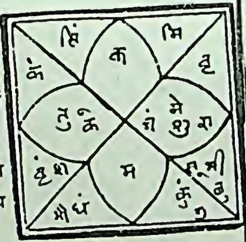

भौम :—छटे भाव में होने से धन का लाभ, शत्रुओं पर विजय स्वास्थ्य का ठीक होना।

बुध :—नवें भाव में होने से हर आरम्भ किये हुए काम में विघ्न यात्रा में परेशानी, धन और मान की हानि रिश्तेदारों तथा मित्रों से अनबन, धर्म के कामों में श्रद्धा की कमी।

बृहस्पति :—आठवें भाव में होने से सरकार की ओर से परेशानी बोल चाल में तेजी के कारण झगड़ों का खड़ा होना तथा अनादर, नौकरी में गड़बड़, व्यापार में हानि, शरीर कष्ट, यात्रा में कष्ट.

शुक्र :—दसवें भाव में होने से शरीर पीड़ा, मानसिक चिन्ता, धन की हानि, नौकरी में विघ्न, शत्रुओं की वृद्धि, हर काम में असफलता, जनता से अनबन, स्त्री की ओर से परेशानी, दरबार की चिन्ता।

शनि :—पांचवें भाव में होने से बुद्धि भ्रम का उत्पन्न होना, किसी भी हाथ में ली हुई योजना का पूरा न होना, धोखा देने की भावना उत्पन्न होना, चरित्र हीनता का भय, पुत्र पक्ष से अशान्ति, व्यापार में कमजोरी, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानी।

राहु :—दसवें भाव में होने से तीर्थ यात्रा, दानपुण्य आदि की प्रवृत्ति का बना रहना, मान में वृद्धि, हर काम में सफलता।

केतु :—चौथे भाव में होने से सुख की वृद्धि, आदर में वृद्धि शुभ-कामों की प्रवृत्ति, जमीन का लाभ।

कर्क राशि का वर्षफल

ऊपर लिखित फलादेश से आपको विदित होगा गोचर शास्त्र के आधार से चन्द्रमा बुध बृहस्पति शुक्र और शनि यह सभी ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं, परन्तु गोचर शास्त्रकारों का कहना है जो ग्रह वेध में होता है वह ग्रह अशुभ होते हुये भी शुभ फल का देने वाला होता। कर्क राशि के ग्रहों पर विचार करने से मालूम होता है चन्द्रमा बुध शुक्र और शनि यह पांचों ग्रह वेध में हैं, इसलिए सामूहिक रूप से इस वर्ष के ग्रह आपके अनुकूल हैं, सम्पादकीय दृष्टि से फलादेश निम्नलिखित है पढ़िये

शरीर :- इस वर्ष सामूहिक रूप से आपका शरीर स्वस्थ रहेगा, बृहस्पति आठवां होने से पाचनशक्ति के बिगड़ने का अन्देशा है, उपाय के रूप में आवश्यक है आप खाने पीने में सावधानी रखें, रविवार को माँस का प्रयोग न कीजियं ।

धन :—आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, व्यापारी वर्ग हर पहलू में लाभ मे रहेगा, केवल आप के काम में डटे रहने की आवश्यकता है, यदि आप किरयाना कपड़े का परचून काम करते हैं या थोक काम करते है दोनों रूपों में आप सफल रहेंगे—लोहा, मिशीनरी, तेल, सीमेंट आदि से सम्बन्धित व्यापारी वर्ग विशेष लाभ में रहेगा नहीं । खाद्य पदार्थ गेहूं, चावल, मक्की आदि से सम्बन्धित व्यापारी वर्ग विशेष लाभ में रहेगा जो कर्क राशि वाले ठेकेदारी का काम करते हैं उनका काम अप्रैल से पहले छः मास तक कुछ ढीला रहेगा, फलों से सम्बन्धित तिजारत करने वालों को इस वर्ष रात दिन काम में जुटे रहना होगा । आपको कारोबार सम्बन्धित बहुत सी उलझनो का सामना करना होगा परन्तु ऐसा होने पर भी अन्त मे आप सामूहिक रूप से लाभ में रहेंगे, आपके लिए खुशक फल का खरीद-फरोखत अधिक लाभदायक रहेगा, यदि आप हिस्सेदारी में कारोबार करते है तो सावधान रहिये धोखा लगने का भी अन्देशा है, नौकरी पेशा होने पर यह वर्ष एक ही रंग में गुजरेगा नहीं, नौकरी सम्बधित परीक्षा में आशा से अधिक अंकों में सफल होंगे, यह वर्ष आपके भाग्य को चमकाने वाला वर्ष होगा, विद्या सम्बन्धित कोई भी कार्य आप करेंगे अकस्मात् ऐसी सफलता होगी जो सफलता देखकर आप स्वयं भी आश्चर्यचकित होंगे ।

कर्क राशि वालों को यदि कोई नया कार्य आरम्भ करने का विचार हो तो इस वर्ष को हाथ से मत जाने दीजिए, जो कोई भी काम करना हो अकेले कीजिये यदि ऐसा सम्भव न हो तो भी जिसकी नाम राशि धन, कुम्भ, मिथुन हो उनके साथ मिलकर काम न करें—यदि आपने कोई वस्तु खरीदना हो तो धनु, कुम्भ मिथुन राशि वालों से न खरीदें इन राशि वालों से खरीदना आपके लिए हानिकारक होगा ।

कर्क राशि वाले किसी भी पेशा से सम्बन्धित हो, वह महिला हो या पुरुष विद्यार्थी हो या नौकरी पेशा, उपाय के रूप में आप इस वर्ष नियम से गायत्री मन्त्र के जप अथवा बार-बार उच्चारण करने का प्रोग्राम बनाएँ, हर संकट का मुकाबला करने तथा हर कार्य की सिद्धि का यही एकमात्र उपाय आपके लिये हैं । सम्पादक की दृष्टि से यह वर्ष लगभग हर पहलू से अच्छा रहेगा, ऐसा होने पर भी आप उपाय अवश्य करें उपाय है—आप किसी मादक द्रव्य का उपयोग न करें, शनि आपके चरित्र को बिगाड़ने में सहायक होगा । तथा नीच तथा निन्दित कर्म करवाने की ओर अधिक झुकाव रखेगा, यदि आप शनि के प्रभाव को शान्त बनाये रखना चाहते हैं तो आवश्यक है आप अधिक से अधिक समय सत्संग तथा साधु सन्तों के सम्पर्क में व्यतीत किया करें, इस उपाय से यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा ।

कर्क राशि का मासिक फल

अप्रैल :—ग्रहों के वेध अष्टक वर्ग आदि को दृष्टि में रख कर गोचर फलित के आधार से यह मास सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा शरीर सुख आपका उत्तम रहेगा, कारोबार की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, यदि आप कपड़े, किरयाना, खाद्य पदार्थ का कारोबार सर्व साधारण दुकानदार के रूप में करते हैं तो यह मास आपके लिए लाभदायक रहेगा, आपका

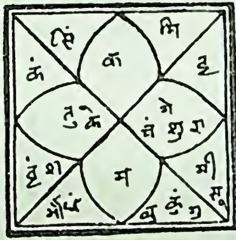

काम काज तेजी से चलेगा, यदि आप थोक दुकानदार के रूप में करते हैं यद्यपि आपका काम देखने में तेजी से चलेगा आप लाभ में नहीं रहोगे आप दरबार पक्ष से परेशान नहीं रहोगे, कभी सम्बन्धित अफसरों के साथ मेलजोल में वृद्धि होगी, जिससे आप को आदर के साथ-साथ मानसिक शान्ति भी रहेगी अप्रैल से पहले छः मास में यदि तबदीली होगी वह इच्छानुसार नहीं होगी, दूसरे छः मास में यदि तबदीली होगी वह तरक्की के साथ होगी, यदि आप नौकरी पेशा नहीं है परन्तु नौकरी के इच्छुक है प्रयत्न करने पर वर्ष के पिछले तीन महीनों में नौकरी मिलने की सम्भावना है, यदि आप जमींदार हैं—इस वर्ष आप आत्म-विश्वास से काम पर जुट जायें आपको आशा से अधिक लाभ होगा,

मई :—अष्टक वर्ग वेध आदि को दृष्टि में रख कर गोचर फलित से यही विदित होता है यह मास संघर्ष दौड़धूप में व्यतीत होगा, परन्तु संघर्ष होने पर भी हर आरम्भ किये हुये काम मे सफलता अवश्य होगी शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि पहले से आपका शरीर अस्वस्थ है इस मास में नये सिरे से इलाज करवाने से

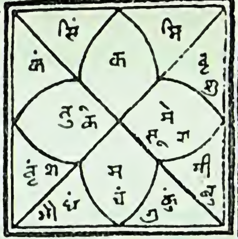

आपका शरीर स्वस्थ होगा, गृहस्थी होने पर यदि घर के किसी सदस्य की कोई शरीर सम्बन्धित परेशानी है जरा ध्यान देने से वह परेशानी दूर होगी, यदि आपको इस वर्ष कोई नया काम आरम्भ करने का प्रोग्राम है उस काम का श्री गणेश इस मास में कीजिये, यदि घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम हैं,यदि वह मंगल कार्य इसी मास में सम्पूर्ण करना असम्भव होगा तो भी इस मास में उस का मुहूर्त करें क्योंकि यह मास ऐसे कामों के आरम्भ के लिये शुभ है, आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम है, व्योपारी वर्ग के लिये आमदनी के लिये लाभदायक रहेगा, आप थोक काम करते हैं या परचून हर दोनों रूपों मे यह मास आपके लिये शुभ है, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं तो फलों अथवा बागात का खरीदना आपके लिये लाभदायक रहेगा, यदि आप इस मास में बेचने का कारोबार करोगे तो आप हानि में रहेंगे, सामूहिक रूप से कारोबार की दृष्टि से लाभ दायक है, यदि आप नौकरी करते हैं, यह मास शान्त

वातावरण में ही गुजरेगा, दफ्तर सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, सम्बन्धित अफसरों से मेलजोल में वृद्धि होगी जो आपके आदरमान में वृद्धिका कारण होगा, यदि आप नौकरी करते हैं अथवा नौकरी की की कोशिश करते हैं तो इस मास में नौकरी की आशा है, यदि आपके तर्की के का कोई सिलसिला चल रहा है कोशिश करने पर इस मास में तर्की मिलने की सम्भावना है, तबदीली का भी योग है, अचानक लाभ मिले, कोई जायदाद अथवा तामीरी काम आरम्भ करने का प्रोग्राम बनेगा विद्यार्थी वर्ग के लिये विद्या संम्बन्धित हर काम में असफलता तथा अशान्ति का मास है, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिए—7,5,9,10 15.16,19,20,26.27 ।

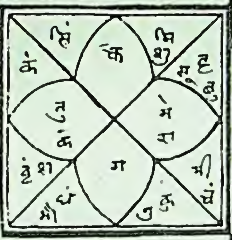

जून :—इस मास के शुभ अशुभ ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है यह मास डावांडोल स्थिति में व्यतीत होगा, शरीर अस्वस्थ रहेगा, कभी एक अंग में तकलीफ कभी दूसरे अंग में तकलीफ रहेगा चोट लगने का अन्देशा है यदि आप गृहस्थी हैं तो आपको स्त्री-पक्ष से अथवा सन्तान पक्ष से अचानक परेशानी होगी, हर समय कोई न कोई घरेलू परेशानी घेरे रखेगी, भाई बन्धुओं अथवा रिश्तेदारों के साथ नाराजगी का माहौल बना रहेगा, कारोबार की दृष्टि से यह मास कुछ ठीक रहेगा, यदि आप तिजारत पेशा हैं जिस प्रकार का आप कारोबार करते हैं हर काम में सफलता अवश्य होगी केवल लोहे मिशीनरी सम्बन्धित काम में हानि की सम्भावना है, यदि आपने कोई तामीरी काम करना हो इसी मास में उस का आरम्भ करें यदि आपने कोई वाहन आदि खरीदना है वह कार्य भी इसी मास में करें ऐसे कामों के लिये यह मास उत्तम रहेगा है, खर्च के जितने भी प्रोग्राम आप इस मास में बनायेंगे ऐसे प्रोग्राम सफल रहेंगे, नौकरी पेशा कर्क राशि वालों के लिये इस मास के पहले 15 दिन अशान्ति में गुजरेंगे, दूसरे 15 दिन शान्त वातावरण में गुजरेंगे, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास अशान्ति का होगा, पठन पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी, अपितु विद्या सम्बन्धित प्रायः हर काम में रुकावटें आखड़ी होंगी, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—4,5,6,7,11,12,16,17,12,16,17 22,23,29,30 ।

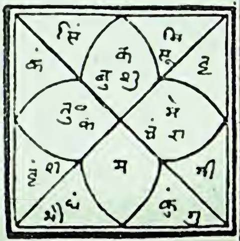

जुलाई :-वेध अष्टक वर्ग को ध्यान में रखकर ज्योतिष गोचर से विदित होता है, इस मास के ग्रह आपके अनुकूल हैं जो कोई भी कार्य इस मास में आप हाथ में लेंगे, उस में सफलता निश्चित है, शरीर सुख आप का उत्तम रहेगा । यदि पहले से आपके शरीर में कुछ तकलीफ है इस मास में वह भी समाप्त होगी, धन की

दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आप व्यापारी है तो आपका व्यापार यथावत् चलता रहेगा आपके काम में किसी प्रकार की रुकावट आयेगी नहीं, नौकरी पेशा होने पर आपका यह मास सुख-शान्ति के वातावरण में खुशी खुशी गुजरेगा, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने-जुलने का अवसर मिलेगा

यदि कोई कोई तामीरी काम रचाने का प्रोग्राम है इस मास में न करें ऐसे कार्यों के लिये यह मास हानिकारक है इस मास में आरम्भ किया हुआ तामीरी काम लटकता ही रहेगा, यदि इस मास में यात्रा का योग बने वह यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी, बिना किसी हिचकिचाहट यात्रा को अमली रूप दीजिये विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य होगी, यदि इस मास में कोई परिणाम निकलने वाला होगा, अथवा कोई इण्टरविव आदि देना हो या दिया हो अवश्य सफलता होगी इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—1,2,3,4,5,9,13, 14,19,20,25,29,30,31 ।

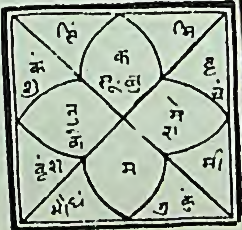

अगस्त :—इस मास में ग्रहों की स्थिति प्रायः हानिकारक है जब लग्न का सूर्य और बुध बारवां चन्द्रमा तीसरा शुक्र आठवां वृहस्पति, पांचवे भाव का शनि यह सभी ग्रह हानि कारक स्थानों में ठहरे हैं, गोचर फलित के सभी सिद्धान्तों को दृष्टि में रख कर विदित होता है यह मास आपके लिये हानिकारक नहीं है परन्तु कुछ शुभ फलदायक ही है, आपका शरीर सुख यथावत् चलता रहेगा इस मास में शरीर सम्बन्धित कोई समस्या होगी नहीं, यदि आप गृहस्थी है तो गृहस्थ सम्बन्धित शारीरिक कोई परेशानी नहीं, होगी यदि दैवयोग से गृहस्थ में पहले से ही शरीर सम्बन्धित कोई शारीरिक परेशानी हो वह अकस्मात् दूर होगी, यदि आप किसी झगड़े अथवा मुकद्दमा में फंसे हुये हैं, इस मास में उस झगड़े अथवा मुकद्दिमा से छुटकारा मिलेगा शत्रुओं पर विजय होगी कोई भी शत्रु आप पर विजयी नहीं होगा, यात्रा का अकस्मात् योग बने जो यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी, तिजारत पेशा होने पर तिजारत यथावत् चलता रहेगा, इस मास में यदि अधिक से अधिक लाभ का योग नहीं है परन्तु किसी प्रकार का खसारा भी नहीं होगा, यदि इस माह में आमदनी अधिक नहीं है होगी परन्तु खर्च भी सीमा में ही होगा, मास के आरम्भ में 12 वां चन्द्रमा होने से यह मास आपके लिये मानसिक चंचलता का है बिना किसी कारण के भी परेशानी बनी रहेगी, यदि कोई तामीरी काम करने का प्रोग्राम बने, इस मास में यदि आरम्भ करोगे तो निश्चय रखिये वह तामीरी काम बहुत देर तक लटकता रहेगा जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण बनेगा, धार्मिक कामों की ओर आपका अधिक झुकाव रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास पूर्ण सफलता का है, पठन पाठन की अधिक प्रवृत्ति रहेगी, इस माह के शुभ दिन नोट कीजिये—5, 6,9,10,16,25,26 ।

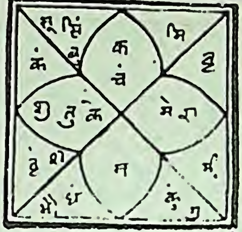

सितम्बर इस मास में सूर्य दूसरे भाव का जो गोचर से हानिकारक माना जाता है, वेध में होने से शुभफलदायक होगा, ऐसे ही चन्द्रमा भौम और बुध भी अच्छी पुजिशन में हैं, पांचवां शनि जो गोचर से हानिकारक है बृहस्पति के वेध में होने से शुभफलदायक है, केवल बृहस्पति अच्छी स्थिति में नहीं है। बृहस्पति आठवें भाव में होने से विशेषतया पेट में रोग होने का अन्देशा है, यदि आप तिजारतपेशा है तो आप का कारोवार यथावत रूप में चलता रहेगा, यदि आप कपड़े का थोक कारोवार करते हैं तो इस मास में माल वेचें खरीदे नहीं, यदि आप खरीदेंगे तो खतरा में रहोगे, यदि आप ठेकादारी का काम करते हैं इस मास में सन्तोषजनक लाभ में रहोगे, यदि आप फलों से सम्बन्धित तिजारत करते हैं इस मास में आप दिल लगा कर काम में जुट जाओ आप के लिए यह मास हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, इस मास में किया हुआ फलों का खरीद फरोखत आप के भविष्य के कारोवार में सहायक होगा, नौकरी पेशा होने पर यह मास शांत वातावरण में गुजरेगा, आदर मान की दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आपके घर में कोई बुजर्ग घर का मेम्बर बीमार है उसके विषय मे सावधान रहिये, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास हर विद्या सम्वन्धित काम में सफलता का है, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिए—6 7, 12, 21, 22, 23, 24, 25, 28

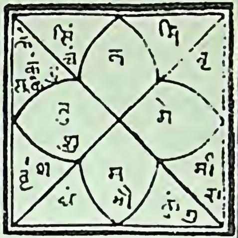

अक्टूबर तीसरा सूर्य गोचर से उत्तम माना जाता है, परन्तु दूसरे भाव का चन्द्रमा हानिकारक है, ऐसे ही भौम और शनि भी अच्छी पुजिशन में नहीं है, शुक्र अच्छी स्थिति में है बृहस्पति भौम के वेध में होने से शुभ है इस शुभ अशुभ मिले जुले योग के प्रभाव से आप का शरीर स्वस्थ रहेगा परन्तु गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर बिगडने का अन्देशा है, यदि आप महिला हैं तो पति के ओर से शारीरिक परेशानी रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने परोग्राम बनेगा जिसमें धन की अधिक से अधिक राशि खर्च होगी यहां तक कि आपको तंगदस्ती से भी दुचार होगा, नौकरी पेशा होने पर शुक्र के प्रभाव से आपके लिए द॰ब॰र का वातावरण साजगार तथा शान्त रहेगा—दरबार सम्बन्धित हर एक काम आदर मान से सम्पूर्ण होगा, सम्बन्धित अफसरों से मेलजोल में वृद्धि होगी, आमदनी की दृष्टि से यह मास ढीला रहेगा, केवल खर्च के नये-नये मार्ग निकल आयेंगे इस मास में दौड़ धूप अधिक होगी, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, विद्यार्थियों के लिये भी यह मास परेशानी का है, पठनपाठत की ओर कम प्रवृत्ति रहेगी, विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता, इस मास के शुभदिन नोट कीजिए 3, 19, 10, 16 17, 18, 19, 25, 26, 30, 33

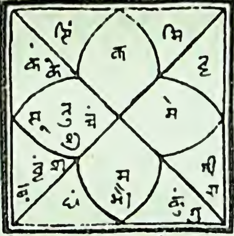

नवम्बर इस मास के आरम्भ पर ग्रहों की स्थिति हानिकारक है, शरीर के विषय में सावधान रहिये, अकस्मात शरीर में कष्ट का योग है भौम के प्रभाव से चोट लगने का अन्देशा है, यदि आप स्वयं वाहन चलाते हैं तो मंगलवार को दक्षिण की ओर यात्रा न करें यदि मंगलवार को ही यात्रा करनी आवश्यक है तो भी 12 बजे दिन तक न करें, धन यानी कमाई की दृष्टि से भी यह मास मनहूस है, जिस कार्य में आप का हाथ होगा प्रयत्न करने पर भी पल्ले कुछ पड़ेगा नहीं हर आरम्भ किये हुये काम में असफलता होगी, रिश्तेदार अथवा किसी मित्र से अचानक अनबन जो आप के लिये मानसिक अशान्ति का कारण होगा, चौथे में तुला राशि के शुक्र प्रभाव से तामीरी काम में सफलता होगी, यदि इस वर्ष आप को तामीरी काम करने का परोग्राम है तो इस मास से आरम्भ करें—ऐसा करना तामीरी काम को सफल बनाने में सहायक होगा, यदि आप ने वाहन अथवा कोई जाईदाद खरीदना हो तो इस मास को हाथ से जाने मत दीजिये—गृहस्थी होने पर आप गृहस्थ पक्ष से भी अशान्त रहेंगे आप की परेशानी का खास कारण आप की स्त्री होगी, सन्तान पक्ष से भी शान्ति का योग नहीं है, यद्यपि यह मास प्रायः हर पहलू से हानिकारक है परन्तु इस मास में आपको आध्यात्मिक लाभ मिलेगा धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से अधिक प्रवृत्ति बनी रहेगी, यात्रा की सम्भावना है तो यात्रा आपके लिये विशेष लाभदायक रहेगी, इस मास को शान्ति के वातावरण में तबदील करने के लिए यात्रा का परोग्राम बनायें, इस मास के क्रूरग्रहों को शांत बनाने का यही एक मात्र उपाय है, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास मनहूस है, पठनपाठन की ओर प्रवृत्ति बनी रहेगी, पठनपाठन सम्बन्धित हर काम में रुकावट किसी भी काम में सफलता होगी नहीं, इस मास के शुभदिन नोट कीजिये—6, 7, 14, 15, 16, 17, 19 22, 23, 24 26, 27

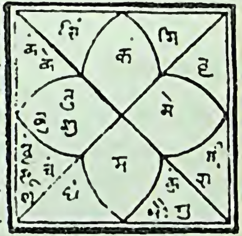

दिसम्बर :—इस मास में ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है, शरीर के विषय में सावधान रहिये, अचानक शरीर बिगड़ने का अन्देशा है, आठवें भाव में भौम और बृहस्पति की युति होने से चोट लगने का अन्देशा है, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर की परेशानी बनी रहेगी, यदि दैवयोग से आपके स्त्री का स्वास्थ्य ठीक रहा तो सन्तान पक्ष से शारीरिक परेशानी बनी रहेगी, इस कष्ट से बचने का एकमात्र उपाय है आप इस मास में हर सोमवार यानी 1, 8, 15, 22, 29 दिसम्बर को भगवान् शिव पर दूध सहित जल चढ़ाया करें, जल चढ़ाते समय "ओ३म् नमः शिवाय" इस मन्त्र का जप लगातार करते जायें, आर्थिक दृष्टि से भी यह मास

ढीला ही रहेगा कोई भी कार्य लाभ की दृष्टि से सफल नहीं रहेगा परन्तु किसी भी कार्य में हानि भी नहीं होगी, यदि आप लोहे सीमेंट तेल आदि का कारोबार करते हैं ऐसे काम में खसारा होगा, यदि आप ठेकेदारी का काम करते है, तो आपके लिये यह मास परेशानी का होगा, कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं आपने माल बेचना हो या खरीदना हर दोनों रूपों में यह मास आपके लिये परेशानी तथा संघर्ष का होगा, आप बिना हिच-किचाहट के यात्रा का प्रोग्राम बनाये यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी, गृहस्थी होने पर यदि आपके लड़के अथवा लड़की के विवाह की समस्या विचाराधीन है इस समस्या को छेड़िये मत नही तो बनी हुई बात भी बिगड़ने का अन्देशा है, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास हानि-कारक है पठन पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी, पठनपाठन का अवसर भी कम मिलेगा, जबकि यह मास यार दोस्तों रिश्तेदारों के मेल जोल में ही व्यतीत होगा, विद्या सम्बन्धी कोई काम सिद्ध नहीं होगा—इस मास के शुभदिन नोट कीजिये—6 7 9 14 से 19 तक 22 23 26 27

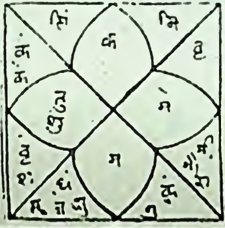

जनवरी :—इस मास में यद्यपि ग्रहों की स्थिति अच्छी नही है परन्तु भौम बुध और शनि यह तीनों ग्रह वेध में होने से बहुत हद तक सुधरे हुये है, इस मिले जुले योग के आधार से यह मास दौड़ धूप के वातावरण में ही गुजरेगा, कोई भी कार्य बिना उलझन नहीं होगा, आर्थिक दृष्टि से यह मास सफल रहेगा, यदि आप किरयाना कपड़े से सम्बन्धित परचून काम करते हैं आपका काम यथावत् चलता रहेगा, यदि आप थोक काम करते है तो हानि के लिये तैयार रहिये यदि आप खाद्य पदार्थ गेहूं मक्का चावल के स्टाकिस्ट हैं तो इस मास में कारोबार सम्बन्धित कोई परेशानी आपको घेरे रखेगी, यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो 15 तारीख तक सन्तोषजनक रूप में काम चलता रहेगा, 20 जनवरी के आपका तिजारत ढीला पड़ेगा और मानसिक अशान्ति रहेगी, नौकरीपेशा वालों के लिये यह मास अशान्ति और परेशानी का होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह मास मनहूस है, इस मास के शुभ-दिन नोट कीजिये—8 9 10 11 15 16 20 21 27 29,

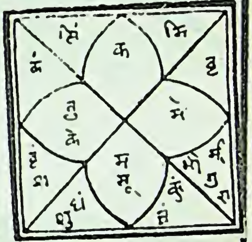

फरवरी :—शरीर सुख मध्यम जबकि लग्न का स्वामी चन्द्रमा आठवें भाव में ठहरा है इस क्रूरयोग के प्रभाव से आपको इस मास में कभी एक अंग में कभी दूसरे अंग में तकलीफ होगी, घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा, घर में नित्य नई-नई समस्यायें खड़ी होंगी, गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से अकस्मात् परेशानी, नवें भाव का भौम भी गोचर से हानिकारक माना जाता है वेध में पड़ा है, भौम बृहस्पति की युति होने से, कमाई की

दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा आदरमान में वृद्धि होगी, भाई बन्धुओं तथा रिश्तेदारों से प्रेम तथा लाभ, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बने. तिजारत पेशा होने पर आप का कारोबार यथावत् चलेगा. यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं. आपको हर काम में सफलता होगी. इस मास में यात्रा का काफी योग है. जो यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी. नौकरी पेशा होने पर किसी प्रकार की अशान्ति का योग नहीं है. तबदीली की सम्भावना है, जो तबदीली इच्छानुसार होगी विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास शान्ति का ही होगा पठनपाठन की प्रवृत्ति कम होने पर भी पठनपाठन सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, इस मास के शुभदिन नोट कीजिये — 4 5 12 13 16 17 23 24

सिंह राशि का वर्षफल २०४३

सिंह राशि का वर्षफल लिखने से पहले ग्रहों के बारह भावों का फल जैसा कि ज्योतिषशास्त्रों में दर्ज है, निम्न पढ़िये :-

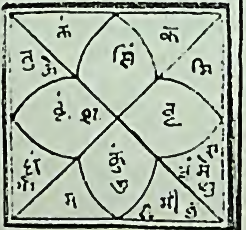

सूर्य :— आठवें भाव में होने से शत्रुओं से झगड़ा, शरीर में पीड़ा, बवासीर तथा बदहजमी का अन्देशा, राजा से भय. मुकद्दमा अथवा जेल जाने का योग. अनादर का खतरा।

चन्द्रमा — नवें भाव में होने से पिता माता से मत भेद, हर काम में असफलता. शत्रुओं से भय, नौकरीपेशा होने पर दरबार से परेशानी, धार्मिक कामों से नफरत।

भौमः— पांचवें भाव का भौम होने से धन और शरीर की हानि। सन्तान की बीमारी से परेशानी, नीच कर्मों की ओर अधिक झुकाव, आदर में कमी. शत्रुओं से पीड़ा।

बुध — आठवें भाव का बुध होने से धन का लाभ, पुत्र सुख शत्रुओं पर विजय. हर काम में सफलता। सामाजिक तथा धार्मिक कामों से अधिक लगाव।

बृहस्पति — सातवें भाव का बृहस्पति होने से हानि का अन्देशा, चोरों का भय, सरकारी अफसरों से अनबन, धन रहते हुये भी तंगदस्ती से दुचार होना, धन के चक्कर का अचानक रुक जाना, सन्तान सुख से परेशानी।

शुक्रः— नवें भाव का होने से उत्तम वस्त्रों तथा भूषणों का लाभ, शरीर का स्वस्थ होना, आशा से अधिक लाभ का होना, सरकार की तरफ से अचानक लाभ, घर में कोई मंगल कार्य अथवा उत्सव रचाने का प्रोग्राम स्त्री की तरफ से मानसिक शान्ति, मित्रों से लाभ, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मेल मिलाप, अचानक यात्रा का योग।

शनिः— चौथे भाव में शनि होने से शत्रुओं और रोगों में वृद्धि, नौकरी पेशा होने पर स्थान परिवर्तन, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से अनबन, धन की कमी, यात्रा में कष्ट, अनादर का भय, मन में धोखा देने की प्रवृत्ति।

राहु:— नवें भाव में राहु होने से धन और ऐश्वर्य में अचानक वृद्धि का होना लाटरी सट्टा आदि में लाभ

केतु:—तीसरे भाव में केतु होने से भाग्य की वृद्धि शत्रुओं का अन्त, मित्रों से लाभ तथा मानसिक शान्ति का मिलना ।

सिंह राशि का वर्षफल

गोचर शास्त्रों के आधार से सिंह राशि का फलादेश यों है :—

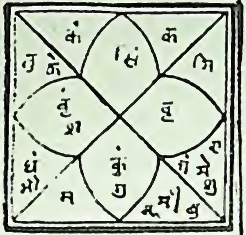

सूर्य-चन्द्रमा-भौम-बृहस्पति और सभी ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं है परन्तु चन्द्रमा को छोडकर ये सभी ग्रह वेध में होने से शुभफलदायक ही होंगे, जबकि गोचरफलित के मर्मज्ञों का कहना है :- वेध में होने से अशुभ ग्रह भी शुभदायक होता है इसलिये वेधअष्टक वर्ग आदि को दृष्टि में रखकर गोचरफलित के आधार से यह वर्ष सामान्य रूप से सुख व शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा ।

शरीर : इस वर्ष आपका शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा, यदि आपके शरीर में पहले से कोई तकलीफ है तो थोडा सा ध्यान देने से आपका शरीर अवश्य स्वस्थ रहेगा, आपके शरीर सम्बन्धित ग्रहों का प्रभाव आपके परिवार का भी प्रभावित करेगा, यहां तक कि अगर आपके परिवार का कोई सदस्य शरीर से अस्वस्थ है तो वह परेशानी भी दूर होगी यदि आप गृहस्थी हैं अगर आपकी स्त्री शरीर से अस्वस्थ रहती है तो नये सिरे से ईलाज करवाने से उसका शरीर भी स्वस्थ होगा, निश्चय रखिये इस वर्ष शरीर-सम्बन्धित कोई परेशानी नही रहेगी ।

धन :—यह वर्ष धन की दृष्टि से उत्तम है परन्तु धन का लाभ तभी सम्भव है जब आप रात दिन काम में जुटे रहोगे, कोई भी काम बिना परिश्रम के सिद्ध नही होगा, तिजारतपेशा होने पर आपका तिजारत बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा, यदि आपका कारोबार किरयाना कपडे आदि से सम्बन्धित हैं तो यह वर्ष आपके लिये लाभ की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण वर्ष होगा, यदि आप खाद्यपदार्थ धान्य आदि का तिजारत करते हैं तो सरसरी देखने से आपको यही देख पडेगा आप लाभ में है परन्तु वर्ष में एक बार ऐसा धक्का लगेगा जिसको सहन करना आपके लिये असम्भव है । यदि आप लोहे मिशनरी तेल सीमेन्ट आदि से सम्बन्धित व्योपार करते है अथवा आपकी कोई फैक्ट्री आदि हो तो आपका व्योपार यथावत् चलता रहेगा । जो सिंह राशि वाले ठेकेदारी का काम करते है तो यह वर्ष उनके लिये एक स्मरणीय वर्ष होगा, अगर शनि अच्छी पोजीशन में नहीं होगा तो यह वर्ष आपके लिए ज़वाल का वर्ष होगा, जो सिंह राशि वाले फलों अथवा बाग़ात से सम्बन्धित व्योपार करते हैं, पहले छः महीनों में यदि आप खरीदने का काम करोगे तो लाभ में रहोगे, दूसरे छः महीनों में फलों अथवा बागात का बेचना आपके लिये लाभप्रद रहेगा, जितनी कमाई का साधन [illegible]

जमीन है वह जमींदार फसल की पैदावार की अधिकता से लाभ में रहेंगे, केवल पशुधन के द्वारा हानि का अन्देशा है नौकरीपेशा होने पर आपकी नौकरी यथावत् चलती रहेगी, किसी प्रकार की तर्की अथवा जवाल का योग नहीं हैं, तर्की तब्दीली आदि का योग न होने पर भी इस वर्ष आपको दरबार की तरफ से मानसिक शान्ति बनी रहेगी, शनि के प्रभाव से काला धन संचय करने तथा झूठ और धोखे से धन कमाने प्रवृति बनी रहेगी, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं, यह वर्ष आप के लिये लाभ का ही होगा, विशेषतया वर्ष के अन्तिम तीन मास लाभदायक रहेंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो इस वर्ष घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा जो शान व मान से समाप्त होगा यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं तो उस काम को आरम्भ करने में कोई ढील न करें, यदि आप इस वर्ष भी ऐसे काम में पीछे रहे तो न मालूम फिर आपने कोई तामीरी काम करना भी होगा ? यदि आपका कोई वाहन खरीदने का प्रोग्राम है तो कोई देर न कीजिये अवश्य खरीदें इस वर्ष वाहन खरीदना आपके लिए शुभ शकुन है यदि हो सके तो इस वर्ष यात्रा का प्रोग्राम बनाने का प्रयत्न कीजिये, आप इस वर्ष का अधिक समय अच्छी संगति में गुजारें, महात्मा साधुओं तथा बुजुर्गों से आशीर्वाद लेने का प्रयत्न कीजिये, यदि सम्भव हो तो इस वर्ष घर में श्रद्धा से यज्ञ रचाने का प्रोग्राम बनायें, विद्यार्थियों के लिये भी इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं, पठन-पाठन की प्रवृति बनी रहेगी यदि आपने ट्रेनिंग में जाना हो तो इस वर्ष यह काम भी सिद्ध होगा यदि विदेश जाने का प्रोग्राम है तो प्रयत्न करने पर यह कामना भी पूरी होगी विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता निश्चित है।

सिंह राशि का मासिक फल

अप्रैल : वेध अष्टक वर्ग आदि को दृष्टि में रखकर गोचरफलित शास्त्रों के आधार से विदित होता है, यद्यपि यह मास संघर्ष तथा दौड़-धूप में ही गुजरेगा परन्तु प्रायः हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी, शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक दृष्टि से यह मास लाभप्रद रहेगा, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों के मेलमिलाप में वृद्धि होगी, यदि आपको मातृपक्ष से कोई परेशानी है वह परेशानी यथावत् बनी रहेगी, यदि आप को इस वर्ष कोई तामीरी

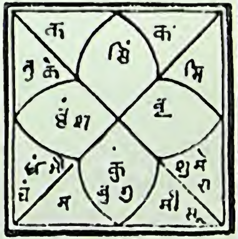

काम आरम्भ करने का अथवा कोई जायदाद खरीदने का प्रोग्राम है तो इस मास में ऐसे काम का आरम्भ करना आपके लिए अशान्ति का कारण होगा, गृहस्थी होने पर यद्यपि आपको घर में हर प्रकार के सुख सुलभ होंगे भी परन्तु तो भी सन्तानपक्ष से परेशानी बनी रहेगी, शरीर के विषय मे सावधान रहिये, शरीर बिगड़ने का अन्देशा है, सामाजिक अथवा धार्मिक कामों की ओर अधिक झुकाव रहेगा, यदि आपने इस वर्ष कोई मंगल कार्य करना हो अथवा कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम

हो तो इस मास में उस काम को कदापि न करें, कोई मंगल कार्य रचाने के लिये आप इसी मास में विवश होंगे तो भी पहले पन्द्रह दिनों में ऐसा प्रोग्राम न रचाये, नहीं तो आपको भयंकर परेशानी का सामना करना होगा, यात्रा का प्रोग्राम होने पर यात्रा को अवश्य जायें, इस मास की यात्रा आप के लिए लाभदायक रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास परेशानी का होगा, पठन-पाठन की ओर बिल्कुल प्रवृत्ति नहीं रहेगी, विद्या, सम्बन्धित हर काम में असफलता होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—3, 4, 12, 13, 14, 15, 20, 21, 24, 25 और 30।

मई :—शनि और भौम यद्यपि इस मास के आरम्भ पर अच्छी स्थिति में नहीं हैं परन्तु वेध में होने से यह दोनों ग्रह शुभ फलदायक ही होंगे, शेष ग्रहचाल को दृष्टि में रखकर यही मालूम होता है, कि यह मास सामान्यत: हर पहलू से उत्तम रहेगा, शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि आप गृहस्थी हैं, घर में किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह परेशानी भी दूर होगी, आर्थिक दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा, यदि आप व्यापारी हैं तो आपका व्यापार यथाक्रम चलता रहेगा। तिजारत सम्बन्धित हर काम में आप सफल रहेंगे, केवल फलों से सम्बन्धित व्यापारियों की ग्रहचाल

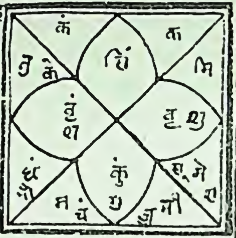

इस मास में सन्तोषजनक नहीं है, दौड़ धूप अधिक होने पर भी आमदनी की कमी रहेगी, खर्च की अधिकता होगी, यदि आपकी आमदनी का साधन केवल जमीन है तो आपके लिए भी यह मास अधिक मेहनत तथा खर्च का होगा, गृहस्थी होने पर आप गृहस्थ पक्ष से सन्तुष्ट रहेंगे, नौकरी-पेशा होने पर आपको शुक्र के प्रभाव से यह मास परेशानी के वातावरण में ही गुजारना होगा, कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, झूठा आरोप लगने की सम्भावना, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि आप ने विद्या सम्बन्धित कोई नया काम आरम्भ करना हो तो इस महीने में ऐसे काम का आरम्भ करना आपके लिए अच्छा होगा। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—1, 10, 11, 12, 13, 17, 18, 22, 23, 27

जून :—यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, गृहस्थी होने पर यदि आपको स्त्री अथवा सन्तान के शरीर के विषय में कोई परेशानी है वह परेशानी अवश्य दूर होगी, यदि आप गृहस्थ सम्बन्धी किसी उलझन में उलझे हुए हैं उस उलझन का भी अन्त होगा, आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आप व्योपारी हैं और आपके व्योपार का सम्बन्ध किरयाना अथवा कपड़े से है तो आपको आशा से

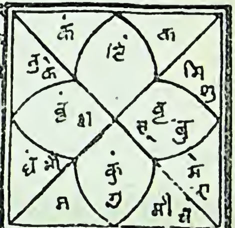

अधिक लाभ मिलेगा, लोहे मशीनरी सम्बन्धित व्यापारियों के लिए यह मास विशेष लाभदायक नहीं रहेगा, यदि आप फलों तथा बागात से सम्बन्धित काम करते हैं तो आपको अधिक से अधिक दौड़धूप करनी होगी, आपको इस मास में बागों अथवा फलों का खरीदना लाभदायक रहेगा। जमींदार अथवा काश्तकार वर्ग के लिये यह मास संघर्ष तथा खर्च का होगा, इस मास में लाभ की कोई आशा न रखें, नौकरी पेशा होने पर अचानक लाभ अथवा तरक्की का योग है, सम्बन्धित अफसरों से मिलने जुलने का अवसर मिले जो आपके मान प्रतिष्ठा का कारण होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सुख शान्ति का होगा जबकि पांचवां भौम धनु राशि का वेध में पड़ा है, ऐसे ही शुक्र भी पांचवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, यह योग ज्योतिष गोचर में उत्तम माना जाता है, इस योग के प्रभाव से विद्या सम्बन्धित हर एक काम की सफलता आपके लिये निश्चित है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये। 6, 7, 8, 9, 13, 14, 18, 19, 24 और 25।

जुलाई :—चन्द्रमा बुध बृहस्पति और शनि इस मास के आरम्भ पर अच्छी स्थिति में नहीं है परन्तु चन्द्रमा को छोडकर बुध बृहस्पति और शनि ये तीनों ग्रह वेध में होने से शुभ फलदायक है, ऐसे ही इस मिले जुले शुभ अशुभ योग के आधार से सम्पादक की राय से यह मास सुख शान्ति के

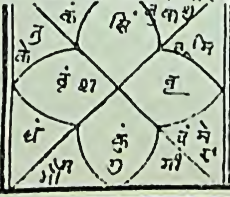

वातावरण में ही गुजरेगा। शरीर सुख आपका प्रायः उत्तम रहेगा, पहले से कोई तकलीफ है तो किसी नये डाक्टर से इलाज करवाने पर शरीर कष्ट निश्चित रूप से दूर होगा। आमदनी की दृष्टि से भी यह मास सन्तोषजनक होगा, कारोबार के रूप में जो कोई भी काम आप हाथ में लेंगे उसमें सफलता अवश्य होगी विशेषतया उन व्यापारियों को आशा से अधिक लाभ मिलेगा जिनका सम्बन्ध लोहे मशीनरी सम्बन्धित वस्तुओं से है, गृहस्थी होने पर आपको कई मंगल कार्यों में सम्मिलित होने का प्रोग्राम होगा, पार्टियां देने तथा पार्टियों में सम्मिलित होना इस मास का दैनिक काम होगा धार्मिक अथवा सामाजिक कामों की ओर अधिक झुकाव रहेगा, अचानक यात्रा का योग बने, यदि हो सके उस यात्रा को स्थगित करें, क्योंकि इस मास की यात्रा आपके लिए कष्टकारक होगी, नौकरी पेशा होने पर दरबार में हर प्रकार से मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी, हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता निश्चित है, विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह मास सफलता का है, विद्या सम्बन्धित हर एक काम मान प्रतिष्ठा के साथ हल होगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—3, 4, 5, 6, 11, 12, 15, 16, 22, 31।

अगस्त :—वेध अष्टक वर्ग की दृष्टि आदि को ध्यान में रखकर ज्योतिष गोचर फलित से विदित होता है, यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष में ही व्यतीत होगा कोई भी कार्य

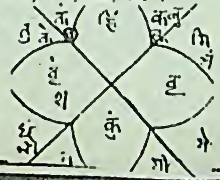

विना रुकावट के सिद्ध नहीं होगा,

शरीर के विषय मे सावधान रहिये, यदि पहले से ही आप शरीर से अस्वस्थ हैं तो फिर से शरीर बिगड़ने का अन्देशा है. गृहस्थी होने पर गृहस्थ सम्बन्धी कोई न कोई समस्या सामने आती रहेगी जो आपके लिए परेशानी का कारण होगी. आमदनी की दृष्टि से यह मास कुछ उत्तम हो रहेगा परन्तु दिनों दिन खर्च के नये नये मार्ग खुलते रहेंगे, खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा यह भी सम्भव है घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें धन की अधिक राशि व्यय होगी। भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, तिजारत पेशा होने पर दौड़ धूप अधिक परन्तु तिजारत में सन्तोषजनक लाभ होगा नही, यदि आप किरयाना अथवा कपड़े का व्यापार करते हैं तो इस मास में माल बेचने की अपेक्षा माल खरीदना तथा स्टाक बनाये रखना आपके लिये लाभदायक रहेगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित तिजारत करते है इस मास की दौडधूप आपके कारोबार को विशाल बनाने मे सहायक रहेगी. यदि आप लोहा सीमेंट कोयला तेल आदि से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो यह मास आमदनी की दृष्टि से ढीला रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर विद्या सम्बन्धित काम के लिये सफलता का मास है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—2, 3, 7, 8, 11, 12, 18, 19, 27 28, 29, 30।

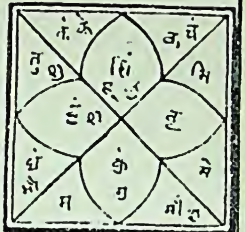

सितम्बर:—इस मास में प्रायः सभी क्रूर ग्रह आपको हानिकारक स्थिति में ठहरे हैं, परन्तु वेध में होने से वह सभी क्रूरग्रह दूषण होते हुये भी भूषण बने है, इसलिये गोचर फलित के आधार से यह मास सुखशान्ति के दौर में व्यतीत होगी, जो कोई भी काम आपके हाथ में होगा सफलता निश्चित है, आमदनी की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है यदि आप कपड़े से सम्बन्धित तिजारत करते हैं तो आप का तिजारत तेजी से आगे बढ़ेगा, इस मास में खरीदा हुआ माल आपके कारोबार को उन्नत करने में सहायक होगा, यदि आप किरयाना का काम करते है आप का कारोबार यथावत चलेगा, लोहे मिशीनरी सीमेंट तेल से सम्बन्धित कारोबार करने वाले सिंह राशि वाले इस मास मे कारोबार की दृष्टि से परेशान रहेंगे, नौकरी पेशा सिंह राशि वाले को इस मास दरबार में अचानक दिनोंदिन नई नई समस्यायें खड़ी होंगी जो आपको परेशान रखने का कारण बनेंगी, सम्बन्धित कार्य कर्ताओं से विना कारण के शत्रुता, गृहस्थ पक्ष से मानसिक शन्ति, सम्बन्धित रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिले, पार्टियों में शामिल होना इस मास का विशेष व्यसन रहेगा घर में छोटे मोटे मंगल कार्य रचाने के परोग्राम बनते रहेंगे घरेलू खर्च में वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास कोई महत्वपूर्ण नहीं है, पठपाठन

की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी, विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावट, इस मास के शुभदिन नोट कीजिये 3, 4, 9, 19, 14, 15, 21, 22, 26, 27

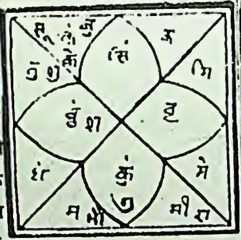

अक्तूबर—बृहस्पति और शनि इस मास में हानिकारक होते हुये भी वेध में होने से हानिप्रद नहीं हैं, ऐसे ही छटे भाव में भौम उच्च राशि में है, शेष ग्रहों की स्थिति भी दृष्टि में रखकर गोचरफलित के आधार से मालूम होता है कि यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा, शरीर सुख प्राय: उत्तम रहेगा, आमदनी की दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा, तिजारत पेशा होने पर तिजारत को विशालता देने पर धन खर्च करने की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, किरयाना कपड़ा सस्य से सम्बन्धित व्योपारी वर्ग इस वर्ष में विशेषतया लाभ मे रहेंगे, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं, इस मास में आप आशा से अधिक लाभ में रहेंगे, फलों से सम्बन्धित व्योपारी वर्ग को यदि अधिक दौड़ धूप करनी भी होगी परन्तु लाभ भी इच्छा पूर्वक ही मिलेगा, नौकरीपेशा सिंह राशि वालों को लाभ के साथ-साथ मान प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी, यदि दरबार सम्बन्धित कोई परेशानी है तो प्रयत्न करने पर हर एक परेशानी स्वयं ही ग्रहों के प्रभाव से दूर होगी, गृहस्थी होने पर घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए भी यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति का है, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—1, 5, 6, 11, 12, 22, 23, 24, 28, और 29।

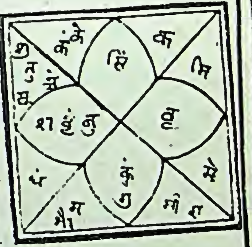

नवम्बर—सूर्य शुक्र का तीसरे भाव में होना शुभ माना जाता है, बुध यद्यपि तीसरे भाव का हानिकारक माना जाता है परन्तु वेध मे होने से बुध भी शुभ है, मास के आरम्भ पर चन्द्रमा का दूसरे भाव मे होना गोचर से हानिप्रद माना जाता है, ऐसे ही चौथे भाव का शनि और सातवें भाव का बृहस्पति अशुभ होने पर भी वेध में होने से शुभ फलदायक ही होगा, नवम्बर की शुभ अशुभ ग्रह चाल को दृष्टि में रखकर गोचरफलित से यही विदित होता है—यह मास संघर्ष मे ही व्यतीत होगा, यद्यपि हर कार्य मे सफलता होगी भी परन्तु कोई भी कार्य विना उलझन तथा रुकावट के सिद्ध नहीं होगा जो कि आपकी मानसिक अशान्ति का कारण बनेगा, आर्थिक दृष्टि से अर्थात आमदनी की दृष्टिकोण से यह मास शुभ होगा, यदि आप का व्योपार लोहे अथवा मिशीनरी से सम्बन्धित है तो आपका कारोबार बहुत तेजी से आगे

बढ़ेगा, यदि आप सस्य से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो आपको कारोबार सम्बन्धित अचानक कोई उलझन घेरे रखेगी फलों से सम्बन्धित व्योपारियों को इच्छानुसार लाभ रहेगा, विद्यार्थी वर्ग जो कोई भी विद्या सम्बन्धित काम इस मास में आरम्भ करेंगे सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—1, 2, 8, 9, 17, 18, 19, 20 24, 25, 29 और 30।

दिसम्बर:—चौथे भाव में सूर्य चन्द्रमा और शनि का एक साथ होना अशुभ फल का संकेत है, चौथे सूर्य के विषय में गोचर शास्त्रों में दर्ज है, मानसिक और शारीरिक कष्ट रहता है, घरेलू झगड़ों से दुचार होना है, जाईदाद सम्बन्धित परेशानियों का जोर रहता है. अनादर का भय

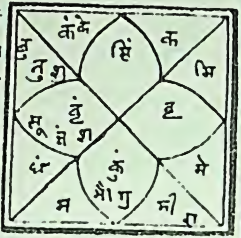

चौथे चन्द्रमा के विषय में गोचर शास्त्रों का कहना है भाई-बन्धुओं से झगड़े होते हैं, गृहस्थ की परेशानी रहती है. मान प्रतिष्ठा को धक्का लगता है, तीसरे भाव का शुक्र गोचर से उत्तम माना जाता है, वृहस्पति वेध में होने से शुभ फलदायक ही है, इस मास के शुभ अशुभ ग्रहों को ध्यान में रखकर सम्पादक की दृष्टि से यह मास हर पहलू से अच्छा रहेगा. शरीर स्वस्थ रहेगा, आमदनी के लिये भी यह मास सामान्यतः ठीक ही है परन्तु खर्च के ग्रह बलवान हैं, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा मंगल कार्यों में सम्मिलित होने का अवसर मिलेगा, यात्रा का योग बनेगा परन्तु उस यात्रा में इच्छानुसार लाभ नहीं मिलेगा बल्कि यह यात्रा परेशानी का कारण होगी, यदि आपने इस वर्ष कोई जाईदाद बनाने सम्बन्धित कार्य आरम्भ करना हो तो इस मास में न करें, ऐसे कामों के लिए यह मास हानिकारक रहेगा, नौकरीपेशा सिंह राशि वालों के लिए यह मास सुखशान्ति तथा मान प्रतिष्ठा का होगा, यदि तर्की का कोई सिलसिला चल रहा है प्रयत्न करने पर वह मसला हल होने का योग है, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास अशान्ति तथा परेशानी का है, कोई भी विद्या सम्बन्धित काम इच्छानुसार हल नहीं होगा इस मास के शुभ दिन नोट कीजिए—5, 6, 14, 15, 16 17 22, 23, 26, और 27।

जनवरी का मासिक फल राशिफल के अन्तिम पृष्ठ पर देखिये

फरवरी:—इस मास में केवल शनि अशुभ स्थिति में है, बुध और वृहस्पति ये तीनों ग्रह वेध में होने से अशुभ होते हुये भी शुभ हैं, इस मिले जुले शुभ अशुभ योग के प्रभाव से यह मास सामान्य रूप से मानसिक शान्ति का ही होगा. आप जिस काम को हाथ में लेंगे सफलता निश्चित

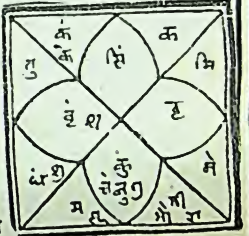

है. केवल आवश्यकता है, आप काम में जुट जाये, तिजारत सम्बन्धित हर एक योजना आपकी सफल रहेगी, यद्यपि इन मास में आपके खर्च के प्रोग्राम बलवान् हैं, परन्तु वह खर्च भी आपके कारोबार की वृद्धि करने में सहायक होगा, यदि आप बिल्कुल बेकार हैं कोई धन्धा नहीं करते हैं, आपको चेतावनी है इस मास में छोटा मोटा काम आरम्भ करें, आपका वह छोटा-मोटा काम भी आगे विशाल काम होगा, यदि आप नौकरी की तलाश में प्रयत्न करेंगे उस में यदि सफलता न मिले तो इस वर्ष नौकरी मिलने की आशा छोड़ दीजिये, नौकरी पेशा वालों के लिये यह मास लाभ तथा तर्की का है, यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करना चाहते हैं अवश्य इस मास में उस का श्रीगणेश करें ऐसा करना आपके लिये शुभ शकुन है, सिंह राशि वाले इस बात का निश्चय रखें इस मास में प्रायः हर काम में आपको सफलता प्राप्त होगी यह सफलता तभी मिलेगी जब कि आपको माता-पिता का आर्शीवाद साथ हो, यदि आपके माता-पिता आप से नाराज हैं तो लाखों प्रयत्न करने पर भी आप किसी काम में सफल नहीं होंगें। मास के शुभ दिन नोट कीजिये—7,8,9,10,14,15,19,20,25 और 29 :

● ●

है, पठन-पाठन की ओर अधिक प्रवृत्ति रहेंगी, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी । इस मास के सुभ दिन के नोट करें—6,7, 8,9,13,14,18,19,25 और 26 ।

मार्च :—शनि को छोड़कर सभी अशुभ ग्रह वेध में पड़े हैं जिसके फलस्वरूप यह मास यद्यपि दौड़धूप का ही होगा परन्तु हर आरम्भ किये हुये काम का अन्त आपके हित में होगा जबकि सिंह लग्न का स्वामी सूर्य नवें भाव में ठहरा है, सातवां सूर्य गोचर फल के मासिक फल में अधिक प्रभाव शाली रहता है, अतः शरीर के विषय में सावधान रहना आवश्यक है, अकस्मात् शरीर बिगड़ने की भी सम्भावना है। उपाय के रूप में आप इस मास में अवश्य वैष्णव रहें और ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा घर से बाहर मंगल कार्यों में सम्मिलित होने के प्रोग्राम बनते रहेंगें जिसमें अधिक से अधिक पूंजी खर्च होने का योग है, गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, केवल अगर माता अथवा पिता को शरीर का कोई कष्ट है उसके विषय में सावधान रहिये, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो पैसे की तंगदस्ती से आप परेशान रहेंगें, यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो इस माह में माल का खरीदना आपके लिये लाभदायक रहेगा नौकरी, पेशा सिंह राशि वालों के लिये यह मास सुख शान्ति का

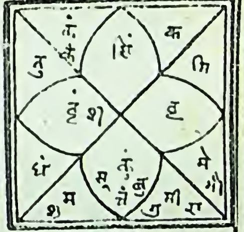

● ●

कन्या राशि का वर्षफल

वर्ष के आरम्भ पर प्राय: सभी ग्रह वेध में हैं केवल शनि हानिकारक स्थिति में है। वेध अष्टकवर्ग दृष्टि शत्रुमित्र की दृष्टि में रखकर गोचरफलित के आधार से विदित होता है - यह वर्ष सुख-शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा। वर्षभर कोई भी शारीरिक परेशानी नहीं रहेगी, यदि आप का शरीर पहले से अस्वस्थ है तो जरा सा ध्यान देने पर आप का शरीर बिल्कुल स्वस्थ हो जायेगा। यदि आप के घर में कोई निकटतम सम्बन्धी बीमार है तो ग्रहों के प्रभाव से वह परेशानी भी दूर हो जायेगी। वास्तव में इस वर्ष शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी रहेगी नहीं। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यत: लाभदाय रहेगा, आय से सम्बन्धित हर काम में हद से ज्यादा संघर्ष तथा दौडधूप करनी पडेगी। यदि आप खाद्य पदार्थों अनाज आदि से सम्बन्धित तिजारत करते हैं तो यह वर्ष आप के लिये उलझनों का वर्ष होगा, कपडा किरयाना के व्योपारी - चाहे वह थोक काम करने वाले हों या परचून दोनों प्रकार के व्योपारी आशा से अधिक लाभ में रहेंगे, लोहे तथा मिशीनरी सम्बन्धित काम करने वाले व्योपारी वर्ष के पहले तीन महीनों में अधिक से अधिक संघर्ष में रहेंगे परन्तु लाभ की कोई आशा नहीं, वर्ष के दूसरे तीन महीनों में यद्यपि दौडधूप करनी भी पडेगी परन्तु लाभ अवश्य होगा, वर्ष के अन्तिम छ: महीनों में आशा से अधिक लाभ रहेगा, जो व्योपारी फलों से सम्बन्धित काम करते हैं उनका काम तेजी से आगे बढेगा, यदि आप मेवों का काम करते हैं तो इस वर्ष अधिक लाभ की आशा रखें, खुशक मेवा बादाम व अखरोट का काम अधिक लाभप्रद रहेगा। यदि आप लकडी तेल कोयला सीमेंट आदि से सम्बन्धित तिजारत करते हैं तो आप का कारोबार इस वर्ष डांवांडोल स्थिति में रहेगा, कभी हानि की सम्भावना तो कभी लाभ की आशा, पर सामान्यत: लाभ की आशा न रखें। यदि विदेशों से सम्बन्धित तिजारत करते हैं तो यह वर्ष आप के जीवन में एक स्मरणीय वर्ष होगा। जिन कन्या राशि वालों की आमदनी का आधार केवल जमीन हो, वह जमीन में पैदावार की बहुतात से लाभ में रहेंगे। नौकरीपेशा होने पर आप को हर एक काम संभल कर करना चाहिये। यह वर्ष आप के लिये परेशानी का वर्ष होगा जो कोई भी कार्य आप हाथ में लेंगे तो

बिना उलझन या परेशानी के सिद्ध नहीं होगा। अकस्मात् कोई आरोप लगने की सम्भावना है, उपाय के रूप में रिशवत न लेने की प्रतिज्ञा आज से ही कीजिये। यदि आप मेरे लिखे इस उपाय की ओर ध्यान न देंगे यानि इस उपाय को अमली रूप न देंगे तो आप को बाद में पछताना पडेगा। सम्बन्धित अफसरों के साथ भी अनबन रहेगी। यदि आप नोकरी की तलाश में हैं तो इस वर्ष ग्रहों के प्रभाव से आप को नोकरी मिलने की सम्भावना है, आप भी प्रयत्न करते जायें ग्रह भी आप के सहायक रहेंगे। वर्ष के पहले चार मास में आप को नोकरी मिलने का योग है, यदि नोकरी के सम्बन्ध में घर से बाहर भी जाना पडे तो ऐसा करना आप के लिये लाभदायक रहेगा। इस वर्ष आप को अधिक से अधिक खर्च करने का योग है। ऐसा भी सम्भव है कि आप ने कोई तामीरी काम आरम्भ करना होगा। यदि आप के मन में वाहन आदि खरीदने का विचार है, हो सके तो इस वर्ष में न खरीदें, यह वर्ष ऐसे काम के लिये शुभ नही है, सम्भव है कि वाहन खरीद कर फिर से बेचने पर मजबूर हो जाओगे। यदि यात्रा का प्रोग्राम बने तो वह यात्रा आप के लिये लाभदायक रहेगा। इस वर्ष आप की आध्यात्मिक कामों की ओर अधिक झुकाव रहेगा। यदि आप का इस वर्ष तीर्थयात्रा का संकल्प है तो उस संकल्प को अमली रूप दीजिये ऐसा प्रोग्राम बनाना आप की मानसिक शान्ति का कारण बनेगा। गृहस्थी होने पर आप सन्तानपक्ष से परेशान रहोगे। यदि मेरी यह भविष्यवाणी पूरी उतरेगी तो उपाय अवश्य कीजिये :- उपाय के रूप में हर सोमवार को भगवान शंकर पर दूधसहित जल चढाया करें। यदि आप नये सिरे से कोई कारोबार या कारखाना आदि चालू करने के विषय में सोच रहे हैं तो आप केवल सोचते ही मत रहिये अपितु ऐसे काम को चालू करने में जुट जायें, ऐसे काम का आरम्भ करना आप के जीवन को सुधारने का एक कारण होगा। यदि आप गृहस्थी है अगर किसी लडकी अथवा लडके का विवाह करना है तो प्रयत्न करने पर भी ऐसा काम पूर्ण करना असम्भव है, यदि हो भी जाये तो मुसीबतों तथा उलझनों का सामना करना पडेगा जहाँ तक हो सके कोई भी विवाह उत्सव रचाने का इस वर्ष प्रोग्राम न बनाये। अगर कोई जाईदाद खरीदने बेचने का विचार है तो ऐसे काम को वर्ष के पहले छः महीनों में ही अमली रूप दें। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह वर्ष डाँवाडोल स्थिति का है। आप के ग्रह इस वर्ष विद्यासम्बन्धित कार्यों में सफलता देने में इतने सहायक नही रहेंगे कि आप बिना परिश्रम के हाथ पर हाथ धर कर सफल होंगे बल्कि इस वर्ष आप को डटकर परिश्रम करने की आवश्यकता है। यदि आप इस वर्ष पढाई में लापरवाई करेंगे तो सफल होने की कोई आशा न रखें, प्रयत्न करने के साथ साथ बुजुर्गों की सेवा किया करे उनका आशीर्वाद आप को सफल बनाने में रामबाण का काम करेगा। यदि

आप इस वर्ष को अधिक से अधिक लाभदायक तथा सुख शान्ति का वर्ष बनाना चाहते हैं तो उपाय अवश्य कीजिये। यदि आप तिजारतपेशा हैं तो दुकान पर या दफ्तर जाते समय तीन बार पढ़ा करें –

"सर्वाबाधा प्रशमन त्रैलोकस्याखिलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यं अस्मद् वैरिविनाशनम् ॥"

यह मन्त्र पढ़ते पढ़ते धूप अवश्य जलायें। दुकान पर जब कोई भीख मांगने वाला आये तो खाली हाथ उसको जाने मत दीजिए। यदि आप नौकरी करते हैं तो दफ्तर जाते समय ऊपरलिखित मन्त्र का बार बार उच्चारण किया करें।

विद्यार्थी होने पर यदि आप ज्ञान और मान की सफलता चाहते हैं तो आप नियम से प्रातः उठकर घर के किसी बुजुर्ग विशेषतया माता पिता के चरणों में श्रद्धा से सिर झुकाकर तब तक सिर न उठायें जब तक वह आशीर्वाद न दे। इस उपाय को अपनाने में आप की सफलता निश्चित है। यदि आप इस मेरे लिखे उपाय को अमली रूप न देंगे तो मेरी इस भविष्यवाणी को याद रखिये कि आप पढ़ाई में कितने ही जहीन क्यों न हों परन्तु प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलेगी।

कन्या राशि का मासिक फल

अप्रेल: मासिक फलादेश में सूर्य का अधिक प्रभाव होता है, इस मास में आप को सातवें भाव में सूर्य ठहरा है जो गोचर-शास्त्र में हानिकारक माना गया है, शेष ग्रहों की स्थिति भी कुछ ठीक नहीं है, शुभ अशुभ ग्रहों के मिले जुले योग के अनुसार यह मास अशान्त वातावरण में ही व्यतीत होगा। लग्न के स्वामी का छठे भाव में होना शरीर बिगड़ने की चेतावनी है। दूसरे भाव का स्वामी आठवें भाव में होना धन की कमी का सूचक है। तीसरे भाव का स्वामी चौथे भाव में होना भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों के साथ अनबन को जितलाता है, चौथे भाव का स्वामी बृहस्पति छठे भाव में होना मातृपक्ष ननिहाल के तरफ की परेशानी प्रकट करता है। पांचवें भाव का स्वामी शनि का तीसरे भाव में होना पुत्रसुख देने वाला होगा। विद्यार्थी होने पर विद्या में सफलता देने का कारण बनेगा परन्तु सफलता भी मध्यम दर्जे की होगी। छठे भाव का स्वामी शनि तीसरे भाव में होने से

अप्रैल मास का वर्षफल

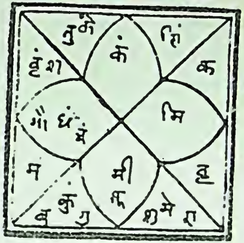

शत्रुओं पर विजय होगी। सातवें भाव का स्वामी बृहस्पति छटे भाव में होने से घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा। आठवें भाव का स्वामी भौम चौथे भाव में होने से अकस्मात् चोट लगने की सम्भावना है। नवें भाव का स्वामी आठवें भाव में होने से हर काम में उलझन। दसवें भाव का स्वामी बुध छटे भाव में होने से नौकरीपेशा होने पर दरबार की तरफ से परेशानी बनी रहेगी। ग्यारवें भाव का स्वामी चन्द्रमा आठवें भाव में होने से आमदनी के हर मार्ग में रुकावट तथा असफलता। बारवें भाव का स्वामी सूर्य का सातवें भाव में होना हर पहलू से अशान्ति का कारण होगा। सामान्य रूप से यह मास हर प्रकार से अशान्ति का कारण होगा। यदि आप इस मास में क्रूर ग्रहों को शान्त रखना चाहते हैं तो आप को उपाय अवश्य करना होगा।

उपाय :- इस मास में कदापि मांस का प्रयोग न करें. यदि आप किसी नशीली वस्तु का प्रयोग करते हैं तो आज से ही सेवन न करने की प्रतिज्ञा कीजिये। अगर आप मेरे इस लिखे उपाय को अमली रूप नहीं देंगे तो इस मास में अत्यधिक मुसीबतों का सामना करना होगा। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये -5, 6, 15, 16, 18, 22, 23, 26 और 27।

मई: वेध अष्टकवर्ग दृष्टि शत्रुमित्र आदि पर विचार करने से विदित होता है - इस मास में आप का शरीर स्वस्थ रहेगा। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा, पांचवां बृहस्पति के वेध में होने से गृहस्थी होने पर पुत्रपक्ष से शान्ति बनी रहेगी। सन्तानपक्ष सम्बन्धित अगर कोई परेशानी है तो हर एक परेशानी एवं समस्या का समाधान निकल आयेगा। यदि आप को मातृपक्ष से कोई परेशानी है वह परेशानी जोर पकड़ेगी। उपाय के रूप में इस मास की हर मंगलवार को नहर बनाकर पक्षियों को डालें, परन्तु उस नहर में नमक के बदले गुड़ या चीनी डालें। व्यापारीवर्ग के लिये यह मास

मई मास का वर्षफल

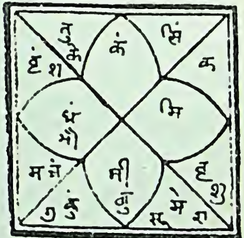

अधिक से अधिक दौड़धूप तथा संघर्ष का होगा परन्तु आय की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। यदि आप को अपने तिजारत को बढ़ावा देने का कोई परोग्राम है या कोई नया काम प्रारम्भ करना चाहते हैं तो ऐसा कोई परोग्राम बनाना हानिकारक होगा। आप अपने कारोबार को यथावत् चलने दीजिये वही आप के लिये लाभदायक रहेगा। नौकरीपेशा होने पर यह मास शान से गुजरेगा। यदि गत महीनों में आप को कोई परेशानी है तो वह परेशानी जरा सी सावधानी से दूर होगी। इस मास में आमदनी सन्तोषजनक

रूप में होगी परन्तु खर्च के ग्रह भी बलवान् हैं। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास हर पहलू से सुख शान्ति का है, पठन-पाठन की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, यदि आप ने कोई परीक्षा दी है या देनी है अथवा आप ने किसी इन्टरविव में सम्मिलित होना है या हो चुके हैं तो ऐसे कार्यों में सफलता अवश्य होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 3, 4, 15, 16, 19, 20, 24, 25, 30 और 31।

जून: सूर्य नवें भाव का हानिकारक माना जाता है परन्तु वेध में होने से वह शुभ होगा। भौम चौथे भाव का हानिकारक माना गया है परन्तु वेध में होने से शुभ फलदायक ही होगा। ऐसे ही शुभ अशुभ ग्रहों के आधार से और योगों को दृष्टि में रखकर मालूम होता है - आप के लिये यह मास हर पहलू से उत्तम रहेगा, अगर अपनी अथवा घर में किसी निकटतम सम्बन्धी मातापिता अथवा स्त्री आदि की शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है तो ग्रहों के प्रभाव से ऐसी समस्याओं का स्वयं ही समाधान होगा। तिजारतपेशा होने पर यदि आप थोक काम करते हैं तो आप का काम ढीला पडेगा। यदि आप परचून का काम करते हैं तो आप लाभ में रहेंगें। अगर आप का सम्बन्ध धान्य आदि से है तो आप खसारा में रहेंगें। यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो इस मास में आप को अधिक से अधिक दौडधूप करनी होगी, बागात अथवा फलों की पैदावार को बढाने के लिये धन की बडी राशि खर्च करनी होगी परन्तु जो कुछ भी रकम आप ऐसे कामों पर खर्च करेंगे वह खर्च सफल होगा। गृहस्थी होने पर सन्तानपक्ष से परेशानी बनी रहेगी, घर में अचानक कोई परेशानी, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा।

जून मास का वर्षफल

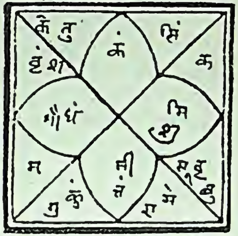

यात्रा का योग बनते बनते रुक जायेगा। यदि दैवयोग से यात्रा का योग बन भी जाये परन्तु वह यात्रा परेशानी का कारण बनेगी। यदि इस वर्ष कोई तामीरी काम करने का विचार है अथवा कोई वाहन मोटर आदि खरीदने का प्रोग्राम है तो इस मास में न करें, ऐसा काम करना आप के लिये लाभदायक नहीं रहेगा। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास अशान्ति का है, पठन-पाठन की ओर दिलचस्पी कम रहेगी, विद्यासम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावट। इस मास के शुभ दिन हैं :-9, 10, 16, 17, 20, 21, 24 और 27।

जुलाई : गोचरफलित में मासिक फल के लिये सूर्य का अच्छी पुजिशन में होना आवश्यक है। इस मास के प्रारम्भ पर दसवें सूर्य

का होना इस मास के शुभ फल को जितलाता है जैसा कि गोचर-शास्त्रों में दसवें सूर्य के बारे में कहा है- शरीर अच्छा रहता है, मित्रों से मेलमिलाप होता है, घर में मंगल कार्य होते हैं, दरबार में तर्की होती है, पुत्रपक्ष से सुख मिलता है। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा जबकि बुध ११वें भाव में ठहरा है परन्तु ११वें भाव का स्वामी चन्द्रमा का आठवें भाव में होना मानसिक अशान्ति का संकेत है। यदि आप व्योपारी हैं आप का हर काम में सफलता तथा लाभ अवश्य होगा परन्तु प्राय: हर काम में उलझनें आती रहेंगी, जिस कारण से आप का मन हर समय अशान्त बना रहेगा। यदि आप खाद्य-पदार्थ सस्य आदि से सम्बन्धित तिजारत करते हैं, इस मास में सावधान रहिये। परेशानी के साथ-साथ हानि का भी अन्देशा है। यदि आप किसी कारखाना फैक्ट्री आदि से सम्बन्धित काम करते हैं तो अचानक आप के काम को बढ़ावा मिलेगा, फलों से सम्बन्धित व्योपारियों को माल अथवा बागात के बेचने के लिये यह मास लाभदायक है परन्तु फलों खरीद

जुलाई मास का वर्षफल

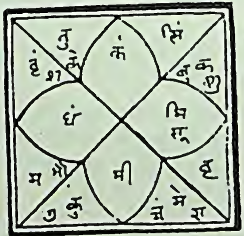

करने पर आप घाटे में रहेंगे। नौकरी पेशा कन्या राशि वाले लाभ में रहेंगे। नौकरी सम्बन्धित कोई भी समस्या हल हो जायेगी। यदि तर्की सम्बन्धित कोई समस्या हो वह भी हल हो जायेगी, सम्बन्धित अफसरों की हमदर्दी बना रहेगा। विद्यार्थीवर्ग को यह मास मित्रों के साथ मेलजोल में ही गुजरेगा। पठन-पाठन का अवसर कम मिलेगा। विद्यासम्बन्धित हर काम में रुकावट पड़ेगी। इस मास के शुभ दिन हैं :- 6, 7, 8, 9, 13, 14, 17, 18, 24 और 25।

अगस्त: वेध अष्टकवर्ग आदि पर विचार करने से मालूम होता है कि यह मास सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा। लग्न में शुक्र का होना इस मास के शुभ फल को प्रकट करता है, शरीर सुख बना रहेगा। यदि शरीर में पहले से कोई तकलीफ है जरा सा ध्यान देने पर शरीर स्वस्थ रहेगा। यदि आप गृहस्थी हैं आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा। दूसरे भाव का स्वामी शुक्र होने से आप की आर्थिक दशा का अचानक सुधार होगा। यद्यपि इस मास में संघर्ष अधिक करना भी होगा परन्तु हर काम में सफलता निश्चित है। व्योपारीवर्ग लाभ में रहेगा। यदि आप का सम्बन्ध परचून किरयाना अथवा कपड़े से है तो आप का कारोबार यथावत् चलता रहेगा। यदि आप कपड़ा किरयाना का थोक व्योपार करते हैं अथवा लोहे मशीनरी फैक्ट्री आदि से सम्बन्धित कन्या राशिवाले माल बेचें अथवा खरीदें, तो हर दोनों सूरतों में लाभ में रहेंगे। गृहस्थी होने

पर घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा परन्तु यह मंगल कार्य आप के लिये परेशानी का कारण होगा। आप इस मास में उपाय अवश्य करें.– उपाय है भगवान् शंकर पर जल चढायें, विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति का है जिस किसी कार्य में आप का हाथ होगा सफलता होगी। पठन - पाठन की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 2, 3, 4, 5, 9, 10, 14, 15, 20, 21, 29, 30 और 31।

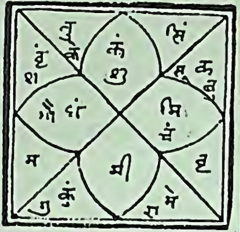

सितंबर : वेध - अष्टकवर्ग इत्यादि को विचार में रखकर मालूम होता है – यह मास संघर्ष तथा दौडधूप में ही गुजरेगा। परन्तु ऐसा होने पर भी हर काम में सफलता होगी। यह मास आर्थिक दृष्टि से उत्तम रहेगा। आप जिस किसी भी काम से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो आप लाभ में रहेंगे। यदि लाभ अधिक रहेगा भी परन्तु खर्च के नये नये मार्ग खुलते रहेंगे। यदि आप को इस वर्ष कोई शुभ कार्य रचाने का प्रोग्राम है तो इस मास को उस कार्य के लिये चुन लीजिये। यदि कोई जाईदाद बनाना हो अथवा खरीदना हो तो इस मास में ऐसा काम अवश्य करें। ऐसे शुभ कामों के लिये यह मास अनुकूल रहेगा। धार्मिक कामों की ओर प्रवृत्ति बनी रहेगी. यदि आप ने लडके अथवा लडकी का विवाह सम्बन्ध जोडना है या विवाह का शुभ कार्य रचाना है तो इस मास को हाथ से जाने मत दीजिये, ऐसा काम इस मास में शान व मान से रचाया जायेगा। नौकरीपेशा होने पर यह मास आदर व मान से गुजरेगा। यदि तर्की का कोई सिलसिला चल रहा है तो इस मास में आप कोशिश करें आप को तर्की मिलेगी, नहीं तो तर्की के कागज पक्के होंगे। यदि आप के घर में कोई बुजुर्ग बीमार है उस के विषय में सावधान रहिये विद्यार्थीवर्ग के लिए यह मास विद्यासम्बन्धित हर काम के लिये सफलता का है। पठन - पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी। भाई-बन्धुओं से मिलना जुलना इस मास का विशेष व्यसन होगा जिस से पठन-पाठन में रुकावट पड़ेगी। इस मास के शुभ दिन हैं :- 1, 2, 6, 7, 10, 11, 14, 17, 26 और 27।

सितंबर मास का वर्षफल

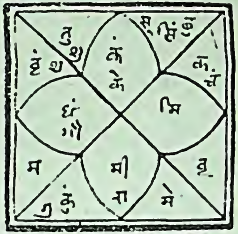

अक्टूबर: यद्यपि इस मास के प्रारम्भ में सूर्य चन्द्रमा भौम बृहस्-

पति की स्थिति अच्छी नहीं है परन्तु वृष अष्टकवर्ग में यह चारों ग्रह सुधरे हुये हैं। ग्रहों के मिले जुले शुभ अशुभ योग की दृष्टि में रखकर गोचरफल में विदित होता है - यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा। बुध और शुक्र का एक साथ दूसरे भाव में होना धन लाभ का सूचक है। आय की दृष्टि में यदि इस वर्ष कोई काम नये सिरे से आरम्भ करना हो अथवा कारोबार को बढ़ावा देने का विचार हो तो इस मास को ऐसे कार्य के लिये आप अवश्य चुन लीजिये। ऐसे कामों के लिये इस मास के ग्रह आप के अनुकूल हैं। तीसरा शनि आप का चल रहा है उसका प्रभाव आप पर वर्ष भर रहेगा। कारोबार की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा विशेषतया अगर आप के कारोबार का सम्बन्ध लोहे मिशीनरी अथवा किसी कारखाना से होगा तो आप आशा से अधिक लाभ में रहेंगे। गृहस्थी होने पर आप का घरेलू वातावरण शान्त रहने पर भी आप की सन्तानपक्ष में अशान्ति रहेगी। यद्यपि इस मास में आमदनी उत्तम ही होगी भी परन्तु खर्च का

अक्टूबर मास का वर्षफल

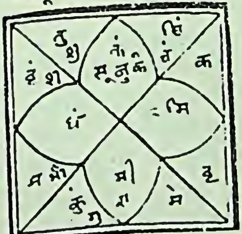

योग भी बलवान् है, खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा। घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा मंगल कार्यों में सम्मिलित होना पड़ेगा। इस मास के शुभ दिन हैं :- 3, 4, 7, 8, 14 15, 23, 24, 25 और 26।

नवंबर :- इस मास के प्रायः सभी ग्रह आप के अनुकूल हैं। सूर्य दूसरे भाव में होते हुये भी वृष में होने से आप के अनुकूल नहीं है। उपाय के रूप में सोमवार और बृहस्पतिवार को कदापि मांस का प्रयोग न करें। अगर आप को अपने दुर्भाग्य से किसी नशीली वस्तु के प्रयोग करने की बुरी आदत पड़ी है तो सके तो भी इस मास को मंगलवार और बृहस्पतिवार को कदापि सेवन न करें। आय की दृष्टि में इस वर्ष का यह मास एक स्मरणीय मास होगा। काम में आप जुट जायें, हर काम में सफलता होगी विशेषतया अगर आप फलों से सम्बन्धित तिजारत करते हैं तो आप का कारोबार शान व मान से सफल होगा। मिशीनरी सम्बन्धित काम में भी सफलता अवश्य होगी। आप के काम की वृद्धि होगी। यदि आप सस्य सम्बन्धी तिजारत

नवंबर मास का वर्षफल

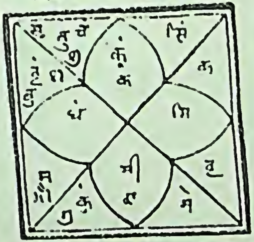

करते हैं तो आप की सफलता चलती रहेगी। नौकरीपेशा होने पर अगर आप को नौकरी सम्बन्धित पहले से कोई परेशानी है तो वह परेशानी भी दूर होगी, दफतर में शान व मान बना रहेगा। सम्बन्धित अफसरों से मेलमिलाप में वृद्धि होगी। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा। विद्यार्थियों को विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं :- 4, 5 10, 11, 20, 21, 22, 23, 27, 28 और 29।

दिसंबर :- इस मास के ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं केवल बृहस्पति का छटे भाव में होना हानिकारक था परन्तु वह भी सोम के वेध में होने से शुभ फलदायक ही होगा। इस वर्ष में यह मास आप के लिये हर पहलू से उत्तम है। जो कोई भी शुभ काम आरम्भ करना होगा तो इस मास में उस का प्रोग्राम बनायें विशेषकर इस मास के पहले पन्द्रह दिन हर प्रकार से आप के लिये लाभदायक रहेंगे, आप का शरीर स्वस्थ रहेगा। आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम है। भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने तथा प्रेम-व्यवहार में वृद्धि होगी। अगर आप को जाईदाद सम्बन्धित अथवा माता की ओर से कोई चिन्ता है तो वह चिन्ता मिट जायेगी सन्तानपक्ष से शान्ति रहेगी। अगर आप ने विद्यासम्बन्धित कोई काम आरम्भ किया है या आरम्भ करने का इरादा हो तो यह मास ऐसे कामों के लिये सफलता का मास है। यदि आप किसी झगडे में उलझे हैं तो उस उलझन का समाधान इस मास में होगा। आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा। धार्मिक कामों की ओर अधिक प्रवृति बनी रहेगी। शुभ कामों पर अधिक धन खर्च होगा। यदि आप नौकरी करते हैं तो आप को दरबारपक्ष से हर प्रकार से सुख शान्ति मिलेगी। यदि आप विद्यार्थी हैं तो विद्या-सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन हैं:- 1, 2. 7, 8. 19, 24. 25 28 और 29।

दिसंबर मास का वर्षफल

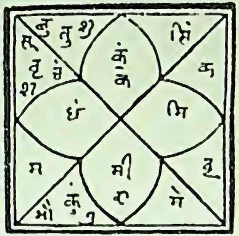

जनवरी :- इस मास के ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं। शरीर सुख आप का मध्यम रहेगा। शरीर के विषय में सावधान रहिये, अकस्मात् चोट लगने की भी सम्भावना है। उपाय के रूप में इस मास के हर मंगलवार को घर में चूरी बनाकर पक्षियों को डाला करें। गृहस्थी होने पर आप गृहस्थपक्ष से परेशान रहोगे। घर के किसी न किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी। धन के विषय में भी यह महीना ढीला रहेगा। यदि आप थोक काम करने वाले व्यापारी हैं तो यह महीना आप के लिये लाभ

दायक है। यदि आप मनीसाधारण रूप से परचून काम करते हैं तो इस मास में लाभ की कोई आशा न रखें। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 4, 5. 10. 11, 12, 20 21, 24, 25 और 31।

फर्वरी सूर्य सोम तथा बृहस्पति इस मास में हानिप्रद होने पर भी वेध में होने से शुभ फलदायक होंगे। ऐसे ही शेष ग्रहों की स्थिति भी अष्टकवर्ग आदि के आधार से कदरे ठीक है। इस मिले जुले शुभ अशुभ ग्रहों के संयोग से यह मास प्रायः शान्त वातावरण में ही व्यतीत होगा। घर में कोई मंगलकार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा। यह मास प्रायः हर शुभ काम के लिये शुभ रहेगा यदि आप ने कोई नामोरी काम प्रारम्भ करना हो तो इस मास को हाथ से जाने मत दीजिये। इस मास में ऐसा कोई प्रारम्भ किया हुआ काय स्वयं ही परेशानी के बिना हल होगा। व्यापारी - वर्ग के लिये यह मास लाभदायक ही रहेगा। अगर आप कपड़ा किरयाना परचून आदि काम करते है आप इस मास में अपने छोटे काम को बढ़ावा देने में

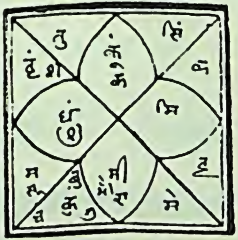

धन लगाये, वह लगाया हुआ धन आप के कारोबार को चमकायेगा फलों का निजारत करने वालों के लिये यह मास माल अथवा बागात बेचने के लिये लाभदायक रहेगा। यदि आप इस मास में माल अथवा बागात खरीदेंगे, ऐसे काम में बहुत दौडधूप के बाद भी आप खसारा में रहेंगे। नौकरी पेशा कन्या राशि वालों के लिये यह मास आदर तथा लाभ का होगा। तब्दीली और तर्की की भी सम्भावना है। विद्यार्थीवर्ग के लिये भी यह मास हर काम में सफलता का है। इस मास के शुभ दिन है :- 9, 10, 16, 17, 21, 22, 27 और 28।

मार्च :- इस मास में सोम बृहस्पति जो हानिप्रद स्थिति में है, ऐसे ही शेष ग्रह भी अष्टकवर्ग की दृष्टि से सुधरे हुये हैं। इस मास में प्रायः सभी ग्रह आप के अनुकूल हैं। शरीर अस्वस्थता आने या घर के किसी सदस्य की परेशानी हो स्वयं ही समाप्त होगी। आय की दृष्टि से यह मास उत्तम है। यदि आप का कारोबार ढीला पड़ा है तो काम में विश्वास से जुट जायें। आप के ग्रह आप के अनुकूल हैं, आपका कारोबार तेजी से आगे बढ़ेगा,

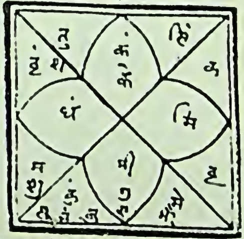

विश्वास रखिये आप के कारोबार में कोई रुकावट या बाधा नहीं आयेगी। हर काम सफलतापूर्वक रूप में चलता रहेगा। नौकरीपेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित हर एक उलझन ग्रहों के प्रभाव से स्वयं ही दूर होगी। यदि आप बेकार हैं, इस मास को हाथ से जाने मत दीजिये। किसी न किसी काम में जुट जायें। यदि इस वर्ष भी आप काम प्रारम्भ करने में असफल रहे तो आगे प्रभु के आसरे में रहिये न मालूम अब काम का अवसर कब मिलेगा। गृहस्थी होने पर घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बने। आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम है, खर्च का योग भी बलवान है। घर में खाने खिलाने के प्रोग्राम बनते रहेंगे। विद्यार्थीवर्ग के लिए यह मास हर पहलू से शुभफलदायक है। इस मास के शुभ दिन हैं 9, 10, 11, 1., 16, 17, 20, 21, 27, और 28।

तुला राशि का वर्षफल

सूर्य छटे भाव में होने से हर कार्य में सिद्धि होती है, खाने खिलाने के साधन सुलभ होते हैं। शत्रुओं पर विजय होती है, रोगों का नाश होता है, सरकार की ओर से लाभ मिलता है, शरीर स्वस्थ रहता है।

चन्द्रमा सातवें भाव में होने से अन्न धन का लाभ होता है, विषय भोग की ओर अधिक प्रवृत्ति बनी रहती है व्योपारी होने पर व्योपार में मनोवाँछित लाभ मिलता है, लाभदायक छोटी मोटी यात्रा का योग बनता है, खाने को उत्तम भोजन तथा पहनने को सुन्दर वस्त्र मिलते है, शरीर स्वस्थ रहता है, आदर में वृद्धि होती है, वाहन का सुख मिलता है।

भौम तीसरे भाव में मंगल होने से काम करने की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है, शत्रुओं पर विजय होती है, धातुओं का काम करने से लाभ मिलता है, धन की प्राप्ति होती है, सरकार की ओर से अचानक लाभ मिलता है।

बुध छटे भाव में होने से धन अन्न तथा उत्तम वस्त्रों की प्राप्ति होती है. स्वाध्याय का अवसर मिलता है, शत्रुओं पर विजय होती है, सभी लोगों से आदर मिलता है, शरीर स्वस्थ रहता है।

बृहस्पति जब पांचवें भाव में आता है तो सुख और आनन्द की प्राप्ति होती है, हर एक कार्य में सफलता मिलती है, व्यापारी होने पर व्यापार में तरक्की होती है, घर में मंगल कार्य अथवा उत्सव मनाया जाता है, घर में पुत्र उत्पन्न होता है, बुद्धिबल में वृद्धि होती है, लाटरी आदि से अचानक लाभ होता है

शुक्र सातवें भाव में होने से अनादर का खतरा रहता है, बहुत कठिनाई से गुजारा होता है, तंगदस्ती से दुचार होता है, गुप्त अंग में अचानक रोग प्रकट होता है, स्त्री से झगड़ा होता है, अथवा स्त्री को शरीर कष्ट होता है यात्रा का योग बनता है ।

शनि दूसरे भाव में होने से बिना कारण के झगड़ा होता है, भाई-बन्धुओं से अनबन होता है । धन की हानि होती है किसी भी कार्य में सफलता नहीं होती है, स्त्री को शरीर कष्ट होता है, यहां तक कि उस के मृत्यु की भी सम्भावना होती है, घर छोड़ कर बाहर जाना पड़ता है, विदेश-यात्रा की सम्भावना होती है ।

राहु सातवें भाव में होने से व्यापार में अचानक वृद्धि होती है, यात्रा में धन का लाभ होता है, सरकार की ओर से लाभ मिलता है, मित्रों से सहायता मिलती है, शरीर में कष्ट होता है ।

केतु पहले भाव में केतु होने से मान में वृद्धि होती है, पुत्रों की ओर से सुख मिलता है, शरीर में चोट लगने का भय रहता है ।

* * * * *

तुला राशि का वर्षफल

सम्पादक की दृष्टि से

गोचरफल में सूर्य और चन्द्रमा का महत्वपूर्ण स्थान होता है । वर्ष के प्रारम्भ में यह दोनों ग्रह आप के अनुकूल हैं । इस वर्ष शनि हानिप्रद ग्रह है, वेध-अष्टक वर्ग में भी ये ग्रह आप के लिये हानिकारक रहेगा । लग्न का स्वामी शुक्र सातवें भाव में होने से आप का शरीर इस वर्ष डांवांडोल स्थिति में रहेगा, चाहे एक अंग में तकलीफ तो चाहे दूसरे अंग में । अगर आप के शरीर में पहले से कोई तकलीफ

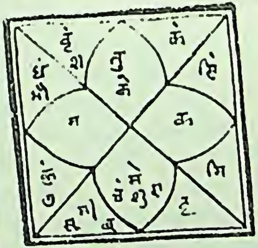

है तो इस वर्ष कोई आप्रेशन आदि का प्रोग्राम न बनायें, यदि आप्रेशन करना आवश्यक है तो वर्ष के पहले चार मासों में ही प्रोग्राम बनायें, हो सके तो मंगलवार का दिन न हो । यदि ईश्वर कृपा से आप शरीर से स्वस्थ हैं तो गृहस्थी होने पर स्त्रीपक्ष से सावधान रहिये, उस के अचानक शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, यदि दैवयोग से वह भी स्वस्थ रही तो भी घर का कोई सदस्य

शारीरिक रोग से पीड़ित होकर आप के लिये परेशानी का कारण होगा। शनि देवता आप को किसी न किसी परेशानी से घेरे रखेगा आर्थिक दृष्टि से यों तो यह वर्ष अरूज पर रहेगा या तो आप को कंगाल बनाकर रख छोड़ेगा। अचानक किसी दुर्घटना से आप को धन का नाश होगा। उपाय के रूप में आप "शनिस्तोत्र" जो जन्त्री में दर्ज है नित्य पाठ किया करें। हो सके तो रोजाना प्रातः "बहुरुप गर्भ और शिवमहिम्नस्तोत्र" का पाठ किया करें। यदि आप यह पाठ नहीं कर सकें तो हमारे ज्योतिष कार्यालय जम्मू से 'बहुरूपगर्भ' आदि से भरा हुआ कैसेट मंगवाकर नित्य प्रातः धूपदीप जला कर बहुरूपगर्भ का श्रवण किया करें। यदि आप किसी फैक्ट्री से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो आप अवश्य लाभ में रहेंगे परन्तु अचानक हानि की सम्भावना भी है। कपड़े का काम करने वाले तुला राशि वालों का कारोबार अगर अधिक तेजी से चलेगा नहीं भी परन्तु सामूहिक रूप से आप लाभ में रहेंगे तुला राशि वाले फलों के तिजारतपेशा लोग अधिक दौड़धूप में रहेंगे, वर्ष के अन्त में इच्छापूर्वक लाभ नहीं होगा। यदि आपने इस वर्ष कोई नया कारोबार आरम्भ करने का निश्चय किया है, हो सके तो इस वर्ष न करें, ऐसा काम करने में उलझनें खड़ी होंगी। यदि नये सिरे से काम करना आवश्यक होगा तो भी आवश्यक है आप अपने नाम से न करें। यदि इस वर्ष कोई तामीरी काम करने का विचार है, बिना उलझन के कोई काम सिद्ध नहीं होगा। यदि आप वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम रखते हैं तो इस वर्ष वह काम अवश्य करें ऐसा काम आपके लिये शुभ शकुन होगा। गृहस्थी होने पर अगर आपको लड़के अथवा लड़की के विवाह का विषय विचार में है। अचानक बिना किसी परिश्रम अथवा परेशानी के हल होगी, इस वर्ष यात्रा का योग अवश्य है। घर से बाहर रहना आपके लिये अशान्ति का कारण बनेगा। नौकरी पेशा होने पर यह वर्ष संघर्ष तथा दौड़धूप का होगा। सम्बन्धित अफसरों अथवा सम्बन्धित कर्मचारियों से अन बन होगी। दरबार सम्बन्धित कोई समस्या बिना परेशानी अथवा रुकावट के सिद्ध नहीं होगी। यदि आप पढ़े लिखे हैं, नौकरी की तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर भी निराश ही होना पड़ेगा। यदि जन्मपत्री के आधार से दशा कुछ ठीक हो तो वर्ष के अन्तिम तीन महीनों में नौकरी मिलने की कुछ आशा रखें। नहीं तो 1987 की प्रतीक्षा में रहें। यदि आप का पढ़ने की ओर इच्छा है तो नौकरी की हो दौड़धूप में न रहें, मजीद पढ़ाई का प्रोग्राम आपके लिये अनुकूल रहेगा।

यदि आप जन्म से धार्मिक प्रवृत्ति के हैं तो आप को इस वर्ष में अचानक किसी महात्मा के साथ सहयोग होगा जिसके लिए आप को बहुत समय से तड़प थी। आपको इस वर्ष अच्छे पुरुषों की संगत में बैठने को अधिक से अधिक अवसर मिलेगा। विद्यार्थी होने पर आपको

विद्यासम्बन्धित काम में सफलता अवश्य है। आप अगर आज तक परीक्षा में सफल नहीं होते हैं, इस वर्ष को हाथ से जाने मत दीजिये, आप इस वर्ष फिर से एक बार परीक्षा दीजिये, आप विश्वास रखें कि ग्रहों का भी कुछ प्रभाव मनुष्य पर अवश्य पड़ता है, केवल परीक्षा में सम्मिलित होने से ही पास होने की आशा न रखें अपितु यह फलादेश पढ़ते ही पढ़ाई में जुट जायें। मैं आपको विश्वास से कहता हूं कि इस वर्ष अवश्य पास हो जाओगे, यदि इस वर्ष भी रह गये तो आगे पास होने की कोई आशा न रखें, यदि आपने कोई इन्टरविव देना हो अथवा दिया है तो आपको सफलता अवश्य है। यदि आपको इस वर्ष विद्या सम्बन्धित काम के लिए विदेश जाने का प्रोग्राम हो, तो सफलता निश्चित है।

शनि के प्रभाव से इस वर्ष आपको धन सम्बन्धित अचानक हानि की भी सम्भावना है, अकस्मात् किसी दुर्घटना की भी सम्भावना है। इन दोनों कष्टों से बचने का एक मात्र उपाय है कि आप इस वर्ष वैष्णव रहें। घर में प्राय शनिवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाला करें। यदि सम्भव हो घर देवी में का स्वाहाकार करें, इस वर्ष हर शुभ काम के लिये मनहूस वार हैं – शुक्रवार और शनिवार। हर काम के लिये सबसे उत्तम दिन हैं – बुधवार और गुरुवार।

तुला राशि का मासिक फल

अप्रैल :– यह भाग प्रायः सुख-शांति के वातावरण से ही गुजरेगा, शरीर सुख मध्यम रहेगा। गृहस्थी होने पर स्त्री का शरीर भी प्रायः डांवांडोल स्थिति में रहेगा परन्तु कोई विशेष हानिकारक योग नहीं है लाभ की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, यदि आप व्यापारी हैं तो आपका कारोबार सुचारू ढंग से चलता रहेगा विशेषतया यदि आप का सम्बन्ध कपड़ा चाय तथा सस्य से है तो आप इस मास में आशा से अधिक लाभ में रहेंगे। लोहे मशीनरी सीमेंट आदि से सम्बन्धित कारोबार वाले हानि में रहेंगे। फलों से सम्बन्धित तिजारतपेशा व्यापारियों को दौड़ धूप अधिक, माल अथवा बागात खरीदने में लाभ रहेगा, बेचने में हानि ही रहेगी। घर में अतिथियों का यातायात अधिक रहेगा। भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा, अतिथिसेवा इस मास का मुख्य व्यसन रहेगा। यदि आपकी माता जीवित है, मातृपक्ष से परेशानी होगी। गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से मासहिक शान्ति होगी। यदि आप किसी झगडे में अथवा मुकदिमा आदि में फंसे हुये हैं। ग्रहों के प्रभाव से ऐसी उलझन से छुटकार मिलेगा यदि छुटकारा मिलेगा

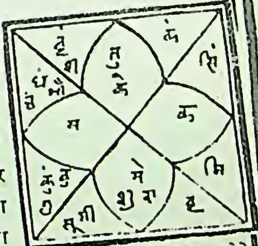

नहीं परन्तु छुटकारा मिलने की आशा प्रकट होगी। इस मास में यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करेंगे वह काम बहुत समय के लिए लटकता रहेगा। धार्मिक अथवा सामाजिक कामों की तरफ अधिक झुकाव रहेगा। नौकरीपेशा होने पर दरबार की ओर से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का है, विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन हैं :—1, 2, 8, 9, 17, 18, 19, 20, 24, 25, 28 और 29।

मई :—इस मास में सूर्य चन्द्रमा यद्यपि अनिष्ठ स्थानों में भी ठहरे हैं परन्तु यह दोनों ग्रह वेध में हैं। शेष ग्रह शुभ स्थानों में ठहरे हैं इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास सुख शांति तथा लाभ में ही गुजरेगा। शरीर सुख उत्तम रहेगा, यदि आप गृहस्थी हैं, यदि आप की धर्मपत्नी प्रायः शरीर से बीमार रहती हैं, इस मास में इलाज करवाने से शरीर स्वस्थ रहेगा।

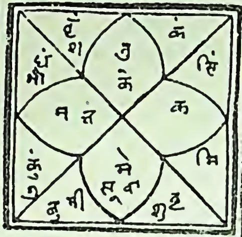

अगर आप पति पत्नी शरीर से स्वस्थ हैं तो भी शनि देवता आपको अपना हानिप्रद प्रभाव दिखाये बिना रहेगा नहीं। आपके घर का कोई निकटतम सदस्य शरीर कष्ट से घेरे रहेगा जो आपके लिए परेशानी तथा धन निरर्थ खर्च होने का कारण बनेगा। आर्थिक दृष्टि से यद्यपि यह मास उत्तम रहेगा परन्तु खर्च पानी के बहाव की तरह होगा, यदि आप तिजारतपेशा हैं तो आमदनी आपकी सन्तोषजनक रहेगी परन्तु अचानक हानि की भी सम्भावना है। इस मास में कारोबार को वृद्धि देने का प्रोग्राम बनेगा जिसमें अधिक से अधिक धन खर्च करने का प्रोग्राम होगा। घर में अतिथियों रिश्तेदारों भाई-बन्धुओं मित्रों का आना जाना जोरों पर रहेगा। यदि आप नौकरी पेशा है तो यह मास अशान्ति के वातावरण में गुजरेगा, दिनों दिन आपको नई नई परेशानियां घेरे रखेंगी। इस मास में अगर आप कोई तामीरी काम आरम्भ करोगे तो वह काम बहुत दिन लटकता रहेगा। यदि आप को कोई जायदाद वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम है, इस मास में ऐसा काम न करें, ऐसे कामों के करने से आपको दिनों दिन परेशाशानियों से दुचार होगा, नौकरी पेशा वाले तुला राशि वालों को शनि इस मास में नई नई उलझनों तथा मुसीबतों में फंसाने का कारण होगा। उपाय के रूप में इस मास की हर शनिवार को घर में तरह बनाकर पक्षियों को डालें। ऐसा यदि सम्भव न हो तो शनिवार को कुत्तों को रोटियां डालें। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास परेशानी का ही होगा। पठन पाठन की ओर प्रवृति कम रहेगी। इस मास में आपको धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, समाज के अच्छे अच्छे पुरुषों अथवा धार्मिक पुरुषों से मिलने जुलने का अवसर मिले इस मास के शुभ दिन हैं :—5, 6, 7, 10 और 16।

जून :– इस मास में केवल शनि ही आपके लिए हानिकारक ग्रह है, शेष सभी ग्रह अच्छी स्थिति में है। यद्यपि आठवां सूर्य भी हानिकारक माना जाता है परन्तु बुध के वेध में होने से वह भी शुभफलदायक ही होगा। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा। यदि पहले से आपके शरीर मे कोई तकलीफ है तो जरा सा ध्यान देने पर वह तकलीफ भी दूर होगा। गृहस्थी होने पर यदि घर के किसी सदस्य के विषय में कोई चिन्ता है वह चिंता भी ग्रहों के प्रभाव से स्वयं ही मिट जायेगी। यदि आपको लड़के अथवा लड़की के विवह की सरस्या है तो वह समस्या भी ग्रहों के प्रभाव से इस मास में समाप्त होगी। अगर विवाह न भी हो जाये तो भी कहीं सम्बन्ध पक्का हो जायेगा। तिजारत पेशा होने पर आपका कारोबार यद्यपि यथावत् चलता भी रहेगा परन्तु इस मास के अन्त पर अचानक लाभ होगा। यदि आप मशीनरी सम्बन्धित लोहा अथवा सीमेंट का काम करते हैं, इसमें आपको आशा से अधिक लाभ होगा। फलों के व्यापारियों के लिये यद्यपि यह मास लाभ का नही होगा परन्तु इस मास में इस वर्ष के लाभ की नींव पड़ेगी, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं, तो आपको अत्यधिक लाभ मिलेगा जिसका संभालना आपके लिये कठिन होगा। यदि आपने इस वर्ष कोई शुभ काम करना हो तो इस मास में उसका आरम्भ करना आप को काम की सिद्धि की चेतावनी होगी। नौकरी पेशा होने पर यह मास शान और मान से गुजरेगा। नौकरी सम्बन्धित हर काम में बिना उलझन के सिद्धि होगी। विद्यार्थियों के लिये यह मास विद्यासम्बन्धित हर काम के लिये सफलता का है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—1, 2, 11, 12, 13, 14, 18, 19, 22, 23, 29 और 30।

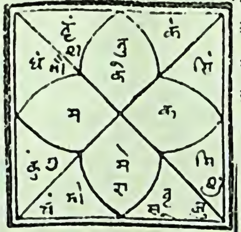

जुलाई:—पहले भी हम यह लिख चुके हैं मासिक फलादेश में सूर्य और चन्द्रमा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। गोचर से नवें भाव का सूर्य हानिकारक माना जाता है परन्तु वेध में होने से सूर्य इस मास में दूषण होते हुये भी आपके लिये भूषण बना हैं आपका शरीर स्वस्थ रहेगा। यदि घर के किसी सदस्य के शरीर की आपको परेशानी है तो वह परेशानी भी मिट जायेगी। कारोबार की दृष्टि से यह मास अधिक दौड़ धूप और संघर्ष का होगा परन्तु सामूहिक रूप से आपका कारोबार लाभ में होगा। यदि आप लोहा तेल आदि से सम्बन्धित कारोबार करते है तो आपको बढ़ावा होने का योग है। शरीर कष्ट से बचने का एकमात्र उपाय है आप शनिवार को प्रात: उठकर तेल में मुंह देखकर तेल के

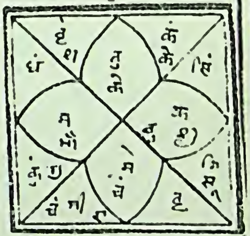

पात्र में सिक्का डालते हुये पढ़े

"ॐ वैवस्वताय धर्मराजाय भुक्तानुग्रहकृते नमः"

यदि आप नोकरीपेशा हैं तो आपका कार्य यथावत् चलता रहेगा। किसी प्रकार लाभ अथवा हानि का योग नहीं है, किसी भी तर्की मिलने का योग नहीं है। विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में निश्चित रूप से सफलता होगी। इस मास के 237 दिन हैं। 8, 9, 10, 11, 15, 16, 19, 20, 26 और 27।

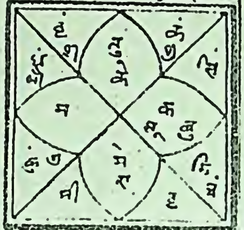

अगस्त:—मास के आरम्भ से प्राय: सभी ग्रह अच्छी स्थिति में हैं। नवें भाव का चन्द्रमा होने के बावजूद भी शुभफल दायक ही होगा। इस मास में आप पर अधिक प्रभावशाली शुक्र रहेगा। लग्न तथा आठवें भाव का स्वामी शुक्र बारवें भाव में गया है। गोचर शास्त्रों के अनुसार बारवां शुक्र उत्तम माना जाता है जैसा कि गोचर शास्त्रों में दर्ज है।—मित्रों का मिलाप होता है। धन अन्न तथा सुन्दर वस्त्रों का लाभ मिलता है। प्राय: शुभ कामों पर सार्थक खर्च होता है। शेष ग्रहों की स्थिति भी अच्छी है केवल शनि का दूसरे भाव में होना हानिकारक हैं, इस मिले जुले योग के अनुसार आप का शरीर सुख प्राय: उत्तम रहेगा। गृहस्थी होने पर आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा। भाई-बन्धुओं के साथ प्रेम-व्यवहार में वृद्धि होगी। सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी। तिजारतपेशा होने पर आप का कारोबार शनि के प्रभाव से प्रभावित रहेगा। कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। नौकरी पेशा होने पर तर्की का योग है परन्तु स्थान तब्दीली होगी। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में इस मास में व्यस्त रहोगे। इस मास में यदि आप कोई काम नये सिरे से आरम्भ करोगे तो वह काम लटकता रहेगा, यदि इस वर्ष घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम है तो इस मास में न रचायें न ही तो मुसीबत का कारण बनेगा! अगर यात्रा को योग बने तो बिना हिचकिचाहट के यात्रा को जायें, इस मास की यात्रा आप के लिये लाभदायक तथा मानसिक शांति का कारण होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास डांवाडोल स्थिति का योग होगा, पठन-पाठन में प्रवृत्ति कम रहेगी, सैरसपाटा तथा घर से बाहर रहने की प्रवृत्ति बनी रहेगी, मित्रों के मेलजोल में ही यह मास गुजरेगा। इस मास के शुभ दिन हैं: - 5 से 8 तक 11, 12, 16, 17, 22 और 23।

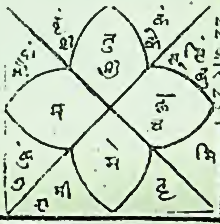

सितम्बर:—इस मास के आरम्भ में चन्द्रमा और शनि अच्छी स्थिति में नहीं हैं। शनि के प्रभाव से आप का कारोबार प्रभावित होगा और चन्द्रमा के प्रभाव से मास भर आप को मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। पहले भाव में शुक्र होने से शरीर स्वस्थ रहेगा।

खाना खिलाने तथा पार्टियां देने अथवा पार्टियों में सम्मिलित होना इस मास का प्रायः दैनिक कार्यक्रम होगा तथा अच्छे पुरुषों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा। गृहस्थी होने पर आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा। परिवार तथा रिश्तेदारों की घरेलू समस्यायें हल करने में अधिक व्यस्त रहोगे व्यापारीवर्ग के लिये यह मास कामकाज में अधिकतर लगे रहने का होगा। लाभ की दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा। केवल शनि के प्रभाव से वह व्यापारी वर्ग जो लोहे मिशीनरी तथा अनाज आदि से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो इस मास में अशान्त तथा हानि में रहोगे। नौकरीपेशा तुला राशि वालों के लिये इस वर्ष में यह मास लाभ की दृष्टि से स्मरणीय मास होगा। आदर व मान में वृद्धि होगी। घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा। विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम यद्यपि में सफलता होगी भी परन्तु पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी। इस मास के शुभ दिन है—1 से 4 तक, 8, 7. 12, 13, 19, 20, 28, 29 और 30।

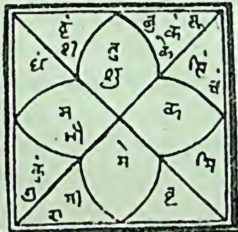

अक्तूबर—मास के आरम्भ में बारवें भाव में सूर्य बुध और केतु का एक साथ होना खर्च के बहुतात की चेतावनी है। शनि को छोड़कर शेष ग्रह आप के अनुकूल है, इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास सुख शान्ति के साथ दौड़धूप के वातावरण में गुजरेगा। शरीर सुख प्रायः उत्तम रहेगा। गृहस्थी होने पर यदि पहले से घर के किसी सदस्य की परेशानी है तो इस मास में ग्रहों के प्रभाव से शरीर सम्बन्धित हर एक परेशानी स्वयं ही मिट जायेगी। यद्यपि इस मास में खर्च के ग्रह बलवान हैं परन्तु आमदनी की दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा यदि आप तिजारतपेशा हैं और आपका तिजारत कपड़े से सम्बन्धित है तो आमदनी की दृष्टि से स्मरणीय मास होगा। यदि आप खाद्य पदार्थ आदि से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो आप हानि में रहेगें, आपको अकस्मात् नुकसान पहुंचने की भी सम्भावना है।

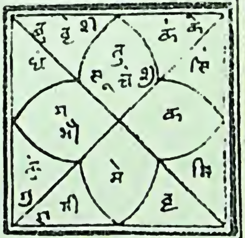

नवम्बर—लग्न में सूर्य का होना यद्यपि हानिकारक माना जाता है में होने से परन्तु सूर्य चन्द्रमा शुक्र के वेध में होने से हानिकारक नहीं। लग्न के आरम्भ पर चन्द्रमा और शुक्र का लग्न में होना शुभ फलदायक है। चौथा भौम तथा दूसरा शनि हानिकारक है। इस मिले जुले शुभ अशुभ योग के प्रभाव से यह मास प्रायः परेशानी में ही गुजरेगा कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, शरीर सुख प्रायः आपका उत्तम रहेगा, इस मास में किसी भी प्रकार की शरीर सम्बन्धित परेशानी नहीं होगी। यदि आप शरीर से अस्वस्थ रहेगें भी तो आपका कासे अन्न तथा लोहे

का दान करना चाहिये, दान अपने वजन का करना चाहिये। चौथा भौम इस मास में आपको परेशानी का कारण बनेगा। चौथे, भौम के बारे में गोचर-शास्त्रों का कहना है—शत्रुओं की वृद्धि होती है भाई-बन्धुओं से अनबन होती है, तंगदस्ती से दुचार होता है, जमीन अथवा जाईदाद की समस्या खड़ी हो जाती है, घरेलू परेशानियां, बनी रहती है, आदर में कमी आती है, "वास्तव में चौथा योग आपके लिए हर प्रकार से हानिकारक है, इस भौम के क्रूर स्वभाव तथा प्रभाव से बचने का एक मात्र उपाय है आप इस महीने में वैष्णव रहे। गृहस्थी होने पर ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करें, किसी नशीली वस्तु का प्रयोग कदापि न करें। तिजारत पेशा तुला राशि वालों को इस मास में सावधान रहना चाहिये हानि की सम्भावना है। नौकरीपेशा वालों को भी यह मास अशान्त वातावरण में ही गुजारना होगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित हैं। इस मास के शुभ दिन नोट करें:—1, 2, 12, 13, 22, 23, 24, 25, 29, 30।

दिसम्बर:—महीने के आरम्भ पर लग्न में बुध भी होना अशुभ फल का संकेत है परन्तु लग्न में बुध का होना शुभफल की चेतावनी है, ऐसे ही दूसरे भाव में सूर्य चन्द्रमा और शनि का समयोग हानि को जितलाता है। पांचवां भौम अशुभफल का सूचक है.

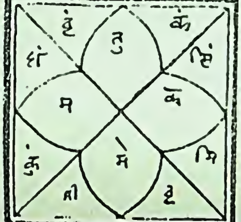

इस योग के प्रभाव से आपका शरीर प्रायः डांवाडोल स्थिति में रहेगा, कभी शरीर स्वस्थ रहेगा तो कभी बिगड़ेगा। आर्थिक संकट भी इस मास में बना रहेगा, अकस्मात् हानि की सम्भावना है, धोखा लगने का अन्देशा भी है, भाई-बन्धुओं के साथ अकस्मात् नाराजगी होगी। यदि आपको कोई जायदाद सम्बन्धित झगड़ा है तो इस मास में उसका हल आपके अनुकूल नहीं होगा। अगर आप कोई तामीरी काम इस मास में आरम्भ करोगे तो वह काम बहुत देर तक लटकता रहेगा। गृहस्थी होने पर अगर आप को पुत्र पक्ष से कोई परेशानी है, वह परेशानी है, वह परेशानी जोर पकड़ेगी। परन्तु स्त्रिपक्ष की ओर से मानसिक शान्ति बनी रहेगी। कारोबार की दृष्टि से यह मास यथावत् चलता रहेगा। खर्च में भी कोई अधिकता होगी नहीं, नौकरीपेशा होने पर आपको अचानक दरबार सम्बन्धित कोई परेशानी पैदा होगी तो इस मास में उस परेशानी को हल करने का कोई रास्ता नजर नहीं आयेगा। इस मास के शुभदिन नोट करें:—9, 10, 19, 20, 26

जनवरी :— इस मास में बुध राहू केतु हानिकारक स्थिति में हैं। शनि शुक्र के वेध में होने से शुभ हैं शेष सूर्य चन्द्रमा भौम और शुक्र अच्छी स्थिति में हैं, अष्टक वर्ग की दृष्टि में रखकर ज्योतिष गोचर-शास्त्रों के आधार से यह मास सुख शान्ति के

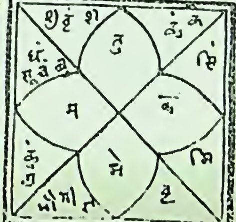

वातावरण में ही गुजरेगा, शरीर आपका स्वस्थ रहेगा। गृहस्थी होने पर अगर आपकी स्त्री शरीर से अस्वस्थ रहती है तो इस मास में किसी नये डाक्टर से इलाज करवाने से स्वस्थ होगी अथवा अगर घर में किसी निकटतम सम्बन्धी को शरीर सम्बन्धी परेशानी हैं वह भी ग्रहों के प्रभाव से दूर होगी। आर्थिक दृष्टि से तुला राशि वाले लाभ में रहेंगे। नौकरी पेशा वाले तुला राशि वालों को सावधान रहना चाहिये, शनि आपके दरवार को पूर्ण दृष्टि से देखरहा है। ज्योतिष फलित में शनि की दृष्टि बहुत हानिकारक मानी गई है, इस क्रूर योग से इस मास में दरवार सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी बनी रहेगी, अगर आप किसी झगड़े में उलझे हुये हैं तो इस मास में छटे भौम के प्रभाव से हर एक झगड़े का समाधान होगा और शत्रुओं पर विजय होगी, आदर व मान प्रतिष्ठा में वृदि होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये हर विद्या सम्बन्धित काम में सफलता का मास है यदि विद्या सम्बन्धित देश में अथवा विदेश में यात्रा का योग बने, तो वह यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी इस मास के शुभ दिन नोट करें 4, 5, 10, 16, 17 18, 22 23, 27, और 28।

● ●

योग नहीं हैं। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में रुकावटें आने के बावजूद भी सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं 2, 3 12, 13, 19, 20, 23 और 24।

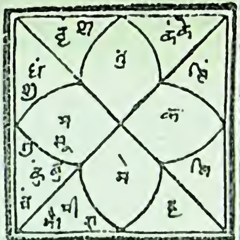

फर्वरी :— इस मास के आरम्भ पर सूर्य और चन्द्रमा दोनों ग्रह हानिप्रद स्थिति में हैं। पांचवां बुद्ध भी गोचर से हानिकारक माना जाता है। छटा राहु और बारवां केतु भी अनिष्ठ फल के ही देने वाले हैं। भौम बृहस्पति और शुक्र अच्छी स्थिति में हैं, ऊपर लिखित शुभ और अशुभ ग्रहों को नजर में रखकर सम्पादक की दृष्टि से यह मास एक जैसी स्थिति में गुजरेगा नहीं, शरीर की दशा भी बनती बिगड़ती रहेगी, आर्थिक दशा भी कभी आशा से अधिक अच्छी रहेगी, कभी तगंदस्ती से दुचार होगा विशेष कर जिन तुला राशि वालों के कारोबार का सम्बन्ध लोहे मिशीनरी सीमेन्ट आदि से होगा वह व्योपारी इस मास में आर्थिक दृष्टि से परेशान रहेंगे। गृहस्थी होने पर आपका घरेलू वातावरण अशान्त रहेगा, अगर आपको लड़के अथवा लड़की के विवाह का कोई प्रोग्राम है परन्तु इस मास में ऐसी समस्या बनती बनती बिगड़ जायेगी यदि आपको कोई तामीरी काम करने का विचार है तो ऐसे काम के लिये ये महीना शुभ होगा। विना उलझन के अथवा किसी रुकावट के निश्चित समय से पूर्व ही ऐसा काम संपूर्ण होगा नौकरी पेशा होने पर आप का काम यथावत चलता रहेगा, किसी प्रकार की तर्की का

● ●

मार्च :— इस भाव में शनि को छोड़कर शेष सभी ग्रह अच्छी स्थिति में हैं। गोचर के आधर से यद्यपि सूर्य भौम और बुध हानिकारक माने गये हैं परन्तु यह तीनों ग्रह वेध में होने से शुभ फल दायक हैं सामूहिक रूप से प्रायः सभी ग्रह इस मास में अच्छी स्थिति में नही हैं। आपका शरीर सुख उत्तम रहेगा, यदि आपको घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित कोई परेशानी है वह भी अकस्मात् समाप्त होगी। आपका घरेलू वातावरण इस मास में शान्त रहेगा, अगर आपको घरेलू कोई समस्या है वह समस्या भी स्यय हल होगी। तिजरत पेशा वाले तुला राशि वाले इस मास में लाभ में रहेंगे, चाहे वह किसी भी प्रकार के कारोबार से सम्वन्धित हों। आदर व मान की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। यद्यपि यह मास कमाई की दृष्टि से उत्तम रहेगा परन्तु खर्च के नये नये मार्ग निकल आयेंगे, प्रायः खर्च शुभ कामों पर ही होगा। अतिथियों का आतायात जोरों पर रहेगा, अतिथि सेवा इस इस मास का विशेष व्यसन होगा। गृहस्थी होने पर आपको गृहस्थ पक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी। नौकरी पेशा वाले तुला राशि वालों को अधिक से अधिक दौड़ धूप करनी होगी। परेशानी के वावजूद यह मास मान प्रतिष्ठा में गुजरेगा, यदि तर्की की कोई आशा है तो वह

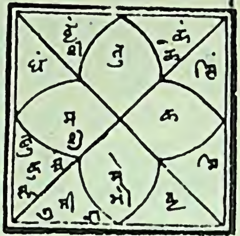

आशा इस मास में अवश्य पूरी होगी। विद्यार्थियों के लिये यह मास हर पहलू से सफलता का होगा इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये 2, 3 11, 12, 18, 19, 22, 23, 29, 30 और 31।

वृश्चिक राशि के ग्रहों का अलग-अलग फलादेश गोचर-शास्त्र से

पांचवें भाव—में सूर्य होने से मानसिक परेशानी होती है, शरीर में कमजोरी आती है, धन की हानि होती है, पुत्रपक्ष से परेशानी रहती है, किसी सरकारी उलझन में उलझ जाता है, यात्रा में दुर्घटना का भय होता है।

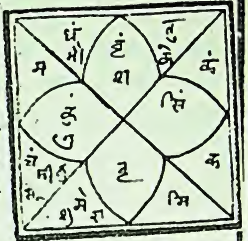

पांचवें भाव—में चन्द्रमा होने से यात्रा में कष्ट, हर आरम्भ किये हुये काम में असफलता, मानसिक अशान्ति, धन की हानि, शरीर में रोग का पैदा होना, सूझबूझ में कमी।

दूसरे भाव में—भौम होने से हर काम में असफलता, दुष्ट मनुष्यों चोरों अथा अग्नि से खतरा, सरकार की तरफ से दण्ड मिलने का खतरा, शरीर कष्ट, आर्थिक संकट का होना, घरेलू परेशानी।

पांचवें भाव में—बुध होने से मानसिक चिन्ता, हर एक बनाई हुई योजना में रुकावट तथा असफलता, पुत्रों तथा स्त्री से झगड़ा, कमाई की परेशानी, चरित्र हीनता, आदर व मान में कमी।

चौथे भाव में—बृहस्पति होने से मानसिक चिन्ता, धन तथा मान प्रतिष्ठा की हानि, शत्रुओं की वृद्धि जमीन अथवा जाईदाद की परेशानी बनी रहेगी, सरकार की तरफ से किसी उलझन का खड़ा होना।

छठे भाव में—शुक्र होने से शत्रुओं की वृद्धि होती है, शत्रुओं के सामने झुकना पड़ता है, व्योपारी होने पर व्योपार सम्बन्धित झगड़ा खड़ा होता है, दुर्घटना का खतरा रहता है, घरेलू परेशानी रहती है।

पहले भाव में—शनि होने से काम में दिल लगता नहीं, शरीर में कष्ट होता है, भाईयों अथवा स्त्री से झगड़ा होता है, शस्त्र पत्थर आदि से चोट लगने का भय रहता है, दूर स्थानों की यात्रा होती है, सभी आरम्भ किये हुये कार्य लटकते रहते हैं, झूठा आरोप लगने की सम्भावना होती है, जेल जाने का खतरा होता है, आर्थिक स्थिति में कमजोरी आती है।

छठे भाव में—राहु होने से पहले के उलझे हुये रोग भी फिर से प्रकट होते हैं, मामा के परिवार की चिन्ता बनी रहती है, मान हानि होती है, धन की हानि होती है, आमदनी में कमी आती है, आंखों में कष्ट रहता है, बुरी संगति मिलती है, नीच कर्म करने की प्रवृत्ति बनी रहती है।

बारवें भाव में—केतु होने से सिर अथवा आंखों में कष्ट, सभी प्रकार के सुखों का नाश, मातृभूमि से जुदाई, मानसिक अशान्ति।

उपरिलिखित फलादेश हमने गोचर-शास्त्रों से नकल करके लिखा है। इस वर्ष के वर्षचक्र से कोई भी ग्रह आपके अनुकूल नहीं है आप की साढ़सती भी चल रही है।

"वृश्चिक राशि का वर्षफल

सम्पादक की दृष्टि से

उपरिलिखित फलादेश पढ़कर आप मत घबराइये, वेध अष्टकवर्ग दृष्टि को ध्यान में रखना गोचरफल के लिये जरूरी होता है। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ज्योतिष फलित के आधार से यह वर्ष दौड़ धूप तथा संघर्ष का अवश्य होगा, दिनों दिन नई-नई परेशानियों से सामना होने के बावजूद भी इस वर्ष कोई विशेष दुर्घटना नहीं होगी, शरीर सुख आपका इस वर्ष ढांवांढोल स्थिति में रहेगा, कभी एक अंग में और कभी दूसरे अंग में तकलीफ होता रहेगा परन्तु शरीर तकलीफ के साथ साथ दैनिक काम भी चलाते रहेंगे। गृहस्थी होने पर अगर दैव-योग से आप शरीर से स्वस्थ भी रहेंगे परन्तु आपकी स्त्री का शरीर आपके लिये परेशानी का कारण बनेगा, इस वर्ष दवाइयों पर आमदनी का विशेष भाग खर्च करना पड़ेगा। अगर आप जमींदार हैं तो घर में प्रसूत अर्थात् सूई हुई गाय रखने का प्रबन्ध कीजिये। प्रातः उठकर गौ माता को प्रणाम करके सफाई करके उसे खाने पिलाने का प्रोग्राम बनायें।

गोसेवा करते करते उच्चारण करते जायें।

"न गोषु तुल्यं धनमस्ति किंचित्। दुह्यन्ति वाह्यन्ति हरन्ति पापं।।
तृणानि भुक्त्वा अमृतं स्रवन्ति, विप्रेषु दत्वा कुलमुद्धरन्ति ।।"

जो वृश्चिक राशिवाला घर में गाय न रख सके तो भी हर रविवार को गाय को गुड़ अथवा भूसा आदि खिलाकर प्रणाम कीजिये, हो सके तो किसी गरीब जमींदार को जिसके पास गाय हो उसको गाय के लिये दान के रूप में खली भूसा आदि अवश्य दीजिये आप निश्चय रखिये इस उपाय को करने से बहुत हद तक आपको शरीर कष्ट से छुटकारा मिलेगा यदि भाग्यवश कोई वृश्चिक राशिवाला भयंकर, शरीर संकट में उलझा हुआ है तो उसके उपाय के रूप में दूध वाली गाय दान के रूप में किसी ऐसे पात्र को दीजिये जो उस गाय की तनमन से सेवा करेगा। गृहस्थी होने पर यदि आपको लड़के अथवा लड़की का विवाह रचाने का प्रोग्राम है, यदि हो सकें तो ऐसा प्रोग्राम इस वर्ष बनायें ही नहीं, अगर आप मजबूर हैं तो अगस्त के अन्त तक ऐसा प्रोग्राम न बनायें, यदि आप अगस्त तक विवाह सम्बन्धित प्रोग्राम रचाना चाहते हैं तो निश्चय रखिये प्रोग्राम रद्द करना पड़ेगा, इसलिये आवश्यक है अगस्त तक कदापि कोई विवाह सम्बन्धित शुभकार्य रचाने का प्रोग्राम न बनायें। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष आपके लिये लाभदायक ही रहेगा, यदि आप सर्वसाधारण दुकानदार हैं तो आप का काम तसल्लीबख्श रूप में चलता रहेगा, परन्तु काम में कोई अधिक तर्की नहीं होगी अपितु आपका काम यथाक्रम चलता रहेगा। मशीनरी लोहा सीमेंट लकड़ी तेल सम्बन्धित कारोबार वाले अधिक से अधिक दौड़धूप तथा संघर्ष में रहेंगे परन्तु वर्ष के अन्त पर यह वर्ष आमदनी की दृष्टि से परेशानी का होगा। कपड़े तथा खाद्यपदार्थों से सम्बन्धित वृश्चिक राशिवाले व्योपारी आशा से अधिक लाभ में रहेंगे, यद्यपि व्योपारी वर्ग लाभ में रहेगा भी परन्तु कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। अगर आपके कारोबार का साधन जमीन अथवा बागात हैं तो आमदनी की दृष्टि से आपके लिये परेशानी का वर्ष होगा, विशेषकर फलों के व्योपारियों को सावधान होकर बागों तथा फलों की खरीद करनी चाहिये, बेचने में जितनी जल्दी हो जाये बेचें परन्तु खरीदने में जितनी देरी होगी वह देरी आपके लिये लाभदायक रहेगी। जो वृश्चिक राशिवाले ठेकेदारी का काम करते हैं, उनके लिये यह वर्ष परेशानी का है, जिस आशा से जो काम आप आरम्भ करेंगे वह आशा आपकी पूरी होगी नहीं, पैसे की कमी आपके लिये विशेष परेशानी का कारण होगी।

अगर आपका इस वर्ष कोई तामीरी काम करने का विचार है होसके तो इस वर्ष स्थगित करें, अगर ऐसा सम्भव न होसके तो घर के किसी दूसरे सदस्य के नाम से जिसकी राशि वृश्चिक न हो अथवा जिसकी साढ़सती न चलती हो, उसके नाम से तामीरी काम आरम्भ करना ठीक रहेगा। अगर आपने वाहन आदि खरीदना हो तो अपने नाम से न लीजिये। किसी दूसरे के नाम से लेना आपके लिए लाभदायक रहेगा। घर से बाहर रहने से आपका शरीर स्वस्थ रहेगा और मानसिक शान्ति भी बनी

रहेगी परन्तु धन की दृष्टि से यात्रा आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगी,
अपितु यात्राओं पर खर्च ही होगा। नौकरीपेशा वाले वृश्चिक राशिवाले
इस वर्ष हद से ज्यादा परेशान रहेंगे जबकि शनि शत्रु दृष्टि से आप के
दरबार के स्थान को देख रहा है। आपको इस वर्ष अचानक दरबार
सम्बन्धित किसी संकट से दुचार होगी। इस लिए आपको सावधान
रहना चाहिए, आप पर रिश्वतखोरी का आरोप लगेगा, ऐसा भी सम्भव
है आप रंगे हाथों पकड़े जावोगे। इसलिए उपाय के रूप में यह मेरी
भविष्यवाणी पढ़ते ही रिश्वत न लेने की प्रतिज्ञा कीजिए। इस बात को
नोट कीजिये . अगर आप मेरे इस लिखे उपाय को अपनायेंगे नहीं तो
बाद में पछताना पड़ेगा। जो वृश्चिक राशि वाले नौकरी की तलाश में
हैं अगस्त मास तक नौकरी मिलने की कोई आशा न रखें, सम्भव है
अगस्त के बाद आपका मसला हल होगा परन्तु कोई निश्चित बात नहीं
है कि आपको इस वर्ष में नौकरी मिलेगी हो सके तो घर से बाहर
नौकरी की तलाश में आप निकलें, घर से बाहर सम्भव है नौकरी
मिल जायेगी। विद्यार्थी होने पर आपको पढ़ाई की ओर प्रवृत्ति कम
रहेगी, पठन-पाठन का अवसर भी कम मिलेगा। सैरसपाटा तथा भाई-
बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलना जुलाना इस वर्ष का विशेष व्यसन होगा
जो कि आपकी पढ़ाई में बाधक बनेगा। ग्रहों के प्रभाव से अगर
आपको सफलता मिलेगी भी परन्तु वह सफलता सन्तोषजनक
नहीं होगी। अगर आपको यह वर्ष पढ़ाई की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वर्ष है
जिस वर्ष के आधार पर आपका जीवन बन सकता है, आप उ..

अवश्य करें आज से आप किसी बुजर्ग विशेषतया मातापिता तथा बड़े भाई से तेज कलामी से पेश नहीं आयेंगे। यदि किसी बुजर्ग के साथ नाराजगी है तो उनसे क्षमा मांगकर अपनी गलती का प्रायश्चित कीजिये— तात्पर्य यह कि बुजर्ग को खुश रखना ही आपकी सफलता का एक मात्र उपाय है।

वृश्चिक राशि का मासिक फल

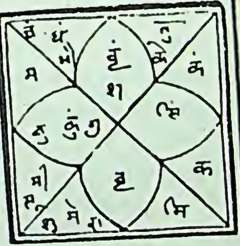

अप्रैल—शरीर-सुख मध्यम रहेगा, काम करने में रुचि नहीं रहेगी, आलस्य की अधिकता. गृहस्थी होने पर घर की उलझने मास भर आप को घेरे रखेंगी. भाई-बन्धुओं रिश्ते-दारों से नाराजगी, अचानक झगड़े खड़ा होने का योग है जो झगड़े आपकी परेशानी के कारण होंगे। जाईदाद अथवा कोई तामीरी काम आरम्भ करने का प्रोग्राम बनेगा आप ऐसे प्रोग्राम को शीघ्रातिशीघ्र कार्यरूप दीजिए ऐसा प्रोग्राम आपके लिए शान्ति का कारण होगा। शनि चूंकि इस वर्ष आपका अच्छी पुजिशन में नहीं है, अत: लोहा मिशीनरी तेल सीमेंट आदि के व्योपारी यद्यपि देखने में रात दिन काम में जुटे रहेंगे भी परन्तु अन्त में आपका कारोबार इस मास में सफल नहीं रहेगा। उपाय के रूप में आप किसी

मन्दिर अथवा संस्था को सीमेंट, टीन आदि यथाशक्ति दान के रूप में दीजिये। यह उपाय आपके कारोबार को सफल बनाने में सहायक रहेगा। नौकरीपेशा वृश्चिक राशि वाले हर आरम्भ किये हुये काम में सफल होंगे, आदर मान व प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह मासउत्तम है विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति का है, जिस विद्या सम्बन्धित काम में आपका हाथ होगा सफलता अवश्य होगी इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—3, 4, 10, 11, 13, 14, 20 21, 22, 26 और 27।

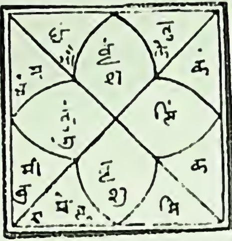

मई—इस मास में केवल भौम अच्छी पुजिशन में नहीं हैं, वुध वृहस्पति और शनि अशुभ भावों में होते हुये भी वेध में पड़े हैं। गोचर शास्त्रों का कहना है जो ग्रह अशुभ भाव में भी हो वेध और अष्टकवर्ग की कसौटी पर खरा उतरें वह ग्रह शुभ फलदायक हैं यदि आप शरीर से स्वस्थ है तो इस मास में आप वहुत हद तक स्वस्थ रहेंगे। गृहस्थी होने पर अगर घर के किसी सदस्य की शरीर सम्बन्धित परेशानी है वह परेशानी भी वहुत हद तक दूर होगी। भौम का अधिक प्रभाव आपके धन पर होगा, आप को धन प्राप्त करने के लिये अधिक परिश्रम करना होगा, ऐसा करने के वावजूद भी मनोवांछित लाभ नहीं मिलेगा। भाई-वन्धुओं रिश्तेदारों से मेल मिलाप में वृद्धि होगी। घर मे कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, यदि ऐसा सम्भव न हो तो भी पार्टियों मे सम्मिलित होना होगा, मातृपक्ष या ननिहाल से आपको कुछ लाभ मिलेगा गृहस्थी होने पर सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति होगी। अगर आप को घर मे लड़के अथवा लड़की के विवाह की समस्या विचाराधीन है, इस मास में वह समस्या या तो हल होगी या तो विवाह की वात कहीं निश्चित होगी। यदि आप किसी झगड़े मे उलझे हुये हैं उसका समाधान आपके हक में होगा, शत्रुओं पर विजय होगी, स्त्रीपक्ष अथवा ससुराल से लाभ मिलेगा। सामाजिक अथवा धार्मिक कामों मे सम्मिलित होने का अवसर मिलेगा। यदि आप व्योपारी हैं तो आपका व्योपार इस मास में लाभ में रहेगा। नौकरीपेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। यदि आप नौकरी की तलाश मे हैं तो इस मास मे नौकरी मिलनी की आशा दृढ़ हो जायेगी विद्यार्थी वर्ग के लिए हर विद्या सम्बन्धित काम में सफलता का मास है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिए:—1, 7, 8, 15, 18, 19, 20 और 28।

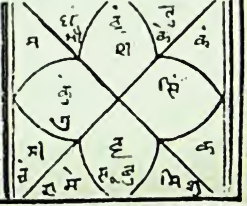

जून—गोचर के आधार से सभी ग्रह हानिकारक भावों मे ठहरे हैं परन्तु भौम और शनि को छोड़कर शेप सभी ग्रह वेध मे हैं। वेध मे गया हुआ ग्रह

शेष राशिफल अन्त में देखें

जुलाई :—इस मास में केवल चन्द्रमा और शुक्र अच्छी स्थिति में हैं शेष सभी ग्रह आपके प्रतिकूल हैं यह मास हर पहलू से परेशानी का है परन्तु सभी कष्टों और परेशानियों का सामना करने मे आपका धैर्य स्थिर रहेगा और धार्मिक कामों की प्रवृति बनी रहेगी, शरीर के विषय में यदि आप पहले से परेशान हैं तो वह परेशानी इस मास में भी बनी ही रहेगी। अगर आप गृहस्थी हैं और आपको किसी घरेलू परेशानी ने घेरे रखा है तो वह परेशानी भी यथावत् रहेगी, यदि आप तिजारत पेशा हैं और अनाज से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो इस मास को अपने लिये मनहूस मानिये। उपाय के रूप में हर शनिवार को कुत्तों को अवश्य रोटियां डाला करें। कपड़े तथा किरयाना से सम्बन्धित कारोबार करने वाले व्यापारी यथावत् काम में लगे रहेंगे, कोई तरक्की आदि का योग नहीं है, यदि आपके कारोबार का सम्बन्ध किसी फैक्ट्री से है तो आपको अकस्मात् हानि पहुंचने का योग है, अतः सावधान रहिये। फलों से सम्बन्धित व्यापारी इस मास में खरीद फरोख्त दोनों सूरतों में लाभ में रहेंगे। नौकरी-पेशा वृश्चिक राशि वालों को दिनों दिन नई नई परेशानियों का सामना करना होगा, दफ्तर के सम्बन्धित कार्य कर्ताओं के साथ अचानक अनबन अथवा सम्बन्धित अफसरों से

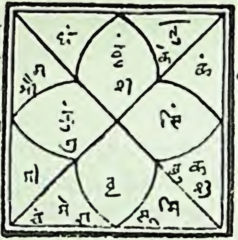

नाराजगी। खर्च के ग्रह इस मास में बलवान् हैं, खर्च हद से ज्यादा होगा, यहाँ तक कि कर्जा लेने तक मजबूर होना होगा अगर आप ने कोई तामीरी काम आरम्भ करना है अथवा कोई जायदाद खरीदने का प्रोग्राम है, ऐसा काम जिसमें खर्च करना हो अवश्य इस मास में करें। अगर आपने इस वर्ष घर में कोई मंगल काम करना है तो इस महीना में वह प्रोग्राम बनायें। खर्च के सभी प्रोग्राम इस मास में अनुकूल रहेंगे। विद्यार्थियो के लिये यह मास विद्या सम्बन्धित हर काम के लिये उलझन का होगा, पठन-पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—1, 2, 11, 12, 13, 17, 18, 28 और 29।

अगस्त :—इस मास में आपको केवल राहु और शुक्र अच्छी स्थिति में हैं शेष सभी ग्रह अच्छी पुजिशन में नहीं है। आपकी साढसती चल रही है। चौथा बृहस्पति भी आपका चल रहा है जो कि अशुभ माना जाता है। सामान्यतः यह मास भी अशान्त वातावरण में ही व्यतीत होगा। कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। हर आरम्भ किये हुए काम में बाधाएँ तथा रुकावटें आती रहेंगी। शरीर भी अस्वस्थ रहेगा। आर्थिक दशा इस मास में ठीक रहेगी जबकि इस

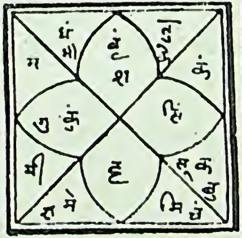

मास में आपको ग्यारहवें भाव में शुक्र ठहरा है। यदि आप तिजारत पेशा हैं तो यह मास लाभ की दृष्टि से आपके लिए महत्वपूर्ण है, विशेषतया उन व्यापारियों के लिए लाभदायक है जिनके कारोबार का सम्बन्ध थोक काम से है परचून व्यापारियों का काम यथावत् चलता रहेगा। फलों से सम्बन्धित व्यापारियों को अधिक दौड़धूप में यह महीना गुजरेगा परन्तु इच्छानुसार लाभ नहीं मिलेगा। जो वृश्चिक राशि वाले ठेकेदारी का काम करते हैं उनका काम धन की कमी से सुस्त पड़ेगा, ठेकेदारों के लिए यह मास अशान्ति का है। यदि आपने कोई तामीरी काम करना हो अथवा जायदाद आदि बेचना या खरीदना हो तो इस मास में कभी भी ऐसे काम का मन में विचार भी न लायें, ऐसे कामों के लिए यह मास मनहूस है। अगर कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम है तो इस मास के लांग जाने पर ही ऐसा कोई प्रोग्राम बनायें। अगर कारोबार को विशाल रूप देने का अथवा धन खर्च करने का विचार है तो ऐसा कार्य शुक्र के प्रभाव से आपके लिए लाभदायक रहेगा। यदि आप नौकरी पेशा हैं यह मास हर प्रकार से आपके लिए परेशानी का होगा आपको नौकरी सम्बन्धित कोई समस्या हो वह इस महीने में लटकती रहेगी, आपका कोई आरम्भ किया हुआ काम ठिकाने नहीं लगेगा, यदि तरक्की का कोई सिलसिला है तो आप उसकी आशा में न रहें अपितु आप अपने वर्तमान पदवी को ही संभाले रखने में सावधान रहिये। शुक्र आपके विद्या के घर को देख रहा है जिसके प्रभाव से विद्यार्थियों को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन हैं :—7, 8, 9, 10, 14, 15, 24 और 25।

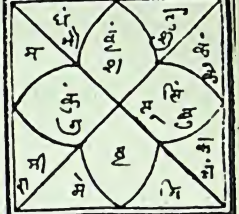

सितम्बर :—इस मास में ग्रहों की स्थिति कुछ कुछ सुधरी हुई है। चन्द्रमा भी वेध में होने से शुभ है। अष्टकवर्ग दृष्टि आदि पर विचार करने से गोचर शास्त्रों के आधार से विदित होता है—यह मास गत मासों की अपेक्षा शान्ति तथा सुख के वातावरण में गुजरेगा। शरीर सुख कुछ ठीक रहेगा। गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा। यदि घर में कोई परेशानी है तो वह परेशानी इस मास में समाप्त होगी। यदि आप की माता बीमार है, इस मास में उनके शरीर के विषय में सावधान रहिये। गृहस्थी होने पर आपको सन्तानपक्ष से मानसिक शांति रहेगी। घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, जो शान्तिपूर्वक सम्पन्न होगा। व्यापारी वर्ग के लिये यह मास संघर्ष का होगा परन्तु संघर्ष के साथ-साथ लाभ का भी योग है। फलों के व्यापारियों के लिये यह मास विशेषतया लाभ का होगा, पर लोहे से सम्बन्धित व्यापारियों के लिये हानि का होगा। यदि आपकी आय का साधन केवल जमीन है तो यह महीना आपकी आर्थिक तंगदस्ती को दूर करने में सहायक होगा। नौकरी पेशा वृश्चिक

राशि वालों के लिये यह मास सुख शान्ति का है। दफ्तरी जिस काम में आपका हाथ होगा सफलता निश्चित है। तब्दीली का भी योग है, वह तब्दीली आपके लिये लाभदायक रहेगी, अगर आपको तरक्की का सिलसिला चल रहा है तो वह तरक्की भी इस मास में मिलने का योग नहीं है अपितु आपकी तरक्की का सिलसिला बहुत देर तक लटकता रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं:—3, 4, 5, 6, 7, 10, 11, 14, 15, 21, 22 और 30।

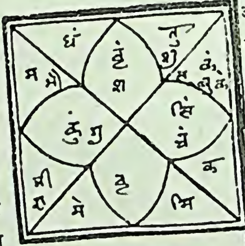

अक्टूबर :—गोचर शास्त्र के मर्मज्ञों का कहना है। मासिक फल में सूर्य चन्द्रमा का अच्छी स्थिति में होना, वर्ष भर के सुख शान्ति का सूचक होता है। इस मास में आपका सूर्य ग्यारवें भाव में है। ग्यारवें सूर्य के बारे में गोचर शास्त्रों में दर्ज है धन का लाभ होता है, खाने को उत्तम भोजन मिलता है, दूर देश की यात्रायें होती हैं। नौकरी पेशा होने पर तर्की मिलती हैं,कोई नई पदवी मिलती है,शरीर ठीक रहता है,आध्यात्मिक अथवा मंगल कार्यों के प्रोग्राम बनते रहेंगें, माता-पिता की ओर से लाभ मिलता है। दसवें चन्द्रमा के बारे में गोचर शास्त्रों का कहना है-हर एक काम में सिद्धि होती है, शरीर ठीक रहता है, नौकरी पेशा होने पर दरबार में तर्की तथा आदर मिलता है, अफसर लोग खुश रहते हैं, हर प्रकार से सुख व शान्ति की प्राप्ति होती है।

शेष ग्रहों की स्थिति भी वेध और अष्टक वर्ग के आधार से कुछ सुधरी हुई हैं, शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति को दृष्टि में रखकर यही विदित होता है-यह मास सामान्य तौर से सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा शरीर सुख प्रायः उत्तम रहेगा। गृहस्थी होने पर घर के किसी सदस्य की यदि शरीर सम्बन्धी कोई परेशानी है वह परेशानी भी ग्रहों के प्रभाव से स्वयं ही दूर होगी। कमाई के लिये भी यह मास प्रायः उत्तम ही रहेगा अगर आप कपड़ा, किरया का थोक काम करते हैं तो आप का कारोबार मनोवांछित रूप में चलेगा नहीं, अगर आप परचून का काम करते हैं तो इस मास में आप को आशा से अधिक लाभ होगा। लोहे मिशीनरी सम्बन्धित काम करने वालों को इस मास में लाभ की कोई आशा नहीं है। नौकरी पेशा वाले वृश्चिक राशि वालों को यह मास संघर्ष तथा दौड़ धूप में ही गुजरेगा, प्रायः मानसिक अशान्ति रहा करेगी। विद्यार्थी वर्ग को पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी। सैर-सपाटा तथा मित्र-मिलाप में अधिक व्यस्त रहोगे। इस मास के शुभ दिन हैं—1,2,3,4,7,11,12,18,19. 28,29,30 और 31।

नवम्बर :— इस मास के आरम्भ में सूर्य चन्द्रमा बुध ब्रहस्पति तथा शनि ये पाँचों ग्रह अशुभ भाव में होने पर भी वेध में होने से अशुभ होते हुये भी शुभ हैं। शुभ-अशुभ ग्रहों पर गोचर शास्त्रों के आधार से विदित होता है, यह मास डांवांडोल स्थिति में गुजरेगा, शरीर सुख मध्यम रहेगा

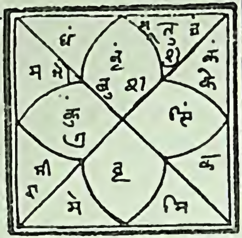

घर में अचानक किसी सदस्य की परेशानी पैदा होगी। यदि आप गृहस्थी हैं तो स्त्री की ओर से मानसिक अशान्ति बनी रहेगी जबकि आपको इस मास के आरम्भ पर बारवें भाव में शुक्र आ पड़ा है। शुक्र का प्रभाव इस मास में आप पर विशेषतया बना रहेगा। बारवें शुक्र के बारे में गोचर शास्त्रों में कहा है मित्रों के मेल मिलाप में वृद्धि होती है, अन्न तथा धन की प्राप्ति होती है। आपके आय तथा व्योपार पर शुक्र अधिक प्रभावशाली रहेगा, अगर आप कपड़े का कारोबार करते हैं तो अकस्मात हानि की सम्भावना है। लोहे मिशीनरी सम्बन्धित कारोबार होने पर यह मास हर प्रकार से लाभदायक रहेगा, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो यह मास हाथ पर हाथ धर कर बैठने का होगा, किसी भी काम करने से दिलचस्पी नहीं रहेगी,फलों से सम्बन्धित व्यापारी वर्ग के लिये इस मास में फल बागात आदि खरीदना लाभदायक रहेगा। नौकरी पेशा वृश्चिक राशि वालों के लिये यह मास यथावत् चलता रहेगा यदि दरबार सम्बन्धित कोई परेशानी है तो वह परेशानी ज्यूं की त्यूं बनी रहेगी। इस मास में अचानक कोई तामीरी काम आरम्भ करने का प्रोग्राम बनेगा, जो कि शीघ्र ही सम्पन्न भी होगा। यदि आप कोई जाईदाद खरीदने का विचार रखते हैं तो उस विचार को अमली रूप दीजिये, ऐसा काम आप के लिये लाभदायक रहेगा। यात्रा की भी सम्भावना है जो यात्रा आपके लिये परेशानी का कारण होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये हर प्रकार से अशान्ति का मास है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये-3,4,5,14,15,24,25,26 और 27

दिसम्बर :— मास के आरम्भ पर पहले भाव में सूर्य चन्द्रमा शनि की युति ज्योतिष गोचर मे हानि कारक मानी गई है। शरीर कष्ट का योग है। यदि दैवयोग से उस कष्ट से बचने का एक मात्र उपाय है—सवा किलो मसूर की दाल-सवा किलो मूंग की दालपाँच किलो चावल इस मास की

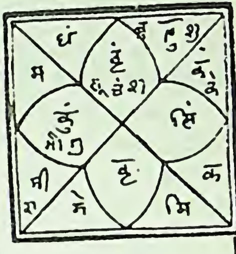

शेष फलादेश राशिफल के अन्त में देखिये

धनु राशि का भावफल गोचर शास्त्रों से

सूर्य :—चौथे भाव में होने से मन तथा शरीर की पीड़ा रहती है, घरेलू झगड़ों का जोर रहता है, जमीन जायदाद सम्बन्धित समस्यायें पैदा होती हैं, यात्रा में कष्ट होता है, गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से परेशानी रहती है, मान-हानि होती है।

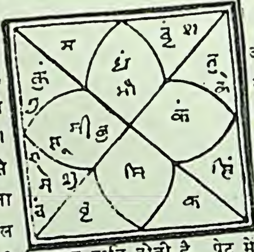

चन्द्रमा : पांचवें भाव में होने से यात्रा में तकलीफ अथवा दुर्घटना होती है, कोई भी कार्य पूरा तथा सफल नहीं होता है, मानसिक अशान्ति होती है, धन हानि होती है, पेट में रोग उत्पन्न होने की सम्भावना होती है, विषय वासना में वृद्धि होती है, सोच विचार करने की शक्ति में कमजोरी आती है।

भौम : पहले भाव में होने से किसी काम में सफलता नहीं होती है, शरीर सुख का अभाव रहता है, दुर्घटना की भी सम्भावना होती है, गृहस्थी होने पर स्त्री के शरीर-कष्ट से परेशानी रहती है।

बुध :—चौथे भाव में होने से धन का लाभ होता है, माता की ओर से सुख मिलता है, जमीन जायदाद में वृद्धि होती है, अच्छे पुरुषों से मेलमिलाप में वृद्धि होती है, घरेलू सुख भी उत्तम मिलता है।

बृहस्पति :—जब तीसरे में होता है तो शरीर कष्ट होता है परिवार में नाराजगी होती है, रोजगारी में रुकावटें खड़ी होती हैं, नौकरी अर्थात् दरबार की ओर से भी परेशानी रहती है, सम्बन्धित मुलाजिमों से भी अनबन होती है, मित्र भी शत्रु बनते हैं, धन हानि और मान हानि होती है।

शुक्र :—पांचवें भाव में होने से परिवार से प्रेम में वृद्धि होती है, अन्न तथा धन की प्राप्ति होती, उत्तम दर्जे का खाना पीना मिलता है, यश में वृद्धि होती है, शत्रुओं पर विजय होती है, नौकरी पेशा होने पर विभागीय परीक्षा में सफल होता है, सिनेमा क्लबों आदि में जाने अधिक प्रवृत्ति होती है।

शनि :—बारहवें भाव में होने से अपने परिवार या घर से दूर रहना पड़ता है, सम्बन्धियों तथा प्रतिष्ठित लोगों से मतभेद होता है धन निरर्थक खर्च होता है, शरीर बिगड़ता है, गृहस्थी होने पर सन्तानपक्ष से परेशानी बनी रहती है।

राहु :—पांचवें भाव में राहु होने से धन और ऐश्वर्य में वृद्धि होती है, सट्टा अथवा लाटरी से लाभ मिलता है, भाग्य की वृद्धि होती है।

केतु :—ग्यारहवें भाव में होने से लाभ में वृद्धि होती है, अचानक कोई जायदाद अथवा धन मिलता है, मित्रों से मेलमिलाप होता हैं।

धनु राशि का वर्षफल

आपका शरीर इस वर्ष प्रायः अस्वस्थ रहेगा जबकि वर्ष के आरम्भ पर ही भौम आपके पहले भाव में ठहरा है जो दिसम्बर तक धन राशि में ही ठहरेगा, भौम इस वर्ष आपका प्रभावित ग्रह है। यद्यपि शनि आपकी परेशानी का साधन बना हुआ है परन्तु दिसम्बर तक शनि को सहायक ग्रह भौम भी बना रहेगा, इस क्रूर योग के प्रभाव से आप सावधान रहिये, अचानक शरीर बिगड़ने की सम्भावना, चोट लगने का अन्देशा अथवा अचानक आप्रेशन करने के लिये विवश होना पड़ेगा। आप उपाय अवश्य करें, आप निश्चय रखिये कि उपाय करने से आप शरीर सम्बन्धित संकट से बच जाओगे। उपाय :- (1) अगर आप किसी नशीली वस्तु का प्रयोग करते हैं तो आज से ही उस नशीली वस्तु का प्रयोग न करने की प्रतिज्ञा करें। (2) घर के किसी बुजुर्ग की आप पर नाराजगी हो तो वह नाराजगी आपके शरीर बिगाड़ने में विशेष कारण है इसलिए उस बुजुर्ग के चरण पकड़कर उनसे क्षमा मांगें, उनका आशीर्वाद आपको शरीर-कष्ट से बचाने में रामबाण का काम करेगा। (3) आप नित्य 'बहुरूपमर्म' 'महिम्नस्तोत्र' का पाठ किया करें, अगर आप स्वयं पाठ नहीं कर सकेंगे तो आप हमारे कार्यालय जम्मू से बहुरूपमर्म और महिम्नस्तोत्र का कैसेट मंगवाकर प्रातः उसका श्रवण किया करें, जितनी देर पाठ होगा धूप जलाकर आप शुद्ध आसन पर पद्मासन करके बैठें। (4) मंगलवार को कभी भी मांस का प्रयोग न करें, गृहस्थी होने पर भौम के प्रभाव से आपकी स्त्री भी शरीर से अस्वस्थ रहेगी, उसके लिए भी ऊपरलिखित उपाय प्रभावशाली रहेगा। अगर दैवयोग से आपकी स्त्री शरीर कष्ट से बच भी जाये तो भी आपके घर का कोई निकटतम सम्बन्धी का शरीर आपकी परेशानी का कारण बनेगा, इसके लिये उपाय हैं कि उसका गेहूं या मक्की का तुलादान कीजिये—तुलादान करने का ढंग है—बीमार का जितना वजन होगा उतने वजन का लाल अनाज मंगलवार को किसी सुयोग्य पात्र को दीजिये। आपको जायदाद सम्बन्धित भी कोई उलझन खड़ी होगी जिस किसी महोत्सव का प्रोग्राम बनायेंगे तो वह प्रोग्राम कुछ कुछ शान्त वातावरण में ही सम्पूर्ण होगा। विद्यार्थियों के लिए भी यह वर्ष उलझन का ही होगा, विद्या सम्बन्धित कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। आपके ग्रह इस वर्ष अनुकूल नहीं हैं परन्तु इतने हानिकारक भी नहीं कि आपके परिश्रम को बिल्कुल असफल बनाये। आप प्रयत्न करें—आपके परिश्रम का फल अगर सन्तोषजनक रूप में मिलने का योग नहीं परन्तु असफलता की भी कोई सम्भावना नहीं। उपाय है कि आप वर्ष भर इस बात का ध्यान रखें कि आपकी ओर से किसी बुजुर्ग का दिल दुःखित न हो, न ही आप किसी बुजुर्ग के साथ तेज कलामी से पेश आयें। यदि आप मेरे इस उपाय को अपना अपनायेंगे तो आप की सफलता निश्चित है।

धनु राशि मा मासिक फल

अप्रैल :—चन्द्रमा का लग्न में होना शुभ माना जाता है तथा भौम का पहले भाव में होना हानिकारक माना जाता है। इस शुभ अशुभ मिले जुले योग के प्रभाव में आपका शरीर कदरे ढीला रहेगा। कभी एक अंग में कमजोरी और कभी दूसरे अंग में मजोरी अथवा थोड़ा बहुत तकलीफ रहा करेगा परन्तु ऐसा कोई शरीर कष्ट नहीं होगा जो आपके कारोबार या कामकाज में बाधक होगा। कारोबार की दृष्टि से यह मास प्रायः ठीक ही रहेगा। यदि आप किसी कारखाना या फैक्ट्री से सम्बन्धित काम करते तो यह महीना आपके लिए विशेष लाभदायक रहेगा। आपका कारोबार किरयाना व परचून काम से है तो यह मास यथावत् चलता रहेगा, फलों में सम्बन्धित व्यापारियों का काम काज भी ढीला रहेगा। यदि आप दिसम्बर तक माल यानि फल अथवा बाग बेचोगे तो लाभ में रहोगे, और अगर दिसम्बर तक माल खरीदोगे तो हानि में रहोगे। यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो इस मास में लाभ में रहोगे। नौकरी पेशा धनु राशि वालों के लिए यह मास दौड़-धूप तथा संघर्ष का होगा परन्तु आदर व मान की दृष्टि से यह मास उत्तम है पर खर्च की दृष्टि से भी यह मास बलवान है खर्च इस मास में अधिक होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सफलता का है, विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—1, 2, 5, 6, 12 13,

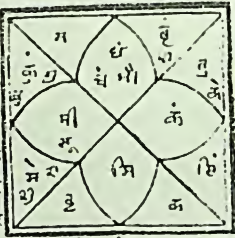

मई :—गोचर से पांचवें भाव का सूर्य हानिकारक माना गया है परन्तु शुक्र के वेध में होने से हानिकारक नहीं है दूसरे भाव का चन्द्रमा अशुभ फलदायक होता है। चौथे भाव का बुध उत्तम माना जाता है, तीसरे भाव का बृहस्पति यद्यपि हानिकारक है भी परन्तु चन्द्रमा के वेध में होने से शुभ है छटे भाव का शुक्र अशुभ फल दायक होता है परन्तु शनि के वेध में होने से शुभ फल दायक है। बारवां शनि हानिकारक माना गया है परन्तु ऐसा होने पर केतु के वेध में होने से शुभ फलदायक ही होगा। सामूहिक रूप से इस मास में प्रायः सभी ग्रह वेध और अष्टकवर्ग के आधार से सुधरे हुये हैं, केवल भौम इस मास में आप को गोचर से हानिकारक ग्रह है। भौम के प्रभाव से आप के शरीर बिगड़ने की अन्देशा है, यदि आप गृहस्थी है तो आपको स्त्री अथवा पुत्रों से शरीर की परेशानी बनी रहेगी, इस परेशानी से बचने का एक मात्र उपाय है—इस मास की रविवार को गाय को गुड़ खिलायें तथा इस दिन वैष्णव भी रहें। धन की दृष्टि से

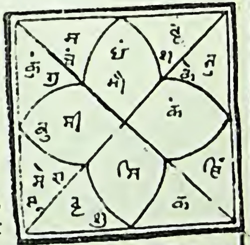

यह मास उत्तम है, आपके व्यौपार की जो भी लाईन हो, उसमें मनोवांछित लाभ मिलेगा। नौकरीपेशा होने पर नौकरी सम्बन्धी कोई परेशानी नहीं होगी बल्कि आदर व मान की दृष्टि से यह मास उत्तम है, सम्बन्धित अफसरों से मेल मिलाप में वृद्धि होगी। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास हर प्रकार से सफलता का है। पठन-पाठन की प्रवृत्ति बनी रहेगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—3, 4, 10, 11, 19, 20, 21, 22, 26, 27, 30 और 31।

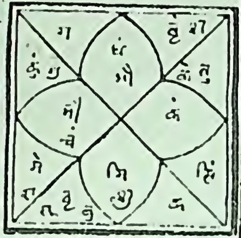

जून :—वेध अष्टकवर्ग तथा गोचर शास्त्र के सिद्धान्तों को दृष्टि में रखकर विदित होता है—यह मास यद्यपि संघर्ष तथा दौड़धूप का होगा भी परन्तु प्रायः हर काम में सफलता होगी। शरीर के विषय में सावधान रहना आवश्यक है। भौम देवता आप के गृहस्थी होने पर आपकी स्त्री को भी अशान्त बनाये रखेगा अथवा उसके शरीर को प्रभावित करेगा। उपाय के रूप में प्रातः उठकर इस मास में लगातार पक्षियों को मक्की अथवा गेहूं खाने के लिये डाला करें। इस उपाय को अमली रूप रूप देने से आप की शरीर सम्बन्धित चिन्ता कुछ कुछ शांत हो जायगी आर्थिक दृष्टि से यह मास यथावत् चलता रहेगा। इस मास में आमदनी खर्च के समान ही होगी। यदि आप का कोई जाईदाद बनाने का अथवा कोई तामीरी काम आरम्भ करने का विचार है तो इस मास में ऐसे काम का श्रीगणेश करें, बिना किसी उलझन के ऐसा काम सिद्ध होगा। यात्रा का योग बनेगा, जो यात्रा आपके लिये लाभदायक होगी। अच्छे अच्छे पुरुषों की संगत में बैठने का अवसर मिलेगा। धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी। घर में अतिथियों का यातायात जोरों पर रहेगा। अतिथि सेवा में प्रायः व्यस्त रहोगे। पार्टियां देना अथवा पार्टियों में शामिल होना इस मास का विशेष व्यसन होगा। गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से आपको मानसिक शान्ति रहेगी। घर में कोई मंगलकार्य रचाने का अचानक प्रोग्राम बनेगा। विद्यार्थियों के लिये यह मास डांवांडोल स्थिति का होगा। विद्या सम्बन्धित कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये—6, 7, 16, 17, 22, 23, 26 और 27।

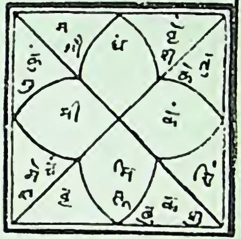

जुलाई :—इस मास में अधिक प्रभावशाली ग्रह आपको आठवां बुध और आठवां शुक्र है। जिसके प्रभाव से आप को यह मास प्रायः शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा, परन्तु शरीर की समस्या अथवा आप को गृहस्थ की चिता यथावत् चलती रहेगी, कारोबार की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा। यदि

आप लोहे सीमेंट लकड़ी तेल आदि से सम्बन्धित कारोबार करते हैं, आप का काम इस महीना में ढीला पड़ेगा, अगर आप कपड़े अथवा किरयाना के थोक व्योपारी हैं तो आप का कामकाज मनोवांछित रूप में चलता रहेगा। फलों के व्योपारी यद्यपि इस मास में लाभ में नहीं रहेंगे परन्तु लाभ की आशा दृढ़ हो जायेगी। नौकरी पेशा होने पर अगर कोई नौकरी सम्बन्धित परेशानी है तो इस मास में जरा सा ध्यान देने पर नौकरी सम्बन्धित हर एक परेशानी हल होगी; सम्बन्धित अफसरों तथा कार्यकर्त्ताओं से प्रेम-व्यवहार में वृद्धि होगी, दरबार में मान व प्रतिष्ठा की दृष्टि से भी यह मास उत्तम है। आय की दृष्टि-कोण से यह मास यद्यपि लाभदायक रहेगा भी परन्तु खर्च के नये नये मार्ग खुलते रहेंगे। यदि आप गृहस्थी हैं और आप को लड़के अथवा लड़की के विवाह के सम्बन्ध की समस्या है, तो वह समस्या या तो इस मास में हल हो जायेगी, नहीं तो कहीं सम्बन्ध निश्चित हो जायेगा।

खर्चे की भरमार होगी, परन्तु वह खर्च बहुत हद तक व्यर्थ ही होगा। भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा ऊपर हम लिख चुके हैं कि शरीर के विषय में सावधान रहिये जबकि भौम आपके चौथे और आठवें घर को देख रहा है। अकस्मात् चोट लगने अथवा शरीर कष्ट की भी सम्भावना है, इसलिये उपाय के रूप में यदि आप कोई वाहन आदि चलाते हैं तो मंगलवार को खुद न चलायें, मंगलवार को हो सके तो किसी भी यात्रा पर न जायें। विद्यार्थी लोग इस महीना का लाभ उठायें, जो कोई भी काम आप करेंगे उसमें सफलता होगी। इस महीने के शुभ दिन नोट कीजिये—3, 4, 13 14, 15, 16, 23, 25 और 31

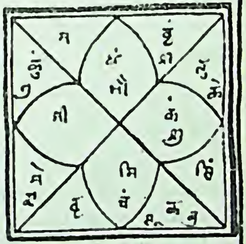

अगस्त :—इस मास में बुध आठवें भाव में होने से शरीर सम्बन्धित परेशानी होगी। गृहस्थी होने पर भौम के प्रभाव से आप परेशान रहेंगे, माता पिता की ओर से विशेष चिन्ता रहेगी, अगर दैवयोग से उस चिन्ता से बचे रहे, परन्तु तो भी सन्तानपक्ष से परेशान रहोगे। आय की दृष्टि से यह मास ढीला ही रहेगा, यदि आप तिजारतपेशा है और आप का सम्बन्ध खाद्य-पदार्थों अनाज आदि से हैं तो यह मास आप के लिये परेशानी का होगा, कपड़ा किरयाना से सम्बन्धित तिजारतपेशा लाभ में रहेंगे. फलों से सम्बन्धित व्योपारी यदि इस मास में माल खरीदेंगे तो लाभ में रहेंगे, यदि माल बेचेंगे तो हानि की सम्भावना है। जिनकी आमदनी का साधन केवल जमीन है, तो उनके लिये यह मास अधिक खर्च का होगा। नौकरीपेशा धनु राशि वाले इस मास में अधिक से अधिक दौड़धूप में रहेंगे, अचानक लाभ अथवा तर्की का योग है। यदि इस मास में यात्रा का योग बने तो वह यात्रा आपके लिये लाभदायक रहेगी। भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों तथा मित्रों से मेल

मिलाप ! घर में अतिथियों का यातायात जोरों पर रहेगा। घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बने अथवा मंगल कार्यों में सम्मिलित होने का प्रोग्राम बनेगा। सामाजिक अथवा धार्मिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी आय की दृष्टि से यद्यपि यह मास मध्यम है पर खर्च हद से ज्यादा होगा. खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास हर प्रकार से शान्ति का है। अगर आप ने कोई परीक्षा या इन्टरविव आदि दिया है तो निश्चित रूप से सफलता होगी। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में या तो नौकरी मिल जायेगी या नौकरी मिलने की आशा सुदृढ़ हो जायेगी। इस मास के शुभ दिन हैं—9, 10, 11, 12, 16, 17, 20, 21, 27 और 28।

सितम्बर :— इस मास में प्रायः सभी ग्रह अशुभ स्थानों में हैं, केवल शुक्र का ग्यारवें भाव में होना गोचर-शास्त्रों में शुभ माना जाता है परन्तु शुक्र भी वृहस्पति के वेध है मैं इस मिले जुले योग के प्रभाव से अशान्ति-दौड़ धूप तथा घरेलू परेशानियों के वातावरण में ही यह मास गुजरेगा। आठवाँ चन्द्रमा होने से बिना कारण के भी चिन्ता हर समय बनी रहेगी। शरीर स्वस्थ होते हुए भी अचानक बिगड़ने की सम्भावना है, यदि आप शरीर से पहले ही अस्वस्थ

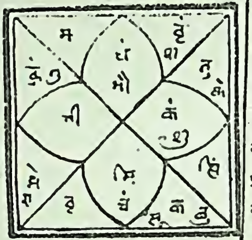

हैं तो यह मास अधिक अशुभ रहेगा। डाक्टरों से मेल मिलाप तथा आना जाना इस मास में बना ही रहेगा, शरीर सम्बन्धित परेशानी में समय तथा धन व्यर्थ ही खर्च होगा। आय की दृष्टि से भी यह मास अशुभ ही रहेगा। जिस किसी भी कारोबारी लाईन से आप सम्बन्धित होंगें, हर एक काम में आपको उलझनें खड़ी होंगी। आपका हर काम ढीला पड़ेगा। कारोबार की दृष्टि से यह मास बिल्कुल अशुभ है। अगर आप लाखों का कारोबार करने वाले व्यापारी हैं तो यह मास हानि का होगा, केवल वह व्योपारी जिनकी कोई फैक्ट्री अथवा कारखाना हो लाभ में रहेंगे. उनके काम में वृद्धि भी हो जायेगी। फलों से सम्बन्धित व्योपारी अधिक से अधिक दौड़-धूप में रहेंगे, परिश्रम करने पर भी परिश्रम के अनुसार फल मिलेगा। यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आपका काम यथावत् चलता रहेगा। गृहस्थी होने पर यदि लड़की अथवा लड़के के विषय में आप मौन रहे हैं तो यह काम सोचने सोचने ही गुजरेगा। कोई भी घरेलू समस्या हल होगी नहीं। घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, मंगल कार्यों में धन खर्च करने के प्रोग्राम बनते रहेंगे। धन की कमी होने पर भी खर्च करने पर विवश होना पड़ेगा। विद्यार्थी वर्ग को पठन-पाठन की प्रवृति कम रहेगी। सैर सपाटा तथा पार्टियों मे शामिल होना इस मास का विशेष आकर्षण होगा। इस मास के शुभ दिन है :-

6. 7. 12, 13, 16. 17, 2 और 24।

अक्टूबर :— वेध और अष्टकवर्ग के आधार से इस मास में केवल भौम अशुभ स्थिति में है, शेष ग्रहों की स्थिति अच्छी पोजीशन में है, अतः इस शुभ अशुभ योग को ध्यान में रखकर गोचर-फलित शास्त्रों के आधार में सम्भावना की राय यह है

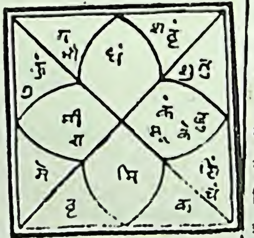

यह मास यद्यपि संघर्ष तथा दौड़-धूप का होगा भी परन्तु प्रायः हर काम में सफलता होगी, आय की दृष्टि से भी यह मास उत्तम रहेगा, जो व्यापारी लोहे मशीनरी तेल से सम्बन्धित व्योपार करते हैं वह व्यापारी डगमगाती हुई स्थिति में रहेंगे कोई मनोंवांछित लाभ रहेगा नहीं। जो व्यापारी आटा गेहूं चावल आटा आदि के स्टाकिस्ट है वह उलझन में फंस जायेंगे जहाँ से छुटकारा मिलना असम्भव होगा। कपड़े किरयाना के थोक व्यापारी हों या परचून दुकानदार दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगे, यदि आप मेवे से सम्बन्धित व्यापार करते हैं तो आप का व्यापार आशा से अधिक लाभ में रहेगा। अगर आप जमींदार है तो आप को पशुधन से लाभ मिलेगा। नौकरी पेशा होने दरबार में आपको हर प्रकार से आदर व मान तथा लाभ मिलेगा, सम्बन्धित कर्मचारियों से तथा सम्बन्धित अफसरों से मेल-जोल तथा प्रेम व्यवहार में वृद्धि होगी इस महीने में घर में कोई मंगल कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा मंगल कार्यो में सम्मिलित होने के कार्यक्रम बनते रहेंगे, खर्च की अधिकता, खर्च प्रायः शुभ कामों पर ही होगा। प्रतिष्ठित तथा आदरणीय पुरुषों से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा विद्यार्थियों के लिए यह महीना हर काम में सफलता का है। इस माह के शुभ दिन हैं :- 3, 4, 5, 6, 9, 10, 14, 15, 30 और 31

नवम्बर :— बृहस्पति और शनि का यथाक्रम तीसरे और बारवें भाव में होना गोचरफलित से अशुभ माना जाता है परन्तु यह दोनों ग्रह वेध में होने से शुभ माने जायेंगे, जबकि गोचर शास्त्रों के नियम से अशुभ ग्रह भी वेध में होने से शुभ हो जाते है। शेष सभी ग्रह अच्छी स्थिति में हैं, इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा। शरीर सुख प्रायः उत्तम होगा पहले से शरीर में कोई तकलीफ है जरा सा ध्यान देने पर अथवा नये सिरे से इलाज करवाने पर आपका शरीर स्वस्थ होगा गृहिस्थी होने पर अगर आपको स्त्री के विषय

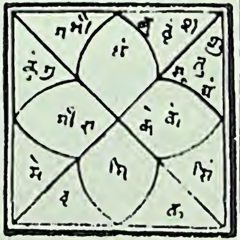

में कोई चिन्ता है वह चिन्ता स्वयं ही समाप्त हो जायेगी, यदि आप विवाहित नहीं है, आप लड़का हो या लड़की दोनों सूरतों में इस मास में विवाह होना अथवा विवाह सम्बन्ध की बात चीत पक्की हो

जायेगी। आपने अगर कोई तामीरी काम आरम्भ करना हो तो यह महीना ऐसे काम के लिए शुभ होगा। वाहन आदि खरीदने का अगर प्रोग्राम है, इस मास में ऐसा काम आपके लिए लाभप्रद रहेगा नौकरी-पेशा होने पर आपको अचानक तर्की अथवा कोई लाभ मिलना चाहिए दरवार में हर प्रकार से आदर व मान वना रहेगा, यदि आप नौकरी नहीं करते हैं और नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में यातो नोकरी मिलेगी, नहीं तो अगले तीन महीनों में मिलेगी यात्रा का भी योग है जो आपके लिए लाभ दायक रहेगी। आपको इस महीने में अचानक कोई शुभ सन्देश मिलेगा घर में कोइ मंगल कार्य रचाने का प्रवन्ध होगा अथवा किसी मित्र या सम्वन्धी के मंगल कार्य में सम्मिलित होना पडेगा जिसमें आपकी अधिक से अधिक धन राशि खर्च होगी। विद्यार्थियों के लिए यह मास विद्या सम्वन्धित हर काम में सफलता का है। इस मास के शुभ दिन हैं :—

6, 7, 10, 11, 17, 18, 26. 27, 28, 29 और 30।

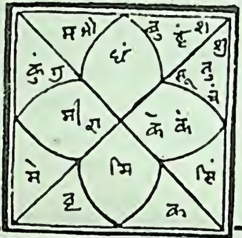

दिसम्बर :— बारवें भाव में महीने के आरम्भ पर एक साथ तीन ग्रहों का योग इस मास के आधिक संकट का सूचक है। आप अगर लोहे सीमेंन्ट तेल आदि सम्बन्धित काम अथवा किसी फैक्ट्री के मालिक हैं तो सावधान रहिये, आपको ऐसी कोई उलझन घेर लेगी जिस उलझन से निकलना आपके लिए असम्भव होगा अथवा अचानक कोई हानि होने की सम्भावना है, अगर आप खाद्यपदार्थो गेहूं-दालें-आटा आदि से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो आपको अधिक से अधिक दौडधूप करने के वावजूद भी मनोवांछित लाभ नहीं मिलेगा। कपड़ा तथा किरयाना से सम्वन्धित थोक व्योपारी हाथ पर हाथ धर कर वैठेंगे परन्तु परचून का काम करने वालों को आशा से अधिक लाभ होगा। फलों से सम्बन्धित व्यापारी वर्ग की वांधी हुई आशाओं पर पानी फिर जायेगा यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आपके काम में अचानक वाधा पड़ेगी। नौकरी पेशा धनु राशिवालों के लिए यह मास शान्ति का होगा, दरवार सम्वन्धित हर एक काम विना किसी उलजन के सिद्ध होगा विगड़े हुए काम भी सुधर जायेंगे।

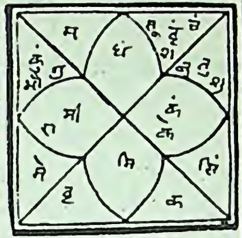

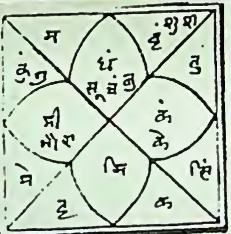

जनवरी :—इस मास में आप पर प्रभावित ग्रह भौम है जो चौथे भाव में ठहरा है चौथे भौम के बारे में गोचर-शास्त्रों में दर्ज है—शत्रुओं की वृद्धि होती है, अपने भाई-बन्धुओं से विरोध होता है, धन की कमी आती है, जमीन जाईजाद की समस्यायें पैदा होती हैं घरेलू जीवन का सुख कम मिलता है, शरीर में अचानक रोग प्रकट होता है, आदर में कमी आता है, माता को कष्ट होता है, मानसिक चिन्ता हर समय लगी रहती है। भौम के साथ चौथे भाव में राहु का होना भी हानि कारक माना गया है जैसा कि गोचर-शास्त्रों में आता है—सुख का नाश होता है, घर छोड़ना पड़ता है, अपने भाई-बन्धुओं मित्रों से सहायता नहीं मिलने देता है शेष ग्रहों को भी दृष्टि में रखकर विदित होता है—अप के शरीर की दशा भी डाँवा डोल रहेगी, गाहे एक अंग में तकलीफ गाहे दूसरे अंग में ग्रहस्थी होने पर घर में भी ऐसी दशा होगी, कभी एक सदस्य बीमार रहेगा और कभी दूसरा सदस्य। शरीर सम्बन्धी परेशानी इस मास में बनी रहेगी। आय की दृष्टि से भी यह मास डाँवाडोल स्थिथि में गुजरेगा। आपके व्योपार का जिस लाइन से सम्बन्ध होगा हाथ पर हाथ धर कर ही बैठना होगा। आमदनी की कोई आशा नही बल्कि हानि की ही सम्भावना है। नौकरी पेशा धनु राशि वालों के लिए यह महीना हर प्रकार से मानसिक शान्ति का ही होगा। आदर व मान में कमी होगी। हर आरम्भ किये हुये काम में रुकावटों तथा बाधाओं का सामना होगा। विद्यार्थियों के लिए भी यह मास परेशानी का ही होगा, विद्या सम्बन्धित हर काम में असफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं :— 4, 5, 10, 11, 12, 20, 21, 22, 23, 24, 27 और 30,।

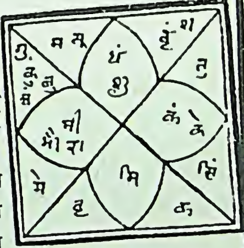

फर्वरी :—मास के आरम्भ में ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है फर्वरी तक मीन राशि में भौम का होना घरेलू अशान्ति को जितलाता है। ग्रहस्थी होने पर आप स्त्री पक्ष से अधिक परेशान रहोगे। 9 फर्वरी से आप को पांचवां भौम आयेगा पांचवां भौम भी गोचर में बहुत ही हानिकारक माना जाता है, शनि तो आपका बारवां चल रहा है, इस मिले जुले क्रूर योग के प्रभाव से ग्रहस्थी होने पर आपको पुत्र पक्ष से परेशानी रहेगी. नीच कर्म करने की प्रवति बनी रहेगी, बुरी संगति में उठने बैठने का अवसर मिलेगा जो आपके लिए अनादर का कारण होगा यदि आपको जाईजाद सम्बिन्धित कोई परेशानी है तो इस मास में उस परेशानी में और अधिक वृद्धि हो जायेगी। व्योपारी वर्ग के लिये भी यस मास दौड़ धूप तथा संघर्ष का होगा, किसी भी कार्य में

मनोवांछित लाभ नही मिलेगा। व्योपारी वर्ग के लिए इस मास में लाभ उसी सूरत में होगा जब आप इस मास का अधिक समय यात्रा में ही गुजारेंगे। गृहस्थी होने पर अगर आपको लड़के अथवा लड़की के का विवाह विचाराधीन है तो इस मास में ऐसे काम में दिलचस्पी लेने से बना काम भी बिगड़ेगा। इस लिए आवश्यक है एसे विषय को यहीं ही छोड़िये। यद्यपि यह महीना हर पहलू मे अशुभ है परन्तु आपको इस मास में अधिक से अधिक धार्मिक प्रवृत्ति बनी रहेगी। खर्च की भरमार यहाँ तक कि ऋण लेने के लिये विवश होना पड़ेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिये भी यह मास दौड़ धूप तथा अशान्ति का है। पठन-पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी। इस मास के शुभ दिन हैं :— 7, 8, 6, 17, 18 16, 20, 23, 24, 27, और 28।

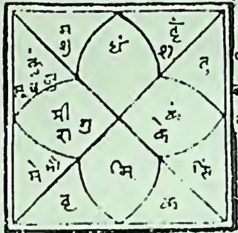

मार्च :—इस मास में भी ग्रह अच्छी स्थिति में नही है। आप का शरीर प्रायः अस्वस्थ रहेगा। अगर आप पहले से ही अस्वस्थ हैं तो शरीर अधिक विगड़ने की सम्भावना हैं। ग्रहस्थी होने पर आप को भिन्न भिन्न प्रकार की घरेलू उलझने घेरे रखेंगी ! सन्तान पक्ष में आप परेशान रहेंगे जब किआपको भौम पांचवे भाव में ठहरा है। चौथे भाव में चन्द्रमा राहु वृहस्पति का होना जाईदाद सम्बन्धी परेशानी का सूचक है अथवा मातृ पक्ष के संकट को जिनलाता है। यात्रा का भी योग है जो यात्रा आपके लिए परेशानी का कारण बनेगी। तिजारत पेशा होने पर आपको इस मास में कोई मनोवांछित लाभ नही होना अपितु हानि की ही संम्भावना है, विशेष कर लोहे मशीनरी से सम्बन्धित धनु राशि वाले अधिक हानि में रहेंगे। नौकरी पेशा वालों को भी इस मास के ग्रह शान्ति का दम नही लेने देंगे। कोई भी काम विना उलझन के सिद्ध नहीं होगा इस मास में आप कोई भी जाइदाद सम्बन्धित काम आरम्भ करने का प्रोग्राम न बनायें। यदि आप को कोई वाहन आदि खरीदना हो तो इस मास में कदापि न खरीदें। यदि आपने कोई जाईदाद अथवा वाहन आदि वेचना हो, एसा काम आपके लिये कुछ 2 लाभदायक ही रहेगा। इसी प्रकार फलों के व्योपारियों के लिए भी यह मास बागात अथवा फल वेचने के लिये लाभदायक रहेगा। परन्तु खरीदने पर आप हानि में रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग को प्रयत्न करने पर भी आशा के अनुसार किसी भी विद्या सम्बन्धित काम मे सफलता नहीं अपितु हर काम में रुकावटें आ खड़ी होंगी।

मकर राशि का वर्षफल

ग्रहों का सामूहिक प्रभाव वर्षभर आप पर कैसा रहेगा, लिखने से पूर्व प्रत्येक ग्रह का पृथक् पृथक् फल गोचर ग्रंथों के आधार से निम्नांकित हैं।

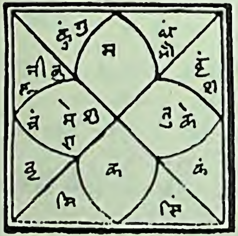

सूर्य गोचर में तीसरा सूर्य सुख शान्ति की चेतावनी है शरीर का स्वस्थ होना, सुखशान्ति की प्राप्ति, अच्छे पुरुषों तथा राज्याधिकारियों से मेल मिलाप, पुत्र तथा मित्रवर्ग में लाभ तथा आदर, शत्रुओं पर विजय, अकस्मात् तर्की।

चन्द्रमा चौथे भाव का चन्द्रमा गोचर में हानिकारक माना जाता है, विशेषतया चन्द्रमा के साथ राहु की युति आप के वर्ष भर की मानसिक अशान्ति तथा चंचलता का इशारा है, शरीर बिगड़ने की सम्भावना, विशेषतया छाती में रोग का होना. अग्नि अथवा पानी से भय, गृहस्थी होने पर स्त्री की ओर से परेशानी वर्ष भर बनी रहेगी, यदि आप विवाहित नहीं हैं तो घर के किसी घनिष्ठ सम्बन्धी की परेशानी बनी रहेगी।

भौम बारवां घर खर्च का होता है, बारवें भाव में भौम का होना निरर्थ खर्च का सूचक है प्रायः घर से बाहर रहने का योग, चोट का भय, अग्नि का भय, अकस्मात् आंखों में कष्ट, भाई बन्धुओं अथवा किसी मित्र से अनबन, मान हानि का खतरा, गृहस्थी होने पर घरेलू परेशानी।

बुध तीसरा बुध होने से प्रायः हर समय कोई न कोई परेशानी घेरे रखती है, आत्मविश्वास की कमी, धन की हानि, निरर्थ खर्च, किसी विश्वास पात्र से धोखा।

बृहस्पति दूसरे भाव में बृहस्पति का होना आमदनी की अधिकता को जितलाता है, गृहस्थ का सुख, विवाहित न होने पर विवाह का योग, विवाहित होने पर पुत्र

जन्म का सुख, शत्रु भी मित्र बनें, दान धर्म के काम करने की प्रवृत्ति।

शुक्र चौथे भाव में शुक्र होने से प्रत्येक मनोकामना सिद्ध होती है आशा से अधिक धन की प्राप्ति होती है, घर में कोई मंगल कार्य रचाने का अचानक प्रोग्राम बनता है, जनता से प्रेम तथा मेल मिलाप में वृद्धि होती है, ऐसा फलादेश चौथे शुक्र के विषय में गोचर शास्त्रों में दर्ज है।

शनि ग्यारवें भाव में शनि होने से लोहे, मिशीनरी, पत्थर, सीमेंट, कोयला आदि से सम्बन्धित कारोबार में दिलचस्पी बढती है तथा ऐसा कारोबार लाभदायक रहता है, शरीर स्वस्थ रहता है, नौकरी पेशा होने पर अचानक तर्की का योग बनता है, आशा से अधिक लाभ होता है।

राहु वर्ष के आरम्भ पर चौथे भाव में राहु का होना घरेलू परेशानी को जितलाता है जनता में अथवा अपने परिवार में शत्रुता की भावना खड़ी होती है, घर से दूर रहने पर विवश होना पडता है, सुख में कमी होती है, तामीरी कामों में रुकावट पडती है।

केतु दसवां केतु अशुभ फल का ही सूचक होता है, जैसा कि गोचर शास्त्रों में दर्ज है, राजदरबार से सम्बन्धित अफसरों से अनबन हो जाती है, प्राय: प्रत्येक कार्य में असफलता होती हैं, कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होता है।

मकर राशि का वर्षफल

सम्पादक की दृष्टि से

गोचर वर्ष चक्र में बारवां भौम तथा चौथा ग्रह वेध में होने पर भी स्वास्थ्य के बिगडने तथा निरर्थ खर्च की चेतावनी है, इस वर्ष प्राय: आप को शरीर की परेशानी बनी रहेगी, २४ सितम्बर से आप को भौम गोचर से लग्न में आयेगा जो १५ नवम्बर तक लग्न में ही रहेगा, यह समय विशेषतया आप के शरीर के लिये हानिकारक है, इस समय में आप शरीर सम्बन्धित खानपान में सावधान रहिये, किसी भी मादक वस्तु का प्रयोग करना आप के लिये मारक होगा, इस मेरे लिखे उपाय को आप अवश्य अपनायें नही तो बाद में पछताना होगा, इस उपाय के इलावा आप नियम से इस वर्ष हर मंगलवार को अपने पाठ पूजा के नियम के साथ पौराणिक भौम के मन्त्र का १०८ बार उच्चारण किया

करें-मन्त्र कण्ठस्थ कीजिये :- **मन्त्र-"ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः"** यह मन्त्र आप के शरीर की रक्षा करने में रामबाण का काम करेगा। यदि आप के शरीर में कोई ऐसा कष्ट है जिस के कोट छांट का कोई प्रोग्राम है, यदि हो सके इस वर्ष शरीर सम्बन्धित ऐसा कोई प्रोग्राम न बनायें, यदि ऐसा सम्भव न हो तो भी आप दृढ़ संकल्प से मेरे उपरिलिखित उपाय को अमलीरूप दीजिये तो किसी प्रकार का भय नहीं है।

यदि जन्मपत्री से आप की ग्रहदशा अनुकूल हो और ईश्वर इच्छा से आप स्वस्थ भी रहेंगे तो भी उपरिलिखित उपाय को आप अवश्य अपनायें। शनि भी आप के शरीर के लिये इस वर्ष अनुकूल नहीं जब कि शनि आप की मकर राशि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, जिस के फलस्वरूप इस वर्ष शरीर सम्बन्धित कोई न कोई परेशानी अवश्य बनी ही रहेगी।

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष प्रायः लाभदायक ही रहेगा, जबकि वर्ष के आरम्भ में गोचर चक्र से शनि ग्यारवां बृहस्पति दूसरे भाव में ठहरा है परन्तु चौथे भाव में चन्द्रमा शुक्र और राहु का एक साथ होना वर्षभर संघर्ष की चेतावनी है इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह वर्ष संघर्ष में गुजरने पर भी अन्त में हर एक कार्य का परिणाम लाभदायक तथा आप के लिये अनुकूल होगा, यदि आप के काम काज में रुकावटें तथा उलझनें खड़ी होंगी भी आप दृढ़संकल्प से काम करते जायें आप की सफलता निश्चित है। यदि आप मशीनरी अथवा लोहे से सम्बन्धित काम करते हैं तो आप अपने कारोबार को इस वर्ष विशाल बनाने में जितनी भी पूंजी लगाओगे वह आप के कारोबार को सफल बनाने में सहायक होगी, यदि आप किसी कारखाने के मालिक हैं कोई नया कारखाना चालू करने के इच्छुक है अथवा पूर्व कारखाना को ही नया रूप देना चाहते हैं तो आप सिर्फ योजना ही न बनायें अपितु उस योजना को अमली रूप दीजिये विश्वास रखिये ऐसी योजना को सफल बनाने में ग्रह आप के अनुकूल हैं।

जो व्यापारी खाद्य पदार्थ सम्बन्धित काम करते हैं उन व्यापारियों के लिये यह वर्ष अधिक दौड़धूप तथा परेशानी का होगा, वर्ष भर खूब प्रयत्न करने पर वर्ष के अन्त में जा कर आप के कारोबार का परिणाम सन्तोषजनक नहीं होगा। मकर राशि वाले फलों के व्यापारियों की स्थिति इस वर्ष डांवांडोल रहेगी, रात दिन कटिबद्ध रहने पर भी यह वर्ष सन्तोषजनक लाभदायक नहीं रहेगा, यदि आप काम काज की देख रेख में थोड़ी सी

लापरवाई करेंगे तो वह लापरवाई आप के लिये हानि का कारण भी बन सकती है यदि आप सड़कों पुलों से अथवा सीमेंट कोयला आदि से सम्बन्धित काम करते हैं तो आप अवश्य लाभ में रहेंगे, दसवें भाव में केतु तथा दसवें भाव पर एक साथ चन्द्रमा, शुक्र, राहु की दृष्टि होने से नौकरीपेशा वाले मकर राशि वालों के लिये यह वर्ष शुभ फल तथा शान्ति का द्योतक नहीं है अपितु अशान्ति का ही वर्ष होगा, यदि आप किसी सन्तोषजनक पदवी पर हैं तो आप की पदवी वर्ष भर डगमगाती रहेगी, आप के इर्दगिर्द राज्यदरबार का वातावरण ईर्ष्या भाव से भरा हुआ होगा. कई ईर्ष्यालु आप को लांछित करने की ताक में रहेंगे। आप उपाय के रुप में इस लिखे मन्त्र का बार बार उच्चारण किया करें–

"मन्त्र–सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि-एवमेव त्वया–कार्यम्-अस्मत्–वैरिविनाशनम्"

आप को १८ अगस्त तक हर प्रकार से सावधान रहना चाहिये– १८ अगस्त से आप की गृहस्थिति क्रमश: सुधरती जायेगी यदि १८ अगस्त से आप के राज्यदरबार में वातावरण आप के अनुकूल बनेगा सभी सम्बन्धित अफसरों से प्रेम व्यवहार में वृद्धि होगी। यदि आप ने नौकरी सम्बन्धित डिपार्टमेन्टल कोई परीक्षा देनी हो यदि १८ अगस्त तक परीक्षा का समय हो तो सफलता की कोई आशा नहीं है, १८ अगस्त के पश्चात हर कार्य में सफलता निश्चित है। यदि आप विद्यार्थी हैं विद्या सम्बन्धित हर कार्य में सफलता अवश्य होगी, वर्ष के आरम्भ पर बृहस्पति आप के अनुकूल है जब कि बृहस्पति कुम्भ राशि में १९८७ के २७ जनवरी तक रहेगा आप १९८६ के वर्ष को अपने भाग्योदय का वर्ष मानिये विद्या सम्बन्धित हर एक कार्य वह ट्रेनिंग हो इन्टरविव हो अथवा कोई परीक्षा हो सफलता निश्चित है, इस से आप यह न समझिये कि आप बिना किसी परिश्रम के सफल होंगे–अपितु ग्रह आप के अनुकूल हैं आप के परिश्रम को वे सफल बनाने में सहायक होंगे।

मकर राशि वालों को यदि कोई नामीरी काम लडके अथवा लडकी का विवाह सम्बन्धित कोई परोग्राम हो तो ऐसे महोत्सव रचाने का इस वर्ष अवश्य परोग्राम बनायें किसी प्रकार की ढील न करें, ऐसा हर कार्य बिना किसी उलझन के सफल होगा।

इस वर्ष के आरम्भ पर यद्यपि बृहस्पति, शुक्र और शनि अच्छी स्थिति में हैं भी तो आप को निम्नलिखित उपाय अवश्य अपनाना चाहिये इस उपाय को अमलीरूप देने से यह वर्ष सुख शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा।

निम्न उपाय

१ जहां कहीं भी सत्संग का परोग्राम हो अथवा कोई सामाजिक धार्मिक महोत्सव रचाने का परोग्राम हो आप बिना बुलाये ऐसे परोग्रामों में अवश्य तन मन धन से सम्मिलित हो जायें ।

२ घर में नित्य प्रति शाम को सामूहिक प्रार्थना का परोग्राम बनायें, यदि नित्य हो न सके तो भी हर रविवार को प्रोग्राम अवश्य बनायें ।

३ किसी निर्धन विद्यार्थी को गुप्त रूप से पुस्तकों, वस्त्रों अथवा फीस आदि के रूप में सहायता दीजिये ।

मकर राशि का मासिक फल

अप्रेल :–यद्यपि इस मास की ग्रहचाल गोचर फलित के आधार से अनुकूल है भी परन्तु शरीर की दृष्टि से यह मास शान्ति-प्रद नहीं होगा, जब कि लग्न का स्वामी शनि शरीर के भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, ऐसे ही आठवें भाव के स्वामी सूर्य को भी भौम पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, यह मिला जुला योग इस मास में शारीरिक परेशानी बनाये रखेगा, यदि दैव योग से आप शरीर की परेशानी से बचे रहेंगे तो भी घर के किसी सदस्य के शरीर की चिन्ता आपको अवश्य घेरे रखेगी, यदि आप गृहस्थी हैं तो स्त्री के शरीर के विषय में सावधान रहिये । आप अगर इस कष्ट का उपाय चाहते हैं तो इस मास के ८, १५, २२, २९ तारीख को शिवालय में जा कर "ॐ नमो भगवते त्र्यम्बकाय" इस मन्त्र से शिवलिंग पर दूध सहित जल चढ़ायें । आर्थिक दृष्टिकोण से यह मास उत्तम रहेगा परन्तु लाभ के साथ साथ खर्च के नये नये मार्ग खुलेंगे, यदि आप व्योपारी हैं आप का व्योपार इस वर्ष सफल रहेगा, विशेषतया यदि आप का कारोबार मिशीनरी लोहे आदि से सम्बन्धित है तो आप आशा से अधिक लाभ में रहेंगे । नौकरी पेशा वालों का जोर रहेगा, यदि आपको तर्की की कोई आशा है परन्तु इस मास में कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, हर एक काम में संघर्ष के बाद ही सफलता की आशा रखें, शत्रुओं का जोर रहेगा, यदि आपको तर्की की कोई आशा है परन्तु इस मास में तर्की का योग नहीं है, अपितु आप के राजदरबार का कार्य-क्रम यथावत् चलता रहेगा ।

विद्यार्थी वर्ग के लिये इस मास के ग्रह अनुकूल हैं, यदि आप ने कोई परीक्षा देनी हो अथवा इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना

हो ऐसे कामों के लिए यह मास सफलता का है, जिस विद्या सम्बन्धित कार्य का आप श्रीगणेश इस मास में करेंगे उस कार्य का परिणाम सन्तोषजनक होगा, इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :-३, ४, ८, ६, १५, १६, १७, १८, २४ से २७ तक।

मई :-यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा, इस मास के प्राय: सभी ग्रह आप के अनुकूल है, बारवां भौम भी वेध में होने से हानिकारक नहीं है, यदि आप कारोबार को जितनी भी विशालता देना चाहें अथवा कारोबार में फिर से पूंजी लगाने का विचार है तो बिना किसी हिचकिचाहट के इस मास में लगाये आप का कारोबार अवश्य उत्तरोत्तर उन्नति करेगा, बारवाँ भौम यद्यपि खर्च करवाता है परन्तु भौम वेध में होने से इस मास में खर्च किया हुआ धन सार्थक खर्च होगा, यदि आप कोई तामीरी काम करना चाहते हैं अथवा कोई जाईदाद बनाना विचाराधीन है इस मास में ऐसे कामों का श्रीगणेश अवश्य करें। जाईदाद वाहन आदि खरीदने के लिये यह मास उत्तम है परन्तु कोई जाईदाद बेचने के लिये यह मास हानिकारक होगा, नौकरी पेशा वालों के लिये यह मास संघर्ष तथा अशान्ति का ही होगा, नौकरी सम्बन्धित हर कार्य में उलझनें तथा रुकावटें खड़ी होंगी, दफतर में आप अशान्त रहेंगे, यदि इस मास में आप छुट्टी पर रहें अथवा यात्रा का परोग्राम बनायेंगे तो वह आप के लिए कुछ शान्तिप्रद रहेगा।

यदि आप विद्यार्थी है तो विद्या सम्बन्धित हर आरम्भ किये हुये काम में आप को अवश्य सफलता मिलेगी, यदि विद्या सम्बन्धित कोई भी कार्य नये सिरे से प्रारम्भ करना हो तो ऐसे मास में अवश्य करें, यदि इस वर्ष कोई महोत्सव घर में रचाने का प्रोग्राम हो तो ऐसे कार्य के श्रीगणेश का मुहूर्त इस मास में करना उत्तम रहेगा। यदि आप जमींदार है अथवा फसलों से सम्बन्धित काम करते है तो यह मास दौड़धूप तथा संघर्ष में ही व्यतीत होगा, पशुधन की हानि की भी सम्भावना है। इस मास के शुभ दिन हैं—५, ६, १२, १३, १५, १६, २१ २२, २४, २८, २६।

वर्षफल जून के लिये

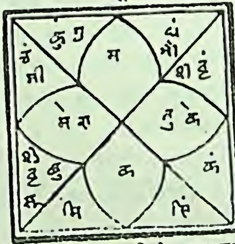

जून :– मास के आरम्भ पर पांचवां सूर्य छटे भाव का शुक्र तथा दसवां केतु होने से यह मास संघर्ष तथा अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा, बारवां भौम जो वर्ष के आरम्भ से ही आप को बारवां है के फलस्वरूप यदि आपका शरीर ठीक नहीं है तो इस मास में भी शरीर स्वस्थ होने की कोई आशा नही है इस मास में पांचवां सूर्य आप पर अधिक प्रभावशाली रहेगा, गोचर चक्र में सूर्य को शनि शत्रु दृष्टि से देख रहा है, इस क्रूरयोग के बारे में गोचर फलित शास्त्रज्ञों का कहना है बुद्धि भ्रम उत्पन्न होता है, बुद्धि कोई निश्चित निर्णय देने में समर्थ नही होती है शरीरिक तथा मानसिक शक्ति में कमी आती है, धन की हानि होती– सन्तानपक्ष से परेशानी बनी रहती है, विद्या में असफलता होती है, अकस्मत् चोट का भय होता है–यानि सूर्य का पांचवां होना जो शनि से दृष्ट है-हानिकारक योग है। १० जून को शुक्र कर्क राशि में आयेगा जो आप के गोचर से सातवां होगा इस ग्रह के प्रभाव से आप को अकस्मात् कोई घरेलू समस्या आ घेरेगी अथवा गृहस्थी होने पर स्त्री पक्ष में अकस्मात् कोई परेशानी आ खडी होगी। सन्तानपक्ष से भी परेशानी बनी रहेगी यदि लडके अथवा लडकी के विवाह की समस्या है तो ऐसी समस्या का इस मास में हल होना असम्भव है, यदि आप नामीरी काम करने का प्रोग्राम बना रहे हो तो वह प्रोग्राम ज्यों का त्यों लटका रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास विशेष शान्ति का नहीं है, उनकी पाठन की ओर रुचि कम रहेगी, यदि विद्या सम्बन्धित कोई परिणाम इस मास में निकलने वाला है तो सफलता की कोई आशा न रखें।

उपाय :–इस मास के हर शनिवार यानी ७, १४, २१ २८ तारीख को तहर बना कर जिस में शुद्ध देसी घी डाला हुआ हो बालकों को विशेष तथा लडकियों को खिलायें, इस साधारण से उपाय से आप को प्रत्येक उलझन सुलझेगा इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :–१, २, ६, ७, ११, १२, १७, १८, १६, २४, २५, २८, २६, ३०।

जुलाई :-इस मास में ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है, जब कि चौथे भाव में चन्द्रमा राहु की युति, सातवां बुध, शुक्र तथा दसवां केतु ठहरा है, यह मिला जुला योग इस मास की अशान्ति तथा संघर्ष का संकेत है, इस मास में आप को शान्ति का सांस लेने का अवसर नहीं मिलेगा, यद्यपि आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा भी परन्तु खर्च की बहुतात होगी. यहां तक कि कभी तंगदस्ती में भी दुचार रहेगा, यदि आप व्यापारी हैं तो आप का व्यापार यथावत् चलता रहेगा, यद्यपि अधिक लाभ का भी योग नहीं है परन्तु खसारा भी नहीं होगा, केवल मत्स्य खाद्य पदार्थ (गल्ला) के व्यापारी हानि में रहेंगे, फलों के व्यापारियों को दौडधूप तथा परेशानी अधिक रहेगी, यदि आप जमींदार हैं तो इस मास में काम की बहुतात से आप परेशान रहेंगे, पशुधन की हानि की भी सम्भावना है। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह मास अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा, किसी सम्बन्धित अफसर के साथ अचानक नाराजगी भी इस मास की अशान्ति का कारण होगी। यदि आप किसी तामीरी काम को आरम्भ करना चाहते हैं तो इस मास में न करें ऐसे काम के लिए यह मास अनुकूल नहीं है, यदि आप वाहन अथवा जाईदाद खरीदना चाहते हैं ऐसे काम के लिए इस मास के ग्रह आप के अनुकूल हैं। यदि आप कोई जाईदाद या वाहन आदि बेचना चाहें तो इस मास में ऐसा काम करना आप के लिए हानिकारक होगा, यदि आप विद्यार्थी हैं ६ जुलाई तक यदि आप का कोई परिणाम निकलने वाला हो अथवा इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना हो तो आप अवश्य सफल होंगे यदि आप गृहस्थी हैं लडकी अथवा लडके के विवाह की समस्या विचाराधीन है तो इस मास में ऐसा काम लटकता ही रहेगा, ऐसे कार्यों की सफलता की सम्भावना नहीं है, चौथे राहु और चन्द्रमा के प्रभाव से आप मातृपक्ष से परेशान रहेंगे अथवा अचानक कोई घरेलू झगडा खडा होगा। यात्रा का प्रोग्राम इस मास में न बनाये। गोचर-फलादेश के आधार से यद्यपि यह मास आप के लिए प्रतिकूल है परन्तु उपाय करने से आप निश्चय रखिये यह मास दूषण होते हुए भी आप के लिए भूषण बनेगा।

दशफल जुलाई के लिए

उपाय :-१, यदि आप को किसी बुजर्ग से नाराजगी है उस

नाराजगी को कोई भी बलि देकर दूर करने का प्रयत्न कीजिए।

२, किसी भी नशीले (मादक) वस्तु का प्रयोग न कीजिए

३, मंगलवार को प्रातः कुत्तों को रोटियां डालिये, अथवा घर में तहर बनाकर पक्षियों को डालिए।

४, प्रातः बिस्तरे से उठने से पहले दस बार "ॐ" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

इस मास के शुभ दिन नोट कीजिए :-६, ७, १४, १५, १७, १८, २१, २२, २३, २५, २६, २७।

अगस्त :- ग्रहों के वेध अष्टक वर्ग पर विचार करने से विदित होता है, यदि आप पहले से ही शरीर से अस्वस्थ हैं तो इस मास में कोई शारीरिक सुधार का योग नही है अपितु शरीर बिगडने का अन्देशा है शरीर के विषय में आप सावधान रहिये।

वर्षफल अगस्त के लिए

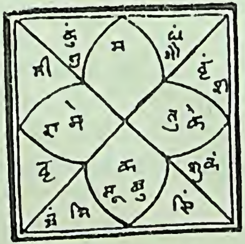

बृहस्पति शुक्र और शनि यद्यपि अच्छी स्थिति में है भी परन्तु यह तीनों ग्रह वेध में हैं, गोचर फलित शास्त्रज्ञों का कहना है शुभ ग्रह भी वेध में होने से अशुभ फल देने वाले होते है इस नियम के अनुसार मेरी विचारधारा में भी यह मास हर पहलू से आप के लिए हानिकारक है, यदि आप व्यापारी हैं तो आप के व्योपार की दशा डाँवाडोल रहेगी, व्यापार में हानि का अन्देशा है, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते है, यदि फलों के बेचन का चान्स मिले वह आप के लिए लाभदायक रहेगा, यदि आप ने फल या बागात खरीदने का काम किया ऐसा काम भविष्य मे आप के लिए हानिकारक होगा, यदि आप जमीदार हैं आप को यदि धन खर्च करने की कोई योजना हो तो दिल खोल कर खर्च कीजिये इस मास में खर्च की हुई पूंजी आप के लिये भविष्य में लाभदायक रहेगी, कमाई की इस मास में कोई आशा न रखें। नौकरी पेशा होने पर दफतर में अशान्त वातावरण बन. रहेगा, सावधान रहिये अकस्मात् कोई झूठा आरोप लगने की सम्भावना है, यदि आप विद्यार्थी है यद्यपि शरीर आमदनी आदि की दृष्टि से मकर राशि वालों के लिये यह मास हानिकारक है भी परन्तु विद्या सम्बन्धित जो कोई भी काम इस मास में आरम्भ करेंगे अथवा

इस मास में कोई परिणाम आदि निकलने वाला हो तो उस में अवश्य सफल होंगे ।

उपरिलिखित फलादेश मैं ने ज्योतिष गोचर फलित शास्त्रों ज्योतिष प्रकाश २, ज्योतिष निबन्ध ३, ज्योतिष संग्रह ४, फल संग्रह ५, रत्न कोश ६, संहिता सार ७, बृहत संहिता ८, वराह संहिता ९, गोचरफल आदि ग्रन्थों के गोचर प्रकरण को दृष्टि में रख कर ही लिखा गया है, परन्तु जिन गोचरफल माहिरों ने ग्रहों का शुभ अशुभ फलादेश लिखा है उन्होंने क्रूरग्रहों की शान्ति का उपाय भी लिखा है, इस लिये आप निम्नलिखित उपाय को अवश्य अमली रूप दीजिये निश्चय रखिये यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, यदि आप मेरे लिखे उपाय में ढील करेंगे आप को बाद में पछताना पड़ेगा । उपाय:- यदि आप किसी मादक द्रव्य का सेवन करते हैं आज से ही नहीं अपितु अभी से ही त्यागने की प्रतिज्ञा कीजिये, यदि आप में कोई ऐसी बुरी आदत नहीं है तो भी आप में जो कमजोरी है जिस कमजोरी का आप को ही सिर्फ ज्ञान है मन से ही उस कमजोरी पर नियन्त्रण करने की प्रतिज्ञा कीजिये, केवल इस मास के लिये ही नहीं अपितु जीवन भर के लिये, विश्वास रखिये इस उपाय से आप के जीवन की काया पलट होगी । इस मास में जो कोई भी शुभ काम आपने प्रारम्भ करना हो इस मास के गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार को कीजिये ।

सितम्बर इस मास में सूर्य, शुक्र, तथा भौम यद्यपि गोचर में अशुभ भाव में ठहरे हैं परन्तु वेध में होने से यह तीनों ग्रह शुभफलदायक हैं, शेष ग्रह सातवां चन्द्रमा आठवां बुध ग्यारवां शनि, दूसरे भाव का बृहस्पति अच्छी स्थिति में हैं इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास हर पहलू से शान्ति के वातावरण में व्यतीत होगा, यदि आप का

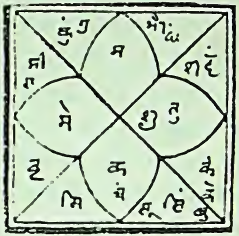

शरीर अस्वस्थ है तो आपका स्वास्थ्य सर्वसाधारण इलाज से ठीक होगा, आर्थिक दृष्टि से बहुत समय के पश्चात् आपका आर्थिक सुधार होने लगेगा, यदि आप व्योपारी हैं तो आप अपने काम में जुट जायें आपका कारोबार दिनों दिन तर्की की ओर बढता जायेगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित व्यापार करते हैं, इस मास में फल बागात आदि

का खरीद फरोख्त दोनों पहलू मे आप लाभ मे रहेंगे यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो इस मास में जो कोई भी काम आप हाथ मे लेंगे तो सफलता निश्चित है, नौकरीपेशा मकर राशि वालों के लिये यह मास हर प्रकार से सुख शान्ति का होगा, दफ्तर का बिगड़ा हुआ वातावरण अकस्मात् आपके अनुकूल होगा। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर प्रारम्भ किये हुये काम में सफलता होगी, यदि आप गृहस्थी हैं आप को लडके अथवा लडकी के विवाह की समस्या विचाराधीन है तो इस मास मे ऐसे काम मे दत्तचित्त रहें ऐसी समस्या अवश्य हल होगी, यदि हल होगी भी नहीं तो भी हल होने की आशा सुदृढ होती जायेगी, यदि आप को अकस्मात् तर्की का योग बने तो आप यात्रा पर जाने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट न करें, इस मास में यात्रा आप के लिये लाभदायक रहेगी, नवें भाव का स्वामी बुध आठवां होने से साधु-सन्तों अथवा अच्छे पुरुषों से मेलमिलाप का अचानक अवसर मिलेगा जो आप की मानसिक शान्ति का कारण होगा, इस मास में आप का अधिक समय महोत्सवों तथा पार्टियों में व्यस्त होगा। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये:- 1, 2, 3 7, 8. 9. 10, 11. 14, 15. 18 19. 20. 26, 27, 28 और 29।

अक्टूबर:- पहले भाव का भौम आठवां चन्द्रमा, नव भाव का सूर्य तथा दसवें भाव का शुक्र ये चारों ग्रह इस मास में हानिकारक हैं, इन ग्रहों से आप का शरीर विशेषत: प्रभावित होगा, शरीर के विषय में यानि खान-पान के विषय में सावधान रहिये, लग्न का भौम होने से रक्त-विकार शरीर में फोड़ा फुन्सी निकलने का अन्देशा, चोट का भय, आठवां चन्द्रमा होने से हृदय रोग से पीड़ित होने का योग है, यदि आप गृहस्थी हैं तो यह भौम देवता जिसको शनि पूर्ण दृष्टि से देख रहा है आप के गृहस्थ को भी अपने लपेट में लेगा, इस अरिष्ट योग जैसे महान हानिकारक योग से बचने का उपाय है कि आप इस मास के हर रविवार को प्रातः नहाधोकर गोमाता को आटा गुड मिलाकर एक पिंड के रूप में खिलाये और प्रणाम करे ऐसे ही हर मंगलवार को तहर बनाकर पक्षियों को डाले उस तहर में से किसी बच्चे तक को भी प्रसाद नहीं दीजिये। आमदनी की

वर्षफल अक्टूबर के लिये

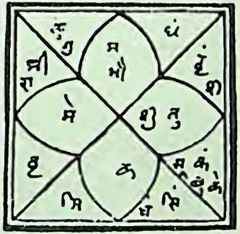

दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आप व्यापारी हैं किसी भी प्रकार का तिजारत करते हैं आप लाभ में रहेंगे, यदि आप फर्मों से सम्बन्धित काम करते हैं तो यह मास आप के लिये दौड़धूप का होगा, वह आप की दौड़धूप लाभ का कारण होगी, यदि आप नौकरी करते हैं तो अचानक या तो तर्की मिले अथवा तर्की की आशा सुदृढ़ होगी, दफतर की हर एक परेशानी स्वयं ही दूर होगी, विद्यार्थी होने पर विद्या-सम्बन्धित जो कोई परीक्षा आप देंगे उस का परिणाम जब कभी भी होगा सफलता अवश्य होगी. यदि आप ने कोई तामीरी काम आरम्भ करना हो ऐसे काम के लिये भी यह मास उत्तम रहेगा, यद्यपि आरम्भ में दसवें गुरु के प्रभाव से कुछ उलझनें खड़ी होंगी भी उनका सामना करते हुये आप काम आरम्भ करें आप सफल रहेंगें, यदि आप कोई जाईदाद वाहन आदि बेचना चाहते हैं तो आप खसारा में रहेंगें, यदि आप ने खरीदना हो तो आप लाभ में रहेंगें, यदि यात्रा का परोग्राम बने हो सके तो यात्रा को न जायें, शरीर-कष्ट की सम्भावना है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये – 5, 6, 11, 12, 16, 17, 20, 21, 25, 26, और 27।

नवम्बर:- इस मास के ग्रह गत मास की अपेक्षा अच्छी स्थिति में है, दसवां सूर्य ग्यारवां बुध तथा शनि शुभफल के ही सूचक हैं जैसा कि गोचर-शास्त्रों में दर्ज है – धन का लाभ होता है, तर्की मिलती है, घर में मंगल कार्य होते है, लग्न का भौम आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है जिस के प्रभाव से इस मास में भी यदि आप को अपने अथवा घर के किसी सदस्य के शरीर की समस्या ने घेरे रखा है, वह शरीर सम्बन्धित समस्या इस मास में ज्यों की त्यों बनी रहेगी, इसलिए अक्टूबर में लिखा हुआ उपाय आप अवश्य करें, व्यापारीवर्ग के लिये यह मास लाभदायक रहेगा, यदि आप लोहे से सम्बन्धित काम अथवा किसी फ़ैक्टरी से सम्बन्धित कारोबार करते हैं, यदि आप का कारोबार को [illegible] विचार है तो आप बिना किसी हिचकिचाहट के कारोबार में पूंजी लगायें अथवा नये रूप में काम का आगाज़ करें, आप के काम में जुट जाने से आप का काम दिनों दिन उन्नति करेगा, यदि आप

नवम्बर मास का वर्षफल

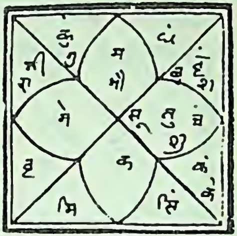

ठेकेदारी का काम करते हैं अथवा आप का काम ट्रान्सपोर्ट से सम्बन्धित हैं तो यह मास आप के लिये लाभदायक नहीं रहेगा, अकस्मात् हानि की भी सम्भावना है, यदि आप फलों से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो आप बिना किसी हिचकिचाहट के केवल अपनी बुद्धिबल का सहारा लेकर काम करते जायें यानि खरीद फरोख्त का काम करें, ऐसा करने से आप लाभ में रहेंगे, यदि आप किसी की साझेदारी अथवा दूसरे की राय से खरीद फरोख्त का काम करेंगे तो आप का काम अवश्य खटाई में पड़ेगा नौकरीपेशा के मकर राशिवालों के लिये यह मास संघर्ष का होगा, कोई भी कार्य लक्ष्य तक पहुंचेगा नहीं अपितु हर एक काम लटकता रहेगा, यदि आप को तर्की की कोई समस्या विचाराधीन है परन्तु इस मास में हल होने की कोई आशा न रखें, गृहस्थी होने पर गृहस्थ सम्बन्धी किसी भी समस्या का समाधान इस मास में नहीं होगा जब कि भौम आप के गृहस्थ सातवें और आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, भाई-बन्धुओं अथवा बुजर्गों से अचानक नाराजगी का योग है, नवें भाव का स्वामी बुध अच्छी स्थिति में होने से घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, यदि आप विद्यार्थी है तो विद्यासम्बन्धित हर काम में रुकावट अथवा असफलता होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये -4, 5, 8, 9, 12, 13, 19, 20, 29 और 30।

दिसम्बर:- सूर्य चन्द्रमा तथा शनि का एक साथ ग्यारवें भाव में होना गोचरफलित में उत्तम माना गया है, इस योग के प्रभाव से इस मास में बहुत समय से लटके हुये काम हल हो जायेंगे, यदि आप गृहस्थी हैं तो गृहस्थपक्ष में हर प्रकार से सुख तथा शान्ति की प्राप्ति होगी, घर में मंगल-कार्य रचाने का प्रोग्राम बनेगा, यदि आप लड़के अथवा लड़की का विवाह सम्बन्ध जोड़ने से परेशान हैं ग्रहचाल से इस मास में अवश्य किसी स्थान पर बात टिक जायेगी, यदि आप किसी बच्चे की नौकरी के बारे में परेशान हैं तो परिश्रम करने पर वह समस्या भी हल हो जायेगी, यदि आप स्वयं अविवाहित हैं और विवाह के विषय में प्रयत्नशील हैं तो इस मास में उस आशा में मजबूती होगी या तो विवाह की समस्या ही हल हो जायेगी।

वर्षफल दिसम्बर मास के लिए

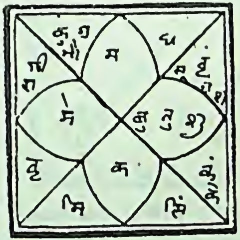

व्यापारियों के लिये यह मास हर पहलू से लाभदायक रहेगा, जो भी कार्य आप हाथ में लेंगे उस में सफलता निश्चित है, यदि आप अपने कारोबार को विशालता देना चाहते हैं तो आप उदारता से काम में पूंजी लगायें, इस मास में कारोबार में लगाया हुआ धन भविष्य में आप के कारोबार को विशाल बनाने का कारण होगा, यदि आप का कोई जाईदाद आदि खरीदने का विचार है तो ऐसे काम को सफल बनाने में इस मास के ग्रह अनुकूल हैं; ग्रहों के प्रभाव से आप को जाईदाद सम्बन्धित खरीद फरोखत का काम इस मास में अवश्य करना होगा, नौकरीपेशा मकर राशिवालों के लिये यह मास अशान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, दफतर में सम्बन्धित कार्यकर्ताओं से अनबन, कोई आरोप लगने का अन्देशा, विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास शान्ति का नहीं है. यदि इस मास में आप ने को परीक्षा अथवा इन्टरविव आदि देना हो तो सफलता की आशा न रखें, इस मास में पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी, यदि आप ने परीक्षा देनी हो तो उपाय के रूप में जिस दिन परीक्षा या इन्टरविव को जाना हो घर में किसी बुजुर्ग के चरणों को श्रद्धा से स्पर्श करके उन से आशीर्वाद प्राप्त करके ही परीक्षा में जायें, यदि आप इस उपाय को अपनायेंगे नहीं तो सफलता की बिल्कुल आशा न रखें, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं, इस मास में यदि किसी अफसर से मिलने को जाना हो तो उपरिलिखित उपाय को अपनायें। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 1, 2, 5, 6, 9, 10, 1 , 17, 19, 20, 25, 26, 28 और 29।

जनवरी :- लग्न में चन्द्रमा ग्यारहवें भाव में शनि तथा शुक्र का होना दूसरे भाव का बृहस्पति तीसरा भौम और राहु गोचर-फलित से शुभफल की चेतावनी है, नये

वर्षफल जनवरी मास के लिये

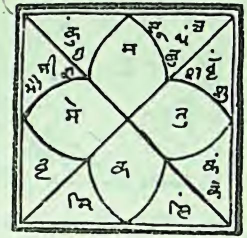

वर्ष का यह पहला मास आप के लिए नये वर्ष का शुभ शकुन है, शरीर स्वस्थ रहेगा, यदि आपके शरीर में पहले से कोई तकलीफ है तो नये सिरे से इलाज करने से आप का शरीर स्वस्थ हो जायेगा, यदि आप गृहस्थी हैं घर में किसी सदस्य के शरीर के विषय में यदि कोई परेशानी है, शरीर सम्बन्धित वह परेशानी अपने शरीर की हो अथवा घर के किसी सदस्य भाई-बन्धु की हो स्वयं ही ग्रहों के प्रभाव से दूर होगी, धार्मिक दृष्टिकोण से भी इस

मास के ग्रह अनुकूल हैं, यदि आप व्यापारी हैं तो आप का व्योपार सन्तोषजनक में चलेगा, यदि आप खाद्यपदार्थ चावल गेहूं आटा आदि से सम्बन्धित काम करते हैं तो आप सावधान रहिये अचानक कोई झगड़ा खड़ा होगा जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, इस कष्ट से बच निकलने का एक मात्र उपाय है आप नित्य अपना कार्यक्रम आरम्भ करने से पहले कुत्तों को रोटियां डाला करें, हर मंगलवार को तहरी बनाकर पक्षियों को डाला करें।

"सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि एवमेव त्वया कार्यम्-अस्मद्-वैरिविनाशनम्" इस मन्त्र का लगातार दिन में जितनी बार हो सके उच्चारण किया करें। गृहस्थी होने पर आप का घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, लड़के अथवा लड़की के विवाह सम्बन्धित यदि कोई समस्या है अचानक हल होते हुए नजर आयेगी यदि इस मास में हल होगी भी नहीं परन्तु हल होने की नींव सुदृढ़ होगी, आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा परन्तु बारवां सूर्य तथा बुध होने से खर्च की अधिकता से आप को कभी तंगदस्ती से भी दुचार होगा, अतिथि-सेवा तथा पार्टियों में शामिल होना इस मास में आप का विशेष व्यसन होगा, यदि आप नौकरी करते हैं तो यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा, यदि कोई दफ्तर सम्बन्धित परेशानी होगी उस समस्या का भी समाधान निकल आयेगा, यात्रा का अचानक योग बनेगा, यद्यपि वह यात्रा पहले आप के लिये परेशानी का कारण बनती भी परन्तु अन्त में उसका परिणाम आप के लिये लाभदायक रहेगा, विद्यार्थियों के लिये यह मास सन्तोषजनक होगा, पठन-पाठन की प्रवृत्ति में अधिकता होगी, विद्यासम्बन्धित हर आरम्भ किये हुए काम में सफलता अवश्य होगी, यदि आप किसी ट्रेनिंग आदि अथवा विदेश जाने के विषय में सोच रहे हैं, ऐसे काम को अमली रूप में आप जुट जायें सफलता निश्चित होगी। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :- 1, 2, 5, 6, 13, 14, 22, 25, 29 और 30।

फरवरी: इस मास के सभी ग्रह आप के अनुकूल हैं परन्तु मकर राशि में पहले भाव का सूर्य गोचरशास्त्र में हानिकारक माना जाता है, मासिक फलादेश में सूर्य खास स्थान रखता है जैसा कि गोचरशास्त्र के मर्मज्ञों का कहना है, ऐसे ही वर्षभर के फलादेश के लिये बृहस्पति और शनि की प्रधानता होती है, नित्यफल के लिये चन्द्रमा का महत्त्व होता है, इस मास में सभी ग्रह यद्यपि अनुकूल हैं परन्तु सूर्य का हानिकारक होना इस मास की परेशानी का कारण बनेगा, हर एक क्षेत्र में सूर्य आप को सफल करने में बाधक

होगा विशेषतया आप का शरीर सूर्य से प्रभावित होगा, यदि आप की जन्मपत्री से आप की ग्रहचाल इस समय अच्छी होगी तो शायद आप शारीरिक कष्ट से बच भी जायें तो भी आप को किसी सम्बन्धी पुत्र स्त्री अथवा माता पिता की परेशानी घेरे रखेगी, यदि आप स्वयं अविवाहित हैं और विवाह के तलाश में हैं यदि कहीं सम्बन्ध के विषय में बातचीत चल रही है इस मास में ऐसे काम में रुकावट पड़ेगी, फरवरी में घरेलू हर एक परेशानी ज्यूं की त्यूं बनी रहेगी, कोई भी समस्या हल नहीं होगी, ऐसी समस्याओं का समाधान मार्च मास में होने सम्भवना है धन की दृष्टि से यह मास कमाई के लिये उत्तम है, आशा से अधिक धन की प्राप्ति होगी, वह तभी सम्भव है जब आप अपने काम में दिलचस्पी लेंगे, नौकरीपेशा होने पर अचानक तर्की के लक्षण देख पड़ेंगे अथवा अचानक तर्की मिले, हर एक समस्या जो नौकरी सम्बन्धित होगी वह भी हल हो जायेगी, यदि आप विद्यार्थी हैं तो आप

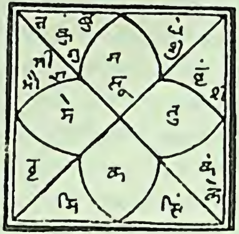

निरुत्साह न हो जायें, फरवरी और मार्च में पढ़ाई में सफलता देने वाले ग्रह अनुकूल हैं, विद्यासम्बन्धित हर काम में सफलता अवश्य होगी, घर में अतिथियों के यातायात में वृद्धि होगी अथवा घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :– 2, 3, 9, 10, 11, 19, 20, 21, 22, 25 और 26।

मार्च: दूसरे भाव का सूर्य तथा चौथे भाव का मंगल यद्यपि गोचर में हानिकारक माने जाते हैं परन्तु ऐसा होने पर भी यह दोनों ग्रह वेध में होने से अशुभ फलदायक ही होंगे, ऐसे ही चन्द्रमा बुध यह दोनों ग्रह यद्यपि गोचर से अच्छे भाव में ठहरे भी हैं परन्तु वेध में होने से अशुभ फलदायक होंगे, गोचरफलित के मर्मज्ञों का कहना है शुभ ग्रह वेध में पड़ने से अशुभ और अशुभ ग्रह वेध में पड़ने से शुभ हो जाते हैं, वेध तथा अष्टकवर्ग को दृष्टि में रखते हुये यह मास प्रायः संघर्ष में ही गुजरेगा, परन्तु संघर्ष और उलझनों के बाद भी प्रायः हर काम में सफलता होगी, यदि आप तिजारत करते हैं तो आप की तिजारत उलझनों के आने पर भी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जायेगी, यदि आप जमींदार हैं अथवा फलों के बागों से सम्बन्धित काम करते हैं तो यह मास दौड़धूप में ही गुजरेगा परन्तु

मार्च मास का वर्षफल

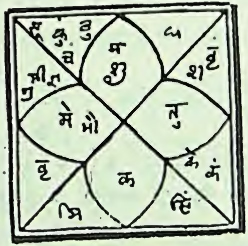

परेशानियां आप को घेरे रखेंगी विशेषतया आप सन्तानपक्ष से परेशान रहोगे, यदि आप अभी गृहस्थी नहीं हैं तो भी घरेलू परेशानियां आप का पीछा छोड़ेंगी नही, आमदनी यथावत् होने पर भी खर्च के नये नये मार्ग खुलते रहेंगे, अतिथियों का आना जाना जोरों पर होगा पार्टियों में शामिल होना तथा पार्टियों का प्रबन्ध करना आप के लिये इस मास का व्यसन रहेगा, यदि आप ने कोई जाईदाद खरीदना या बेचना हो तो हर रूप में आप लाभ में रहेंगे, नोकरी वालों के लिये यह मास सुख शान्ति का ही होगा, आमदनी भी सन्तोषजनक होगी, अचानक कोई तर्की का योग, विद्यार्थियों के लिये यह मास सुख शान्ति का नहीं होगा, पठन-पाठन की प्रवृत्ति कम रहेगी। इस मास के शुभ दिन है :–1, 2, 9, 10, 18, 19 24, 25, 30 और 31।

कुम्भ राशि का वर्षफल

(1) रत्न कोष (2) संहिता सार (3) फल संग्रह (4) गोचर विचार आदि फलित शास्त्रों के आधार से कुम्भ राशि के हर एक ग्रह का अलग 2 फला देश निम्न पढ़े :—

सूर्य :— गोचर में दूसरा होने से धन का नाश, आदर में कमी, शरीर कष्ट, रक्त विकार, चोट का खतरा, हर काम में उलझन, कारण के बिना मानसिक अशान्ति, नीच विचारों के लोगों से मेल मिलाप, मित्रों तथा सम्बन्धियों से झगड़ा, आमदनी में कमी, खर्च की अधिकता, तंगदस्ती से दुचार।

चन्द्रमा :— तीसरे भाव में होने से सुख चैन से बैठने का अवसर मिलता है, धन की प्राप्ति होती है, शरीर में सुधार होता है, शत्रुओं पर विजय होती है, बन्धु जनों से प्रेम में वृद्धि होती है, भाग्य का उदय होता है।

भौम :— 11 वें भाव में गोचर से भौम होने से धन धान्य की प्राप्ति होती है, आमदनी में वृद्धि होती है, जाईदाद का लाभ रहता है, भाइ-बन्धुओं के साथ प्रेम में वृद्धि होती है। हर आरम्भ किये हुये काम में सिद्धि होती है।

बुध :— दूसरे भाव में बुध का होना मानसिक शान्ति को जितलाता है, खान पान वस्त्र इत्यादि का सुख मिलता हैं, विद्या में तर्की होती है, भाई बन्धुओं से मेल जोल का अवसर मिलता है, घरेलू

वातावरण शान्त रहता है, शुभ कामों में खर्च होता है, नेक कमाई से धन मिलता है।

बृहस्पति :— गोचर से पहले भाव का बृहस्पति हानिकारक माना जाता है जबकि गोचरशास्त्रों में दर्ज है— मान हानि होती है हर काम में विघ्न और बाधायें होती हैं, यात्रा में कष्ट होता है, खर्च की बहुतात होती है, आमदनी के मार्ग बन्द हो जाते हैं।

शुक्र :— जब तीसरे भाव का होता है तो मित्रों की वृद्धि तथा मानसिक शान्ति मिलती है, धन का लाभ होता है। नौकरों से सुख मिलता है आदर में वृद्धि होती है, भाग्य का उदय होता है, भाई बन्धुओं से प्रेम मिलता है, राज दरबार में तर्की होती है, धार्मिक अथवा सामाजिक काम की ओर अधिक झुकाव रहता है।

शनि :— दसवें भाव का शनि होने से अचानक स्थान परिवर्तन होता है, हर आरम्भ किये हुये काम में बाधायें तथा उलझने खड़ी होती हैं, धन निरर्थ खर्च होता है बिना कारण मानसिक अशान्ति रहती है, घर से बाहर रहने के लिये मजबूर होना पड़ता है, स्त्री से अन बन होती महिला होने पर पति से नाराजगी होती है।

राहु :— तीसरा राहु होने से शत्रुओं पर विजय होती है, धन का लाभ होता है, भाग्य का उदय होता है।

केतु :— नवें भाव में होने से धार्मिक प्रवृत्ति में वृद्धि होती है घर में धार्मिक महोत्सव रचाने का परोग्राम बनता है, सन्तान-सुख की प्राप्ति होती है।

सम्पादक की दृष्टि में

"कुम्भ राशि का वर्ष फल"

शरीर :— आपका शरीर सामूहिक रूप से इस वर्ष अच्छा रहेगा यदि आपके शरीर में पहले से तकलीफ है तो इस वर्ष इलाज करवाने में लापरवाई न करें शरीर की ओर ध्यान देने से शरीर इस वर्ष अवश्य स्वस्थ हो जायेगा यदि इलाज करवाने पर भी आपका शरीर ठीक न हो सके तो आगे भी स्वस्थ होने की कोई आशा न रखें उपाय के रूप में जन्त्री के पृष्ठ 24 से असाध्य रोग निवारण मन्त्र "रोगान् अशेषान्" का दिन में जितनी बार हो सके उच्चारण किया करें, आपके शरीर से रोग निवारण के लिये यह मन्त्र राम बाण का काम करेगा। इस वर्ष आप विशेषतया शनिवार रविवार को शारीरिक कष्ट महसूस करेंगे यदि शरीर के विषय में मेरी भविष्यवाणी आप पर पूरा उतरे तो आप अवश्य इन दिनों में मांस न खायें अगर आप गृहस्थी है तो ब्रह्मचर्य का भी पालन करें और किसी नशीली वस्तु का प्रयोग न करें।

धन :— जहां यह वर्ष आमदनी की दृष्टि से स्मरणीय होगा वहां खर्च की दृष्टि से भी यह वर्ष कुछ कम नहीं होगा। व्योपारी वर्ग इस वर्ष सामूहिक रूप से लाभ में रहेगा विशेषतया वह व्योपारी जिनका सम्बन्ध फलों अथवा बागात से होगा आपको यह वर्ष मालामाल होने

का है जबकि गोचर से आपको भौम 11 वें भाव में है। 11 वें भौम के प्रभाव से धन आपके पीछे लुड़कता फिरेगा भौम का सम्बन्ध जमीन से है जिसके फलस्वरूप जमीन के माध्यम से आपको लाभ मिलेगा। अगर आप फलों के तिजारत से सम्बन्धित हैं तो आप दिल खोल कर बागात या फल खरीदें या फरोखत करें, दोनों सूरतों में आप लाभ में रहेंगे। भौम का प्रभाव केवल फलों के व्योपारियों पर लागू नही होगा अपितु अगर आप जमींदार हैं तो इस वर्ष आपने जमीन से मानिये सोना प्राप्त करना होगा। आप दिल लगाकर जमीन का काम कीजिये निश्चिय रखिये पृथ्वी माता को "रत्न गर्भा" कहते हैं अर्थात् जिसके गर्भ में रत्न है, इस वर्ष चूंकि ग्रह आपके अनुकूल हैं इसलिये पृथ्वी माता आपको परिश्रम करने पर रत्न ही अर्पण करेगी। एक बात भूलिये मत, आप इस वर्ष जमीन न वेचें बलकि अगर हो सके जमीन खरीदें। जमीन के बेचने पर आप हानि में रहेंगे और जमीन का खरीदना आपके लिये लाभदायक रहेगा। वह जमींदार जिनका कारोबार सस्य आदि का हो, अक्टूबर तक उनका कारोबार हानि में रहेगा, अक्टूबर के बाद वर्ष भर लाभ ही रहेगा। सामूहिक रूप से इस वर्ष सस्य (गल्ला) का कारोबार सन्तोष जनक ही होगा। यदि आपका व्योपार लकड़ी फर्नीचर आदि से होगा तो यह वर्ष आपके लिये एक प्रकार का मनहूस वर्ष होगा। जो व्योपारी तेल घी, कोयला, सीमेन्ट किरयाना का काम करते हैं बहुत प्रयत्न करने पर भी अन्त में सामूहिक रूप से इस वर्ष अधिक लाभ में नहीं रहेंगे। यदि आप किसी फैक्ट्री के मालिक हैं अथवा लोहे मिशीनरी सम्बन्धित काम करते हैं तो इस वर्ष आपका कारोबार फलेगा फूलेगा यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो यह वर्ष आमदनी की दृष्टि से रंग बदलता रहेगा। कभी आमदनी आशा से अधिक कभी तंगदस्ती से दुचार होगा।

नौकरी :— यदि आप नौकरी करते हैं तो यह वर्ष अशान्त वातावरण में व्यतीत होगा। यदि आप किसी अच्छी पदवी पर हैं या सर्व साधारण पदवी पर तो हर दो सूरतों में आपकी कुर्सी डगमगाती रहेगी। कभी अफसरों से नाराजगी तथा कभी, मातहतों से अनबन। आप सावधान रहिये आप पर झूठा या सही कोई न कोई आरोप लगने की सम्भावना है, तब्दीली का योग अवश्य है परन्तु वह तब्दीली आपकी इच्छा के प्रतिकूल होगी। यह वर्ष आप को दौड़ धूप तथा संघर्ष में ही गुजारना होगा। उपाय के रूप में "सर्व बाधा प्रशमनं त्रैलोकस्याखिलेश्वरि एवमेवत्वया कार्यं अस्मत् वैरि विनाशनम्" इस मन्त्र का बार बार उच्चारण किया करें। यही मन्त्र आपका अंग रक्षक बनकर आपकी सहायता करने में समर्थ होगा।

एक गृहस्थी के रूप में यह वर्ष आपके लिये सफलता का वर्ष होगा। बहुत समय की गृहस्थ की उलझी हुई समस्यायें स्वयमेव सुलझ जायेंगी। यदि आपके घर में आपके लड़के अथवा लड़की के विवाह में कोई रुकावट पड़ती है अथवा ऐसी कोई समस्या है तो इस वर्ष प्रयत्न करने पर हर एक ऐसी समस्या हल होगी. आप हाथ पर हाथ धर कर न बैठें इस वर्ष के चान्स को हाथ से मत जाने दीजिये, न ही तो न मालूम

भविष्य में कितने समय के लिये प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। घर में नये नये खर्च के मार्ग निकल आयेंगे। कोई महान महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा यदि आपको तामीरी काम करने का प्रोग्राम है तो इस वर्ष ऐसे काम को अवश्य अमली रूप देने का प्रयत्न कीजिये। ऐसे कामों को सफल बनाने के लिये इस वर्ष ग्रह अनुकूल हैं। यदि यात्रा का भी कोई परोग्राम बने तो उसको अमली रूप दीजिये वह यात्रा आपके लिये लाभ दायक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग इस वर्ष सावधान रहे, इस वर्ष विद्या की सफलता के लिये ग्रह अनुकूल नहीं है जबकि विद्या के घर का स्वामी बुध दूसरे भाव में पड़ा हैं। भौम आपके विद्या के भाव को तथा दूसरे भाव में पड़े बुध को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह योग गोचर-फलित में हानि कारक माना जाता है। यदि आपने पढ़ाई में लापरवाई की तो आप सफलता की आशा न रखें। कोशिश करने पर ही सफलता की आशा रखें। उपाय के रूप में आप नित्य चार बजे पूर्व नीद से उठा करें और सूर्योदय तक पढ़ाई में लगे रहें क्यों कि आपको दिन भर पठन पाठन की प्रवृित्ति कम रहेगी। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो शनि आपकी नौकरी मिलने मे बाधक बनेगा। कोशिश करने पर भी सफलता की आशा नहीं। यदि आपकी ग्रहचाल जन्म पत्री से अनुकूल होगी भी तो भी आपकी सफलता अक्टूबर के बाद ही होगी। इस वर्ष आपने जो कोई भी शुभ काम आरम्भ करना हो, बुधवार ब्रहस्पतिवार अथवा शुक्रवार को करें।

कुम्भ राशि का मासिक फल

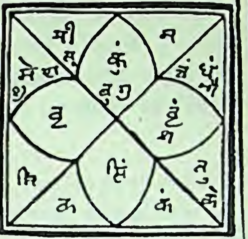

अप्रेल :— गोचर में पहला बृहस्पति यद्यपि हानिकारक माना भी जाता है परन्तु वेध में होने से बृहस्पति शुभ फल दायक ही होगा। आप का शरीर स्वस्थ रहेगा। यदि आपका शरीर कमजोर अथवा तकलीफ में ग्रस्त है तो इस मास में जरासा ध्यान देने पर आपका शरीर स्वयमेव ठीक हो जायेगा यदि आप गृहस्थी हैं तो आपका घरेलू वातावरण अनुकूल रहेगा, बच्चों की ओर से मानसिक शान्ति रहेगी, भाई-बन्धुओं के साथ मेल जोल में वृद्धि होगी। मित्रों तथा रिश्तेदारी से मिलने जुलने का अवसर मिलेगा यदि आप विवाहित नहीं हैं (आप महिला हैं या पुरुष) और विवाह के इच्छुक हैं तो इस मास में अचानक सम्बन्ध जुड़जाने का योग है। यदि आप विवाहित हैं और बच्चा होने के लिये परेशान हैं तो निशिचित रहिये कि इस मास में आपकी यह परेशानी दूर होगी अर्थात् पुत्र पैदा होगा अथवा गर्भ का योग है। धार्मिक तथा सामाजिक कामों से अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी, अतिथि सेवा में अधिकतर व्यस्त रहना होगा जबकि अतिथियों का यातायात जोरों पर रहेगा। यदि आ व्योपारी हैं तो आपके लिये यह मास हर पहलू से लाभ दायक रहेगा। लोहा, तेल

घी से सम्वन्धित व्योपारियों को अकस्मात हानि की सम्भावना है, सस्य आदि से सम्वन्धित व्योपारी भी अशान्त रहेंगे। किरयाना कपड़ा आदि से सम्बन्धित व्योपारी लाभ में रहेंगे यद्यपि कुम्भ राशि वालों को सामूहिक रूप से वर्ष भर की आमदनी यथावत् होगी, परन्तु खर्च का आधिक्य होगा यदि आप कोई तामीरी काम करने का इरादा रखते हैं तो ऐसे काम के लिये यह मास अनुकूल नहीं है अपितु इस मास में ऐसे काम का आरम्भ करना ही आपके लिये परेशानी का कारण होगा। नौकरी पेशा कुम्भ राशि वालों के लिये यह मास आदर व मान का होगा, हर आरम्भ किया हुआ काम लक्ष्य तक पहुंचेगा बहुत समय से लटकती हुई अधूरी रही समस्याओं का भी समाधान होगा यदि आप का इस वर्ष कोई वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम है तो ऐसे काम के लिये इस मास के ग्रह आपके अनुकूल हैं यदि इस मास में ऐसे काम का आरम्भ न भी करोगे बल्कि आने वाले चन्द महीनों में ही करोगे तो वह वाहन आपके लिये परेशानी का कारण होगा। विद्यार्थी होने पर विद्या सम्वन्धित हर काम में बाधा। यदि आप का कोई परिणाम निकलने वाला हो अथवा इस मास में इन्टर विव में सम्मिलित होना हो अथवा किसी ट्रेनिग के लिये जाना हो तो ऐसा काम इस मास में लटकता ही रहेगा, पठन-पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी, केवल मित्रो रिश्तेदारों के मेल मिलाप में समय व्यतीत होगा। इस मास के शुभ दिन हैं — 5, 6, 10, 11, 17, 18, 19, 26, 27, 28, और 29।

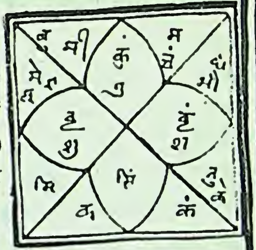

मई :— इस मास की ग्रह चाल कुछ उत्तम ही है (1) शरीर सुख मध्यम रहेगा (2) धन की स्थिति कुछ ठीक ही रहेगी (3) बन्धुओं रिश्तेदारों के मेल मिलाप तथा प्रेम में ढील (4) माता पिता की ओर से सुख तथा अचानक कोई जाईदाद सम्बन्धी लाभ मिले (5) गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से सुख तथा कोई शुभ सन्देश मिले (6) शत्रुओं का जोर रहेगा (7) विवाहित होने पर अगर आप पुरुष हैं तो पत्नी की ओर से सुख, यदि आप महिला हैं तो पति की ओर से शान्ति (8) अकस्मात् चोट की सम्भावना (9) धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी (10) दरबार से अशान्ति (11 आमदनी में वृद्धि (12) व्यर्थ खर्च।

शरीर :— इस मास में शरीर की स्थिति ढांवांडोल रहेगी अकस्मात् शरीर कष्ट के योग की भी सम्भावना है जबकि वृहस्पति गोचर से पहले भाव में ठहरा है, आप के लिये इस मास में वैष्णव रहना आवश्यक है। आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। व्योपारी होने पर आपका कारोबार अच्छे ढंग में चलता रहेगा, आपके व्योपार में कमाई के नये-नये साधन निकल आयेंगे, कारोबार को बढ़ावा देने के लिये कोई नई योजना बनाने का विचार, यदि यह योजना इस मास

में चालू न भी होगी परन्तु इस मास में किसी नये काम की नींव डालनी आपके कारोवार के लिये वहुत लाभदायक रहेगी, विशेष कर यदि आप मशीनरी सम्वन्धित कोई काम अथवा हार्डवियर आदि का तिजारत करना चाहते हैं तो ऐसे काम के लिये भौम आपके लिये अनुकूल ग्रह है। यदि आप फलों अथवा वागात से सम्वन्धित काम करते हैं, वगात अथवा फलों के खरीद का व्योपार आप के लिये लाभ दायक रहेगा फरोख्त करने का कान आपके लिये लाभदावक नहीं रहेगा। यदि आप जमींदार हैं तो यह महीना दौड़धूप तथा संघर्ष में गुजरेगा उस संघर्ष का परिणाम आपके अनुकूल होगा यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो दौड़धूप अधिक परन्तु तंगदस्ती से दुचार होगा, धन की कमी से कारोवार में रुकावट पडेगी जो परेशानी का कारण वनेगी यदि आप **नौकरी** करने हैं तो इस मास में आप चौकस रहिये, अकस्मात् कोई झगड़ा खड़ा होने की सम्भावना है, सम्वन्धित अफसर से तेज कलामी होगी अथवा कोई आरोप लगने की सम्भावना है। यदि आप विद्यार्थी हैं तो यह मास विद्या सम्वन्धित हर काम के लिये सफलता का है पठन-पाठन की ओर अधिक प्रवृत्ति बनी रहेगी, यदि आप गृहस्थी हैं तो आप गृहस्थ पक्ष से परेशान रहेंगे जवकि शनि सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देखरहा है। स्त्री के वारे में आप सावधान रहिये उसकी ओर से कोई न कोई परेशानी वनी रहेगी यदि आप अविवाहित हैं तथा विवाह के इच्छुक हैं तो इस मास में यह समस्या [illegible]

ज्यूं की त्यूं बनी रहेगी। इस मास के शुभ दिन हैं। 3, 4, 7, 8, 9, 15, 26; 23, 24, 25, 30, और 31।

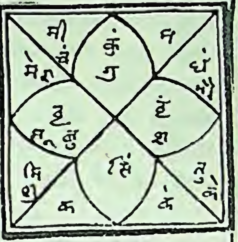

जून :— इस मास के ग्रह अच्छी स्थित में हैं चौथा सूर्य यद्यपि हानिकारक माना जाता है परन्तु वेध में होने से हानिकारक नहीं बल्कि शुभ फल दायक ही होगा। शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा जवकि इस मास में बृहस्पति अष्टक वर्ग से अच्छी स्थिति में हैं। आपका हर आरम्भ किया हुआ काम विना रुकावट के सिद्ध होगा। यदि आपको कोई तामीरी काम अथवा जाईदाद वनाने का विचार है तो इस मास में ऐसे काम का आरम्भ करने से यह तामीरी काम विना किसी परेशानी के सम्पूर्ण होगा। यदि आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो विना किसी हिचकिचाहट के इस मास में खरीदें। इस मास में ऐसा किया हुआ काम आपके लिये शुभ शकुन होगा। इस महीने से आपके कारोवार को फलने फूलने का दौर आरम्भ होगा, शर्त यह है कि आप अपने व्योपार की लाईन को वदलें अथवा नये ढांचे में डाले इस उपाय से करने से ही आपके व्योपार को वढ़ावा मिलेगा यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह मास शान्त वातावरण में ही व्यतीत होगा। दरवार सम्वन्धित हर काम में लाभ तथा मान की प्राप्ति आप के बहुत समय से खटाई में पड़े हुये काम हरकत में आयेंगे

गृहस्थी कुम्भ राशि वालों के लिये यह मास महत्पूर्ण है। इस मास में हर एक घरेलू समस्या का समाधान होगा, चाहे वह पितृ पक्ष की हो या मातृ पक्ष की, स्त्री पक्ष की हो अथवा पति पक्ष की। विद्यार्थी वर्ग के लिये हर काम के लिये यह मास सफलता का है यदि कोई परिणाम निकलने वाला होगा तो शान व मान से सफलता होगी। अगर इन्टर विव आदि देना हो तो उस में सफलता निश्चित है। वस्तुतः विद्यार्थियों के लिये यर मास हर पहलू से उत्तम है। इस मास के शुभ दिन हैं:—4 5, 11, 12, 13, 14, 20, 21, 26, और 27।

जुलाई :— गोचर मर्मज्ञों का कहना है— नित्य फला देश के लिये चन्द्रमा अधिक प्रभावशाली होता है। मासिक फला देश के लिये सूर्य का प्रभाव अधिक होता है, ऐसे ही वार्षिक फला देश के लिये वृहस्पति और शनि अधिक प्रभावशाली ग्रह होता है। इस मास में सूर्य पांचवें भाव में है जिसके विषय में

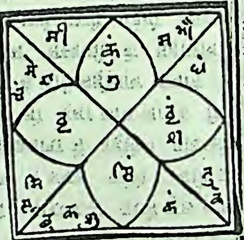

"गोचर विचार" नाम के गोचर फलित में दर्ज है— मानसिक अशान्ति रहती है शरीर में कमजोरी आती है गृहस्थी होने पर सन्तान पक्ष से चिन्ता होती है। यद्यपि पांचवा सूर्य गोचर फलित के आचार से इस मास के लिये दूषण है, परन्तु बुध और शुक्र दोनों ग्रहों के वेध में होने से इस मास में सूर्य भी भूषण बनेगा सूर्य के प्रभाव से इस मास में शरीर सुख उत्तम रहेगा, आदर व मान में वृद्धि होगी, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों के मेल मिलाप में वृद्धि होगी गृहस्थी होने पर गृहस्थ पक्ष से भी मानसिक शान्ति रहेगी, सन्तान पक्ष से कोई शुभ सन्देश मिले, लड़के अथवा लड़की के सम्वन्ध के विषय में यदि आप परेशान हैं तो कहीं सम्वन्ध की बात टिक जायेगी। शत्रुओं पर विजय होगी। यदि आप किसी उलझन में फंसे हुये हैं तो वह उलझन भी सुलझ जायेगी। यदि आप शिक्षित हैं और नौकरी की प्राप्ति के लिये परेशान हैं तो प्रयत्न करने पर नौकरी अवश्य मिलेगी, यदि नौकरी न भी मिले तो भी नौकरी मिलने की आशा दृढ़ होगी। अगर आप विद्यार्थी हैं तो पढ़ाई में जुट जायें, इस मास में पढ़ा हुआ पाठ आपको परीक्षा में पास करने मे सहायक रहेगा। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो इस मास में शनि आप के लिये प्रभावशील रहेगा विना कारण के दरवार में परेशानी अथवा सम्वन्धित कार्यकर्ताओं से अनबन होगी। दसवें शनि का प्रभाव इस मास में आप के तामीरी काम पर भी होगा। तामीर सम्बन्धित कोई भी आरम्भ किया हुआ काम बहुत रुकावटों के बाद ही पूरा हो जायेगा। वाहन आदि यदि खरीदना हो तो इस मास में न खरीदें इस महीना में खरीदा हुआ वाहन दर्द-सिर का कारण बनेगा। इस महीने के शुभ दिन हैं— 4, 5, 11, 12, 13, 14, 20, 21, 26 और 27

अगस्त :— गोचर फल में सूर्य और चन्द्रमा का महत्वपूर्ण स्थान होता है

और उसकी स्थिति कुछ डांवां डोल है तो इस मास में वह जाईदाद या पूंजी अवश्य प्राप्त होगी। यदि इस मास में भी न मिले तो मिलने की आशा न रखें। व्योपारियों को अचानक व्योपार में लाभ होगा। जमींदार होने पर जमीन सम्बन्धित हर काम में सफलता तथा लाभ होगा अगर आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं तो ऐसे काम के लिये भी ग्रह आपके अनुकूल हैं। यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करेंगे या उसका प्रोग्राम बनायेंगे, आरम्भ में उसमें कुछ बाधा पड़ेगी परन्तु हिम्मत करने पर ऐसे काम में सफल रहोगे। यदि इस मास में कोई ज़ाईदाद वेचना चाहोगे तो खसारा में रहोगे। यदि कोई जाईदाद जमीन वाहन आदि खरीदना हो तो ऐसा काम आपके लिये शुभ शकुन होगा। गृहस्थी होने पर घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा अथवा किसी निकटतम सम्बन्धी के महोत्सव में सम्मिलित होना पडेगा जिस में काफी पूंजी खर्च करनी पड़ेगी विद्यार्थी होने पर आप इस वर्ष डट कर पढ़ाई में लग जायें, निश्चय रखिये आपको आशा से अधिक सफलता मिलेगी आप अच्छे डिवीजन में पास होजावोगे। इस मास के शुभ दिन नोट करें :— 1, 2, 3, 5, 6 7, 8, 14, 20, 21, 24, 25 और 26

सितम्बर :—सूर्य और बुध गोचर से सातवें भाव में हानिकारक माना जाता है परन्तु यह दोनों ग्रह वेध में हैं शेष सभी ग्रहचाल आपके अनुकूल ही हैं। इस मिले जुले योग के अनुसार यह मास आर्थिक दृष्टि से यथावत् चलता रहेगा परन्तु खर्च की भरमार होगी गृहस्थी होने पर घर पर कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा, प्रोग्राम भी ऐसा होगा जिसमें धन की बड़ी राशि खर्च होगी। यदि ऐसा करना असम्भव हो तो भी कोई तामीरी काम आरम्भ करना होगा।

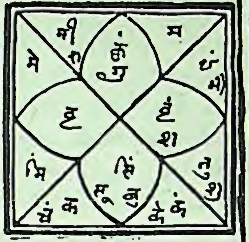

इस मास में खर्च के नये नये मार्ग खुल जायेंगे यदि कोई जमीन जायदाद वाहन आदि खरीदने का प्रोग्राम आपके मन में होगा तो ऐसा प्रोग्राम इस मास में अवश्य हल होगा। व्यापारी वर्ग के लिये यह मास लाभ का है, आपके कारोबार को अचानक बढ़ावा मिलेगा। यदि आप जमींदार हैं तो आपके पशुधन को अचानक हानि की सम्भावना है। यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं तो फलों का वेचना आपके लिये लाभदायक रहेगा। बागात अथवा फलों का खरीदना इस मास में हानि का कारण होगा। तामीरी काम आरम्भ करने के लिये यह मास शुभ है, विना रुकावट के सफलता होगी। घर में शुभ कामों पर खर्च की योजना बनेगी। सामाजिक तथा धार्मिक कामों से अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी। भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों

से मेल व मिलाप में वृद्धि होगी। पार्टियों में सम्मिलित होना अथवा पार्टियां देना इस मास का विशेष व्यसन रहेगा। नौकरी पेशा कुम्भ राशि वालों के लिये यह मास हर प्रकार से शुभ फलदायक होगा। विद्यार्थी वर्ग को पठन-पाठन की प्रवृति में अधिकता होगी यदि इस मास में कोई परीक्षा अथवा इन्टरविव आदि देना हो तो सफलता निश्चित है, यदि परीक्षा न भी हो तो भी विद्या-सम्बन्धित जिस काम का इस मास में श्रीगणेश करोगे वह भविष्य में आपके लिये लाभदायक रहेगा। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—1, 2, 10, 11, 12, 16, 17, 18, 19, 21, 22, 28 और 29।

अक्टूबर :—इस मास में प्रायः सभी ग्रह अशुभ फल के ही सूचक हैं, शरीर-सुख मध्यम रहेगा, अचानक सिर अथवा आंखों में तकलीफ होगी, चोट की सम्भावना है, कमाई में कमी होगी। जो काम आप हाथ में लेंगे, रुकावट और बाधाओं से दुचार होगा। कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। भाई-बन्धुओं मित्रों से बिना कारण के नाराजगी अथवा अचानक अनबन अगर आपके सौभाग्य से आपको माता-पिता की छत्रछाया है तो उनके शरीर के विषय में सावधान

रहिये। गृहस्थी होने पर आपको गृहस्थपक्ष से अशान्ति रहेगी। शत्रुओं का जोर रहेगा परन्तु कोई भी शत्रु आप पर हावी न होगा। हर एक विरोधी को आपके सामने मुंह की खानी पड़ेगी। नवें भाव में शुक्र होने से जो अष्टकवर्ग से अच्छी स्थिति में है के प्रभाव से अच्छे पुरुषों से मेल मिलाप जो आपकी मानसिक शान्ति का कारण होगा। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो आपका काम यथावत् चलता रहेगा। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो प्रयत्न कीजिये इस मास में नौकरी मिलने की सम्भावना है। यदि ऐसा सम्भव न हो सका तो भी इस मास में नौकरी मिलने की आशा सुदृढ़ हो जायेगी। यदि कोई तामीरी काम विचाराधीन है या चालू है तो इस मास में वह काम बहुत हद तक हल हो जायेगा। अगर आप कोई वाहन आदि खरीदना चाहते हैं तो इस मास में खरीदा हुआ वाहन आपके लिए शुभ शकुन है। गृहस्थी होने पर लड़के अथवा लड़की का विवाह सम्बन्ध इस मास में होने का योग है अथवा कहीं बात पक्की हो जायेगी। घर में कोई शुभ महोत्सव रचाने का प्रोग्राम अवश्य बनेगा। धार्मिक कामों से दिलचस्पी अथवा किसी तीर्थ पर जाने का शुभ अवसर मिले। अगर आप विद्यार्थी हैं, इस मास में पठन-पाठन के लिये अवसर कम मिलेगा। यदि विद्यासम्बन्धित कोई परिणाम निकलने वाला हो अथवा इन्टरविव आदि में सम्मिलित होना हो तो ऐसे कामों के लिये इस मास में सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—7, 8, 9, 10, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 25 और 26।

नवम्बर :—सूर्य चन्द्रमा भौम बुध जो वेध में होने से अच्छी स्थिति में नहीं है परन्तु दसवां शनि वेध में होने से तथा नवें भाव का शुक्र शुभ फल का सूचक है। इस मिले-जुले योग के अनुसार यह मास संघर्ष तथा दौड़ धूप में ही गुजरेगा। अगर आप को घर से बाहर रहने का अथवा यात्रा का प्रोग्राम बने तो बिना किसी हिचकिचाहट के ऐसा प्रोग्राम अवश्य बनायें, ऐसा करना आपके लिए लाभदायक रहेगा और मानसिक शांति भी रहेगी। इस मास में शरीर की परेशानी बनी रहेगी। यदि आप गृहस्थी हैं तो आप गृहस्थ की ओर से भी परेशान रहेंगे, यदि आप महिला हैं तो पति की परेशानी बनी रहेगी, यदि पुरुष हैं तो स्त्री की परेशानी बनी रहेगी। सन्तानपक्ष से भी मानसिक अशान्ति का योग है। यदि सन्तान आप की आंखों से दूर रहता है तो कोई परेशानी नहीं होगी। घरेलू समस्यायें दिनों दिन नये नये रूप में सामने आती रहेंगी, प्रायः हर एक समस्या लटकती ही रहेगी। अगर आप तिजारत करते हैं तो आपका कामकाज ढीला पड़ेगा यद्यपि माल खरीदने में बहुत पूंजी लगायेंगे भी परन्तु माल बेचने में बाधा पड़ेगी यदि आप किरयाना तथा अनाज आदि का व्यापार करते हैं, तो इसमें प्रायः लाभ ही रहेगा। यदि इस मास में कोई यात्रा का प्रोग्राम बने तो वह यात्रा केवल खर्च करने का एक साधन होगा, उस यात्रा में लाभ की कोई आशा न रखें भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मिलने जुलने का योग मिलेगा। यदि आप विद्यार्थी हैं तो विद्यासम्बन्धित हर काम में रुकावट पड़ेगी। इस मास के शुभ दिन नोट करें :—3, 4, 5, 6, 10, 11, 14, 15, 22, 23 और 24।

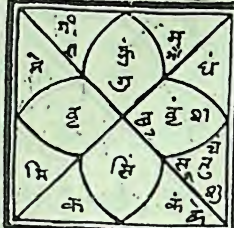

दिसम्बर :—15 नवम्बर तक सूक्ष्म गणित से आपका भौम बारवें भाव में था। 10 नवम्बर से भौम कुम्भ राशि में आया है। पहले भाव का भौम हानिकारक माना जाता है, ऐसे ही पहले भाव में बृहस्पति का होना हानिकारक माना जाता है परन्तु यह दोनों ग्रह एक ही जगह आने से वेध में पड़ गये हैं जिसके फलस्वरूप यह दोनों ग्रह अशुभ होते हुये भी शुभ-फलदायक हो गये। इस मास में प्रायः भौम लग्न में ही रहेगा। इन दोनों ग्रहों के प्रभाव से यह मास शान व मान में ही गुजरेगा। अगर आप नौकरी पेशा हैं, कोई तरक्की आदि का मसला विचाराधीन है तो वह हल हो जायेगा। यह मास शान्त वातावरण में गुजरेगा। लाभ की दृष्टि से भी यह मास आपके लिए उत्तम है अगर आप व्यापारी हैं तो आपका व्यापार लाभ में रहेगा यदि आप फलों अथवा बागात से सम्बन्धित कारोबार करते हैं तो खरीद के लिए यह मास हानिकारक

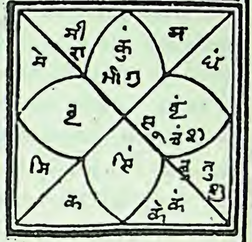

होगा परन्तु बेचने के लिये लाभदायक रहेगा। अगर आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आपका काम तेजी से आगे बढ़ता जायेगा हालांकि इस मास में धन की कमी भी रहेगी। यदि आप अनाज, कपड़ा, किरयाना सम्बन्धित तिजारत करते हैं तो आपको मनोवांछित लाभ मिलेगा। गृहस्थी होने पर आपका घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, हर एक घरेलू समस्या हल होगी। अगर आप किसी झगड़े में अथवा मुकद्दमा में उलझे हुये हैं इस मास में ऐसे झगड़े को सुलझाने में ग्रह अनुकूल है। भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों का आना जाना जोरों पर रहेगा। अतिथि सेवा इस मास का विशेष व्यसन होगा। अकस्मात् यात्रा का योग बनेगा परन्तु उस यात्रा में लाभ की कोई आशा न रखें अपितु खर्च की अधिकता होगी। धार्मिक तथा सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी।

इस मास के शुभ दिन नोट करें :—1, 2, 3, 4, 7, 8, 12, 13, 19, 20, 22, 28, 29 और 30।

जनवरी :—नये वर्ष के आरम्भ पर जो ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं वह ग्रह वेध तथा अष्टक वर्ग से सुधरे हुये हैं, इस मिले जुले योग के आधार से यह मास आपके लिये नये वर्ष का शुभ सन्देश लेकर आया है। आपका शरीर स्वस्थ रहेगा। घर में अगर आप को किसी सदस्य की परेशानी है, ग्रहों के प्रभाव से वह परेशानी दूर होगी। अगर आप को कोई तामीरी काम करने का प्रोग्राम है, तो इस मास में उसकी योजना बनायें, इस मास में मन से किया हुआ संकल्प अवश्य सफल होगा। यदि यात्रा का प्रोग्राम है, बिना किसी हिचकिचाहट के वह प्रोग्राम अवश्य बनायें, इस महीने की यात्रा आप के लिये सफल रहेगी। गृहस्थी होने पर भाई-बन्धुओं तथा रिश्तेदारों का यातायात जोरों पर रहेगा। आमदनी यथावत् होगी परन्तु खर्च अधिक होगा। कुम्भ राशि वाले नौकरीपेशा के लोगों को यह मास सुख शान्ति के वातावरण में गुजरेगा। अच्छे अच्छे पुरुषों से मेल-मिलाप का अवसर मिले। नौकरी के सम्बन्ध में यदि आप को कोई चिन्ता है तो वह चिन्ता स्वयं ही दूर हो जायेगी। व्योपारीवर्ग के लिये विशेषतया जो थोक का काम करते हैं अधिक लाभ में रहेंगे। जो व्योपारी परचून का काम करते हैं उनको मनोवांछित लाभ नहीं होगा जिनके तिजारत का सम्बन्ध मिशीनरी लोहे सीमेंट आदि से होगा तो उनके लिये यह मास स्मरणीय मास होगा जो व्योपारी फलों से सम्बन्धित काम करते हैं, इस मास में खरीदे हुये बागात अथवा बेचे हुये बागात आपके लिये लाभदायक रहेंगे फलों का खरीद फरोख्त हानिकारक रहेगा। विद्यार्थीवर्ग के लिये यह मास सफलता का नहीं है। पठन-पाठन की ओर प्रवृत्ति कम रहेगी।

इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये :—3,4,5,8,9,15,16,18,19, 24, 25, 26 और 31

फरवरी :—गोचर के आधार से सूर्य बुध बृहस्पति शनि उत्तम नहीं हैं परन्तु ऐसा होने पर भी यह ग्रह वेध में हैं, ऐसे ही शेष शुक्र चन्द्रमा आदि अच्छी स्थिति में हैं, इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह महीना संघर्ष में ही गुजरेगा जो कोई भी काम आप अपने हाथ में लेंगे बिना उलझन तथा संघर्ष के

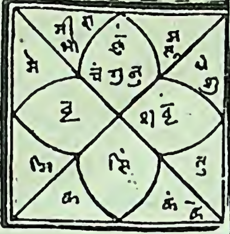

सिद्ध नहीं होगा। मामूली से मामूली काम के लिये भी अधिक परिश्रम करना होगा। सामाजिक अथवा धार्मिक कामों से अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी। सन्तानपक्ष से विशेष मानसिक शान्ति रहेगी। विद्यार्थी होने पर अगर इस मास में कोई परिणाम निकलने वाला हो तो आपने आशा से अधिक दर्जे में पास होना होगा। विद्या-सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी

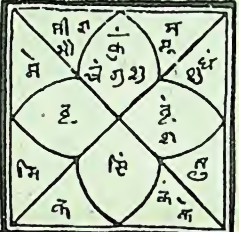

सिद्ध नहीं होगा। मामूली से मामूली काम के लिये भी अधिक परिश्रम करना होगा। सामाजिक अथवा धार्मिक कामों से अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी। सन्तानपक्ष से विशेष मानसिक शान्ति रहेगी। विद्यार्थी होने पर अगर इस मास में कोई परिणाम निकलने वाला हो तो आपने आशा से अधिक दर्जे में पास होना होगा। विद्या-सम्बन्धित हर काम में सफलता होगी इस मास के शुभ दिन हैं :—4, [illegible], 12, 13, 14, 15, 21 और 22।

मार्च :—गोचर-शास्त्र में यह बात स्पष्ट है, मासिक फलादेश में सूर्य का प्रभाव अधिक होता है। 15 मार्च तक सूर्य पहले भाव में रहेगा पहला सूर्य अशुभ माना जाता है जैसा कि गोचर मर्मज्ञों का कहना है धन का नाश होता है—स्वास्थ्य बिगड़ता है, हर काम में रुकावट पड़ती है, अचानक बिना किसी प्रयोजन के

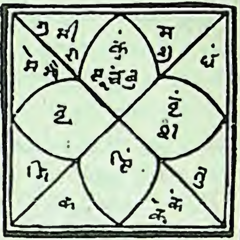

यात्रा करने पर विवश होना पड़ता है, अचानक झगड़े खड़े होते हैं। अगर यह फलादेश अशुभ भी जितलाया है परन्तु सूर्य इन 15 दिनों के लिये वेध में है इस लिये मेरा ऊपर लिखा हुआ फलादेश उलटा भी हो सकता है अर्थात् 15 मार्च तक आपके लिये हालात ठीक भी हो सकते हैं परन्तु 15 मार्च के बाद यह मास अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा। दूसरे सूर्य के विषय में गोचर फलित में दर्ज है—दुष्ट तथा नीच

विचारों के लोगों से दुचार होता है, सिर अथवा आंखों में पीड़ा होती है, यह मास अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा। व्योपारी होने पर अगर हानि की कोई सम्भावना नहीं परन्तु इस मास में कारोबार ढीला रहेगा विशेपतया मास का दूसरा भाग विशेष हानिकारक होगा। नौकरीपेशा होने पर यह मास अशान्ति तथा संघर्ष में व्यतीत होगा। खर्च का आधिक्य होगा। आमदनी में कोई वृद्धि होगी नहीं अपितु हानि की ही सम्भावना है। यदि आप विद्यार्थी हैं तो विद्या सम्बन्धी हर काम में सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं—3,4,5,11,12,13,14, 20,21,22,23,26 और 27।

मीन राशि का वर्षफल

बृहद्संहिता आदि गोचर फलित शास्त्रों में लिखा हुआ ग्रहों का फलादेश निम्न है :—

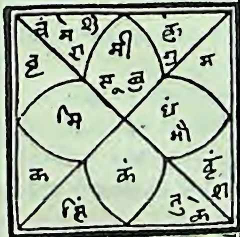

(1) पहले भाव में सूर्य :—धन की हानि, आदर में कमी, शरीर का अस्वस्थ होना, हर आरम्भ किये काम में रुकावट, परिवार से अलग होने पर विवश होना, सम्बन्धियों रिश्तेदारों से झगड़ा, मानसिक अशान्ति से भय, स्त्रियों से अनबन।

(2) दूसरे भाव में चन्द्रमा :—मानसिक अशान्ति, घरेलू परेशानी, नेत्रों में तकलीफ, अच्छे खानपान की प्राप्ति, हर आरम्भ किये हुये काम में असफला, नीच कर्मों की प्रवृत्ति, पठन-पाठन में रुकावट।

(3) दसवें भाव में भौम :—शरीर में चोट का भय, घर से बाहर रहने पर विवश होना पड़ता है, कारोबार में बाधायें, चोरों का भय राजदरबार में मानहानि, धन की हानि, परन्तु वराहसंहिता में धन के बारे में इसके विपरीत लिखा है—दसवां भाव में होने से धन का लाभ होता है।

(4) पहले भाव में बुध :—चुगलखोरी तथा दूसरों की निन्दा करने में समय व्यतीत होता है, बोलचाल में कठोरता तथा तेजी आती है, धन की हानि होती है, समाज में प्रतिष्ठा में धक्का लगता है।

(5) बारवें भाव में बृहस्पति :—गृहस्थी होने पर पुत्रों से झगड़ा यहां तक कि उनसे अलग होने पर विवश होना पड़ता है, यात्रा में कष्ट और धन का निरर्थ खर्च होता है, झूठा आरोप लगने की सम्भावना होती है, शरीर अस्वस्थ रहता है।

दूसरे भाव में शुक्र :—धन की प्राप्ति लगातार होती रहती है, शरीर स्वस्थ रहता है, अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनने अथवा खरीदने की प्रवृत्ति में वृद्धि होती है, अपने कामकाज को बढ़ावा देने की प्रवृत्ति बनी रहती है, घर में कोई मंगल कार्य बनाने की योजना बनती है, खर्च करने में प्रवृत्ति बनी रहती है,

(7) नवं भाव में शनि :—भिन्न-भिन्न प्रकार की परेशानियों

से दुचार होता है, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी में कमी आती है, भाई-बन्धुओं से अनबन, लाभ में बाधा झूठा आरोप आदर तथा प्रतिष्ठा में कमी होगी।

(8) **दूसरे भाव में राहु** :—अकस्मात् हानि की सम्भावना, हाथ में आया हुआ लाभ हाथ से जाता रहता है, अचानक झगड़े हो जाते हैं जो मानसिक अशान्ति के कारण वनते, विद्यार्थी होने पर पढ़ाई में रुकावट पड़ती है, शत्रुओं का जोर रहता है, शरीर अस्वस्थ रहता है, सिर अथवा आंखों में तकलीफ होती है।

(9) **आठवें भाव का केतु** :—शरीरकष्ट को जितलाता है, विदेश यात्रा की सम्भावना होती है, नाभि से निचले हिस्से में तकलीफ

सम्पादक की दृष्टि से मीन राशि का वर्षफल

यद्यपि गोचर शास्त्रों में आपका फलादेश प्रायः हानिकारक जितलाया गया है परन्तु गोचर-शास्त्र के मर्मज्ञों का ही कहना है गोचरफल पर वेध तथा अष्टक वर्ग का प्रभाव अधिक होता है, ऊपर दिये गये गोचरचक्र में "सूर्य भौम बुध" ये तीनों ग्रह अशुभ होते हुये भी शुभफल देने वाले ही होंगे, ऐसे ही बृहस्पति शुक्र आदि ग्रह भी अष्टकवर्ग से कुछ सुधरे हुये हैं, इस मिले जुले शुभ अशुभ योग के प्रभाव से आपका शरीर इस वर्ष डांवाडोल स्थिति में ही रहेगा, कभी एक अंग में तकलीफ कभी दूसरे अंग में यदि जन्मपत्री के आधार से आप की दशा ठीक हो और आप शरीर कष्ट से बच भी गये तो भी गृहस्थी होने पर आपको स्त्री के शरीर सम्बन्धित चिन्ता बनी रहेगी, उपाय के रूप में—रविवार को कांसी की कटोरी या खोसू में एक दो चम्चा शहद और थोड़ा शुद्ध जल लेकर दायें हाथ की तर्जनी उंगली से इस शहद और पानी को हिलाते जायें और तीन बार जन्त्री के पृष्ठ 28 से 'रोगान् अशेषान' इस का बार-बार उच्चारण करके 'ॐ' शब्द का उच्चारण करके पी लीजिये, अगर यह औषधि आपको शरीर की रक्षा करने में कुछ सहायक रहे तो वर्ष भर हर रविवार को इस औषधि का प्रयोग करें

धन :—आमदनी की दृष्टि से यद्यपि यह वर्ष अच्छा रहेगा परन्तु हर काम के सिद्ध करने में आपको संघर्ष करना ही होगा,

आपका व्योपार यथायत् चलता रहेगा, कोई ... का योग नहीं यदि आप खाद्य पदार्थ आटा दालें, घी तथा तेल से सम्बन्धित व्योपार करते हैं तो आप लाभ में रहेंगे, इसके विपरीत यदि आप लोहा मिशीनरी कपड़ा से सम्बन्धित व्योपार करते हैं तो वहुत दौड़धूप करने पर भी अन्त में आप हानि में रहेंगे, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो पैसे की कमी से आप का काम कुछ ढील में पड़ेगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं वर्षभर अत्यधिक परिश्रम करने पर भी पले कुछ पड़ेगा नहीं, यदि आप नौकरीपेशा हैं तो आपका हर काम प्रायः सिद्ध होगा परन्तु उलझनों और बाधाओं का डटकर सामना करना होगा, यदि आप की तर्की का मसला है प्रयत्न करने पर भी सफलता की कोई निश्चित आशा न रखें, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं

प्रयत्न करने पर इसमें भी सफलता की कोई आशा न रखें। यदि आप विद्यार्थी हैं तो पठन-पाठन की ओर आपकी रुचि रहेगी नहीं, यदि आपने कोई इन्टरविव आदि देना हो अथवा किसी परीक्षा में शामिल होना हो तो प्राय: रुकावटों और उलझनों के बाद ही सफलता की आशा रखें, क्योंकि विद्या प्राप्ति अर्थात् विद्या का कन्ट्रोल करने वाला ग्रह बारवें भाव में ठहरा है यदि आप विद्या सम्बन्धित कामों में निश्चित सफलता चाहते हैं तो उपाय अवश्य करें "सरस्वति महाभागे! विद्ये- कमल लोचने बिश्वरूपि विश्वालाक्षि विद्यां देहि सरस्वति' इसका उच्चारण करने के बाद पढ़ाई का आरम्भ करें, प्रातःकाल के समय पढ़ाई का प्रोग्राम लगातार तीन घंटे का होना चाहिये आपकी पढ़ाई का आसन उस स्थान पर होना चाहिये जहां आप का मुंह पूर्व या उत्तर की तरफ रह सके, इस बात को भूलिये मत नित्य घर के किसी बुजर्ग के चरणों को स्पर्श करें उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें। तामीरी काम के लिये इस वर्ष के ग्रह अनुकूल नहीं है, यदि आप कोई तामीरी काम आरम्भ करेंगे परन्तु उलझनों पर उलझनें खड़ी होती रहेंगी, प्राय: आपका आरम्भ किया हुआ तामीरी काम बहुत समय तक लटकता रहेगा, यहां तक कि हानि की भी सम्भावना है, हो सके तो इस वर्ष कोई तामीरी काम नये सिरे से आरम्भ न करें, वाहन जाईदाद यदि बेचना हो तो ऐसे काम के लिये ग्रह अनुकूल हैं, यदि खरीदना हो तो ऐसे काम के लिये ग्रह प्रतिकूल हैं।

गृहस्थी होने पर यदि आप लड़के अथवा लड़की का विवाह करने के इच्छुक हैं तो इस वर्ष प्रयत्न कीजिये अवश्य ऐसा कार्य शान मान से सिद्ध होगा जबकि ऐसे कामों के लिये ग्रह अनुकूल हैं, यदि आप अभी अविवाहित हैं तो इस वर्ष विवाह का योग अवश्य है, अगर आप इस वर्ष भी विवाह से रह गये तो आगे दो वर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी, यह फलादेश दोनों लड़के और लड़की पर हावी होगा, इस वर्ष भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों के सम्बन्ध में ढील आयेगी केवल ससुरालपक्ष के सम्बन्ध में मजबूती आयेगी, यदि आप को इस वर्ष यात्रा का योग बने तो बिना किसी हिचकिचाहट के यात्रा पर जायें, वह यात्रा आपके लिए लाभदायक रहेगी, यदि विदेश यात्रा का कोई प्रोग्राम है तो ऐसे काम की सिद्धि के लिये ग्रह अनुकूल हैं। घर में खाने खिलाने के नये नये बडे बडे प्रोग्राम बनते रहेंगे अथवा घर में कोई महान उत्सव रचाने का प्रोग्रम बनेगा, सामान्य रूप से इस वर्ष के ग्रह कुछ हानिकारक ही हैं जिसके फलस्वरूप यह वर्ष अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा, निम्न लिखे उपाय को अपनाने से क्रूर ग्रह बहुत हद तक शान्त होंगे।

उपाय :—आप इस वर्ष बार बार उच्चारण करते रहें :—

"देहि सौभाग्यं—आरोग्यं, देहि मे परमं सुखं।
रूपं देहि जयं देहि यशोदेहि दिशो जहि॥"

मीन राशि का मासिक फल

अप्रैल :—मासिक फलादेश में अधिक प्रभाव सूर्य का होता है जो कि इस मास में लग्न में है, गोचरफलित से पहला सूर्य हानिकारक माना जाता है जैसा कि गोचर-शास्त्रों में दर्ज है—धन का नाश होता है; अनादर की सम्भावना होती है, शरीर विगड़ने का अन्देशा, हर काम में रुकावट पड़ती है, दौड़धूप अधिक रहती है. हाथ कुछ आता नहीं, घर में भी अनवन रहती है, शुभग्रहों में वृहस्पति और क्रूर ग्रहों में शनि प्रभावशाली ग्रह माना जाता है परन्तु गोचरचक्र से यह दोनों ग्रह अच्छे घरों में ठहरे नहीं है वेध में होने से से यह दोनों ग्रह से शुभ फलदायक ही होंगे, यद्यपि यह मास अशांत वातावरण में ही गुजरेगा परन्तु अन्त में हर आरम्भ किये हुये काम का परिणाम आपके हित में होगा, नौकरीपेशा होने पर दौड़धूप अधिक, जो काम आप हाथ में लेंगे वह विना रुकावट आये हल नहीं होगा, सम्बन्धित कर्मचारियों से अनवन, यदि आप गृहस्थी हैं तो गृहस्थ सम्वन्धित किसी भी समस्या का समाधान नहीं होगा अपितु हर एक समस्या ज्यूं की त्यों वनी रहेगी, मीन राशिवालों को अगर इस वर्ष कोई तामीरी प्रोग्राम होगा हो सके तो इस वर्ष आरम्भ न करें, यदि ऐसा करना आवश्यक हो तो भी अक्टूवर के बाद बनाने का प्रोग्राम बनायें. विद्यार्थियों के लिये भी इस मास के ग्रह अनुकूल नहीं है, पठन-पाठन की ओर दिलचस्पी नहीं रहेगी, इस मास में विद्यासम्बन्धित किसी भी काम में सफलता की आशा न रखें। इस मास के शुभदिन नोट कीजिये :—2,3,7,8,12,13,20,21,22,23 28 और 29

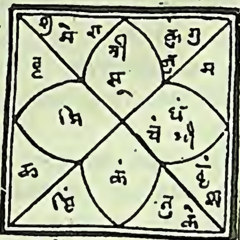

मई :—मासिक फल में सूर्य और चन्द्रमा का अधिक प्रभाव रहता है, दूसरा सूर्य गोचर से हानिकारक माना गया है परन्तु वेध में होने से दूसरा सूर्य भी आपके लिए शुभफलदायक ही होगा, 11 वें चन्द्रमा के बारे में गोचर फलित में दर्ज है; आमदनी में वृद्धि होती है, घरेलू सुख उत्तम रहता है, शुभ कामों पर खर्च होता है। यदि वृहस्पति और शनि ये दोनों ग्रह वेध में है और अष्टकवर्ग से भी अच्छी पुजिशन में है. इस मिले जुले योग के प्रभाव से यह मास हर पहलू से शुभ फलदायक ही होगा, शरीर सुख उत्तम रहेगा, आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, भाई-वन्धुओं तथा मित्रों के साथ मेल व मिलाप में वृद्धि होगी, माता पिता की ओर से प्रायः परेशानी रहेगी, शत्रुओं का जोर रहेगा तथा उनकी तरफ से हानि की भी सम्भावना है घरेलू हालात अनुकूल रहेंगे, सामाजिक अथवा

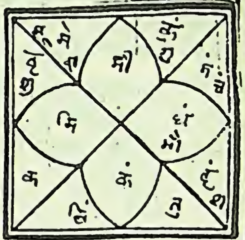

धार्मिक कामों मे अधिक लगाव रहेगा, यदि कोई तामीरी काम करने का प्रोग्राम है तो इस मास में उस काम का श्रीगणेश कीजिये, ऐसे कामों को सफल बनाने में इस मास के ग्रह सहायक रहेंगे. अगर आपने कोई तामीरी काम करना नहीं होगा तो भी कोई, जायदाद वाहन आदि खरीदने का प्रोगाम बनेगा, इस मास में अगर आपने वाहन आदि खरीदा तो अपने लिये शुभ शकुन समझें. नौकरी पेशा मीन राशिवालों के लिए यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा, अपने सम्बन्धित अफसरों से मेलमिलाप में वृद्धि होगी. विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास आदरमान तथा सुख शान्ति का होगा, पठन-पाठन की रुचि में वृद्धि होगी, यदि कोई परीक्षा दी है अथवा देनी होगी हर सूरत में सफलता निश्चित है। उपाय के रूप में मीन राशि वाले बार-बार उच्चारण किया करें :— शुभ दिन -5, 6, 7, 8, 19, 26, 2

"करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः"

यह मास शुभ नहीं, यदि जायदाद सम्बन्धित कोई समस्या खड़ी हो भी, तो वह समस्या आपके लिए हानि तथा परेशानी का कारण बनेगी नोकरीपेशा होने पर दरबार सम्बन्धित कर्मचारियों के साथ हर समय "मैं-मैं तू-तू" ही होता रहेगा। इस मास में आपके दरबार का वातावरण आपके अनुकूल नहीं रहेगा जबकि दसवें भाव का भौम चौथे भाव को देख रहा है। विद्यार्थी वर्ग के लिए इस मास के ग्रह अनुकूल नहीं हैं

जून :- गोचर शास्त्रों में यह स्पष्ट है, गोचर में सूर्य और चन्द्रमा का प्रभाव अधिक होता है, इस मास में दोनों ग्रह अच्छी स्थिति में है शेष ग्रह वेध अष्टक वर्ग तथा दृष्टि आदि को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है—आपका शरीर सुख इस मास में डाँवाडोल स्थिति में रहेगा, कभी एक अंग में तकलीफ कभी दूसरे अंग में परन्तु तकलीफ भी ऐसा होगा जिसके

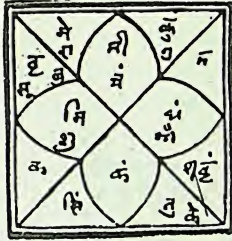

होते हुए आप कामकाज भी चलाते रहेंगे—बिस्तरे पर बैठना नहीं होगा, आर्थिक दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, यदि आप तिजारत करते हैं तो आपके कारोबार में अचानक वृद्धि होगी, यद्यपि लाभ की दृष्टि से यह मास उत्तम है परन्तु खर्च के नये-नये मार्ग भी निकल आयेंगे, घर में खाना खिलाने के नये-नये प्रोग्राम बनते रहेंगे, अतिथियों के यातायात में खूब वृद्धि होगी, घरेलू वातावरण भी शान्त रहेगा, यदि आपको घर में लड़के अथवा लड़की बहिन अथवा भाई के विवाह की समस्या है तो वह समस्या इस मास में हल हो जायेगी या कहीं विवाह सम्बन्ध टिक जायेगा, जाईदाद सम्बन्धित खरीद फरोख्त के विषय में पठन पाठन के लिये समय मिलने में बाधायें पड़ती रहेंगी। इस मास के शुभ दिन हैं :—1, 2, 6, 7, 13, 14, 16, 17, 22, 23 और 24

जुलाई :—गोचर शास्त्रों के आधार से सभी **ग्रहों** के भावफल का इशारा—**चौथे** भाव का सूर्य हानिकारक **दूसरे** भाव का चन्द्रमा शुभ फलदायक **दसवें** भाव में भौम चोट की सम्भावना **पांचवां** बुध वेध में होने से लाभदायक **पांचवें** भाव में शुक्र होने से सुख और शान्ति **नवें** भाव में शनि वेध में होने से धार्मिक तथा सामाजिक कामों से दिलचस्पी **दूसरे** भाव में राहु होने से धन [illegible] शरीर कष्ट। ऊपरलिखित गोचरफल तथा ग्रहों के वेध तथा अष्टकवर्ग को दृष्टि में रखकर सम्पादक की राय से यह मास किसी प्रकार से हानिकारक नहीं अपितु यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, शरीर प्राय: स्वस्थ रहेगा, व्यापारी होने पर आपका व्यापार बिना किसी बाधा के यथावत् चलता रहेगा, सम्भव है मास के अन्तिम सप्ताह में अकस्मात् कुछ लाभ मिले, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं तो इस मास में फलों अथवा बागात का बेचना लाभदायक रहेगा. खाना पिलाना तथा पार्टियां देना इस मास का विशेष व्यसन होगा। नौकरी पेशा होने पर यह मास शान्त वातावरण में ही गुजरेगा, इस मास में अकस्मात तरक्की अथवा लाभ का भी योग है अथवा तरक्की की आशा दृढ़ हो जायेगी, यदि इस मास में कोई तामीरी या जायदाद सम्बन्धित काम करने का विचार है तो यह मास ऐसे काम के लिए ठीक नहीं है अपितु हानिकारक है। विद्यार्थियों के लिये इस मास के ग्रह अनुकूल हैं, पठन-पाठन में अधिक प्रवृत्ति रहेगी, विद्या सम्बन्धित कोई भी काम हो, उसमें निश्चित रूप से सफलता होगी। इस मास के शुभ दिन हैं :—1, 2. 3, 8, 10, 11, 13, 14, 19, 20, 26, 27 और 2[illegible]।

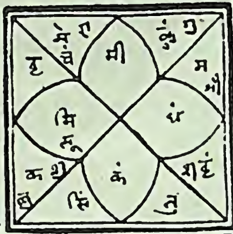

अगस्त :—गोचरचक्र से मालूम होता है कि इस मास के प्राय: सभी ग्रह अच्छी स्थिति में नहीं हैं, इस क्रूर योग के प्रभाव से सबसे पहले आपका शरीर प्रभावित होगा, शरीर के विषय में इस मास में सावधान रहिये, अकस्मात् शरीर कष्ट, चोट का भय, शरीर रक्षा के लिए हर बृहस्पतिवार को गाय को गुड़ खिलायें, अगर आप गृहस्थी हैं तो स्त्री की ओर से मानसिक अशांति बनी रहेगी, व्यापारी होने पर आपका व्यापार ढांवांडोल स्थिति में रहेगा, कभी आपका काम यथाक्रम चलता रहेगा और कभी हाथ पर हाथ धर कर बैठना होगा, यदि आप किरयाना सम्बन्धित काम करते हैं तो उस काम में आप लाभ में रहेंगे, लोहा, मशीनरी, तेल, घी, धान्य, आटा तथा चावल के व्यापारी इस मास में हानि में रहेंगे फलों से सम्बन्धित काम करने वाले मीन राशि

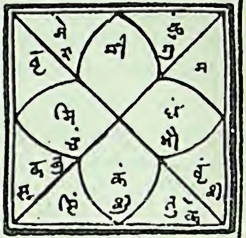

वाले इस मास में अधिक से अधिक दौड़-धूप में रहेंगे परन्तु लाभ की आशा ढीली पढ़ेगी यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो इस मास में आपका काम सामान्य रूप से चलता रहेगा, नौकरी पेशा होने पर नौकरी सम्बन्धित हर काम में सफलता तथा मानसिक शान्ति रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास हर प्रकार से परेशानी का कारण होगा, कोई भी काम ठिकाने लगेगा नहीं अपितु हर काम में रुकावट । मीन राशि वालों के लिये उपाय :—आप बार बार उच्चारण किया करें :—

सृष्टि स्थिति विनाशानां शक्ति भूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोस्तुते ॥

इस मास के शुभ दिन हैं :—3, 4, 12, 13, 14, 15, 18 19. 20. 21, 23, 24 और 30 ।

सितम्बर :— इस मास में प्रायः सभी ग्रह वेध और अष्टक वर्ग के आधार से अच्छी स्थिति में हैं, गोचर शास्त्र मर्मज्ञ इस बात पर जोर देते हैं कि गोचर फलित पर तब तक विचार करना निष्फल है जब तक ग्रहों के वेध और अष्टक वर्ग पर विचार न किया जाये, वेध अष्टक वर्ग के आधार से यही मालूम होता है कि यह मास सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजरेगा, यद्यपि दौड़धूप रहेगी परन्तु हर काम में सफलता निश्चित है,

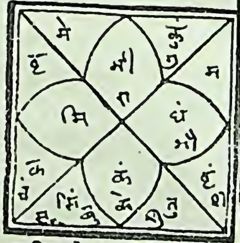

यदि आप व्योपारी हैं तो आपका काम बहुत तेजी से आगे बढ़ेगा, प्रायः हर काम में सफलता होगी आप जिस किसी भी तिजारत से सम्बन्धित काम करते हैं सफलता निश्चत है, यदि आप कोई नया काम आरम्भ करना चाहते हैं तो ऐसे काम के लिए इस मास में ग्रह अनुकूल हैं गृहस्थी होने घर में भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों का आना जाना जोरों पर होगा, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम भी बनेगा, यदि इस मास में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम न बन सके तो अप्रेल 1987 ई० तक कोई आशा न रखें, नौकरी पेशा होने पर आपका काम यथाक्रम चलता रहेगा, कोई तर्की का योग नहीं है, यानि यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो इस मास में खूब जोर लगायें, इस मास में आपका नौकरी सम्बन्धित काम अवश्य सिद्ध होगा, यदि ऐसा न भी हो तो भी काम मिलने के साधन मजबूत हो जायेंगे, नौकरी मिलने की रुकावट को दूर करने के लिऐ आप बार 2 उच्चारण किया करें ।

"बुद्धि हीन तनु जानिके सुमिरौ पवन कुमार"
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु क्लेस विकार

अक्टूबर :— इस मास में ग्रह की स्थिति अच्छी है, 11 वें भौम के बारे में गोचर-शास्त्रों का कहना है— हर काम में सफलता होती है, आदर व मान में वृद्धि होती है, आमदनी में वृद्धि होती है, पृथ्वी अथवा जाइदाद से लाभ

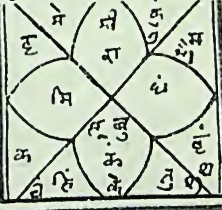

मिलता है, भौम के 11 वें भाव में आने से वृहस्पति और शनि दोनों वेध में आते हैं अतः यह दोनों ग्रह शुभ फल दायक हो गये हैं जिसके फलस्वरूप धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से अधिक दिलचस्पी रहेगी, घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बने, भाई-बन्धुओं रिश्तेदारों से मेल मिलाप में वृद्धि होगी, पाठ पूजा कीर्तन की ओर अधिक प्रवृत्ति बनी रहेगी साधु सन्तो के साथ समागम का अवसर मिले अथवा तीर्थों में जाने का प्रोग्राम बने, यदि आप गृहस्थी हैं तो घर में कोई महोत्सव रचाने का प्रोग्राम बनेगा। घर की कोई समस्या जो कोई भी रुकी पड़ी होगी स्वयं ही हरकत में आकर हल हो जायेगी। व्योपारी वर्ग— वह किसी भी तिजारत फल बागात ठेकेदारी आदि से सम्बन्धित हों हर एक काम में आप सफल रहेंगे, नोकरी पेशा होने पर आपको दरबार में हर प्रकार से आदर मिलेगा, सम्बन्धित अफसरों से मेलमिलाप में वृद्धि होगी, शत्रुओं पर विजय होगी, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता, विशेष कर यदि आप को विद्या सम्बन्धित कहीं बाहर जाने का विचार है तो इस मास में प्रोग्राम बनायें आपकी सफलता निश्चित है। यदि आपने कोई परीक्षा दी है और इस मास में परिणाम निकलने वाला हो तो आप अवश्य सफल होंगे, यदि इन्टरविव आदि देने का इस मास में प्रोग्राम हो तो वह आपके अच्छे भाग्य हैं, क्यों कि ऐसे कामों के लिये इस मास के ग्रह बहुत ही अनुकूल हैं इस मास के शुभ दिन नोट कीजिये 16, 17, 20, 21, 28, 29, 30, और 31

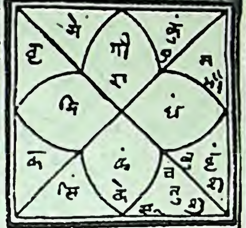

नवम्बर :—इस मास में जो ग्रह अशुभ स्थानों में ठहरे हैं सभी ग्रह वेध में हैं, अष्टक वर्ग दृष्टि आदि को ध्यान में रखकर यही मालूम होता है, यह मास आपको सुख शान्ति के वातावरण में ही गुजारना होगा, शरीर सुख आपका उत्तम रहेगा, यदि पहले से शरीर में कोई तकलीफ है तो इलाज करवाने से बहुत देर का रोग भी ठीक होगा— गृहस्थी होने पर घरेलू वाता वरण शान्त रहेगा, भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से प्रेम तथा मेल मिलाप में वृद्धि, अतिथि सेवा इस मास का मुख्य व्यसन होगा, आमदनी में वृद्धि अवश्य होगी, खर्च में भी हद से ज्यादा वृद्धि होगी, घर में खाने खिलाने के प्रोग्राम बनते रहेंगे, पार्टियों में शामिल होना घर में पार्टियों का प्रबन्ध करना इस मास का विशेष काम रहेगा, व्योपारी होने पर आपका व्योपार यथाक्रम चलता रहेगा, इस मास के अन्तिम सप्ताह में अकस्मात् लाभ मिलने का योग है, यदि आप फलों से सम्बन्धित तिजारत करते हैं अथवा सस्य से सम्बन्धित काम करते हैं, इस मास में माल खरीदने में लाभ नहीं रहेगा अपितु माल बेचने में लाभ रहेगा, धार्मिक अथवा सामाजिक कामों से रुचि बनी रहेगी, अच्छे अच्छे पुरुषों से मेल मिलाप का अवसर प्राप्त होगा, नौकरी पेशा होने पर दरबार

की ओर से मानसिक शान्ति बनी रहेगी, सम्बन्धित अफसरों से अचानक प्रेम भाव मिलता रहेगा, नौकरी सम्बन्धित कोई भी परेशानी हो उसका अन्त हो जायेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये हर काम में यह सफलता का मास है। पठन-पाठन में प्रवृत्ति बनी रहेगी।

दिसम्बर :— नवें भाव में सूर्य चन्द्रमा और शनि बारवें भाव में भौम और बृहस्पति की युति अशुभ योग की सूचना है जैसा कि गोचर शास्त्रों में दर्ज हैं शरीर रोग से ग्रस्त होता है, घरेलू परेशानियां बनी रहतीं हैं भाई-बन्धुओं से अनबन होती है, घरेलू हालात अनुकूल रहते हैं धन निरर्थ खर्च होता है, भौम बृहस्पति का बारवें भाव में होना धन तथा जाइदाद का हाथ से चले जाने का संकेत है इस फल के अतिरिक्त आठवें बुध और शुक्र के एक साथ होने के बारे में गोचर-फलित में दर्ज है — अन्न धन का लाभ होता है, शत्रुओं पर विजय होती है, गृहस्थ पक्ष से शान्ति मिलती है, इस मिले जुले शुभ अशुभ फल को दृष्टि में रखकर सम्पादक की राय में यह मास संघर्ष तथा दौड़धूप में ही गुजरेगा कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा व्योपारी होने पर आप का व्योपार इस मास में ढीला रहेगा, यद्यपि हानि का योग नहीं है परन्तु लाभ का भी कोई संकेत नहीं है, यदि कोई तामीरी काम अथवा जाईदाद वाहन इत्यादि खरीदना या फरोख्त करना हो ऐसे कामों के लिये यह मास शुभ नहीं है यदि आप नौकरी पेशा हैं तो यह मास अशान्त वातावरण में ही गुजरेगा, सम्बन्धित अफसरों में नाराजगी, दरबार सम्बन्धित कोई भी काम बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा, अकस्मात् किसी झगड़े में भी उलझने की भी सम्भावना है जो आपके लिये परेशानी का कारण होगा, अचानक कोई यात्रा का भी प्रोग्राम बनेगा, इस मास में अधिक दिन घर से बाहर ही गुजारने होंगे, गृहस्थी होने पर घर का वातावरण आपके अनुकूल नहीं होगा, घर की हर एक समस्या चाहे वह शरीर सम्बन्धित हो अथवा धन सम्बन्धित, लड़के अथवा लड़की के विवाह के सम्बन्ध में हो ज्यूं की त्यूं बनी रहेगी कोई भी काम इस मास में नये सिरे से आरम्भ न करें। इस मास के शुभ दिन हैं 2, 3, 4, 5, 6, 9 10, 14, 15, 21, 22, 30 और 31।

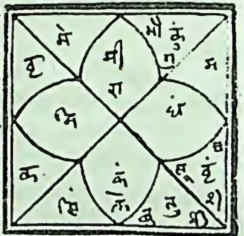

जनवरी :— यद्यपि गोचर फलित के आधार से भौम और राहु का लग्न में होना हानिकारक माना गया है ऐसे ही शुक्र और शनि अशुभ भाव में ठहरे हैं परन्तु चारों ग्रह वेध में हैं अतः अशुभ होते हुये भी शुभ फलदायक हैं, आपका शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा नये वर्ष के आरम्भ से ही शरीर के बारे में ऐसा

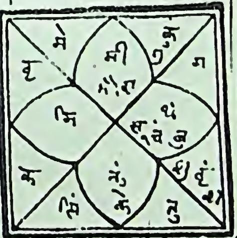

शुभ योग आप के नये वर्ष के शरीर सुख के लिये शुभ शकुन का संकेत है। दसवां सूर्य और चन्द्रमा यह दोनों ग्रह शुभ फल के ही सूचक हैं, आप के आर्थिक यानि धन की पुजीशन में अचानक वृद्धि होगी अथवा कोई लाभ मिले, यदि आप व्योपारी हैं तो आपका व्तोपार तेजी से आगे वढ़ेगा यदि आप अपने व्योपार को विशालता देना चाहते हैं तो इसी मास में वह योजना बनायें, ऐसे काम का श्री गणेश इस मास में आपके अनुकूल रहेगा, नौकरी पेशा मीन राशि वालों के लिये यह मास शुभ शकुन का ही है, यदि आप नौकरी की तलाश में हैं तो प्रयत्न करने पर आप का काम सिद्ध होगा, यदि आपने विद्या सम्बन्धित कोई नया प्रोग्राम वनाना हो तो इस मास में उसका आरम्भ करें सफलता निश्चित है, पठन-पाठन की ओर अधिक प्रवृत्ति रहेगी। इस मास के शुभ दिन हैं 1, 2, 6, 7, 10, 11, 18, 19, 20, 21, 26, 27,

फरवरी :—गोचर में सूर्यग्रह का अधिक प्रभाव होता है मास के प्रारम्भ पर सूर्य आपके 11 वें भाव में है जिस के विषय में गोचर फलित में दर्ज है—धन का लाभ रहेगा, खाने को अच्छे अच्छे पदार्थ मिलेंगे, बुजुर्गो को सेवा करने का अवसर मिलेगा तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त होगा, घर में दिनों दिन मंगल कार्य रचाने के प्रोग्राम बनते रहेंगे घर में कोई तामीरी काम

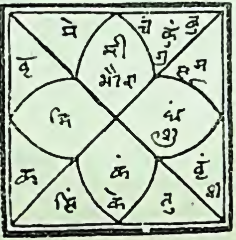

अथवा कोई जायदाद आदि खरीदने का प्रोग्राम बनेगा, यदि इस मास में किसी शुभ काम पर धन खर्च करने की योजना आप बनायेंगे तो आप सावधान रहिये अचानक धन की वड़ी राशि हाथ से निकलेगी, व्यापारी होने पर आप प्रायः व्यापार सम्बन्धित हर काम में सफल रहेंगे गृहस्थी होने पर घरेलू वातावरण शान्त रहेगा, सन्तानपक्ष से मानसिक शान्ति रहेगी, यदि आप विवाहित हैं तो इस मास में या तो विवाह होगा या कहीं वात निश्चित हो जायेगी, विद्यार्थी होने पर विद्या सम्वन्धित हर काम में सिद्धि होगी, यदि इन्टरविव आदि इस मास में देना हो अथवा कोई परिणाम निकलने वाला हो, सफलता निश्चित है। इस मास के शुभ दिन नोट करें :—1, 2, 3, 7, 8, 14, 15, 23, 24 और 25।

मार्च :—इस मास में लग्न में चन्द्रमा तथा वेध युक्त वृहस्पति और राहु इन तीनों ग्रहों का योग शुभ फल का सूचक है, आपका शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा, यदि शरीर में पहले से कोई तकलीफ हैं किसी नये डाक्टर का इलाज करवाने से आपका शरीर स्वस्थ होगा, धार्मिक कामों अथवा सामाजिक कामों से दिलचस्पी बनी रहेगी, साधु सन्तों से मिलने का

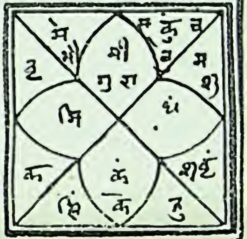

अचानक शुभ अवसर मिलेगा अथवा तीर्थ यात्रा का योग बने। अगर आप तिजारत पेशा है तो आप तिजारत में हर पहलू से सफल रहेंगे, यदि आप जमींदार हैं बागात अथवा फलों से सम्बन्धित तिजारत करते हैं, आप इस मास में फलों अथवा बागात का खरीद या फरोख्त करें, दोनों ओर से लाभ में रहोगे, ठेकेदार और नौकरीपेशा के मीन राशि वाले मान प्रतिष्ठा के साथ लाभ रहेंगे, इस मास की शुभतिथियाँ 1,2,6,7,13,14,22,23,29,30,31

वृश्चिक राशि का शेष मासिक फल

पहली शनिवार को किसी गरीब को दक्षिणा सहित दान के रूप में दीजिये। यदि सम्भव हो सके तो इस मास की हर सोमवार को भगवान शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाते समय यह मन्त्र पढ़ा करें।

"ऊं नमः शिवाय" आय की दृष्टि से यह मास डांवाडोल स्थिति में रहेगा, व्यापारी वर्ग को वह किसी भी व्यापार से सम्बन्धित हों, हर आरम्भ किये काम में बाधायें तथा रुकावटे आती रहेंगी, कोई भी कार्य बिना उलझन के सिद्ध नहीं होगा। वृश्चिक राशि वाले किसी फैक्ट्री से सम्बन्धित हों उनको अकस्मात् किसी ऐसे कष्ट या उलझन का सामना करना होगा जिस से मानसिक अशान्ति के साथ हानि की भी सम्भावना है। गृहस्थी होने पर यदि लड़की के विवाह के सम्बन्ध जोड़ने का प्रोग्राम पर जोर लगायेंगे तो बना हुआ रिश्ता बिगड़ने का अन्देशा है। नौकरी पेशा होने इस मास में आपके दरबार पर सूर्य का अधिक प्रभाव रहेगा, सूर्य चूंकि लग्न में शनि की युति में है, ज्योतिष गोचर से यह योग मनहूस माना जाता है, इस क्रूर योग के प्रभाव से अगर आपको रिश्वत लेने की बुरी आदत है तो आपको रंगे हाथ पकड़े जाने का खतरा है अथवा आप पर कोई आरोप लगने की सम्भावना है, जो आरोप गलत नहीं होगा अपितु आपके किये पाप का परिणाम ही आपके सामने होगा। उपाय के रूप में आप अपनी ड्यूटी को ईमानदारी के साथ निभाते रहें। विद्यार्थी वर्ग के लिये यह मास सुख-शान्ति और सफलता का है। इस मास के शुभ दिन नोट करें :—1,12,13,21,22, 28 और 29 ।

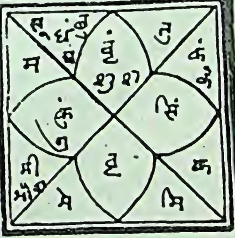

जनवरी :—इस मास में आपके लिये अधिक प्रभावशाली ग्रह शुक्र है जो लग्न में यानी पहले भाव में है, पहले भाव के शुक्र के बारे में गोचर मर्मज्ञों का कहना सुख और धन की प्राप्ति होती है, शत्रुओं का नाश होता है, यदि आप विवाहित नहीं है तो इस मास में विवाह का प्रोग्राम निश्चित होगा यदि आपके घर में पुत्र नहीं है यदि घर में बच्चा होने वाला होगा तो पुत्र ही होगा, विद्यार्थी होने पर विद्या में सफलता होगी, सभी प्रकार के सुख के साधन सुलभ होंगे। व्योपार में वृद्धि होगी, ऐश

अशरत के साधनों पर खर्च करने की प्रवृत्ति में वृद्धि होगी, इस मास में सभी ग्रह राहु को छोड़कर अशुभ भावों में ठहरे हैं परन्तु प्रायः सभी ग्रह वेध में पड़े हैं पांचवां राहु और 11 वें भाव का केतु शुभ भाव में ठहरे हैं, उपरिलिखित ग्रहस्थिति से यह मास दूषण होते हुये भी आपके लिये भूषण होगा, हर आरम्भ किये हुये कार्य में सफलता होगी, आमदनी की दृष्टि से यह मास उत्तम है, यदि आप व्योपारी हैं आपका काम दिनों दिन बढ़ता रहेगा, यह नये वर्ष का पहला मास आपके लिये शुभशकुन है, यदि आपने कोई नया काम आरम्भ करना हो तो इस मास में न करें, नये सिरे से इस मास में किया हुआ कार्य शुभफलदायक नहीं होगा नौकरीपेशा होने पर दरबार में आप को हर प्रकार से मानसिक शान्ति बनी रहेगी और नौकरी सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि तर्की का कोई सिलसिला चल रहा है, तो वह इच्छा भी इस मास में पूरी होगी, विद्यार्थी वर्ग के विद्या सम्बन्धित कार्यों में उलझनों के बाद ही सफलता होगी, इस मास के शुभदिन हैं—1,2,8,9,18,19,20,21,24,25 ।

हिन्दी सुन्दर छपाई के लिए
विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रेस तालाब
तिल्लू (जम्मू) को याद रखिये ।

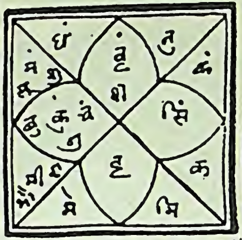

फरवरी :—बृहस्पति और भौम यद्यपि अशुभभावों में ठहरे हैं परन्तु बृहस्पति भौम के वेध में है और भौम बृहस्पति के वेध में है, जिसके फलस्वरूप यह दोनों ग्रह सुधरे हुये हैं, ऐसे ही शेष ग्रहों पर विचार करने से विदित होता है कि यह मास कुछ सुख शान्ति के वातावरण में ही व्यतीत होगा, इस मास का प्रभावित ग्रह शनि है इसलिये आपका शरीर सुख इस मास में डांवाडोल रहेगा, कभी एक अंग को कभी दूसरे अंग को कष्ट होगा, यदि आप गृहस्थी हैं, शनि के प्रभाव से आप की धर्म पत्नि प्रभावित होगी पांचवें भाव में मीन राशि को भौम वेध में होने यदि आपको पुत्र या पुत्री सम्बन्धित कोई चिन्ता है तो वह स्वयं हल हो जायेगी, आर्थिक दृष्टि से भी यह मास लाभ का ही होगा, यदि आप तिजारत पेशा हैं तो तिजारत आगे बढ़ेगी, कपड़े से सम्बन्धित कारोबार करने वाले लाभ में रहेंगे, नौकरी पेशा वाले यह मास सुख शान्ति में व्यतीत करेंगे, सम्बन्धित अफसरों से मेल मिलाप में वृद्धि होगी, विद्यार्थी वर्ग को पढ़ने लिखने में दिलचस्पी रहेगी, विद्यासम्बन्धित हर कामें सफलता होगी, इस मास के शुभदिन—4,5,6,14,15,16,16,21,22,25, 26 ।

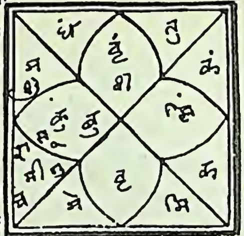

मार्च:—शरीर के विषय में सावधान रहिये, अकस्मात् शरीर बिगड़ने की सम्भावना है, यदि आपके घर में कोई सदस्य पहले से बीमार है तो उसके विषय में सावधान रहिये यदि आप उस परेशानी से बचना चाहते हैं, तो उपाय के रूप में जनवरी फरवरी और मार्च इन तीन महीनों में हर शनिवार को तहर बनाकर पक्षियों को डालने का नियम बनायें, धन का दृष्टि से भी यह मास डांवा डोल स्थिति का ही होगा, जो व्योपारी किरयाना, सरय या कपड़े का परचून काम करते हैं वह लाभ में रहेंगे, जो थोक का कारोबार करते हैं बस मालामाल होंगे, लोहे मिशीनरी सीमेंट आदि से सम्बन्धित व्योपारियों के लिए यह मास परेशानी का होगा, उनको हानि की भी सम्भावना है, यदि आप ठेकेदारी का काम करते हैं तो आप को अधिक दौड़ धूप करनी होगी परन्तु अन्त में सन्तोषजनक लाभ नहीं होगा, यदि आप फलों से सम्बन्धित काम करते हैं सो आपका हर एक काम लटकता ही रहेगा, नौकरी पेशा होने पर बिना कारण के आप परेशान रहोगे परन्तु लाभ की दृष्टि से यह मास उत्तम रहेगा, यदि घर में कोई महोत्सव रचाने का परोग्राम हो उसमें अधिक से अधिक धन की राशि खर्च होगी, यात्रा का योग बने जो आपके लिये लाभदायक रहोगे, और उसमें मानसिक शान्ति भी बनी रहेगी, विद्यार्थी वर्ग के लिए प्रायः हर विद्यासम्बन्धित काम में सफलता का मास है, यदि आप ने को इन्टरविव दिया है या देना है तो उसमें सफला निश्चित है, इस मास के शुभदिन नोट कीजिये :—4, 5, 13, 14, 15, 16, 17, 20, 21 31

सिंह राशि का कोष्ठ यहाँ देखिये

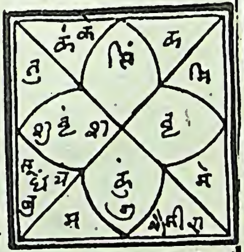

जनवरी—इस मास में ग्रहों की स्थिति अच्छी नहीं है, आपको शरीर के विषय में सावधान रहना चाहिये अकस्मात् शरीर बिगडने की सम्भावना है अथवा चोट लगने का अन्देशा है, यदि आप गृहस्थी है तो आपको स्त्री के ओर से कोई न कोई परेशानी बनी रहेगी, दैवयोग से यदि आप स्त्री के ओर से ठीक रहेंगे भी तो भी सन्तान क्षय से अशान्ति बनी रहेगी, व्योपारी वर्ग के यिए इस मास के ग्रह अनुकूल नहीं है अपितु कारोबार सम्बन्धित हर काम में रुकावटें आती रहेंगी, यदि आपने कोई जाईदाद वाहन आदि

खरीदना या बेचना हो तो यह मास ऐसे काम के लिए लाभदायक रहेगा, यदि नये सिरे से कोई तामीरी काम करना हो तो उसमें आप असफल रहेंगे, नौकरी पेशा होने पर यह मास शांत वातावरण में ही गुजरेगा, दरबार में हर प्रकार से मानप्रतिष्ठा बनी रहेगी, सम्बन्धित सफसरों से मेलजोल में वृद्धि होगी, इस मास में यदि यात्रा का परोग्राम बने वह यात्रा हरेशानी का कारण बनेगी, धार्मिक कामों से अधिक दिलचस्पी बनी रहेगी, आमदनी की दृष्टि से यह मास ढीला रहेगा, परन्तु खर्च की अधिकता होगी जो आप की तंगदस्त का कारण बनेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए यह मास सुख शान्ति का ही होगा, विद्या सम्बन्धित हर काम में सफलता निश्चित है, यदि आपने को इन्टरविव आदि देना हो या दिया होगा आप सफल रहेंगे।

शान्तिके लिये

विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

विश्वकी रक्षाके लिये

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।

रोग-नाशके लिये

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां
त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

बृहत्कल्याणी (साढसती)

तुला, वृश्चिक और धनु राशि वालों के लिए

तुला:— राशि की साढ सती 1979,12 अक्टूबर से चान्दी के पाद पर आरम्भ हुई है, साढसती लगभग साढे सात वर्ष होती है, साढ सती का निवास शरीर के किस अंग पर कब तक होता है इस विषय में ज्योतिष फलित मर्मज्ञों की भिन्न भिन्न राय हैं, परन्तु प्राय: साढ सती के ठहरने के स्थान तीन माने गये हैं (1) सिर (2) धड़ (3) पैर इन तीन अंगों पर क्रमश: ढाई ढाई वर्ष तक शनि का निवास होता है। तुला राशि की साढसती का इस समय तीसरा भाग चल रहा है इस लिये आप की साढसती पांवों पर है, साढसती आरम्भ होते समय चान्दी का पाद था। शनि आपके चौथे भाव को देख रहा है, चौथा भाव सुख जोईदाद मकान वाहन तथा उदारता का होता है, शनि की दृष्टि का अधिक हानिकारक प्रभाव होता है, इस लिये आपके सुख को कष्ट में बदलने का कारण होगा, धन के अभाव से आपको उदारता नाम मात्र की शेष रहेगी, आपके आठवें भाव को शनि पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, आठवां घर होता है शरीर के कष्टों का, कर्जा, यात्रा आदि का इस लिये यह बात आवश्यक है इस वर्ष आपका शरीर आपके लिये परेशानी का कारण बनेगा, कभी एक अंग में तकलीफ कभी दूसरे अंग में। तगंदस्ती से दुचार होगा यहां तक कि कर्जा लेने तक की नौबत आयेगी, आपके 11 वें भाव पर भी शनि की दृष्टि है 11 वां भाव होता है, आमदनी का अत: आपकी आमदनी में रुकावट पड़ेगी, यदि लाभ होगा भी वह धन होगा पाप का चोरी का अथवा घूस का उस धन को आप लाभ की गिनती में न रखें अपितु ऐसा धन मानसिक अशान्ति का कारण बनता है, शनि का अधिक प्रभाव आप पर 27 नवम्बर तक होगा 27 नवम्बर को शनि अधूरा से निकल कर ज्येष्ठा नक्षत्र में आयेगा, 27 नवम्बर से कुछ शांति की आशा रखें। यदि आपको जन्म पत्री से किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है तो शनि अधिक प्रभावशील नही होगा, यदि जन्म पत्री से भी हानिकारक दशा है तो इस वर्ष कष्टों का मुकावला करने के लिये तैयार रहें, परन्तु इस बात को भी आप मूलिये मत बृहस्पति आपके पांचवें भाव का है जो लगभग

1987 के 27 जनवरी तक रहेगा बृहस्पति आपकी प्रतिष्ठा को बचाये रखेगा अपितु शनि महाराज को भी दवाये रखेगा, यदि आप शनि के प्रभाव को शान्त बनाये रखना चाहते हैं तो बृहस्पति बलवान बनाने का उपाय कीजिये जिसका उपाय है, किसी बुजुर्ग की नाराजगी आप पर नहीं होंनी चाहिये यदि होगी तो उन से क्षमा प्रार्थना करे उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें, यदि आप मेरे इस उपाय पर अमल नहीं करोगे आप निश्चय रखिये बाद में आपको पछताना पड़ेगा, आपको किसी भयंकर दुर्घटना का सामना होगा, यदि आप को किसी

बुजुर्ग से नाराजगी नहीं है तो भी बुजुर्गों का आशीर्वाद ही आपका उपाय है, यह उपाय आप के लिये राम बाण का काम देगा, यदि आप संस्कृत पढ़ सकते है तो नित्य पञ्चस्तरी के एक एक स्तव का पाठ किया करें, यदि ऐसा सम्भव न हो सके तो आप **विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रेस तालाब तिल्लू जम्मू** से पञ्चस्तवी का भरा हुआ केसेट मंगवायें नित्य प्रातः शुद्ध उच्चारण किये हुये श्लोकों का श्रवण करने से भी शनि का क्रूर प्रभाव शान्त होगा, और घर में प्रातः धार्मिक वातावरण बना रहेगा।

वृश्चिक राशि

आकी साढ़सती 1982, 21 सितम्बर को लोहे के पाद पर आरम्भ हुई है, शनि का निवास आपके धड़ पर है, धड़ में पेट हृदय पीठ आदि सम्मलित है आप के तीसरे भाव का शनि देख रहा है, तीसरा घर भाईयों रिश्तेदारों से मेल मिलाप का तथा व्योपार का भी होता है, शनि के प्रभाव से भाई बन्धुओं रिश्तेदारों से अचानक नाराजगी, कारोवार अथवा व्योपार सम्वन्धित हर काम में रुकावट, शनि आप के सातवें भाव के जो घर स्त्री के स्वास्थ्य, रोजगार आदि को जितलाता है, यदि आप गृहस्थी हैं तो इस वर्ष आप को स्त्री की ओर से परेशानी बनी रहेगी, यदि आप सर्व साधारण कारोवार करते है तो आपका कारोवार यथावत चलेगा, यदि आप विशाल रूप में लाखों में काम करते हैं तो आपके कारोवार को अचानक झटका लगने का अन्देशा है जो आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा, शनि आप के दसवें भाव को देखता है, दसवां भाव दरबार पिता समाज सम्बन्धी विदेश यात्रा का भी सूचक है, शनि की दृष्टि बहुत ही हानिकारक होती है अतः आप को दरवार सम्बन्धित परेशानी बनी रहेगी, यदि आप के पिता को बहुत समय से कोई शरीर कष्ट है इस वर्ष उन के विषय में सावधान रहिये, शनि चुंकि आप के पहले भाव मे ठहरा है, दूसरी परेशानियों के अतिरिक्त विशेषतया आप को अपने शरीर की परेशानी भी घेरे रखेगी वृहस्पति भी आपको 27 जनवरी तक चौथे भाव में है, चौथे वृहस्पति का फल भी गोचर से हानिकारक माना जाता है, जैसा कि गोचर शास्त्रज्ञों का कहना है-मन में अशान्ति रहती हैं, धन की हानि होतीं है, शत्रुओं की वृद्धि होती घर छोड़ने पर विवश होना पड़ता है, जाईदाद हाथ से निकल जाने की सम्भावना होती है, यात्रा में कष्ट होता है, यानी शनि केसाथ ही वृहस्पति भी आपके लिपे इस वर्ष हानिकारक है, यदि आप धन की हानि और शरीर कष्ट से बचना चाहते हैं आप घर से बाहिर जाने का परोग्राम बनायें अथवा कोई तामीरी काम आरम्भ कीजिये जिस में रात दिन आप को जुटा रहना पड़े और धन की बहुत बड़ी राशि निकल जायेगी, यदि साढ सती के अतिरिक्त जन्म पत्री से आपकी हानिकारक दशा भी चल रही है, और शनि भी यदि अच्छीं स्थिति में नहीं है तो इस वर्ष

आप को एक प्रकार का अरिष्ट हैं इस से वचने का उपाय है आप नित्य महिम्न स्तोत्र का पाठ किया करे हो सके तो हर सोमवार को भगवान शंकर पर दूध सहित जल चढ़ाया करें, इस बात का ध्यान रखें दूध गाय का होना चाहिये निम्न मन्त्र का बार बार उच्चारण किया करें।

महादेव ! महादेवा! महादेवेति कीर्तनात्
वत्सं गौर्-इव गौरीशो धावन्नतम्- अभिधावति

धनु

आपकी साढ सती 1984 दिसम्बर से लोहे के पाद पर आरम्भ हुई है पहले तीसरे भाग में होने से आप की साढ सती सिर पर है शनि आप के दूसरे भाव को जो घर कमाई खरीद फरोखत तथा मित्रों का होता है सम्पूर्ण दृष्टि से देख रहा हैं जिस के प्रभाव से कमाई सम्बन्धित हर काम में रुकावट, नौकरी पेशा होने पर यदि आप रिश्वत लेते हैं तो रंगे हाथों पकड़े जावोगे मेरी यह भविष्य आप पर अवश्य पूरी उतरेगी, इस लिये आप सावधान रहिये नहीं तो बाद में पछताना पड़ेगा शनि आप के छटे भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, अतः आप के मित्र भी शत्रु बन जायेंगे, शत्रु पक्ष से सावधान रहिये किसी विश्वास पात्र से धोखा लगने का अन्देशा है, शनि आप के भाग्य स्थान को शत्रु दृष्टि से देख रहा है, यह योग ज्योतिष फलित में बहुत ही हानिकारक माना जाता है, आप के हर काम में बाधायें तथा रुकावटें पड़ती रहेंगी, यदि घर में कोई मंगल कार्य रचाने का परोग्राम है हो सके तो इस वर्ष न मनायें, यदि मंगल कार्य रचाना आवश्यक है तो इस वर्ष के अन्तिम तीन मास में रचाने का परोग्राम बनायें, नहीं तो वह मंगल कार्य आप के लिये परेशानी का कारण बनेगा। यदि आप नौकरी पेशा हैं तो अचानक तवदीली का योग है जो आप के इच्छा नुसार नहीं होगा, यदि आप विद्यार्थी हैं तो आप के विद्या सम्बन्धित हर काम में शनि बाधक होगा, यानी धनु राशि वालों को यह वर्ष संघर्ष में ही गुजरेगा शनि आप को जन्म पत्री से अच्छी स्थिति में है और किसी शुभ ग्रह की दशा चलरही है तो शनि का क्रूर प्रभाव अधिक हानिकारक नहीं होगा, कुछ भी हो शनि प्रायः सु:खदायक नहीं होता है उपाय के रूप में यदि आप गृहस्थी हैं तो हर सक्रान्ति को घर में सत्यनारायण का व्रत रख कर रात के समय पूड़ियां आदि बनाकर प्रसाद वांट कर ही स्वमं दूध मिष्ठान आदि का सेवन करें इस उपाय के अपनाने से शनि जो आप के लिये दूषण है भूषण बनेगा।

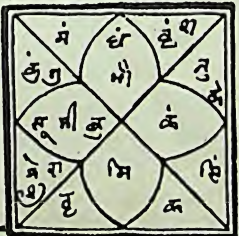

ढय्या

मेष -- सिंह

राशि से शनि चौथा आठवां जब आता है तो उस राशि पर ढय्यां होती है, चूंकि वृश्चिक राशि में शनि चल रहा है, इसलिये मेष और सिंह राशि पर ढय्या होगी,

मेष:—राशि से शनि आठवां होने से धन की हानि होती है, हर काम में असफलता होती है, अनादर का खतरा रहता है, राज्य दरवार में परेशानी होती है, स्त्रीपक्ष से परेशानी रहती है, बुरीसंगति में रहने की प्रवृत्ति पाई जाती है। आपकी ढय्या 1984 दिसम्बर से लोहे के पाद पर आरम्भ हुई है, 27 नवम्बर तक शनि अनूराधा नक्षत्र में रहेगा, अत: 27 नवम्बर तक आपके शरीर पर अनिष्ट फलदायक होगा, शनि आपके दरवार को भी देख रहा है अत: नौकरीपेशा होने पर दरवार की ओर से परेशानी वनी रहेगी, रिश्वत तथा अन्याय से धन कमाना ऐसे नीच कर्मो की ओर प्रवृत्ति वनी रहेगी, जिससे मानप्रतिष्ठा में धक्का लगेगा, अत: आप को चेतावनी है आप ऐसे बुरे कर्म से वचे रहिये नहीं तो वाद में पछताना पड़ेगा। शनि आपके धन स्थान को भी देख रहा है, अत: तंगदस्ती से

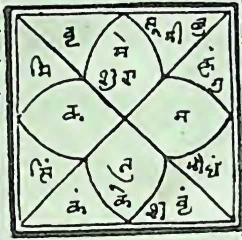

दुचार होगा, कर्जा लेने तक की नौवत आयेगी मातृपक्ष से अशान्ति रहेगी, यदि आपके पास वाहन है, वह आपकी परेशानी का कारण वनेगा। यदि आप तिजारत पेशा है आपको कारोबार में आशा से अधिक लाभ होगा, जबकि 11 वें भाव में बृहस्पति है, आठवां शनि प्राय: हर प्रकार से हानिकारक होता है, इस क्रूर ग्रह के प्रभाव को शांत बनाये रखने के लिये उपाय है, आप प्राय: हर मंगलवार को घर में तहर बनाने का नियम रखें जो तहर पक्षियों को डालें।

सिंह

सिंह राशिवालों को 1994 दिसम्बर मास से लोहे के पाद पर ढय्या आरम्भ हुई है शनि लगभग ढाई वर्ष तक आपको चौथा रहेगा चौथा शनि गोचर से वहुत हानिकारक माना जाता है, जैसा कि गोचर शास्त्रकारों का कहना है, शत्रुओं और रोगों की वृद्धि होती है, स्थान परिवर्तन होता है सम्बन्धियों से वियोग होता है, धन की कमी होती है, यात्रा मे कष्ट होता है, अनादर का खतरा रहता है, मन में प्राय: बुरे विचार प्रकट होते है, ऐसे ही इस वर्ष वृहस्पति भी आपके लिये हानिकारक है जवकि वह सातवें भाव में ठहरा है, सातवे वृहस्पति के वारे में गोचर फलित

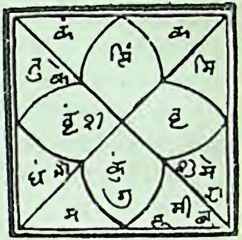

सामुद्रिक विद्या (पामिस्ट्री)

PALMISTRY

सामुद्रिक विद्या ज्योतिम शास्त्र का ही एक अंग है जो कि हजारों वर्ष पहले व्यास बाल्मीकि गर्ग अत्रि और कश्यप महर्षियों की देन है जैसा कि बाल्मीकी और व्यास आदि ऋषियों के बनाये हुए पुराणों तथा शास्त्रों में प्रमाण मिलते हैं, कि इस विद्या ने भारत में ही जन्म लिया और प्राचीन काल में यह विद्या बहुत उन्नति में थी, उच्चकोटि के भारत के महान् योगी भी इस सामुद्रिक विद्या पर विश्वास रखते थे, जैसा कि एक महान् अनुभवी योगी की बनाई हुई "**पञ्चस्तवी**" से विदित होता है, हम यहां "**पञ्चस्तवी**" के उस श्लोक को जो सामुद्रिक विद्या से सम्बन्धित है दर्ज करते हैं और साथ ही उस श्लोक का संक्षेप अर्थ भी लिखेंगे।

चण्डि ! त्वत्-चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन त्रुट-य्युत्कंटककोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ; ते दण्डाङ्कु-शचक्रचाप-कुलिश-श्रीवत्स मत्स्याङ्कितैः जायन्ते पृथ्वीभुजः कथमिवाम्भोजप्रभैः पाणिभिः ॥

अर्थ—हे मां ! चक्रवर्ती राजा वही बन सकते हैं जिनके हाथ पर 'दण्ड' "अंकुश" "चक्र" "कुलिश" "श्रीवत्स" या मछली के निशान हों परन्तु यह निशान उन्हीं के हाथ पर होते हैं जिन्होंने पूर्वजन्म में आप की पूजा के लिए फूल तोड़े हों और फूल लेते समय उनके हाथों में कांटे चुभ गये हों वहीं कांटों के व्रण दूसरे जन्म में "दण्ड" "अंकुश" आदि चिन्हों में तबदील होते हैं।

हस्त रेखा

हाथ को देखने से पहले हाथ को स्पर्श किया जाता है, यदि हाथ स्पर्श करने से नर्म लचकदार और सुढ़ौल मालूम पड़े तो वह मनुष्य चरित्रवान् शुद्ध व्यवहार वाला तथा समाज में प्रतिष्ठा वाला होता है, नर्म हाथ होने पर हाथ लटकता हुआ हो तो वह मनुष्य आलसी और स्वार्थी होता है, इसके विरुद्ध जिसका हाथ सखत तथा खुरदरा और बेढौल हो वह मनुष्य चरित्रहीन अशुद्ध व्यवहार वाला तथा नीच प्रकृति का होता है।

हाथ के पर्वत

MOUNTS

हर ऊंगली के मूल में कुछ उबरी हुई जगह को पर्वत कहते हैं,— "**बृहस्पति पर्वत**" तर्जनी के नीचे होता है, "**शनि पर्वत**" मध्यमा के नीचे, "**सूर्य पर्वत**" अनामिका के नीचे, "**बुध पर्वत**" कनिष्ठा के नीचे;

"शुक्र पर्वत" अंगूठे के तीसरे पर्व पर, "चन्द्र पर्वत" मणिबन्ध के समीप, "मंगल पर्वत" हाथ में दो स्थान पर है बुध पर्वत और चन्द्र पर्वत के बीच में, और दूसरा बृहस्पति पर्वत के ठीक नीचे।

बृहस्पति पर्वत :—(1) तर्जनी पहली ऊंगली के नीचे उभरे हुए भाग को बृहस्पति पर्वत कहते हैं, यदि यह स्थान उभरा हुआ हो तो वह मनुष्य सत्यवादी, आदर्शवादी, धार्मिक और चरित्रवान् होता है, यदि बृहस्पति पर्वत स्पष्ट न हो तो उसका शरीर रोगी होता है। (2) बृहस्पति पर्वत के स्थान पर एक या दो क्रास × होने से वह व्यक्ति धार्मिक समाज में उच्च पद को प्राप्त करता है।

(3) यदि बृहस्पति के स्थान पर एक □ चकोर का चिन्ह हो तो वह सभी संकटों से रक्षा करने की निशानी है, यदि चकोर के भीतर से एक दूसरी रेखा चली जाये तो उस मनुष्य का जीवन सुखी जीवन होता है।

शनि पर्वत :—दूसरी ऊंगली मध्यमा के मूल में उभरे हुए स्थान को शनि पर्वत कहते हैं यदि यह स्थान उभरा हुआ हो तो वह मनुष्य शान्त, बुद्धिमान, गम्भीर तथा विद्वान होता है, यदि शनि पर्वत पर अनेक रेखाऐं हों तो वह डरपोक और धोखेबाज होता है, शनि पर्वत यदि सूर्य पर्वत की ओर खिसका होगा तो वह सुख शान्तिमय जीवन की निशानी है।

सूर्य पर्वत :—यह तीसरी ऊंगली के नीचे उभरा हुआ स्थान

ऊंगलियों के नाम

(1) अंगूठे के साथ वाली ऊंगली का नाम **'तर्जनी'** और तर्जनी के साथ वाली ऊंगली का नाम **'मध्यमा'** छोटी ऊंगली के साथ वाली ऊंगली का नाम **'अनामिका'** और सबसे छोटी ऊंगली का नाम **'कनिष्ठा'** है, ऊंगलियों की बनावट से मनुष्य के स्वभाव और भाग्य का अनुमान लगाया जाता है।

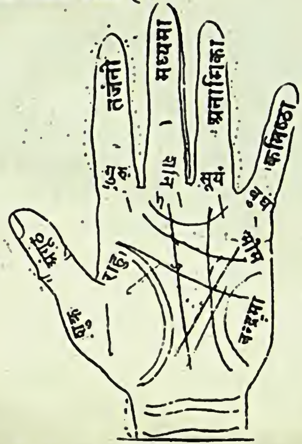

होता है यदि शनि सामान्य रूप में उभरा हुआ हो तो वह मनुष्य कलाप्रेमी, साहित्यकार, कवि, भाग्यवान् धीरजवाला तथा धनवान् होता है, यदि बिना कटी हुई छोटी छोटी रेखाएं सूर्य ऊंगली के पहले पर्व से निकल कर भोग रेखा की ओर फैलें तो वह रेखाएं सूक्ष्म बुद्धि की चेतावनी है, यदि वे रेखायें टेढी और खण्डित हों तो वह दरिद्रता को प्रकट करते है।

बुध पर्वत :—चौथी ऊंगली कनिष्ठका में मूल में उभरा हुआ स्थान बुध पर्वत कहलाता है—(1) यदि यह पर्वत अवसत दर्जा (सामान्य रूप) में उभरा हो तो वह मनुष्य चरित्रवान् सियासतवान, और बुद्धिमान होता है। (2) यदि यह पर्वत दूसरे पर्वतों से अधिक ऊंचा हो तो अभिमानी, निराशावादी, संघर्षमय जीवन वाला होता है।

मंगल पर्वत :—बुध तथा चन्द्रमा पर्वत के ठीक बीच में मंगल पर्वत होता है इस मंगल का दूसरा भाग बृहस्पति के ठीक नीचे होता है जिसका यह पर्वत स्पष्ट तथा ऊंचा हो तो वह आत्मविश्वासी और पुत्र पौत्रों के सुख से युक्त होता है, यदि मंगल पर्वत दबा हुआ हो तो वह मनुष्य चरित्रहीन झगड़ालू और असत्यवादी होता है।

चन्द्रमा पर्वत :—मंगल पर्वत के नीचे और शुक्र पर्वत के उल्ट में चन्द्र पर्वत, यह कलाई के समीप अधिक उभरा हुआ हो। तो वह मनुष्य पवित्र, धार्मिक यात्राओं का प्रेमी, संगीत-उद्योगी तथा तैराक होता है।

शुक्र पर्वत :—अंगूठे के आधार में जो उभरा हुआ स्थान जीवन रेखा से घेरा हुआ होता है शुक्र पर्वत कहलाता है, जिसका यह पर्वत सामान्य ऊंचा तथा स्पष्ट होता है वह दयालु, सुन्दरता का प्रेमी, डाक्टर या वैज्ञानिक होता है।

राहु पर्वत :—राहु क्षेत्र को कोई दूसरा मंगल पर्वत मानते हैं, यह पर्वत बृहस्पति क्षेत्र के नीचे और शुक्र क्षेत्र के ऊपर होता है, यदि यह स्थान सामान्य (अवसत दर्जे में) रूप में उभरा हो तो बुजुर्गों की जायदाद प्राप्त करने वाला नीतिशास्त्र मे चतुर होता है।

नोट :—किसी भी पर्वत (MOUNTS) ग्रह का स्थान अवसत दर्जा पर उभरा हुआ शुभ होता है, अधिक उभरा हुआ या बिलकुल नीचे दबा हुआ अशुभ फल को जितलाता है।

मुख से मनुष्य की पहचान

आप मनुष्य की सुन्दरता पर ध्यान न देते हुए किसी मुख को सावधानी से देखिए कई चेहरे सुन्दर न होते हुये भी आकर्षक होते हैं और कई मुख सुन्दर होते हुए भी भद्दे मालूम पड़ते हैं, यह भी ईश्वर की देन होती है, जिनका चेहरा आकर्षक होता है उनका जीवन सफल होता है, सुन्दर होते हुये भी जिनके मुख में आकर्षण नहीं होता उनका जीवन सुख शान्तिमय नहीं होता है।

मुख (चेहरे) को तीन भागों में विभक्त किया गया है, माथे से

भौंवों के बीच तक पहला भाग । दूसरा भाग नाक भौंवों के मध्य से आरम्भ होकर नथनों तक । तीसरा भाग नाक के नथनों से ठोडी तक । जिस मनुष्य के यह तीनों भाग बराबर हों वह योगभ्रष्ट होता है, अच्छे वंश में जन्म लेता है, विद्वान् होशियार तथा अध्यात्मिक विज्ञान में बहुत उण्नति करता है, जिसका माथा चौड़ा, अन्य दो हिस्सों से बड़ा होता है, वह मनुष्य भाग्यशाली होता है, अच्छी शुहरत तथा प्रतिष्ठा वाला होता है ।

नाक : यह भाग यदि अन्य दो हिस्सों से बड़ा हो तो वह कुलदीपक होता है, यदि यह भाग छोटा हो उस मनुष्य के जीवन का कुछ महत्व नहीं होता, आगे से उभरी हुई नाक अच्छे स्वभाव की सूचक नहीं है, अवसत दर्जे की लम्बी नाक धीरज वाले स्वभाव की सूचना होती है, गोल नाक जीवन की सफलता की सूचना है ।

ठोडी : ठोडी का भाग यदि अन्य दो हिस्सों से छोटा हो तो ऐसा मनुष्य हर समय कष्टों से घिरा रहता है, यदि ठोडी नोकदार हो तो उसका जीवन सफल होता है, यदि ठोडी चौड़ी दबी हुई होगी तो जीवन असफल होता है, जीवन में कई दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है, यदि ठोडी दो हिस्सों से बहुत बड़ी हो तो उसका दु:खी जीवन होता है ।

होंठ : मोटे होंठ मन्दबुद्धि की सूचना है, प्राय: लालची स्वभाव वाला होता है, यदि होंठों में लकीरें हों तो ऐसा मनुष्य धीरज वाला होता है ।

आँख : आँखों के रंग से कोई मतलब नहीं अपितु आँखों की बनावट का प्रभाव मनुष्य पर होता है, छोटी आँखों वाला कठोर हृदय वाला तथा निर्दय होता है, यदि आंखें चौड़ी हों तो वह दयालु तथा त्यागी होता है, आंखें लम्बी परन्तु तंग हों तो वह अधिक बातूनी होता है, जिसकी आंखें दूसरे की ओर कम उठती हों तो दृढ़संकल्प वाला होता है, परन्तु जिसकी आंखें हर समय नीचे की ओर झुकी हों वह तंगदिल चुगलखोर होता है, जिसकी आँखें न अधिक लम्बी और न चौडी हों, उसका जीवन सफल जीवन होता है ।

कान : बहुत लम्बे कानों का होना सफल जीवन की निशानी है, बहुत छोटे कान बुजदिल तथा ईर्ष्यालु स्वभाव की चेतावनी है, जिसके कान लम्बे परन्तु तंग हों वह बातूनी होता है और दूसरों की बात बिल्कुल नहीं सुनता ।

सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम् ।

शास्त्रकारों का कहना है, परेशानी में वृद्धि होती है, चोरों का भय रहता है, दरबार में परेशानी रहती है धन के आने में रुकावट पड़ती, है सन्तान-पक्ष अथवा गृहस्थपक्ष से परेशानी रहती है यानी यह वर्ष आपके लिए संघर्ष तथा परेशानियों का ही होगा, उपाय के रूप में नित्य इन्द्राक्षी का पाठ किया करें, हर शनिवार को गाय को गुड खिलाया करें

नोटः—सभी साढ़सती तथा ढय्या वालों को निम्नलिखित भगवान शंकर का यह श्लोक कण्ठस्थ करना चाहिये और बार बार इसका उच्चारण किया करें।

वन्दे देवम्-उमापति सुगुरुं वन्दे जगत कारणम्
वन्दे पन्न गभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पेतिम्
वन्दे सूर्य—शशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्द प्रियम्
वन्दे भक्तज—नाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शंकरम

महादेव ! महादेव !
महादेवेतिकीर्तनात्
वत्सं गौर इव गौरीशो
धावन्तम्-अभिधावति ।

उपाय

भय-नाशके लिये

सर्वस्वरूपे सर्वेश
सर्वशक्तिसमन्विते
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि
दुर्गे देवि नमोस्तुते ।

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो
विशालाक्षः शिवप्रियः
मन्दाचारः प्रसन्नात्मा
पीड़ां हरतु मे शनिः ।

विजेश्वर जंत्री मिल सकती है

काश्मीर (1) विजयेश्वर ज्योतिषकार्यालय विजविहार।
(2) गोविन्द नव धारा (रजिस्टर्ड) गणपतधार (श्रीनगर)

जम्मू (1) विजयेश्वर प्रिंटिंगप्रेस तालाब तिलू (समीप जैन मन्दिर
(2) भसीन स्टेशनरी स्टोर पक्काडंगा (दू. भाष 43885
(3) गुप्ता स्टेशनरी स्टोर सिटीचौक

दिल्ली देहाती पुस्तक भंणार चावड़ी वाजार (दू.भा. 2610301

विजेश्वर ज्योतिष कार्यायय के नियम

जन्मपत्री बनाने के लिये शुद्ध गणित का होना आवश्यक होता हैं। यदि आप शुद्ध जन्मपत्री बनाना चाहते हैं तो सन्वत् तारीख, समय कहां जन्म हुआ है लिखकर निम्न अड्रेस पर भेजें—

(1) फलादेश सहित कापी साईज, जन्मपन्त्री की दक्षिण कम से म रुपये 100%
(2) सम्पादक को एक जन्मपन्त्री दिखाने की दक्षिणा 20%
(2) वर्षफल फलादेश सहित की दक्षिणा 25%

Available at :

KASHMIR

VIJAYSHWAR JYOTISH KARALAYA Bijbihara

GOVIND NAWDHARA, Ganpatyar

JAMMU

VIJAYSHWAR PRINTING PRESS,

BHASIN STATIONERY STORE, Paka Danga

GUPTA STATIONERY STORE, City Chowk

स्वर, शकुन, स्वप्न, रत्न व सामुद्रिक ज्योतिष

ज्योतिष विज्ञान	30/-	रत्न दीपिका	21/-
व्यापार चमत्कार (तेजी-मंदी)	30/-	रत्न विज्ञान (संपूर्ण दो भाग)	51/-
रमल ज्योतिष शास्त्र	50/-	रत्न, रुद्राक्ष और भाग्य	101/-
सरल सुगम ज्योतिष	20/-	स्वप्न विज्ञान	25/50
शीघ्र बोध	10/-	स्वप्न ज्योतिष शास्त्र	10/-
रमल ज्योतिष शास्त्र	20/-	स्वप्न ज्योतिष फलादेश	15/-
भाग्य की कसौटी	21/-	वृहद् स्वप्न ज्योतिष भास्कर	51/-
कुण्डली गणित विज्ञान	15/-	स्वर-सिद्धि और प्राणायाम	25/50
रत्न अंगूठी आपका भाग्य	36/	शिव स्वरोदय	10/-
शकुन ज्योतिष शास्त्र	25/50	शकुन, भाग्य ग्रहपीडा निवारण	60/-
फलित ज्योतिष प्रकाश	15/-	चिन्ताहरण अभिनव प्रश्नोत्तरी	15/-
आयु निर्णय 25/50 आपका भविष्य	30/-	ताश के पत्तों में जीवन	10/-
भृगुसंहिता फलित प्रकाश (दर्पण)	51/-	संपूर्ण स्वर विज्ञान	36/-
वृहदवकहड़ा चक्रम् 15/-कुण्डलीफलादेश	15/-	ज्ञान चन्द्रोदय प्रश्नावली	5/-
1 घंटे में विवाह संस्कार	10/-	चित्रगुप्त प्रश्नावली	5/-
व्यापार रत्न गाइड	30/-	भृगु तात्कालिक प्रश्नावली	51/-
व्यापार अर्थ मार्तण्ड	25/50	पवनपुत्र प्रश्न भास्कर	10/-
स्वर ज्योतिष शास्त्र	25/50	असली फालनामा	21/-
खेट कौतुकम् 25/50 मुहूर्तचिन्तामणि	25/50	स्त्री-जन्मदिनका जीवन पर प्रभाव	25/50
वृहद् ज्योतिष सार	25/50	राशियों का जीवन पर प्रभाव	25/50
मुहूर्त ज्योतिष शास्त्र	25/50	काल ज्ञान चक्र	25/50
कुण्डली दर्पण	15/-	वृहद् हस्तरेखा विज्ञान	25/50
चमत्कार ज्योतिष (मूक प्रश्न)	10/-	हस्त सामुद्रिक शास्त्र	12/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	15/-	हस्त सामुद्रिक ज्योतिष	20/-
अंक ज्योतिष लाटरी	10/-	आपका हाथ	18/-
अंक ज्योतिविज्ञान	15/-	जीवन रेखा	10/50
भारतीय ज्योतिष, अंक विद्या,		मस्तक रेखा	10/50
हस्त रेखायें व लाटरी	25/50	भाग्य रेखा	10/50
लाटरी गाइड-लाटरी प्रथम पुर०	25/50	हृदय रेखा	10/50
व्यापार की कुंजी	30/-	सूर्य रेखा	10/50
प्रश्न ज्योतिष शास्त्र	15/-	विवाह रेखा	10/50
भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी	15/-	स्वास्थ्य रेखा	10/50
भृगु मूक प्रश्न दीपिका	18/-	प्रभाव रेखाएं	18/-
भृगु मूक प्रश्न शिरोमणि	20/-	हस्त चिन्ह विज्ञान	18/-
हनुमान ज्योतिष	10/-	शरीर लक्षण विज्ञान	18/-
ग्रह-पीडा निवारण स्तोत्र संग्रह	10/-	स्त्री सामुद्रिक	18/-
रत्न परिचय	21/-	वृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान	
सिद्ध रुद्राक्ष धारण विधि	21/-	कंपलीट 2.VOL.	163/50
जन्म दिन का जीवन पर प्रभाव	10/-	सरल ज्योतिष परिचय	5/-
रत्न और रुद्राक्ष धारण	31/-	कीरो की पामिस्ट्री	10/-

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली ६

● असली प्राचीन हस्तलिखित मन्त्र महार्णव ।

प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथों के सारभूत इस संकलन-ग्रंथ में लौकिक कामनाओं की पूर्ति तथा पारलौकिक सुख प्रदान करने वाले चमत्कारी मन्त्रों का अद्भुत संग्रह है । मूल संस्कृत के साथ सरल हिन्दी भाषा युक्त यह ग्रन्थ प्रत्येक मन्त्र-साधक के लिए आवश्यक रूप से पठनीय तथा संग्रहणीय है । प्राचीन संस्कृत के शास्त्रीय मन्त्रों के अतिरिक्त अनेकों शाबर मन्त्र, इस्लामी मन्त्र तथा जैन मन्त्रों का उल्लेख भी किया गया है तथा जिन मन्त्रों के साथ यन्त्र-पूजन होता है, उनके चित्र भी दिए गए हैं । हस्तलिखित, पुराण साइज, खुले पत्राकार ग्रन्थ की न्योछावर **171/-** (एकसौ इकहत्तर रुपये), सुन्दर कलाथ बाइंडिंग युक्त 202/- (दो सौ दो रुपये), डाक खर्च 11/- पृथक्

● असली प्राचीन यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र शिरोमणि

यह प्राचीन यन्त्र-मन्त्र तथा तन्त्र सम्बन्धी शास्त्रीय प्रयोगों का अत्यन्त उपयोगी संकलन है । इसमें उन दुर्लभ यन्त्र-मन्त्रादि को संग्रहीत किया गया है, जिनकी खोज में साधकजन जीवन भर इधर-उधर भटकते रहते हैं । गुप्त तान्त्रिकों, महात्माओं तथा सिद्ध-पुरुषों की कृपा से उपलब्ध प्राचीन यन्त्र, मन्त्र एवं तन्त्र सम्बन्धी इन प्रयोगों की जानकारी प्राप्त कर आप दंग रह जायेंगे । प्रत्येक तन्त्र प्रेमी को इस ग्रन्थ का अध्ययन करना आवश्यक है । यह ग्रन्थ दो खण्डों में प्राप्त है । दोनों खण्डों की भेंट **385/50** , डाक खर्च 31/- रु० पृथक् ।

● असली प्राचीन यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र महाशास्त्र

तन्त्र सम्बन्धी सैकड़ों ग्रंथों के मंथन स्वरूप जो नवनीत उपलब्ध हुआ, वह इस महाशास्त्र में संकलित है । इस ग्रंथ रत्न में ऐसे सैकड़ों तान्त्रिक-प्रयोगों का वर्णन किया गया है , जिन्हें सरलता पूर्वक सिद्ध किया जा सकता है और उनके माध्यम से विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति हो सकती है । यह ग्रन्थ दो भागों में है । प्रथम भाग में प्राचीन दुर्लभ तथा शास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित आर्ष प्रयोग संकलित हैं तथा द्वितीय भाग में वर्तमान युग की प्रतिष्ठित तथा उच्च-स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अनुभवी सिद्ध पुरुषों के लेखादि से सामग्री का चयन किया गया है । दोनों भाग की न्योछावर **225/-**रु० डाक० **21**/-पृथक् ।

● बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान

हस्तरेखा, शरीर-लक्षण एवं आकृति-विज्ञान से सम्बन्धित इतना विशाल ग्रन्थ हिन्दी तो क्या, संसार की अन्य किसी भाषा में भी उपलब्ध नहीं है । इस महाग्रन्थ में प्राच्य, पाश्चात्य तथा दाक्षिणात्य कार्तिकेयन—इन तीनों पद्धतियों के आधार पर हाथ की रेखाओं, चिन्हों, पर्वतों तथा बनावट के आधार पर जातक के भूत, भविष्य एवं वर्तमान जीवन में घटने वाली समस्त घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने की विधि का सरल हिन्दी भाषा में विस्तृत वर्णन किया गया है । इस ग्रन्थ को पढ़ने के बाद हस्त परीक्षा विषयक किसी अन्य ग्रन्थ को पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं रहती । हजारों रेखाचित्रों से सुसज्जित यह ग्रन्थ 12 खण्डों में समाप्त हुआ है तथा सम्पूर्ण ग्रन्थ दो जिल्दों में उपलब्ध है । कपड़े की पक्की जिल्द युक्त सम्पूर्ण ग्रन्थ का मू० **163/50**, डाक अलग ।

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

जादू, मिस्मरिज़्म व अन्य प्राचीन दुर्लभ ग्रंथ

हस्त रेखा ज्ञान	10/-	सचित्र करामात	15/-
हस्त रेखा विज्ञान	10/-	जादू और मिस्मरेज़म	15/-
जीवन रेखा ज्ञान	10/-	चौदह विद्या चौंसठ कला	15/-
हस्त रेखा और हमारा जीवन	10/-	तान्त्रिक साधन विधि, यंत्र, मंत्र, तंत्र सिद्धि के प्रयोग	21/-
माया मच्छेन्द्र ज्ञान	71/-		
ताश मैजिक बुक	30/-	वशीकरण एवं मोहिनी विद्या (हिप्नोटिज्म) सिद्धि के प्रयोग	21/-
जादूगर कैसे बनें ?	30/-		
घर बैठे जादू सीखिये	30/-	देवी देवता, हनुमान, छाया पुरुष एवं दक्षिणी भैरव सिद्धि के प्रयोग	21/-
अपटूडेट जादूगरी	60/-		
जादूगरों का बादशाह	15/-	भूत-प्रेत, अघोर विद्या एवं दक्षिणी विद्या सिद्धि के प्रयोग	21/-
सेवड़े का जादू	15/-		
जादूगरी शिक्षा	15/-		
दक्षिण का जादू	15/-	मनोकामना, कामाख्या, अष्टसिद्धि एवं लक्ष्मी सिद्धि के प्रयोग	21/-
वशीकरण मन्त्र	15/-		

असली प्राचीन हस्तलिखित भृगुसंहिता महाशास्त्र खुले पत्राकार पृ० 1410	501/-
असली प्राचीन हस्त लिखित भृगुसंहिता महाशास्त्र (सजिल्द) पृ० 1410	552/-
असली प्राचीन हस्तलिखित मंत्र महार्णव (खुले पत्राकार) पृ० 160	171/-
असली प्राचीन हस्तलिखित मन्त्र महार्णव (सजिल्द)	202/-
असली प्राचीन हस्तलिखित तन्त्र महार्णव (खुले पत्राकार)	171/-
असली प्राचीन हस्तलिखित तन्त्र महार्णव (सजिल्द)	202/-
असली प्राचीन हस्तलिखित यन्त्र महार्णव (खुले पत्राकार)	171/-
असली प्राचीन हस्तलिखित यन्त्र महार्णव (सजिल्द)	202/-
असली प्राचीन हस्तलिखित मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र महार्णव सम्पूर्ण तीनों खंड	513/-
असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् संहिता	121/-
असली प्राचीन हस्तलिखित शिव संहिता	101/-
असली प्राचीन यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र शिरोमणि	385.50
असली प्राचीन अरुण संहिता 751/- वृहद् हनुमत् सिद्धि	71/-
असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् मन्त्र महोदधि	111/-
असली प्राचीन यंत्र-मंत्र-तंत्र महाशास्त्र (दोनों भाग) सजिल्द	225/-
असली प्राचीन हस्तलिखित वाशिष्ट संहिता	451/-
असली प्राचीन हस्तलिखित नारद संहिता	371/-
असली प्राचीन सच्ची आकर्षण शक्तियां	25/-
असली प्राचीन हस्तलिखित रावण संहिता	1011/-
असली प्राचीन हस्तलिखित सूर्य संहिता महाशास्त्र	511/-
असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् भृगुसंहिता कुण्डली रहस्य (खुलेपत्राकार)	1001/-
असली प्राचीन हस्तलिखित वृहद् भृगुसंहिता कुण्डली रहस्य (सजिल्द)	1072/-

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6

संसार में कुछ भी असम्भव नहीं ... भगवान्, ...गामी, बुद्धिमान एवं उद्यमशील व्यक्ति असम्भव को भी सम्भव कर दिखाते हैं। इनमें हमारी नीचे लिखी 91 पुस्तकें अत्यन्त सहायक सिद्ध होती है। परन्तु सिद्धि कार्यकर्ता पर निर्भर है।

सिद्धियां प्रदान कराने वाली 91 पुस्तकें (प्रत्येक का मूल्य 21/-)

1. पुस्तक सिद्धि शोभा तन्त्र
2. नए मन्त्र महोदधि
3. भाग्य की कसौटी
4. सिद्धिदाता यन्त्र साधना
5. [illegible] रुद्राक्ष प्रयोग विधि
6. स्वाभाविक शक्ति के रहस्य
7. बगला सिद्धि
8. शिवमहिमा
9. लक्ष्मी सिद्धि
10. कामाख्या सिद्धि
11. ऋद्धि सिद्धि मंत्रावली
12. हमजाद (छायापुरुष सिद्धि)
13. योगिनी सिद्धि
14. भविष्य भैरव सिद्धि
15. हनुमान-सिद्धि
16. महाविद्या सिद्धि
17. यन्त्र शक्ति विज्ञान
18. तन्त्र शक्ति विज्ञान
19. मन्त्र शक्ति विज्ञान
20. मोहनी विद्या सिद्धि
21. बटुक भैरव सिद्धि
22. महाविकराल भैरव सिद्धि
23. [illegible] भैरव सिद्धि
24. प्रेतात्मा, डाकिनी आत्मा
25. भूत-प्रेत, जादू-टोना मन्त्र-सूत्र
26. स्त्री-पुरुष वशीकरण सिद्धि
27. शिव [illegible]
28. देवी-देवता पूजन तन्त्र
29. काली तन्त्र
30. [illegible]
31. महाकाली सिद्धि
32. रावण सिद्धि
33. हनुमान पूजा सिद्धि
34. हनुमान शक्ति
35. हनुमान करामात
36. काला जादू
37. [illegible]
38. प्राचीन डामर तन्त्र
39. [illegible] सिद्धियां
40. रत्न परिचय
41. शिव-पूजा पद्धति
42. शनि देवता, साढ़े साती
43. मृतक आत्माओं से बातचीत
44. गणेश सिद्धि
45. शिव सिद्धि
46. विष्णु सिद्धि
47. अलौकिक [illegible]
48. शिव-पार्वती विवाह
49. शिवलीलामृत
50. सरस्वती सिद्धि (सचित्र)
51. गायत्री सिद्धि (सचित्र)
52. पृथ्वी में गड़ा धन कहां ?
53. पौराणिक मन्त्रावली
54. तान्त्रिक सिद्धि
55. आकर्षण शक्तियां
56. सर्वदेवी-देवता सिद्धि साधना
57. सर्व मनोकामना पूर्ण मन्त्र
58. [illegible], मन्त्र, शक्तिचक्र
59. अमलियाते तसखीरे कलूब
60. अमलियाते तसखीरे महबूब
61. रामायण मन्त्रावली
62. चमत्कारी जड़ी-बूटी प्रकाश
63. रत्न दीपिका (रत्न प्रदीप)
64. यन्त्र सिद्धि
65. तन्त्र-सिद्धि
66. मन्त्र सिद्धि
67. यन्त्र विज्ञान
68. तन्त्र विज्ञान
69. मन्त्र विज्ञान
70. शिव पार्वती तन्त्र शास्त्र
71. शिव पार्वती सम्वाद
72. मन्त्रों का आनन्द
73. यन्त्र विद्या
74. तन्त्र विद्या
75. मन्त्र विद्या
76. यन्त्र सागर
77. तन्त्र सागर
78. मन्त्र सागर
79. दुर्गा देवी सिद्धि
80. मन्त्र शक्ति चमत्कार
81. यन्त्र चमत्कार
82. तन्त्र चमत्कार
83. मन्त्र चमत्कार
84. श्मशान साधना
85. अष्ट सिद्धियां
86. शक्तिशाली यन्त्र मन्त्र-तंत्रावली
87. भूत सिद्धि
88. पंचाकर्ण महोदधि
89. नवनाथ चौरासी सिद्धियां
90. नवनिधि मन्त्र सिद्धि
91. सोऽहं और प्राणायाम

हर प्रकार की पुस्तकें वी.पी.पी. से मंगाने का एकमात्र स्थान—

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-6

फोन 261030

"धार्मिक पुस्तक भण्डार"

★ विजयेश्वर ज्योतिष कार्यालय ने विजयेश्वर प्रिंटिंग प्रेस (तालाब तिल्लू जम्मू) के साथ ही एक धार्मिक पुस्तक भण्डार खोलने का निश्चय किया है जिस का उद्घाटन १४ अप्रैल १९८६ को किया जा रहा है, इस पुस्तक भण्डार मे आप को वेद, उपनिषद्, पुराण, धर्मशास्त्र, कर्मकाण्ड, वेदान्त, योग, चिकित्सा ज्योतिष सम्बन्धित पुस्तकें, छपी हुई रंगदार जन्मपत्रियाँ, टेवे फार्म आदि के अतिरिक्त श्री विवेकानन्द, श्री स्वामी रामतीर्थ, श्री अरविन्द, श्री टैगोर, श्री राधा कृष्णन, श्री गांधी जी सम्बन्धित साहित्य भी मिल सकेगा, आर्डर भेज कर इस पुस्तक भण्डार को सफल बनायें।

★ पुस्तकों की जानकारी के लिये ५० पैसे की टिकट भेजकर हमारा सूचीपत्र मंगवाय।

प्रबन्धक

भूषणलाल ज्योतिषी

असली, प्राचीन, हस्तलिखित भृगुसंहिता महाशास्त्र [भा० टी०]

● प्राचीनकाल में जबकि आज की भाँति छपाई आदि का प्रचलन नहीं था, हमारे ऋषियों-मुनियों ने ग्रन्थों की रचना करके अपनी शिष्य परम्परा के अनुसार उन्हें अक्षरशः स्मरण कराकर इस ज्ञान भण्डार को आगे बढ़ाया था। तत्पश्चात् ताड़ वृक्ष के पत्तों तथा भोजपत्र आदि पर इन ग्रन्थों को लिखा गया। बाद में कालान्तर में विधर्मियों तथा आतंकवादियों ने इन ग्रन्थों को नष्ट करने का सामूहिक तथा योजनाबद्ध प्रयास किया। उसका परिणाम यह हुआ कि सर्वांगीण पूर्ण ग्रन्थ दुष्प्राप्य हो गये। यदि कहीं कोई ग्रन्थ बचा तो उसके भी खण्ड-खण्ड हो गये अथवा विदेशी उठाकर ले गये। ऐसे ही दुर्लभ ग्रन्थों में "भृगुसंहिता महाशास्त्र' की गणना होती है, जिसका केवल नाम सुना था। कहा जाता है, किसी समय भृगु ऋषि द्वारा विष्णु भगवान की छाती में लात मारी जाने पर लक्ष्मी जी ने श्राप दिया था कि ब्राह्मण सदा निर्धन रहेंगे तब भृगु जी ने कहा था—"मैं एक ऐसा ग्रन्थ रचूंगा कि जिस किसी के पास वह महाग्रन्थ (भृगुसंहिता) होगा, लक्ष्मी सर्वदा उसका चरण-चुम्बन करेगी। तुलसीदास ने कहा है—सकल पदारथ है जगमाहीं। भाग्य हीन नर पावत नाहीं ॥

● अनेक अल्पज्ञ पंडित 'भृगुसंहिता महाशास्त्र' के असली होने में सन्देह करते हैं। यह ग्रन्थ प्राचीनकाल से श्रवणगोचर होता रहा है। कुछ पंडित एवं ज्योतिषी जिनके पास हस्तलिखित ग्रन्थ का कुछ भाग पाया जाता है, वे कई पीढ़ियों से ग्रन्थ को दिखा-सुनाकर जनता से उनकी कुण्डली का फलादेश बताकर 21/-(इक्कीस रुपये) से 551/-(पांच सौ इक्यावन) रुपये अथवा मुंहमांगी दक्षिणा तक ले लेते हैं। श्री भृगु ऋषि रचित 'भृगुसंहिता' जैसा भूत, भविष्य, वर्तमान का पूर्ण विवरण बताने वाला ग्रन्थ आज तक देखा न गया था, हां नाम ही सुना था। ● इस ग्रन्थ को भाग्यवान ही मंगायेंगे।

● संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। अनेक वर्षों तक अनथक परिश्रम तथा हजारों रुपया खर्च करके कुण्डली के आधार पर भूत, भविष्य, वर्तमान का फलादेश बताने वाला हस्तलिखित "भृगुसंहिता महाशास्त्र" तैयार है।

20×30/6 (पुराण साइज), खुले पत्राकार, हस्तलिखित 1,419 पृष्ठ, 14 खण्डों में सम्पूर्ण, आफसेट प्रिन्ट, इस विशाल ग्रन्थ में अगणित कुण्डली दी गई है। इसमें वर्णित विधि अनुसार संसार के किसी भी व्यक्ति की जन्म-कुण्डली का फलादेश आसानी से ज्ञात हो जाता है। संस्कृत के श्लोकों के साथ-साथ हिन्दी टीका इस ग्रन्थ की विशेषता है। इस विशाल ग्रन्थ की न्योछावर 501/- (पांच सौ एक रुपये) है। ग्रन्थ सीमित संख्या में छपा है। अतः आज ही 51/- M.O. द्वारा भेजकर बाकी 450/- (चार सौ पचास) रुपये की वी०पी०पी० द्वारा घर बैठे ग्रन्थ प्राप्त करें।

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

टेलीफ़ोन-261030